रूसी साहित्य का इतिहास

हिन्दी-समिति-ग्रन्थ-माला—७६

रूसी साहित्य का इतिहास

लेखक
केसरी नारायण शुक्ल
एम० ए० डी० लिट्
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

हिन्दी समिति, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश
लखनऊ

न्दी-समिति-ग्रन्थ-माला—७६

रूसी साहित्य का इतिहास

लेखक
केसरी नारायण शुक्ल
एम० ए० डी० लिट्०
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

हिन्दी समिति, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश
लखनऊ

प्रथम संस्करण
१९६१

मूल्य
सात रुपये

मुद्रक
माया प्रेस प्राइवट लि०, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

भारत की ही प्रमुख भाषाओं के साहित्य का नहीं वरन् एशिया और यूरोप की भी उन्नत भाषाओं के साहित्य का इतिहास प्रकाशित करना हिन्दी-समिति की प्रकाशन-योजना का अंग रहा है। तदनुसार हम अभी तक मलयालम, बंगला गुजराती तथा उर्दू भाषाओं के साहित्य का इतिहास प्रकाशित कर चुके हैं और कन्नड़ तेलगु आदि का इतिहास लिखाया जा रहा है। इसी तरह अंग्रेजी तथा फ्रेंच साहित्य सम्बन्धी ग्रन्थ भी समिति से प्रकाशित हो चुके हैं। उसी परम्परा में अब यह रूसी साहित्य का इतिहास पाठकों के सामने प्रस्तुत है।

जैसा कि लेखक ने लिखा है, "रूसी साहित्य के इतिहास को रूसी जनता के स्वातंत्र्य-आंदोलन तथा संघर्ष के इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता।" वहाँ के जनान्दोलन तथा जनसंघर्ष की विभिन्न स्थितियों और कालों के आधार पर ही प्रायः रूसी साहित्य का युग-विभाजन किया जाता है। तदनुरूप वहाँ की साहित्यिक प्रगति और विचारों, अभिरुचियों अनुभवों आदि के इतिहास का संक्षिप्त विवेचन इस पुस्तक में किया गया है, जो सुबोध और सरल होने के साथ साथ मनोरंजक भी है। लेखक ने मास्को विश्वविद्यालय में रह कर रूसी भाषा और साहित्य का अध्ययन किया और अनेक विद्वानों तथा साहित्यकारों के सम्पर्क में रह कर बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की। आशा है कि उनकी इस कृति से हिन्दी के पाठक विशेष रूप से लाभान्वित हो सकेंगे और आज के आर्थिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में रूस ने जो विलक्षण उन्नति की है, उसका रहस्य समझने में भी उन्हें इससे सहायता मिलेगी।

ठाकुरप्रसाद सिंह
सचिव, हिन्दी समिति

निवेदन

विश्व-साहित्य में रूसी साहित्य का अपना विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसकी महान् मानवतावादी एवं जनवादी परम्पराएँ तथा उसका अन्याय-विरोधी संघर्षशील एवं प्रगतिशील रूप रूस देश की सीमा का अतिक्रमण कर सारे विश्व की जनता को प्रेरणा और प्रोत्साहन देता रहा है। उसके अन्यतम कलाकार पुश्किन, लेरमन्तोव गोगल तुर्गनेव तोलस्तोय दस्तयेव्स्की चेखव आदि विश्व-साहित्य की महान् विभूति बन गये और चेतना के विकास-पथ के प्रकाश-केन्द्रों के रूप में उनका गौरव आज भी अक्षुण्ण है।

रूसी साहित्य की इन परम्पराओं की परिणति अक्तूबर की महान् समाजवादी क्रान्ति है जिसने रूस में सोवियत शासन की स्थापना की और सोवियत साहित्य की नींव डाली जिसके मुख्य सूत्रधार मैक्सिम गोर्की और मायाकोव्स्की हैं। रूसी साहित्य के समान ही सोवियत साहित्य की भी सम्प्राप्तियाँ नगण्य नहीं हैं। सोवियत साहित्य ने रूस की चिन्तनधारा ही बदल दी। इसने समाजवादी विचारधारा और व्यवस्था को जनता के बीच ग्राह्य बनाकर उसकी जड़ें जनता के हृदय में जमा दीं। देश की समुन्नति और सुरक्षा की भावना भी सोवियत साहित्यकारों द्वारा पुष्ट हुई। सोवियत संघ की प्रत्येक जाति की जातीयता एवं विशिष्ट जातीय परम्पराओं का सम्मान करते हुए सोवियत साहित्य ने समाजवादी समाज के निर्माण का व्यापक प्रसार एवं उच्च लक्ष्य सारे देश के सामने रखकर संघ की सारी जनता को स्थानीय नहीं वरन् व्यापक देश-भक्ति के सूत्र में पिरोकर एक कर दिया। फलतः सोवियत साहित्य और सोवियत साहित्य का रूप तो जातीय है, लेकिन उसका आशय समाजवादी है।

सोवियत-साहित्य ने इसी समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का अपना लक्ष्य माना। यथार्थवादी परम्परा को विकसित करते हुए सोवियत

साहित्यकारों ने समाजवाद की प्रतिष्ठा में जो चीजें सहायक थीं उनका स्वागत किया और जो इसकी विरोधी अथवा प्रतिकूल थीं उन सब की भर्त्सना की। इस प्रकार उनके यथार्थवाद ने समाजवादी यथार्थवाद की संज्ञा प्राप्त की। फलतः साहित्य का जनता की चित्तवृत्तियों के साथ तादात्म्य हुआ, वह पूर्णतया जनात्मक बना और वह जनता को प्रेरणा देता हुआ उसका परिचालन करने लगा। देश के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए, उसे उन्नत और विकसित करने के लिए जितनी पंचवर्षीय योजनाएं देश में बनीं सोवियत साहित्य ने उन सबको भावात्मक एवं कलात्मक रूप में जनता के सामने प्रस्तुत कर उनको अत्यन्त ग्राह्य बनाकर उन्हें जनता के जीवन और व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बना दिया। फलतः ये योजनाएं जनता के जीवन का ध्येय और प्रेय दोनों बन गयीं। परिणाम यह हुआ कि जनता में परिश्रम के प्रति नव उत्साहपूर्ण दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव हुआ और जनता खून-पसीना एक कर पंचवर्षीय योजनाओं को पांच वर्षों में नहीं वरन उससे बहुत कम समय में पूरा करने लगी और देश प्रगति के लम्बे कदम बढ़ाता हुआ विश्व के अन्यतम प्रगतिशील राष्ट्रों की पंक्ति में प्रतिष्ठित हो गया।

देश-निर्माण का यह कार्य करते हुए सोवियत-साहित्य देश के सजग प्रहरी और रक्षक के रूप में भी हमारे सामने आया। अन्तरिक्ष में फ़ासिज्म के बादलों के घिरने के साथ ही सोवियत-साहित्य ने जनता को चेतावनी दी और जब देश पर फासिस्टों का आक्रमण हुआ तो इस साहित्य ने जनता को प्राण-पण से इसे विफल कर देने के लिए प्रतिरोध, उत्साह, बलिदान आदि की भावपूर्ण भावनाओं से भर दिया। युद्धकालीन साहित्य जनता के अमर बलिदान का जगमगाता हुआ दर्पण है। फलतः आक्रमण विफल हुआ और जनता विजयिनी हुई। इस विजय का श्रेय सोवियत साहित्य को ही है जिसने जनता में अपनी अनिवार्य विजय का अडिग विश्वास भर दिया।

युद्ध के बाद जब जनता फिर से युद्ध से नष्ट और जर्जर देश के पुनर्निर्माण में लगी तो सोवियत-साहित्य पीछे न रहा। उसने नये आदर्श

नयी व्यवस्था और नये प्रयत्नों का आलोक प्रदान किया। उसने देश को और अधिक सुसंगठित दृढ़ और सशक्त बना दिया और ऐसा उत्साह भरा, जनगण परिश्रम की ऐसी भावना भरी कि आज सोवियत संघ ज्ञान-विज्ञान के किसी क्षेत्र में संसार के किसी भी देश से पीछे नहीं है।

रूसी साहित्य और सोवियत-साहित्य इस प्रकार देश और जनता के संघर्ष विकास और सुखप्राप्ति की कथा कह रहा है जो जितनी मनोरंजक है उतनी ही हम सब के लिए महत्त्वपूर्ण भी है। रूसी जनता की इसी कथा की अत्यन्त संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठों में हिन्दी के पाठकों के लिए अंकित की गयी है। प्रस्तुत पुस्तक रूसी भाषा में प्राप्त और रूसी विद्वानों द्वारा लिखित सामग्री और ग्रन्थों पर आधारित है। अपने साहित्य को रूसी जनता ने जिस रूप में ग्रहण किया है और जैसा आंका है उसको उसी रूप में प्रस्तुत करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया गया है। रूसी-साहित्य अत्यन्त विशाल एवं व्यापक है और प्रस्तुत लेखक का रूसी भाषा और साहित्य का ज्ञान अत्यल्प है। लेखक अपनी सीमाओं से अच्छी तरह परिचित है। प्रस्तुत पुस्तक अत्यन्त विनम्र प्रयास है और इसके लिए किसी प्रकार की मौलिकता का दावा नहीं किया जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक 'रूसी साहित्य' और 'सोवियत-साहित्य' में उप-विभाजित है। सोवियत साहित्य का अंश रूसी साहित्य की अपेक्षा कुछ अधिक विस्तृत हो गया है। यह सकारण है। रूसी साहित्य के संबन्ध में तो कम-से-कम एक या दो पुस्तकें हिन्दी में हैं किन्तु सोवियत-साहित्य पर तो जहाँ तक लेखक की सूचना है हिन्दी में एक भी पुस्तक नहीं है। फिर सोवियत-साहित्य समकालीन साहित्य है जिसकी कई समस्याएं हैं जो हिन्दी साहित्य की समस्याओं से काफी समानता रखती हैं। इसलिए यह अंश कुछ अधिक विस्तार से लिया गया है। इसीलिए यह असंतुलन कुछ क्षम्य भी हो जाता है।

पर यहाँ उन चीजों का भी अत्यन्त संक्षिप्त उल्लेख कर देना आवश्यक है जिनकी इस पुस्तक में कमी या अभाव है। प्रस्तुत पुस्तक केवल रूसी और सोवियत-साहित्य का इतिहास है। विस्तारभय से इसमें सोवियत

संघ में रहने वाली दूसरी जातियों के साहित्य का इतिहास नहीं दिया गया है, यद्यपि वह भी बड़ा मनोरंजक और महत्त्वपूर्ण है। विस्तारभय से रूसी-साहित्य की भी बहुत-सी कृतियों का कथानक नहीं दिया जा सका केवल उनका सांकेतिक परिचय ही प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार कृतियों की भाषा शैलीगत विशेषताओं का अधिक विचार नहीं किया गया है क्योंकि रूसी भाषा के ज्ञान के बिना अधिकांश पाठकों के लिए ऐसा विश्लेषण निरर्थक और अरुचिकर ही होता है। इसी से रूसी से अनूदित अंश तो दिये गये हैं किन्तु रूसी में उद्धरण नहीं प्रस्तुत किये गये हैं। कहीं-कहीं रूसी नामों का अनुवाद कर दिया गया है किन्तु जहाँ उनका हिन्दी में कोई मतलब न निकलता वहाँ उनको ज्यों-का-त्यों लिख दिया गया है।

रूसी भाषा में स्वराघात स्थिर नहीं है वरन् अत्यन्त चंचल है। यद्यपि इस संबंध में लेखक ने कई रूसी मित्रों से सहायता ली और उन्होंने सहर्ष सहायता दी फिर भी बहुत संभव है कि रूसी नामों के प्रति लेखन में वर्ण-विन्यास और स्वराघात की गलतियाँ रह गयी हों। इनका दोष रूसी मित्रों पर न होकर, लेखक पर है।

मास्को विश्वविद्यालय में अध्ययन और अध्यापन करते हुए, प्रस्तुत पुस्तक की रचना लेखक के मास्को के इस आवासकाल के बीच हुई। लेखक को मास्को विश्व-विद्यालय में रूसी भाषा और रूसी साहित्य पर रूसी विद्वानों के लेक्चर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ साथ ही अन्य रूसी मित्रों से भी इस संबंध में सहायता मिली और परामर्श प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर अपनी अध्यापिका श्रीमती इल्सा मक्सिमिलि-यानोव्ना पुल्किना का मैं बड़ी श्रद्धा और आदर से स्मरण करता हूँ जिन्होंने मुझे रूसी की शिक्षा दी और मुझे मास्को विश्वविद्यालय में रूसी भाषा और साहित्य पर लेक्चर सुनने को प्रोत्साहित किया। मैं मास्को विश्व-विद्यालय के विदेशियों के लिए रूसी विभाग और उसकी अध्यक्षा श्रीमती गलीना इवानोव्ना गरकावा का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने रूसी भाषा के अध्ययन में मेरी हर प्रकार की सहायता की।

मास्को विश्वविद्यालय के मेरे विद्यार्थी जीवन के साथी मीशा सेमर्योका और अनातोली ब्वेरेव भी मेरे बहुत बड़े सहायक रहे हैं और ये दोनों मुझे बराबर प्रोत्साहित करते रहे। मैं इन्हें कभी नहीं भूल सकता।

रूसी नामों के प्रतिलेखन में रईसा किरिल्लोवा ने मेरी बड़ी सहायता की और प्रस्तुत इतिहास-लेखन में कई परामर्श दिये। उनका सहयोग बड़ा मूल्यवान् रहा है।

इस समय मैं पमेरान्त्सेव परिवार को नहीं भूल सकता जिनके कारण मेरा मास्को का आवास बड़ा ही मधुर और सफल रहा। प्रोफ़ेसर पमेरान्त्सेव बराबर सत्परामर्श देते रहे। श्रीमती पमेरान्त्सेवा (जिनको हम सब भारतीय 'मामा' कहते थे) हमारी सुविधा का बराबर ख्याल रखती थीं। और नताशा पमेरान्त्सेवा ने इस कार्य में हम लोगों का हाथ बटाया। प्रस्तुत पुस्तक के लिए उन्होंने कुछ सामग्री भी एकत्रित की और उत्साहवर्धन भी किया। उनका योगदान मेरे लिए बड़ा बहुमूल्य रहा है।

× × ×

पुस्तक करीब-करीब साल भर पहले तैयार हो गयी थी। सितम्बर १९६० में जब मैं एक मास के लिए मास्को से भारत आया तो लखनऊ में बसस्थानक में इसकी पाण्डुलिपि छूट गयी। पुस्तक एक प्रकार से मुझे दोबारा तैयार करनी पड़ी। यह कुछ कठिन काम था।

किन्तु इससे भी कठिन काम इस छूटी भूली और मिटी पाण्डुलिपि से प्रेस-कापी तैयार करना था और जिसे लखनऊ विश्वविद्यालय के मेरे सहपाठी डाक्टर प्रताप नारायण टंडन ने बड़े उत्साह से संपन्न किया। यद्यपि बीच-बीच में विराम भी हो जाता था, किन्तु वे बराबर उत्साह की मूर्ति बने काम में लगे रहे और उसे पूरा करके ही छोड़ा। यह पुस्तक जो छप सकी उसका पूरा श्रेय उन्हीं को है।

संघ में रहने वाली दूसरी जातियों के साहित्य का इतिहास नहीं दिया गया है, यद्यपि वह भी बड़ा मनोरंजक और महत्वपूर्ण है। विस्तारभय से रूसी-साहित्य की भी बहुत-सी कृतियों का कथानक नहीं दिया जा सका केवल उनका संक्षिप्त परिचय ही प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार कृतियों की भाषा शैलीगत विशेषताओं का अधिक विचार नहीं किया गया है क्योंकि रूसी भाषा के ज्ञान के बिना अधिकांश पाठकों के लिए ऐसा विश्लेषण निरर्थक और अरुचिकर ही होता है। इसी से रूसी से अनूदित अंश तो दिये गये हैं किन्तु रूसी में उद्धरण नहीं प्रस्तुत किये गये हैं। कहीं-कहीं रूसी नामों का अनुवाद कर दिया गया है किन्तु जहाँ उनका हिन्दी में कोई मतलब न निकलता वहाँ उनको ज्यों-का-त्यों लिख दिया गया है।

रूसी भाषा में स्वराघात स्थिर नहीं है वरन् अत्यन्त चंचल है। यद्यपि इस संबन्ध में लेखक ने कई रूसी मित्रों से सहायता ली और उन्होंने सहर्ष सहायता दी फिर भी बहुत संभव है कि रूसी नामों के प्रति लेखन में वर्ण-विन्यास और स्वराघात की गलतियाँ रह गयी हों। इसका दोष रूसी मित्रों पर न होकर, लेखक पर है।

मास्को विश्वविद्यालय में अध्ययन और अध्यापन करते हुए, प्रस्तुत पुस्तक की रचना लेखक के मास्को के इस आवासकाल के बीच हुई। लेखक को मास्को विश्व-विद्यालय में रूसी भाषा और रूसी साहित्य पर रूसी विद्वानों के लेक्चर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ साथ ही अन्य रूसी मित्रों से भी इस संबंध में सहायता मिली और परामर्श प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर अपनी अध्यापिका श्रीमती ईरिना मक्सिमिलि-यानोव्ना पुलिकना का मैं बड़ी श्रद्धा और आदर से स्मरण करता हूँ जिन्होंने मुझे रूसी की शिक्षा दी और मुझे मास्को विश्वविद्यालय में रूसी भाषा और साहित्य पर लेक्चर सुनने को प्रोत्साहित किया। मैं मास्को विश्व विद्यालय के विदेशियों के लिए रूसी विभाग और उसकी अध्यक्षा श्रीमती गलीना इवानोव्ना रझकोवा का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने रूसी भाषा के अध्ययन में मेरी हर प्रकार की सहायता की।

मास्को विश्वविद्यालय के मेरे विद्यार्थी जीवन के साथी मीशा शिमर्सेको और अनातोली क्लेरेव भी मेरे बहुत बड़े सहायक रहे हैं और ये दोनों मुझे बराबर प्रोत्साहित करते रहे। मैं इन्हें कभी नहीं भूल सकता।

रूसी नामों के प्रतिलेखन में रईसा किरिस्कोवा ने मेरी बड़ी सहायता की और प्रस्तुत इतिहास-लेखन में कई परामर्श दिये। उनका सहयोग बड़ा मूल्यवान् रहा है।

इस समय मैं पमेरान्त्सेव परिवार को नहीं भूल सकता जिनके कारण मेरा मास्को का आवास बड़ा ही मधुर और सफल रहा। प्रोफेसर पमेरान्त्सेव बराबर सत्परामर्श देते रहे। श्रीमती पमेरान्त्सेवा (जिनको हम सब भारतीय 'मामा' कहते थे) हमारी सुविधा का बराबर ख्याल रखती थीं। और नताशा पमेरान्त्सेवा ने हर कार्य में हम लोगों का हाथ बटाया। प्रस्तुत पुस्तक के लिए उन्होंने कुछ सामग्री भी एकत्रित की और उत्साहवर्धन भी किया। उनका योगदान मेरे लिए बड़ा बहुमूल्य रहा है।

× × ×

पुस्तक करीब-करीब साल भर पहले तैयार हो गयी थी। सितम्बर १९६० में जब मैं एक मास के लिए मास्को से भारत आया तो लखनऊ में अस्पताल में इसकी पाण्डुलिपि खो गयी। पुस्तक एक प्रकार से मुझे दोबारा तैयार करनी पड़ी। यह कुछ कठिन काम था।

किन्तु इससे भी कठिन काम इस टूटी फूटी और मिटी पाण्डुलिपि से प्रेस-कापी तैयार करना था और जिसे लखनऊ विश्वविद्यालय के मेरे सहयोगी डाक्टर प्रताप नारायण टंडन ने बड़े उत्साह से संपन्न किया। मैं तो बीच-बीच में निराश भी हो जाता था किन्तु वे बराबर उत्साह की मूर्ति बने काम में लगे रहे और उसे पूरा करके ही छोड़ा। यह पुस्तक जो छप सकी उसका पूरा श्रेय उन्हीं को है।

और सबसे बड़ा सहयोग मुझे श्रीमती सरोजिनी शुक्ल से मिला। यह पुस्तक उनके सामने मास्को में शुरू हो गयी थी। जलप्लावन से पांडु-लिपि का उद्धार उन्होंने ही किया। पांडुलिपि के बीच कीचड़ से लिपटे एक-एक पन्ने को एकत्रित कर उसे सुखा कर, झाड़-पोंछ कर, काम करने योग्य उन्होंने ही बनाया एक प्रकार से उन्होंने मेरा भी उद्धार किया।

उत्तर प्रदेश सरकार की हिन्दी समिति ने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए आमंत्रित किया और वही इसे प्रकाशित भी कर रही है। हिन्दी समिति के अधिकारियों के प्रति आभार-प्रदर्शन मेरा कर्तव्य है।

यदि यह पुस्तक हिन्दी के पाठकों में रूसी साहित्य के प्रति थोड़ी भी जिज्ञासा जगा सकी और उन्हें रूसी साहित्य के स्वतन्त्र अध्ययन की थोड़ी भी प्रेरणा दे सकी तो मेरा परिश्रम सफल होगा।

केसरी नारायण शुक्ल

विषय-सूची

भाग १

रूसी-साहित्य

भाग २

सोवियत साहित्य

— • —

भाग २

है। रूसी साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है जनजीवन के साथ उसका घनिष्ठ संबंध। रूसी साहित्य रूसी जनता के स्वातन्त्र्य आंदोलन के साथ सदा और घनिष्ठ रूप में संबद्ध रहा है। इसलिए रूसी साहित्य के इतिहास को रूसी जनता के स्वातन्त्र्य आंदोलन तथा संघर्ष के इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता। फलतः रूस के स्वतंत्रता आंदोलन के विकास की विभिन्न मंज़िलों के अनुरूप रूसी साहित्य का युग-विभाजन स्वाभाविक ही है।

प्रस्तुत पुस्तक में इसी युग-विभाजन के अनुरूप रूसी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत की जा रही है।

२ उन्नीसवीं शती से पूर्व का रूसी साहित्य

'ईगर की सेना का गीत'

'ईगर की सेना का गीत' प्राचीन रूसी साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जो साढ़े सात सौ वर्ष से अधिक पुराना है। इसमें बारहवीं शती के अन्त के रूसी जन-जीवन की कतिपय ऐतिहासिक घटनाओं का काव्यात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

प्राचीन रूसी राष्ट्र का संघटन

प्राचीन रूसी राष्ट्र का नवीं शताब्दी में संघटन हुआ और बाद की (ग्यारहवीं बारहवीं) शताब्दियों में उसकी राजनीतिक शक्ति और संस्कृति का अभ्युदय और विकास हुआ। कई जल तथा स्थल मार्गों के संगम पर स्थित होने के अनुकूल भौगोलिक परिस्थिति के कारण प्राचीन रूस का पड़ोसी राष्ट्रों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध बढ़ा और उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई। इस प्राचीन रूसी राष्ट्र की सबसे अधिक उन्नति व्लादीमिर स्व्यातोस्लाविच और उसके पुत्र 'बुद्धिमान' यारोस्लाव के समय में हुई, जब कि इसकी सीमाएँ बाल्टिक तथा श्वेत समुद्र से काला समुद्र तक और कार्पेथियन पर्वतमाला से लेकर वोल्गा के (ऊपरी) तट तक फैली हुई थीं और कीव का नगर इसके राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विद्यमान था। यह उस समय के यूरोप का सबसे अधिक शक्तिशाली राष्ट्र था।

व्लादीमिर स्व्यातोस्लाविच के समय में ईसाइयत राष्ट्रीय धर्म बन गया। ईसाइयत को स्वीकार करने से रूस का संबंध बाइज़ेंटाइन तथा अन्य ईसाई राष्ट्रों से और भी घनिष्ठ हुआ तथा उसकी संस्कृति और भी अधिक विकसित हुई।

इस प्राचीन रूसी राष्ट्र के संघटन के युग में लोक-साहित्य की पर्याप्त रचना हुई। लोक-प्रबंध काव्य 'बिलीना' कथाओं तथा जन-कहानियों

में उस युग की ऐतिहासिक घटनाओं की छाप है और उनमें तत्कालीन रूसी जनजीवन का प्रतिबिम्ब है। मौखिक लोक साहित्य बराबर विकसित होता रहा और वह लिखित साहित्य की आधारशिला बना। ग्यारहवीं-बारहवीं शती में ऐतिह्य ऐतिहासिक कथाओं तथा अन्य कृतियों की रचना हुई।

रूसी राष्ट्र की विशृंखलता

प्राचीन रूसी राष्ट्र के विकास-व्यापार के बीच (ग्यारहवीं शती के उत्तरार्द्ध से) कीव के अतिरिक्त नये नये नगर प्रकट होने लगे जो कि धीरे धीरे एक दूसरे से अलग असंबद्ध और स्वतन्त्र जीवन बिताने लगे। फलतः देश टुकड़ों में विभक्त हो गया और उनके शासक राजकुमार कीव की अधीनता न स्वीकार कर आपस में लड़ने झगड़ने लगे। राजवंशों के इस पारस्परिक कलह से रूस के परंपरागत शत्रुओं—स्तेप की घुमन्तू पलोवित्सी जातियों ने लाभ उठाया और उन्होंने खानों की अधीनता में संघटित होकर रूस की दक्षिणी सीमा पर आक्रमण कर दिया। इससे रूसी राष्ट्र का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया।

इस समय के विचारशील लोगों ने देश के इस संकट को पहचाना और राजवंशीय कलहों की समाप्ति तथा राष्ट्रीय एकता की स्थापना में ही सुरक्षा और कल्याण समझा। यह बात बिलकुल ठीक थी। जब वे राजकुमार एक होकर खानाबदोश पलोवित्सियों के विरुद्ध सम्मिलित अभियान करते थे तो सफल और विजयी होते थे और जब इन राजकुमारों के अभियान असम्मिलित और अलग अलग होते थे तो प्रायः असफलता तथा पराजय ही इनके हाथ लगती थी। 'ईगर की सेना का गीत' एक ऐसे ही असफल अभियान की कथा कहता है। इसके अज्ञात लेखक ने इसमें उत्तरी नोवोगोरद के राजकुमार ईगर के पलोवित्सियों के विरुद्ध अभियान और उसकी असफलता तथा पराजय का वर्णन किया है।

काव्य का ऐतिहासिक आधार

काव्य का आधार वास्तविक ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। कीव के

शासक स्वितोस्लाव के नेतृत्व में सन् ११८४ में आयोजित पोलोवित्सियों के विरुद्ध सम्मिलित अभियान में ईगर भाग न ले सका। फलतः दूसरे वर्ष (११८५) अपने संबंधियों को एकत्रित कर और दूसरे राजाओं से बिना सलाह मशविरा किए ही वह अपनी छोटी सेना के साथ पोलोवित्सियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए चल पड़ा। ऐतिह्य बताते हैं कि पहले युद्ध में तो उसकी विजय हुई किन्तु उसके बाद उसकी सेना नष्ट हो गयी और वह बंदी बना लिया गया। इसके बाद पोलोवित्सियों ने आक्रमण कर दिया और वे रूस के अंदर घुस गये। इस प्रकार 'ईगर की सेना का गीत' के मूल में यथार्थ ऐतिहासिक घटनाएं हैं।

फिर भी इसका लेखक अपने को इन ऐतिहासिक घटनाओं तक ही सीमित नहीं रखता। इन ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से वह जनता के दीन-हीन जीवन का बड़ा व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है और यह संकेत करता है कि इस स्थिति का कारण देश का राजनीतिक पार्थक्य, राजवंशीय पारस्परिक कलह और घुमन्तू जातियों का आक्रमण है। बारहवीं शती के रूस की कठिन परिस्थिति लेखक को मातृभूमि के इस अनतिदूर अतीत के सम्मानपूर्ण युग का स्मरण दिलाती है जब कि रूस का राष्ट्र अत्यन्त शक्तिशाली था। काव्य में व्लादीमिर स्वितोस्लाव से लेकर ईगर के समय तक की डेढ़ शताब्दी के रूसी जन जीवन का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य भाव एकता एवं देशभक्ति

इस काव्य में पात्रों और घटनाओं का जो चित्रण हुआ है उसका मूल प्रेरक भाव देशभक्ति है। कीव के शासक स्वितोस्लाव को रूस के बहुत बड़े देशभक्त के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो रूसी भूमि की रक्षा के लिए अन्य राजाओं का आह्वान करता है और पारस्परिक कलह का परिहार कर एक हो जाने का संदेश देता है। इसमें अन्य राजाओं का जो चित्रण हुआ है उसमें वे रूसी भूमि के प्रतिनिधि रूप में प्रस्तुत किये गये हैं और लेखक उनकी प्रशंसा तथा निन्दा इसी मूल भाव को दृष्टि में रखकर करता है कि वे देश की रक्षा और एकता में कितना योगदान

करता है। कवि राजकुमार ईगर के साहस आदि अन्य गुणों की प्रशंसा करते हुए भी उसकी आलोचना इसलिए करता है कि पोलोवित्सियों के विरुद्ध वह सब राजाओं के साथ नहीं लड़ा वरन् सबसे अलग अकेला लड़ने गया।

कवि ने मातृभूमि की रक्षा और एकता के आह्वान को उस युग के रूसी सामन्ती समाज की नयी एवं प्रगतिशील प्रवृत्ति के रूप में वर्णित किया है। बारहवीं शताब्दी के टुकड़ों-टुकड़ों में पृथक होनेवाले इस सामन्ती रूसी राष्ट्र के बीच एकता का पाठ पढ़ानेवाले स्वियातोस्लाव का चित्र लेखक की निर्भीक और प्रगतिशील दृष्टि का परिचायक बन जाता है।

ईगर की पत्नी यारोस्लाव्ना के विलाप में भी देशभक्ति का यही मूल भाव है। उसके विलाप में केवल व्यक्तिगत दुःख की ही व्यंजना नहीं हुई है वरन् उन रूसी सैनिकों के नाश पर भी दुःख प्रकट किया गया है जो युद्ध में खेत रहे। यारोस्लाव्ना का यह विलाप इस कृति का अत्यन्त माधुर्यपूर्ण स्थल माना जाता है।

इसमें गायक कवि बयान का भी वर्णन हुआ है। बयान ग्यारहवीं सदी में जीवित था और राजाओं के लिए गीतों की रचना किया करता था। उसकी इस काव्य में बड़ी प्रशंसा की गयी है। कवि उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए भी कहता है कि वह बयान के भावों पर गीतों की रचना नहीं करेगा वरन् इस समय की वास्तविक घटनाओं के अनुसार रचना करेगा।

प्रबन्ध-रचना

अपनी इस रचना को कवि 'स्लोव' (शब्द) कहता है और इसमें वह पाठकों की ओर कभी कथात्मक वर्णन द्वारा और कभी गीतों द्वारा उन्मुख होता है। वास्तव में इसमें प्रबन्धात्मकता और गीतात्मकता एक साथ मिल गयी हैं तथा ऐतिहासिक घटनाओं के बीच वर्णन के माध्यम से रूसी जनता के प्रतिनिधि के रूप में राजाओं की वीरतापूर्ण विशिष्टताओं का अंकन हुआ है। इस प्रकार की प्रगीतात्मक-प्रबन्धात्मक कृति वीर-काव्य कहलाती है।

इसकी प्रबंध रचना के तीन प्रधान अंग हैं। प्रथम भाग ईगर का विफल अभियान उसका बंदी होना तथा रूसी सैनिकों की पराजय है।

द्वितीय भाग में कीव के शासक स्वियातोस्लाव का रूसी भूमि की रक्षा के लिए एकता का आह्वान है।

तीसरे भाग में ईगर का कैद से निकल भागना और स्वदेश लौटना है।

लोक-सर्जना से सम्बन्ध

कवि ने इसकी रचना में लोक-काव्य की कलात्मक युक्तियों का बहुत उपयोग किया है। मौखिक जन-काव्य में अत्यधिक प्रचलित नकारात्मक तुलनाओं का उपयोग हुआ है और युद्ध के चित्र उसी प्रकार अंकित किये गये हैं जैसे कि जन-काव्य 'बिलीना' में होते हैं। प्रकृति चित्रण में जन-काव्य से इसका संबंध और भी स्पष्ट हो जाता है। लोक-काव्य के समान इसमें भी प्रकृति का अन्य पात्रों जैसा जीवन है और वह उनसे सहानुभूति प्रकट करती है उनके साथ दुःखित होती है, हर्षित होती है और उनको संकट की सूचना देती है। जब ईगर का अभियान शुरू होता है तो उसे रोकने के लिए सूर्य छिप कर अंधकार द्वारा उसका मार्ग रोकता है रात बिजली द्वारा चिल्लाती है और जब ईगर कैद से भागता है तो सूर्य आकाश में खूब चमकता है कठफोड़वा पक्षी नदी की ओर का रास्ता दिखाता है दोन नदी अपनी लहरों पर झुलाती है और बुलबुलें आनंद के गीत गाती हैं।

फिर भी 'ईगर की सेना का गीत' जनता द्वारा रचित लोक-काव्य नहीं है। यह एक व्यक्ति की कृति है और उस युग की तत्कालीन साहित्यिक युक्तियों से समन्वित है।

'ईगर की सेना का गीत' का प्राचीन रूसी साहित्य के विकास पर व्यापक प्रभाव पड़ा और नवीन रूसी साहित्य चित्र तथा आपेरा आदि में इसका अंकन किया गया। रदीश्चेव, पुश्किन, नाटककार ओस्त्रोवस्की आदि इससे बहुत प्रभावित हुए। संगीतकार बारोदीन ने 'राजा ईगर' आपेरा

करते हैं। कवि राजकुमार इगोर के साहस आदि अन्य गुणों की प्रशंसा करते हुए भी उसकी आलोचना इसलिए करता है कि पोलोवित्सियों के विरुद्ध वह सब राजाओं के साथ नहीं लड़ा वरन् सबसे अलग अकेला लड़ने गया।

कवि ने मातृभूमि की रक्षा और एकता के आह्वान को उस युग के रूसी सामन्ती समाज की नयी एवं प्रगतिशील प्रवृत्ति के रूप में वर्णित किया है। बारहवीं शताब्दी के टुकड़ों-टुकड़ों में पृथक् होनेवाले १७ सामन्ती रूसी राष्ट्र के बीच एकता का पाठ पढ़ानेवाले स्वितोस्लाव का चित्र स्वतः लेखक की निर्भय और प्रगतिशील दृष्टि का परिचायक बन जाता है।

इगोर की पत्नी यारोस्लाव्ना के विलाप में भी देशभक्ति का यही मूल भाव है। उसके विलाप में केवल व्यक्तिगत दुःख की ही व्यंजना नहीं हुई है वरन् उन रूसी सैनिकों के भाग्य पर भी दुःख प्रकट किया गया है जो युद्ध में खेत रहे। यारोस्लाव्ना का यह विलाप इस कृति का अत्यन्त काव्यपूर्ण स्थल माना जाता है।

इसमें गायक कवि बयान का भी अंकन हुआ है। बयान ग्यारहवीं सदी में जीवित था और राजाओं के लिए गीतों की रचना किया करता था। उसकी इस काव्य में बड़ी प्रशंसा की गयी है। कवि उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए भी कहता है कि वह बयान के भावों पर गीतों की रचना नहीं करेगा वरन् इस समय की वास्तविक घटनाओं के अनुसार रचना करेगा।

प्रबन्ध-रचना

अपनी इस रचना को कवि 'स्लोव' (शब्द) कहता है और इसमें वह पाठकों की ओर कभी कथात्मक वर्णन द्वारा और कभी गीतों द्वारा सम्मुख होता है। वास्तव में इसमें प्रबन्धात्मकता और गीतात्मकता एक साथ मिल गयी है तथा ऐतिहासिक घटनाओं के बीच वर्णन के माध्यम से रूसी जनता के प्रतिनिधि के रूप में राजाओं की वीरतापूर्ण विशिष्टताओं का अंकन हुआ है। इस प्रकार की प्रगीतात्मक-प्रबंधात्मक कृति वीर-काव्य कहलाती है।

इसकी प्रबंध रचना के तीन प्रधान अंग हैं। प्रथम भाग ईगर का विफल अभियान, उसका बंदी होना तथा रूसी सैनिकों की पराजय है।

द्वितीय भाग में कीव के शासक स्वितोस्लाव का रूसी भूमि की रक्षा के लिए एकता का आह्वान है।

तीसरे भाग में ईगर का कैद से निकल भागना और स्वदेश लौटना है।

लोक-सर्जना से सम्बन्ध

कवि ने इसकी रचना में लोक-काव्य की कलात्मक युक्तियों का बहुत उपयोग किया है। मौखिक जन-काव्य में अत्यधिक प्रचलित नकारात्मक तुलनाओं का उपयोग हुआ है और युद्ध के चित्र उसी प्रकार अंकित किये गये हैं जैसे कि जन-काव्य 'बिलीना' में होते हैं। प्रकृति चित्रण में जन-काव्य से इसका संबंध और भी स्पष्ट हो जाता है। लोक-काव्य के समान इसमें भी प्रकृति का अन्य पात्रों जैसा जीवन है और वह उनसे सहानुभूति प्रकट करती है, उनके साथ दुःखित होती है, हर्षित होती है और उनको संकट की सूचना देती है। जब ईगर का अभियान शुरू होता है तो उसे रोकने के लिए सूर्य दिन पर अंधकार द्वारा उसका मार्ग रोकता है, रात बिजली द्वारा चिल्लाती है और जब ईगर कैद से भागता है तो सूर्य आकाश में खूब चमकता है, कठफोड़वा पक्षी नदी की ओर का रास्ता दिखाता है, दोन नदी अपनी लहरों पर झुलाती है और बुलबुलें आनंद के गीत गाती हैं।

फिर भी 'ईगर की सेना का गीत' जनता द्वारा रचित लोक-काव्य नहीं है। यह एक व्यक्ति की कृति है और उस युग की शैलीगत साहित्यिक युक्तियों से समन्वित है।

'ईगर की सेना का गीत' का प्राचीन रूसी साहित्य के विकास पर व्यापक प्रभाव पड़ा और नवीन रूसी साहित्य, चित्र तथा आपेरा आदि में इसका अंकन किया गया। रदीश्चेव, पुश्किन, नाटककार ओस्त्रोवस्की आदि इससे बहुत प्रभावित हुए। संगीतकार बरोदिन ने 'राजा ईगर' आपेरा

की रचना की और चित्रकार वास्नेत्सोव ने प्रसिद्ध चित्र (ईगरी-हत्या) बनाया।

स्पष्ट भाषा रूसी जनता के जीवन का यथार्थ ऐतिहासिक अंकन देशभक्ति की भावना—इन सब ने इस कृति को अमर, और लोकप्रिय बना दिया। बारहवीं सदी के इस अज्ञात कवि की रूसी भूमि के प्रति गहरे प्रेम से परिपूर्ण यह रचना सोवियत जनता के हृदय के अत्यन्त निकट है। सन् १९३८ में प्राचीन रूसी साहित्य की इस अमर कृति की ७५०वीं जयंती मनायी गयी।

३ रूसी साहित्य (१३वीं से १७वीं शती)

तेरहवीं से सत्रहवीं शती तक का रूसी साहित्य

प्राचीन रूसी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ रूसी जनता के जीवन से अत्यन्त घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। इनमें उस समय के रूसी जीवन की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक राजनीतिक तथा सामाजिक घटनाओं की पूरी पूरी अभिव्यक्ति मिलती है।

तेरहवीं शताब्दी के सन् तीस और चालीस के वर्षों में रूस पर तातारों का आक्रमण हुआ। इसी समय उत्तर और पश्चिम से स्वीडिश और जर्मनों का धावा हुआ। रूसियों का इन विदेशी आक्रमणकारियों से जो युद्ध और संघर्ष हुआ उसका साहित्य में पूरा पूरा प्रतिबिम्बन हुआ है। तेरहवीं तथा चौदहवीं शताब्दी की सैनिक कथाओं में रूसियों के तातारों स्वीड तथा जर्मनों से वीरतापूर्ण युद्धों के आख्यान मिलते हैं। अलेक्सान्द्र न्येव्स्की की कथा में न्येव्स्की के स्वीड तथा जर्मनों से युद्ध और उसकी विजय का वर्णन है। काल्कस्कोए हत्या की कथा में तातारों के साथ प्रथम संघर्ष का अभिव्यंजन हुआ है। 'बातो (बा) की सेना का रियाजान में आगमन की कथा भी इसी प्रकार की सैनिक कथा है। महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को अंकित करनेवाली ये सैनिक कथाएं इन घटनाओं के घटित होने के थोड़े ही समय बाद लिखी गयीं। तातारी आक्रमण से संबंधित तेरहवीं-चौदहवीं शती की साहित्यिक रचनाओं में रूसी भूमि के नाश की कथा है। इसमें रूसी भूमि के सौन्दर्य और समृद्धि का अत्यन्त भावुकतापूर्ण वर्णन किया गया है। जदोन्श्चिना में (१४वीं शती का अंत) रूसियों की तातारों पर प्रथम विजय का अंकन है जो उन्हें १३८० में कुलीकोव्स्की के युद्ध में मिली।

अलेक्सान्द्र न्येव्स्की तथा कुलीकोव्स्की के युद्ध की रूसी विजय ने रूसी जनता की एकता तथा राष्ट्रीयता की भावना को और भी बढ़ावा

किया। मास्को के राजकुमार इवान तृतीय और उसके पुत्र वसीली तृतीय ने पंद्रहवीं सदी के अंत और सोलहवीं के आरम्भ में रूसी प्रान्तों को एक में मिलाकर एक रूसी राष्ट्र का संघटन किया। मास्को के चारों ओर रूसी भूमि के एकीकरण से देश का आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तर और भी ऊंचा हुआ। कीव का महत्त्व अब कम हो गया और मास्को देश का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र बन गया। अपनी शान-शौकत और सांस्कृतिक उत्कर्ष के कारण मास्को 'तीसरा रोम' कहा जाने लगा।

रूसी राजकुमारों के एक केंद्रित राष्ट्र में एकीकरण से देश का सांस्कृतिक उत्थान और भी बढ़ा। ईवान भयंकर के समय में पुस्तकों का मुद्रण आरम्भ हुआ। पंद्रहवीं-सोलहवीं सदी में केंद्रित रूसी राष्ट्र के निर्माण के साथ साथ जातीय रूसी भाषा का गठन और विकास शुरू हुआ। राष्ट्रीय भाषा का लिखित रूप सामने आया और विविधात्मक साहित्य की रचना होने लगी।

पंद्रहवीं और विशेषतया सोलहवीं शताब्दी में दैनिक कथाओं की जगह पत्रकारिता का साहित्य प्रमुख हुआ जिसमें सरकारी मसविदे संधिपत्र तथा आदेश आदि थे जिनमें तत्कालीन सामाजिक प्रश्नों पर विचार प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार के साहित्य में ईवान-भयंकर की कुर्ब्स्की राजकुमार के साथ 'बातचीत' महत्त्वपूर्ण कृति है।

इस समय केंद्रित शक्तिशाली शासन की स्थापना के लिए ईवान भयंकर ने बयारों के विरुद्ध संघर्ष शुरू किया। पीतर और फ़ेवोनिया की कथा में बयारों के विरुद्ध प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। इस कथा में मूरम का राजकुमार पीतर एक साधारण स्थिति की लड़की से प्रेम करता है और उससे शादी कर लेता है। बयार समाज के अत्याचार के कारण फ़ेवोनिया मूरम छोड़कर चली जाती है। पीतर भी उसके साथ शहर छोड़कर चल देता है। एक ही दिन और एक ही समय में दोनों की मृत्यु के भावुकतापूर्ण वर्णन के साथ कथा समाप्त होती है। दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़ना दिया जाता है।

सोलहवीं सदी में विगत शताब्दियों की साहित्यिक कृतियों का एक

बहुत बड़ा संकलन तैयार किया गया जिसमें सभी प्राचीन, स्थानीय तथा अखिल रूसीय 'जितापिम' (वर्णानुक्रमिक वर्णन) एक में संगृहीत हुए। इस समय 'गृह विधान' निकला जिसमें घरेलू तथा पारिवारिक जीवन के नियमों का उल्लेख था। इससे तत्कालीन पारिवारिक व्यवस्था तथा उससे संबंधित प्राचीन लोक-स्मृति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

इस समय ऐतिहासिक लोक-गीतों की भी रचना हुई। विशेष रूप से ईवान भयंकर के युग की घटनाओं की कज़ान पर अधिकार, साइबीरिया की विजय—की छाप इन ऐतिहासिक गीतों में प्रमुख रूप से मिलती है।

सत्रहवीं शती में रूस में अत्यधिक सामाजिक महत्व की ऐतिहासिक घटनाएँ घटीं। इस शताब्दी के आरम्भ में किसानों की हलचल शुरू हुई जो आगे चलकर (इवान बलोत्निकोव स्तेपान राज़िन के नेतृत्व में) किसान युद्ध में परिणित हुई। इसी समय पोलैण्ड और स्वीडन की सेना ने देश पर आक्रमण किया। इन सब घटनाओं की अभिव्यक्ति ऐतिहासिक गीतों और कथाओं में मिलती है। 'सुन्दर रूसी भूमि की मृत्यु कथा', 'मास्कोवीय राष्ट्र के नाश पर विलाप' आदि ऐसी ही रचनाएँ हैं।

सत्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध से साहित्य में कलात्मक प्रवृत्तियाँ लक्षित होने लगती हैं। साहित्य धीरे-धीरे चर्च के प्रभाव से मुक्त होकर ऐहिक रूप धारण करने लगता है। साहित्य में नये नायकों किसान, शहरी वासी, सौदागर आदि के प्रतिनिधियों—का प्रादुर्भाव होने लगता है। रूसी साहित्य अब पारलौकिक न रहकर ऐहिक बनने लगा।

ऐहिक जीवन से संबंधित ये कथाएँ इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध की मुख्य विशिष्टता है। परिवार में व्यक्ति के स्वजीवन-यापन के आत्म-निर्णय के अधिकार की समस्या तथा प्राचीन एवं नवीन पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण इसमें सम्पन्न परिवार के एकमात्र पुत्र के शोक और दुःख की कथा है। इसमें सम्पन्न परिवार के नवयुवक की निंदा है, क्योंकि वह पुरानी नैतिकता को छोड़कर नये ढंग से जीवन बिताना चाहता है और इसलिए दुःख भोगता है।

कोम्यकवोव की कथा में एक धूर्त की कथा है जो स्वयं गरीब है

किया। मास्को के राजकुमार इवान तृतीय और उसके पुत्र वसीली तृतीय ने पंद्रहवीं शती के अंत और सोलहवीं के आरम्भ में रूसी प्रान्तों को एक में मिलाकर एक रूसी राष्ट्र का संघटन किया। मास्को के चारों ओर रूसी भूमि के एकीकरण से देश का आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तर और भी ऊंचा हुआ। कीव का महत्त्व अब कम हो गया और मास्को देश का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र बन गया। अपनी साज-सज्जा और सांस्कृतिक उत्कर्ष के कारण मास्को 'तीसरा रोम' कहा जाने लगा।

रूसी राजकुमारों के एक केंद्रित राष्ट्र में एकीकरण से देश का सांस्कृतिक उत्थान और भी बढ़ा। ईवान भयंकर के समय में पुस्तकों का मुद्रण आरम्भ हुआ। पंद्रहवीं-सोलहवीं शती में केंद्रित रूसी राष्ट्र के निर्माण के साथ साथ जातीय रूसी भाषा का गठन और विकास शुरू हुआ। राष्ट्रीय भाषा का लिखित रूप सामने आया और विविधात्मक साहित्य की रचना होने लगी।

पंद्रहवीं और विशेषतया सोलहवीं शताब्दी में दैनिक कथाओं की जगह पत्रकारिता का साहित्य प्रमुख हुआ जिसमें सरकारी मसविदे संक्षिप्त तथा आदेश आदि थे जिनमें तत्कालीन सामाजिक प्रश्नों पर विचार प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार के साहित्य में ईवान भयंकर की कुर्ब्स्की राजकुमार के साथ 'बातचीत' महत्त्वपूर्ण कृति है।

इस समय केन्द्रित शक्तिशाली शासन की स्थापना के लिए ईवान भयंकर ने 'बयारों' के विरुद्ध संघर्ष शुरू किया। पीतर और फेव्रोनिया की कथा में बयारों के विरुद्ध प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। इस कथा में मूरम का राजकुमार पीतर एक साधारण स्थिति की लड़की से प्रेम करता है और उससे शादी कर लेता है। बयार समाज के अत्याचार के कारण फेव्रोनिया मूरम छोड़कर चली जाती है। पीतर भी उसके साथ शहर छोड़कर चल देता है। एक ही दिन और एक ही समय में दोनों की मृत्यु के भावुकतापूर्ण वर्णन के साथ कथा समाप्त होती है। दोनों को एक ही कब्र में दफ़ना दिया जाता है।

सोलहवीं शती में विगत शताब्दियों की साहित्यिक कृतियों का एक

बहुत बड़ा संकलन तैयार किया गया जिसमें सभी प्राचीन, स्थानीय तथा अखिल रूसीय 'मिनायिस' (वर्षानुक्रमिक वर्णन) एक में संगृहीत हुए। इस समय 'गृह-विधान' लिखा गया जिसका विषय घरेलू तथा पारिवारिक जीवन के नियमों का उल्लेख था। इससे तत्कालीन पारिवारिक व्यवस्था तथा उससे संबंधित प्राचीन लोक-दृष्टि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

इस समय ऐतिहासिक लोक-गीतों की भी रचना हुई। विशेष रूप से ईवान भयंकर के युग की घटनाओं की—कज़ान पर अधिकार, साइबेरिया की विजय—की छाप इन ऐतिहासिक गीतों में प्रमुख रूप से मिलती है।

सत्रहवीं शती के प्रारम्भ में अत्यधिक सामाजिक महत्त्व की ऐतिहासिक घटनाएँ घटीं। इस शताब्दी के आरम्भ में किसानों की हलचल शुरू हुई जो बाद में (इवान बलोत्निकोव, स्तेपान राज़िन के नेतृत्व में) किसान युद्ध में परिणित हुई। इसी समय पोलैण्ड और स्वीडन की सेना ने देश पर आक्रमण किया। इन सब घटनाओं की अभिव्यक्ति ऐतिहासिक गीतों और कथाओं में मिलती है। 'सुन्दर रूसी भूमि की नयी कथा', 'मास्कोवीय राष्ट्र के नाश पर विलाप' आदि ऐसी ही रचनाएँ हैं।

सत्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध में साहित्य में कलात्मक प्रवृत्तियाँ लक्षित होने लगती हैं। साहित्य धीरे-धीरे चर्च के प्रभाव से मुक्त होकर ऐहिक रूप धारण करने लगता है। साहित्य में नये नायकों—किसान, मजदूरी आदमी, सौदागर आदि के प्रतिनिधियों—का प्रादुर्भाव होने लगता है। रूसी साहित्य अब पारलौकिक न रहकर ऐहिक बनने लगा।

ऐहिक जीवन से संबंधित ये कथाएँ इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध की मुख्य विशिष्टता है। परिवार में व्यक्ति के स्वजीवन-यापन के आत्म-निर्णय के अधिकार की समस्या तथा प्राचीन एवं नवीन पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण ज्लोचास्तिया के शोक और दुःख की कथा है। इसमें संपन्न परिवार के नवयुवक की चिन्ता है, क्योंकि वह पुरानी नैतिकता को छोड़कर नये ढंग से जीवन बिताना चाहता है और इसलिए दुःख भोगता है।

'फ्रोल स्कोबेयेव की कथा' में एक धूर्त की कथा है जो स्वयं ग़रीब है

और अमीर दयार की लड़की से शादी करने का षड्यन्त्र रचता है तथा उसमें सफल होता है।

इन दोनों कहानियों का चित्रण यथार्थवादी है और इसमें रूसी समाज के मध्य स्तर के रहन-सहन तथा नैतिकता आदि का अंकन हुआ है।

व्यंग्यात्मक कहानियों का वस्तु-विषय और भी अधिक कलात्मक है। इसका सबसे सुन्दर निदर्शन 'यर्शोविच की कथा' और 'शेम्याकिन की कचहरी की कथा' है। पहली कहानी में अन्योक्ति के रूप में अमीरों की धाँधली का चित्रण किया गया है जिसके विरुद्ध गरीब के लिए न्याय की आशा करना वृथा है। इसमें मनुष्य मछली के रूप में है। इसका वस्तु विषय मछलियों का मछली-संसार के स्वामी और बेईमान न्यायाधीशों के विरुद्ध संघर्ष और उन पर व्यंग्य है।

'शेम्याकिन की कचहरी' में उस युग के न्यायालयों की बेईमानी और रिश्वतखोरी की कथा कही गयी है। न्यायालय में एक गरीब रूमाल में लिपटा हुआ एक पत्थर न्यायाधीश को दिखाता है। न्यायाधीश इसे अच्छी रकम समझकर उसके पक्ष में फैसला करता है।

सत्रहवीं शती में रूसी साहित्य में नाट्य कृतियों का प्रादुर्भाव होता है। इस शती के उत्तरार्द्ध में रूस में पहला थियेटर स्थापित हुआ।

४ अठारहवीं शती

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रूसी साहित्य धीरे-धीरे धर्म तथा ईसाइयत के प्रभाव से मुक्त होने लगा। शिक्षा प्रसार, पश्चिम के साथ संबंध, जातीय संस्कृति के उत्थान आदि, सृजन विश्व तथा व्यक्ति के संबंध में इस साहित्य को नवीन दृष्टि प्रदान की और धर्म तथा धर्म की प्राचीन एवं संकीर्ण मनोवृत्ति से छुटकारा दिलाया। साहित्य अब सूक्ष्म धार्मिक समस्याओं में न उलझकर समाज, राष्ट्र तथा व्यक्ति से संबंधित वास्तविक प्रश्नों का अंकन करने लगा। रूसी साहित्य अब ऐहिक साहित्य बन गया। अठारहवीं शती के सन् तीस के वर्षों में साहित्य में 'क्लासिसिज्म' या शास्त्रवाद की नयी कलात्मक प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव हुआ। इसके साथ ही इस युग के महत्वपूर्ण लेखकों—रूमयान्त्सेव, फानवीज़िन, देर्ज़ाविन, रदीश्चेव आदि की सर्जना में यथार्थवादी प्रवृत्ति भी अंकुरित होती दिखाई पड़ रही है।

सामान्यतया अठारहवीं शती का रूसी साहित्य तीन भागों में बाँटा जाता है या उसके विकास की तीन मंजिलें लक्षित की जाती हैं। इस शताब्दी का प्रथम तृतीयांश—पीतर प्रथम के सुधारों का समय—रूसी साहित्य के प्राचीन से नवीन साहित्य की ओर संचरण का समय है। मध्य का तृतीयांश—सन् साठ के वर्ष—'क्लासिसिज्म' (शास्त्रवाद) की नयी साहित्यिक प्रवृत्ति के जन्म और विकास का युग है और इस शती का अंतिम तृतीयांश क्लासिसिज्म के संकट तथा साहित्य के क्लासिसिज्म से भावुकतावाद तथा यथार्थता की ओर विकसित होने का समय है।

प्रथम तृतीयांश का साहित्य

अठारहवीं शती का प्रथम तृतीयांश पीतर प्रथम के कार्यकलाप व निर्माण का युग है। इन वर्षों में साहित्य तथा संस्कृति दोनों में नये मोड़ प्रदर्शित हुए और साहित्य में अभिव्यक्ति के लिए नये वस्तु-विषयों को

चुना। साहित्य ने पीतर के सुधारों का समर्थन किया।

इस युग का महत्वपूर्ण लेखक फियोफान प्रकोपोविच है जो कवि लेखक नाटककार और पीतर के सुधारों का उत्साही समर्थक है। अपनी ट्रेजडी-कमेडी 'व्लादीमिर' में वह पीतर की प्रशंसा करता है विरोधियों की हँसी उड़ाता है और विज्ञान तथा शिक्षा का प्रचारक बनता है।

इस शती के आरम्भ में प्रेम के प्रगीतों का अच्छा विकास हुआ। इसके रंगमंच पर अब न केवल धार्मिक कथावस्तु वाले नाटकों का अभिनय होता था वरन् ऐसे ऐहिक नाटक प्रस्तुत किये जाने लगे जिनमें राजनीतिक जीवन की घटनाओं का अंकन होता था और सामाजिक रीति-नीति तथा रहन-सहन की भी झलक रहती थी।

क्लासिसिज़्म की स्थापना

इसी समय क्लासिसिज़्म का विकास हुआ जो कि यूरोप की क्लासिसिज़्म की सामान्य विशिष्टताओं से युक्त होने के साथ-साथ रूसी विशिष्ट परिस्थिति के फलस्वरूप कतिपय नयी विशेषताओं से समन्वित हुआ। अपनी उदात्त तथा भव्य शैली जटिल नियम और प्रबन्ध की स्थिर-निश्चित और अपरिवर्तनीय रूपयोजना से शास्त्रवाद का साहित्य राजनीति के निरंकुश आधिपत्य के आदर्श के अनुरूप पड़ता है और पूरा सज जाता है। यूनान तथा रोम की प्राचीन कला के प्रति अत्यधिक प्रेम तथा अनुराग ने इस प्रवृत्ति को जन्म दिया जिसने कृति में सुबोधता स्पष्टता सामंजस्य तथा नियमनिष्ठता की माँग की। इसके लोक-प्रिय होने का मुख्य कारण यह था कि चर्च तथा ईसाइयत की मनोदृष्टि की अपेक्षा इसका दृष्टिकोण कहीं अधिक प्रकाशपूर्ण आह्लादपूर्ण और उत्साहपूर्ण था।

क्लासिसिज़्म का सबसे बड़ा रूसी लेखक कन्तेमीर है जिसे बेलिन्स्की ने रूस का सर्वप्रथम ऐहिक कवि कहा और जो व्यंग्यों का बहुत बड़ा लेखक है। लमनोसोव के काव्य में शास्त्रवाद को सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मिली जो कि देश-भक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। इसी प्रकार सुमारोकोव इस प्रवृत्ति का बहुत बड़ा प्रतिनिधि माना जाता है। उसके दुःखान्त नाटक

बहुत विख्यात हुए। सुमारोकोव का नाम रूसी रंग-मंच के साथ जुड़ गया है।

क्लासिसिज्म का चरम उत्कर्ष इस शताब्दी के सबसे बड़े कवि देर्झाविन की रचनाओं में देखने को मिलता है। उन्हें अपने 'ओडों' से बड़ी ख्याति मिली (महारानी एकातेरिना के सम्मान में फेलित्सा, प्रधान मेश्चेर्स्की की मृत्यु पर)। इसी प्रकार उन्होंने व्यंग्यात्मक ओड (बड़ा आदमी, शासक और निर्णायक को) लिखे।

इस प्रकार देर्झाविन के पहले तक अठारहवीं शती के रूसी काव्य में प्रशंसात्मक 'ओड', धर्ममूलक भजनगीत और व्यंग्यात्मक 'ओड' की रचना हो गयी थी।

क्लासिसिज्म से भावुकतावाद और यथार्थ की ओर संक्रमण

अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध में नयी साहित्यिक प्रवृत्ति का विकास लक्षित होने लगा। यह प्रवृत्ति भावुकतावाद की थी। इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा अभिव्यंजक करमज़ीन है (रूसी यात्री का पत्र, गरीब लीज़ा)।

क्लासिसिज्म के समान भावुकतावाद की प्रवृत्ति भी यूरोपीय प्रवृत्ति थी और यह शास्त्रवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया रूप में शुरू हुई। इसमें सामान्य मनुष्यों की भावनाओं तथा अनुभूतियों की व्यंजना हुई। शास्त्रवाद के तर्क और बौद्धिकता की जगह भावुकतावाद के द्वारा भावना तथा भावावेग का समावेश हुआ और साधारण व्यक्तिगत घरेलू जीवन का चित्रण शुरू हुआ।

करमज़ीन ने जिस भावुकतावाद का प्रतिनिधित्व किया है उसमें किसानों के जीवन की प्रशंसा की गयी है, उसे आनन्दपूर्ण बताया गया है और किसान तथा ज़मींदार के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध की स्थापना चाही गयी है। उसके मतानुसार सभी व्यक्ति यहाँ तक कि किसान और दास भी प्रेम, पारिवारिक सुख तथा नैतिकता आदि का आनन्द उठा सकते हैं। करमज़ीन के किसान प्रसन्न हैं और अपने मालिक का 'मालिक-पिता' कहकर आदर करते हैं। करमज़ीन की कहानी 'गरीब लीज़ा' भावुकता

वादी कहानियों की प्रतिनिधि है जिसमें किसान की अच्छी लड़की लीज़ा को उच्च वर्ग का नवयुवक धोखा देता है। लेखक इस लड़की के प्रति पाठकों की सहानुभूति जगाता है और यह प्रकट करना चाहता है कि किसान भी प्रेम करना जानते हैं।

सामाजिक यथार्थता पर मुलम्मा चढ़ानेवाले इन लेखकों के भावुकतावाद के साथ-साथ देर्जाविन के व्यंग्य में क्रीलोव के नाटक और लेखों में फ़ानवीज़िन की कृतियों में और रदीश्चेव की सर्जना में अठारहवीं शती के अन्त के रूसी साहित्य में यथार्थवाद की परंपरा का भी सूत्रपात एवम् विकास हुआ।

अठारहवीं शती के मध्य से रूसी साहित्य विदेशों में प्रसिद्ध होने लगा। कान्तेमीर के व्यंग्य और सुमारोकोव के करुण नाटक फ्रांस एवं इंग्लैंड में प्रकाशित हुए और बाद में लमनोसोव की कविताएँ भी। उन्नीसवीं शती के आरम्भ में करमज़ीन की बहुत-सी कहानियों और उसके इतिहास का अनुवाद हुआ। सन् १८१२ में रूसी कविताओं का फ्रेंच संग्रह छपा जिसमें कान्तेमीर, देर्जाविन और परवर्ती कवियों की कृतियाँ थीं। इस प्रकार रूसी साहित्य विश्व-साहित्य के प्रांगण में पहुँच गया।

५ मिखाइल वसील्येविच लमनोसोव

[सन् १७११-१७६५]

लमनोसोव की गिनती अठारहवीं सदी के महान् व्यक्तियों में है। कला तथा विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रकट होनेवाली उसकी असाधारण प्रतिभा ने रूस के सांस्कृतिक इतिहास में नवीन पृष्ठ जोड़ दिया।

लमनोसोव का जन्म ८ नवम्बर सन् १७११ में समुद्र-तट के एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उसका बचपन बड़े कष्ट में बीता। आठ वर्ष की अवस्था में वह मातृविहीन हो गया। दस वर्ष की अवस्था में उसने परिवार के कठोर श्रमपूर्ण जीवन में हाथ बटाना शुरू कर दिया।

फिर भी उसमें असाधारण प्रतिभा थी और पढ़ने की लगन थी। इसी से पिता के विरुद्ध होने पर भी वह घर छोड़कर मास्को पढ़ने चला गया। पिता ने उसकी मदद करने से इन्कार कर दिया।

वह स्लावोनिक ग्रीक-लैटिन अकादमी में दाखिल हो गया जहाँ उसने विज्ञान, दर्शन और साहित्य पढ़ा। अत्यधिक प्रतिभासंपन्न होने के कारण अकेडमी ने उसे पीतर्सबुर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ने को भेजा और बाद में गणित, भौतिक तथा रसायन शास्त्र के विशद अध्ययन के लिए विदेश (मारबुर्ग) भेजा। १७४१ में स्वदेश वापस लौटने पर वह विज्ञान अकेडमी के विश्वविद्यालय में पहले प्रोफेसर का सहायक बनाया गया और बाद में प्रोफेसर नियुक्त हुआ।

विज्ञान के क्षेत्र (भौतिक शास्त्र, रसायन, ज्योतिर्विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, धातुविज्ञान आदि) में विशद संलग्न रहने पर भी उसने भाषा तथा भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक तथा महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इसके साथ ही उसकी काव्यमयी तथा भावमयी प्रतिभा सदा जागरूक रही। उसने कविताएँ लिखीं, ग्रीक साहित्य से अनुवाद किया और व्याकरण तथा छंदों के विषय में महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किये।

मास्को विश्वविद्यालय के संगठन का विचार उसने कार्यों के सम्मुख रखा। लमोनासोव मास्को विश्वविद्यालय का संस्थापक है।

रूसी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में उसका कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। रूसी छंदों के बारे में उसने लिखा कि रूसी भाषा की प्रकृति ऐसी है कि रूसी कविता के चरणों में न केवल अक्षरों की समान संख्या होनी चाहिए वरन् स्वराघात युक्त और स्वराघात हीन अक्षरों का ठीक-ठीक अन्तःपरिवर्तन होना चाहिए।

सन् १७४४ में उसने 'काव्य-शास्त्र' की पुस्तक लिखी जिसमें ग्रीक तथा लैटिन के अनुवाद के साथ-साथ उसने स्वरचित उदाहरण भी रखे। यह शैली तथा भाषण कला संबंधित सहायक पुस्तक थी।

आगे चलकर (सन् १७५७ में) उसने रूसी भाषा में चर्चस्लावानिक का उपयोग किया जिसमें उसने तीन शैलियों का अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उसके मत से वीर काव्य तथा गंभीर 'ओड' उच्च शैली से संबंधित हैं और वहाँ चर्चस्लावानिक शब्दों का बहुलता से उपयोग हो सकता है।

दूसरी या मध्य शैली के अन्तर्गत ट्रेजेडी व्यंग्य एलेजी आदि हैं जिनकी भाषा अधिकांश में रूसी होनी चाहिए किन्तु वहाँ थोड़ा-सा परन्तु अत्यधिक सावधानी से साथ चर्चस्लावानिक का प्रयोग किया जा सकता है।

तीसरी या निम्न शैली के अन्तर्गत कमेडी एपिग्राम तथा गद्यात्मक पत्र आते हैं, जिसमें स्लाववाद का कदापि व्यवहार न होना चाहिए।

लमनोसाव की 'तीन शैली' के प्रतिपादन का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि साहित्यिक रूसी भाषा सजीव बोल-चाल की भाषा के निकट आने लगी। चर्चस्लावानिक शब्दों का प्रयोग कम हुआ। साहित्यिक रूसी धीरे-धीरे स्लाववाद से मुक्त होने लगी और जनभाषा के संपर्क से उसकी समृद्धि बढ़ी।

लमनोसाव रूसी भाषा से विदेशी शब्दों को दूर करने का सदा आंदोलन करता रहा वह उनकी जगह रूसी शब्द रखता था या नये शब्द गढ़ता था।

भाषा विज्ञान के क्षेत्र में उनका 'व्याकरण' अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है। इसमें उन्होंने जो व्याकरण-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली दी है वह इतनी सफल है कि समकालीन व्याकरणों में भी उसका उपयोग होता रहा है।

रूसी भाषा में संकलित उनकी कृतियों तथा कार्यकलापों ने एक प्रकार से साहित्यिक रूसी भाषा को जनात्मकता की ओर उन्मुख किया जिसे बाद में देर्झाविन, फोनवीज़िन, क्रीलोव आदि ने इस दिशा में आगे बढ़ाया। किंतु यह कार्य पूर्णतः पुश्किन द्वारा सम्पन्न हुआ। जनजीवन से सम्पृक्त कर पुश्किन ने इसे पूरा पूरा जनात्मक रूप दे दिया।

लमनोसोव की काव्यात्मक सर्जना का रूप विविधात्मक है। उन्होंने गंभीर प्रगीतात्मक ओड लिखे। और प्रबन्धात्मक काव्य की सर्जना की ओर उन्मुख हुए। एपिग्राम तथा व्यंग्य की रचना की। इन सब में वह जनता, स्वदेश और शिक्षा के बारे में सोचता है। उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ देश-भक्ति से परिपूर्ण हैं। इनके साथ बड़ी-बड़ी घटनाएँ, विज्ञान तथा परिश्रम भी उनके काव्य के प्रिय विषय हैं। इस संबंध में उनका सबसे प्रसिद्ध ओड साम्राज्ञी एलिज़ाबेथ पेत्रोव्ना के राज्याभिषेक पर लिखा है जिसमें रूस में विज्ञान, रूस की प्राकृतिक समृद्धि के उद्घाटन तथा अध्ययन के लिए भविष्य के विद्वानों का आह्वान, जन्मभूमि की महत्ता तथा देश के उज्ज्वल भविष्य की भावना आदि के संकेत मिलते हैं।

अत्यन्त सामान्य परिवार का यह बालक लमनोसोव अपनी प्रतिभा, अध्यवसाय तथा जन हितकारी कार्यकलाप के कारण अपने देश का यशस्वी पुत्र बन गया। उनकी काव्यात्मक कृतियाँ रूसी साहित्य के इतिहास में प्रथम बार रूसी राष्ट्रवादी चेतना के रूप में प्रकट हुईं और उनकी सर्जना में अभिव्यक्त देशभक्ति के भाव को अठारहवीं सदी के रूसी साहित्य के रादीश्चेव, दर्झाविन जैसे श्रेष्ठ प्रतिनिधियों ने ग्रहण किया और उसे व्यापकता प्रदान की।

पुश्किन ने इन्हें अपना प्रथम विश्वविद्यालय कहा और बेलिन्स्की ने इन्हें रूसी साहित्य का पिता तथा रूसी साहित्य का पीटर महान् कहा।

१ देनिस इवानोविच फानवीजिन

[१७४५–१७९२]

(फानवीजिन व्यंग्यकार नाटककार और निबन्ध-लेखक है। उसकी गिनती अठारहवीं शती के महान् लेखकों में है।)

बचपन और शिक्षा

फानवीजिन का जन्म १४ अप्रैल सन् १७४५ में हुआ। नाटक और रंगमंच के प्रति उसके हृदय में आकर्षण मास्को विश्वविद्यालय के 'जिमनेजियम' (पाठशाला) में पढ़ते हुए ही जाग गया था। सन् १७६० में विश्वविद्यालय का डाइरेक्टर इस 'जिमनेजियम' के सबसे अच्छे विद्यार्थियों को पीटरबुर्ग ले गया। फानवीजिन भी इन्हीं में था। वहाँ उसे लमनोसोव से मिलाया गया। उसे वहाँ के राजप्रासादों को देखने का अवसर मिला तथा उसने राजकीय अभिनय देखा। अभिनय तथा कलाकारों की बातचीत ने रंगमंच तथा नाटकों के प्रति उसके बाल-हृदय में बड़ी उत्सुकता तथा रुचि उत्पन्न कर दी।

पाठशाला के बाद मास्को विश्वविद्यालय में दाखिल होने पर वह अभिनयों मे भाग लेता रहा। वह विश्वविद्यालय के पत्र 'कामकारी मनोरंजन' का सम्पादक हो गया। पढ़ने के साथ वह साहित्यिक अनुवादों में भी लगा।

व्यंग्य की प्रवृत्ति उसमें बहुत जल्दी लक्षित हुई। अपनी व्यंग्यात्मक कृतियों में उसने बड़े साहस से अभिजात वर्ग तथा धार्मिक समाज की रीतियों की हँसी उड़ायी है तथा आलोचना की है। उसकी व्यंग्यात्मक कविता 'अपने सेवकों शुमीलोव वान्का और पेत्रूश्का को सन्देश' बहुत प्रसिद्ध हुई। फानवीजिन अपने साथ बराबर घूमनेवाले इन सेवकों से पूछता है कि 'जीवन कैसा है ?' ये सेवक जो कि अपने मालिक के साथ बार के प्रासादों तथा बड़े-बड़े लोगों के घरों को देख चुके हैं जवाब देते हैं कि

लोगों का जीवन निरर्थक तथा खोखला है। सब एक दूसरे को धोखा देते हैं और अपनी जेबें भरने की कोशिश में लगे हैं। धर्म का ढोंग जनता को धोखा देता है। दरबार के भीतर सामन्तों को और 'वफ़ादार' प्रजा को धोखा देना चाहते हैं। इस उत्तर के माध्यम से फानवीजिन अपने समय के समाज का बड़ा व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है।

कमेडी ब्रिगेडियर

फानवीजिन की रचना का महत्त्वपूर्ण चरण उसकी 'कमेडी ब्रिगेडियर' है। यह पहली रूसी कमेडी है। इसमें लेखक ने पुरानी पीढ़ी की अज्ञानता और नवीन पीढ़ी के बाहरी यूरोपीय ढंग, दिखावे तथा नासमझियों की खबर ली है। इसका मुख्य पात्र प्रत्येक फ्रांसीसी वस्तु के सामने सिर झुकाता है और उनकी अंधी उपासना करता है।

इस कमेडी का अभिनय हुआ और इसे बहुत बड़ी सफलता मिली। इसके अभिनय के बाद उसकी पानिन से मित्रता हुई जो कि उस समय का लिबरल राजनीतिक कार्यकर्ता था। पानिन लिबरल अभिजात-विरोधी दल का नेता था जो कि दास संबंधी अधिकारों तथा निरंकुशता को सीमित करना चाहता था। पानिन के संसर्ग से फानवीजिन में भी उदार राजनीतिक विचारों का विकास हुआ और वह दरबारी रीति-रिवाजों, अमीरों आदि की बराबर व्यंग्यात्मक आलोचना करता रहा। पानिन के साथ फानवीजिन ने राजनीतिक लेख (रूस में हर प्रकार के शासकीय संचालन का अन्त) लिखा और उसमें अत्याचार, पक्षपात तथा दास-प्रथा की नृशंसता का दिग्दर्शन कराया।

विदेश यात्रा

फानवीजिन ने फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि यूरोप के कई देशों की यात्रा की और अपनी इस विदेश-यात्रा के बीच उसने जो कुछ देखा उसका पत्रों में वर्णन किया। इन पत्रों में उसने उन देशों में जो कुछ अच्छा देखा उसका उल्लेख किया और रूसी जीवन की इन देशों के जीवन के साथ तुलना की। साथ ही रूस के अभिजात वर्ग द्वारा प्रत्येक विदेशी वस्तु की प्रशंसा और उसके प्रति मानसिक गुलामी की आलोचना की। इस समय

उसने कई व्यंग्यात्मक लेख ('रूसी अभिजात वर्ग का अनुभव' 'अभिजात वर्ग का सामान्य व्याकरण' 'प्रश्न') लिखे जिनमें अभिजात वर्ग तथा यकतरीना के प्रिय पात्रों तथा दरबार की व्यंग्यात्मक आलोचना की गयी थी।

उसकी व्यंग्यात्मक कृतियों से साम्राज्ञी यकतेरीना द्वितीय बड़ी क्रुद्ध हुई और उसने उसका आगे छपना बन्द करा दिया।

फानवीज़िन की सबसे महत्वपूर्ण और विख्यात कृति उसकी कमेडी 'नेदरस्ल' है। नेदरस्ल का रूसी में अर्थ है जिसका विकास न हुआ हो अर्थात् जो परम 'मूर्ख' है। इसकी रचना में उसने बारह वर्ष लगाये।

कमेडी 'नेदरस्ल' (मूर्ख)

इस कामेडी में उसने उस युग की अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्याओं को उठाया है जिनमें से अत्यन्त विषम समस्याएँ हैं ज़मींदारों का अपने अधिकारों का दुरुपयोग, दास-किसानों पर अत्याचार, अभिजात वर्ग के नवयुवकों में उपयुक्त शिक्षा का अभाव जिसके फलस्वरूप उनका जीवन अत्यन्त दूषित हो रहा है और उनके बच्चे मूर्ख, अशिष्ट, आलसी तथा आवारा हो रहे हैं।

मित्रोफ़ान

इस कमेडी के पात्र 'मित्रोफ़ानुश्का' के रूप में ज़मींदारों के अशिक्षित तथा अशिष्ट बालकों का चित्रण किया गया है जिनको या तो शिक्षा ही नहीं दी जाती क्योंकि पुराने ख्याल के लोग ज़मींदारों के बच्चों के लिए शिक्षा अनावश्यक समझते हैं और यदि शिक्षा का प्रबंध भी किया जाता है तो उनके शिक्षक उपयुक्त नहीं होते और उन बच्चों का ज्ञान विकसित नहीं होता। वे मूर्ख, आलसी और अशिष्ट बन रहते हैं। मित्रोफ़ान की सोलह वर्ष की उम्र है और उसने कुछ भी न सीखा। उसे केवल खाने और कबूतरबाज़ी का शौक़ है। उसमें बहुत अहम्मन्यता है और यह स्पष्ट है कि आगे चलकर वह भी अत्याचारी ही बनेगा। मित्रोफ़ान का नाम लाड़-प्यार में बिगड़े हुए मूर्ख अशिष्ट बालक का पर्याय बन गया।

प्रस्ताकोवा

प्रस्ताकोवा और स्कोतीनिन ठेठ जमींदारों के प्रतिनिधि हैं। प्रस्ताकोवा (शाब्दिक अर्थ है बज्रमूर्खा) इस नाटक की मुख्य पात्र है। वह स्वयं अशिक्षित है और अपने दास किसानों के प्रति अत्यन्त कठोर है। वह जमींदारों के बच्चों के लिए शिक्षा अनावश्यक समझती है। फिर भी वह अपने लड़के 'मित्रोफ़ान' को बहुत चाहती है और उसके लिए शिक्षा का प्रबंध भी करती है। किन्तु अनुपयुक्त शिक्षक वातावरण तथा लाड़-दुलार में वह कुछ भी न पढ़ सका और धृष्ट तथा निकम्मा मूर्ख ही बना रहा। अपने दास किसानों पर अत्यधिक अत्याचार करने के कारण वह अधिकार-वंचित कर दी जाती है। इस अशिक्षा का कुपरिणाम उसे स्वयं भोगना पड़ता है। जब दुःख में अभिभूत सांत्वना की आशा में वह अपने पुत्र की ओर मुड़ती है जिसे कि वह बहुत चाहती है तो वह उसे धृष्टता से धक्का देकर उससे विमुख हो जाता है।

स्कोतीनिन

स्कोतीनिन (शाब्दिक अर्थ पशु या ढोर) भी इसी प्रकार का जमींदार है जो अत्याचारी और धूर्त दोनों है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता सूअरों से अत्यधिक प्रेम है। वह सोफ़िया से शादी इसलिए नहीं करना चाहता है कि वह उसे अच्छी लगती है, वरन् इसलिए कि उसके गाँव में सूअरों का पालन अच्छी तरह होता है। इस पात्र के माध्यम से फानवीज़िन यह प्रकट करना चाहता है कि दास-अधिकार ने इन शिक्षाविहीन जमींदारों को बिलकुल पशु बना दिया है।

सत्पात्र

इस नाटक में सत्पात्र भी हैं यद्यपि उनका चित्रण उतना स्वाभाविक तथा चटकीला नहीं हुआ है। ये हैं स्तारोदुम (प्रौढ़ विचार) प्राव्दिन (सत्य) मिलोन (कृपालु) त्सिफ़ीरकिन (ईमानदार)। फिर भी इनके माध्यम से युग की समस्याओं पर नाटककार के विचार व्यक्त हुए हैं और उस युग की प्रगतिशील विचारधारा का समावेश किया गया है और यह

बताया गया है कि वास्तव में जमींदारों का जीवन कैसा होना चाहिए। उस युग के प्रगतिशील लोगों के बीच शिक्षा के संबंध में जमींदारों के अत्याचार के संबंध में तथा ईमानदारी के साथ देशसेवा की आवश्यकता के संबंध में 'स्तारोदुम' के विचारों को बड़ा समर्थन प्राप्त हुआ। इस प्रकार अभिजात वर्ग के या उच्च समाज के प्रगतिशील वर्ग का चित्रण कर फानवीज़िन ने अशिक्षित अभिजात जमींदार की निरंकुशता के विरुद्ध इसी समाज के प्रगतिशील वर्ग द्वारा संचालित संघर्ष का आभास दिया और उसका समर्थन किया।

उच्च वर्ग की तीखी आलोचना तथा नाटक के दासविरोधी दृष्टिकोण एवं गतिविधि के कारण फानवीज़िन की इस कमेडी का रूप तक राजनीतिक व्यंग्य का हो गया। स्कोतीनिन के समान जमींदार पात्रों के चित्रण में व्यंग्यात्मक अतिशयोक्ति का उपयोग किया गया है और दास-प्रथा की कठोरताओं का व्यापक चित्र प्रस्तुत किया गया है जिस पर हँसी भी आती है और (देश की इस पतित स्थिति का ध्यान कर) दुख भी होता है।

'नेदरस्ल' रूस में यथार्थवादी कमेडी के विकास के इतिहास की महत्वपूर्ण मंजिल है। रूसी रंग-मंच के विकास में भी इसका बड़ा महत्व है।

'नेदरस्ल' अठारहवीं शती की श्रेष्ठ कमेडी है। इसी की परंपरा में आगे चलकर ग्रिबोयेदोव की कमेडी 'चतुराई से दु ख' का विकास हुआ और बाद में गोगोल का 'इंस्पेक्टर' लिखा गया और बाद में अस्त्रोव्स्की के नाटक प्रस्तुत किये गये।

दासप्रथा, अशिक्षा आदि का विरोध करने के कारण तथा प्रगतिशील विचारधारा का पक्ष लेने के कारण पुश्किन ने उसे 'स्वतंत्रता का बन्धु' कहा है।

७ अलेक्सान्द्र निकोलाएविच रदीश्चेव

[१७४९-१८०२]

अलेक्सान्द्र निकोलाएविच रदीश्चेव पहला रूसी क्रांतिकारी है जिसने जनता को दासता के अभिशाप से मुक्त करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया और क्रांति का आवाहन किया।

रदीश्चेव का जन्म ३१ अगस्त सन् १७४९ में हुआ। सात वर्ष की अवस्था में वह शिक्षा पाने के लिए मास्को भेज दिया गया। १७६६ में वह कानून की शिक्षा के लिए लाइपज़िग भेजा गया। इसके साथ ही उसने आयुर्वेद विज्ञान तथा साहित्य का अध्ययन किया।

साहित्यिक कार्य-कलाप

रूस वापस आने पर वह सिनेट के दफ़्तर में काम करने लगा। नौकरी करते हुए उसे शासन की अन्दरूनी कार्रवाइयों को निकट से देखने का मौक़ा मिला। उसे पता लगा कि किसानों का असन्तोष कितनी कठोरता से दबाया जा रहा है। दास-दासियों को ज़मींदार कितनी यंत्रणा देते हैं और साम्राज्ञी एकातेरीना द्वितीय किस निर्ममता से स्वतंत्रता की भावना को कुचल रही है। इसके साथ ही रदीश्चेव नोविकोव के व्यंग्यात्मक पत्र में सहयोग देने लगा और स्वतंत्रता के विचारों का प्रचार करने लगा।

रदीश्चेव की क्रान्तिकारी जीवन-दृष्टि पर पुगाचोव के नेतृत्व में सम्पन्न किसान-विद्रोह का बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा। रदीश्चेव को इस विद्रोह से संबंधित सारी सामग्री मिल सकी और वह समझ गया कि ज़मींदार अपनी इच्छा से किसानों को दासता से कभी मुक्त न करेंगे और ज़मींदार तथा निरंकुश शासक जनता का शोषण और कुचलने में एक हैं तथा दासता का अभिशाप केवल जनक्रान्ति द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है।

सन् अस्सी में वर्षों से रदीश्चेव दार्शनिक पत्रकार तथा लेखक के रूप में सामने आया और अपनी कृतियों में किसान-विद्रोह के विचारों का प्रचार करने लगा। कलात्मक तथा राजनीतिक-सामाजिक दृष्टि से उसकी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा विख्यात कृतियाँ 'स्वतन्त्रता' (ओड) तथा 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा' हैं।

स्वतन्त्रता

'स्वतन्त्रता' कविता में कवि रदीश्चेव क्रान्ति का आवाहन कर रहा है तथा उसकी प्रशंसा कर रहा है। इसमें ज़ार के विरुद्ध जन-विद्रोह का विचार प्रस्तुत किया है। यह ओड' रूस की पहली क्रान्तिकारी कविता है।

'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा'

१७९० में रदीश्चेव ने 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा' छपायी। सम्राज्ञी एकातेरिना द्वितीय ने इसे पढ़कर कहा कि इसका लेखक पुगाचोव से भी अधिक खतरनाक विद्रोही है। रदीश्चेव को पीतर पावलोव्स्क के किले में बन्द कर दिया गया और उसे मृत्यु की सज़ा सुनायी गयी। बाद में जनमत से भयभीत होकर मृत्युदण्ड साइबेरिया-निर्वासन में बदल दिया गया। एकातेरिना ने आदेश दिया कि यह पुस्तक कहीं भी न बिके जिससे कि लेखक का नाम विस्मृत हो जाय। किन्तु जनता ने उसे और भी दूने उत्साह से अपनाया और केवल इस पुस्तक को पढ़ने के लिए लोगों ने बहुत अधिक पैसा खर्च किया।

रदीश्चेव जानता था कि यदि वह क्रान्तिकारी विचारों से युक्त कोई पुस्तक लिखता तो वह रूस में न छप सकेगी। इसलिए उसने अपनी कृति को यात्रा-पुस्तक का रूप दिया और उसके विभिन्न अध्यायों का पीतरबुर्ग से मास्को के बीच पड़नेवाले स्टेशनों का नाम दिया। करमज़ीन की यात्रा-पुस्तक 'रूसी यात्री के पत्र' इसके पहले छप चुकी थी।

किन्तु रदीश्चेव की यह कृति सामान्य यात्रा विवरण नहीं है जिसमें कि लेखक प्राय: स्थानविशेष का प्राकृतिक सौन्दर्य चित्रित किया करते हैं। इसमें जनता के दुःख तथा पीड़न का चित्र है। ज़मींदारों की मनमानी का अंकन है तथा रूस के निरंकुश शासन की बुराइयों का चित्रण है। इसमें

दास-किसानों के कठोर परिश्रम, दरिद्रता और भूख का तथा शाही दरबार में उच्चाधिकारियों के छल-कपट, खुशामद, झूठ, बेईमानी आदि का नग्न चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार इस रचना में रदीश्चेव ने कई महत्वपूर्ण प्रश्न—जमींदारों तथा किसानों के पारस्परिक सम्बन्ध, ज़ार तथा जनता के बीच का संघर्ष, नैतिकता, शिक्षा आदि की समस्याएँ—उठाये हैं जिन्होंने रूसी समाज के प्रगतिशील लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। रदीश्चेव की इस कृति में अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध के रूसी समाज का जीवन प्रस्तुत किया गया है और उसकी बुराइयों का दिग्दर्शन कराया गया है तथा रूस की दुरवस्था के मूल, निरंकुश शासन पर निर्मम प्रहार किया गया है। लेखक निरंकुशता को गैरकानूनी व्यवस्था बताता है और कहता है कि इसके बीच 'दासता, अन्याय, पीड़न तथा मार-काट' फलते-फूलते हैं। रदीश्चेव का विश्वास है कि ऐसी व्यवस्था अधिक समय तक नहीं टिक सकती और इसका अन्त करना अत्यावश्यक है। रदीश्चेव इसी से क्रांति के लिए रूसी जनता का आवाहन करता है।

रदीश्चेव और उसकी कृतियों का समग्र प्रगतिशील रूसी साहित्य पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा है। इससे प्रेरणा पाकर प्रियपदन ने अपनी विख्यात कविता लिखी। रदीश्चेव के विचारों का रीलेयेव, पुश्किन, लेरमन्तोव आदि की रचना पर प्रभाव है और क्रान्तिकारी दिसम्ब्रिस्टों के निरंकुश शासन को पलटने का प्रयत्न भी इसी से अनुप्राणित था।

दास-प्रथा के बीच तड़पती हुई रूसी जनता के जीवन का यथार्थ अंकन प्रस्तुत कर रदीश्चेव ने रूसी साहित्य के विकास की नयी दिशा निर्धारित की। यह नयी दिशा आलोचनात्मक यथार्थवाद की है।

एकातेरिना की मृत्यु के बाद उसे निर्वासन से वापस लौटने की अनुमति मिली और वह नियम सुधार के आयोग (कमीशन) में नियुक्त किया गया। कमीशन में काम करते हुए उसने किसानों की स्थिति सुधारने का प्रयत्न किया, इस कारण जमींदार उसके खिलाफ़ हो गये और उसके विरुद्ध कारवाई करने लगे। दूसरी बार फिर निर्वासन की संभावना पर उसने ११ सितम्बर १८०२ में ज़हर खा लिया और उसकी मृत्यु हो गयी।

८ उन्नीसवीं शती

दिकाब्रिस्टों का आन्दोलन और उन्नीसवीं शती के पूर्वार्ध के रूसी साहित्य में उनके विचारों की अभिव्यक्ति।

प्रगतिशील रूसी साहित्य का विकास स्वतन्त्रता आंदोलन के विकास के साथ बड़ घनिष्ठ रूप से संबंधित रहा है। रूस के स्वतन्त्रता आंदोलन की जो तीन मंजिलें लेनिन द्वारा निर्धारित की गयी हैं, वे हैं प्रथमतः अभिजात वर्ग का आंदोलन (१८ ५ से १८२७) द्वितीय बुर्जुआ आंदोलन (१८६१ से १८९५) और तृतीय प्रोलितारियत या सर्वहारा वर्ग का आंदोलन।

अभिजात वर्ग का आंदोलन रूस के निरंकुश शासन के विरुद्ध प्रथम क्रांतिकारी राजनीतिक संघर्ष था और इसी में उसका महत्त्व है। निरंकुशता तथा दासप्रथा के विरुद्ध संचालित इस क्रांतिकारी संघर्ष का मूल रूसी राष्ट्रीय चेतना थी जिसे कि सन १८१२ के (नैपोलियन से) युद्ध ने जगाया और विकसित किया।

सन् १८१२ के युद्ध ने रूसी जनता की राष्ट्रीय भावना को और भी पक्का बना दिया। इस युद्ध म रूसी जनता न केवल विजयिनी हुई वरन् उसने दूसरे देशों की जनता को नैपोलियन की पराधीनता से मुक्त किया। फिर भी सबसे बड़ी विषमता यह थी कि अन्य देशों को नैपोलियन के अधिकार स मुक्ति दिलानेवाली रूसी जनता स्वयं जार के निरंकुश शासन म तड़प रही थी। यह दासता के बन्धनों में जकड़ी हुई थी और राजनीतिक स्वाधीनता से वंचित थी।

जमींदार तथा शासक वर्ग की मनमानी तथा दास-किसान-अधिकारों के विरुद्ध जनता का असंतोष नैपोलियन-युद्ध के बाद किसान-विद्रोहों के रूप में प्रकट हुआ किन्तु यह अचेतन विस्फोट के रूप में था। दासाधिकार तथा निरंकुशता के विरुद्ध पहला चेतन संघर्ष उन लोगों का था जो कि

अभिजात वर्ग के चिन्तनशील तथा प्रगतिशील पक्ष के प्रतिनिधि थे। इस पक्ष को देश के राजनीतिक तथा आर्थिक निम्न स्तर का स्पष्ट ज्ञान था और वह अच्छी तरह समझता था कि दासाधिकार तथा निरंकुशता देश के विकास के सबसे बड़े अवरोध हैं। फलतः उन्होंने शासन की निरंकुशता और सामन्तवादी दासाधिकारी स्तर के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया।

सन् १८१२ के युद्ध द्वारा प्रबुद्ध राष्ट्रीय चेतना के एवं उद्वेलित वातावरण के बीच रूस के स्वतन्त्रता आन्दोलन का जन्म और विकास हुआ।

दिकाब्रिस्टों की खुफ़िया सभा

अभिजात वर्ग के क्रान्तिकारियों ने इस युद्ध के बाद शीघ्र ही खुफ़िया संगठन शुरू किया। उनके इस पहले संगठन का नाम पितृभूमि के सच्चे और वफ़ादार वर्गों का संघ' था। सन् १८१६ में पीटर्सबुर्ग में 'रक्षा-समिति' बनी। १८१८ में 'समृद्धि संघ' बना। इसके टूटने के बाद तुलचिना में 'दक्षिणी सभा' और पीटर्सबुर्ग में 'उत्तरी सभा' बनी।

दिकाब्रिस्ट निरंकुशता तथा दासाधिकार का अन्त करना चाहते थे और उसकी जगह नयी प्रगतिशील व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे। 'दक्षिणी सभा' रूस में रिपब्लिक स्थापित करना चाहती थी किन्तु 'उत्तरी सभा' राजा के अधिकारों को नियम द्वारा सीमित करना चाहती थी। फिर भी ये दिकाब्रिस्ट जनता की दासाधिकार-विरोधी भावना को प्रतिबिम्बित करते हुए भी जनता से दूर थे। उनका यह संघर्ष जन-आन्दोलन न था। इसी से उनकी क्रान्ति में व्यापकता का अभाव था और वह अत्यन्त सीमित थी।

१४ दिसम्बर १८२५ में दिकाब्रिस्टों ने पीटर्सबुर्ग में सशस्त्र क्रान्ति शुरू की जिसमें उनकी पराजय हुई। रीलेयेव, पेस्तेल, मुराव्योव-अपोस्तोल, काखोव्स्की, बेस्तूजेव र्‍यूमिन जैसे प्रधान दिकाब्रिस्टों को मृत्यु-दंड मिला और सौ से अधिक दिकाब्रिस्ट साइबेरिया निर्वासित कर दिये गये।

दिकाब्रिस्टों के विचारों की साहित्यकारों की सर्जना में अभिव्यक्ति

यद्यपि दिकाब्रिस्टों की पराजय हुई और जारशाही ने उनका क्रूरता से दमन किया किन्तु उनके विचार किसी भी तरह दबाये न जा सके। तत्कालीन युग के प्रगतिशील साहित्यकारों ने उनके स्वतन्त्रताप्रेमी और निरंकुशता तथा दासता-विरोधी विचारों का स्वागत किया और उनको कलात्मक अभिव्यक्ति दी। ऐसे लेखकों में पुश्किन, रीलेयेव, ग्रिबोयेदोव आदि मुख्य हैं।

पुश्किन यद्यपि दिकाब्रिस्टों की गुप्त सभा का सदस्य न था फिर भी उसका उनके साथ घनिष्ठ संबंध था। पुश्किन के प्रगीत मुक्तकों में दिकाब्रिस्टों के विचारों—क्रान्तिकारी देशभक्ति, स्वतन्त्रता के आह्वान, दासाधिकार तथा अत्याचार के विरोध की पूरी पूरी अभिव्यक्ति मिलती है और उसकी प्रौढ़ कृतियों में जन-जीवन के साथ पूरी घनिष्ठता है तथा जनसंपर्क का अभाव नहीं है जो दिकाब्रिस्टों की लोकदृष्टि की सबसे बड़ी कमी थी। दिकाब्रिस्टों के विचारों से भिन्न पुश्किन की सर्जना का लरमेन्तोव तथा गोगल की लोक-दृष्टि की रचना में बहुत बड़ा हाथ है।

पुश्किन के समान ग्रिबोयेदोव की भी दिकाब्रिस्टों के साथ बड़ी मित्रता थी। अपने विचारों के प्रचार के लिए दिकाब्रिस्टों ने उसकी कमदी 'चतुराई से दुःख' का व्यापक उपयोग किया क्योंकि ग्रिबोयेदोव ने इसमें दासाधिकारी स्तर पर व्यंग्य किया था और इसके विरुद्ध संघर्ष करने का संकेत दिया था। इसका मुख्य नायक चात्स्की दिकाब्रिस्टों के विचारों का अभिवक्ता है।

रीलेयेव 'उत्तरी सभा' का नेता था। निरंकुशता पर उसका पहला कुठाराघात उसका व्यंग्यात्मक ओड 'प्रिय पात्र को' था। इसमें उसने जार के प्रिय पात्र उसके अत्यन्त प्रतिक्रियावादी मंत्री अरकचेयेव की कटु व्यंग्यपूर्ण आलोचना की थी। रीलेयेव ने ऐतिहासिक विषयों पर कई कविताएँ लिखी जिनको उसने विचार कहा। इनमें से 'एरमाक की मृत्यु' लोकगीत बन गया और 'इवान सुसानिन' से प्रेरणा पाकर ग्लीन्का ने 'इवान सुसानिन' नाम का आपेरा बनाया। उसके काव्य 'नालि-

नाटकों में विदेशी पराधीनता के विरुद्ध यूक्रेन के देशभक्त नागरिकों का संघर्ष दिखाया गया है। इनके अतिरिक्त नागरिकता की उच्च भावना से पूर्ण उसके कई प्रगीत मुक्तक हैं। उसने लोकगीतों के आदर्श पर कतिपय गीतों की भी रचना की।

दिकाब्रिस्टों के विचारों की सबसे अधिक कलात्मक अभिव्यक्ति उसकी कविता 'नागरिक' में हुई है जिसे उसने दिकाब्रिस्ट क्रांति के उपारम्भ पर लिखा था। इसमें उसने निरंकुशता के विरुद्ध तथा व्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष का आह्वान किया है। दिकाब्रिस्टों के विचारानुसार साहित्य का काम नागरिकों को शिक्षा देना है और उनमें उच्च भावनाएँ जगाना है। रील्येव ने लिखा "मैं कवि नहीं नागरिक हूँ।" क्रांतिकारी देश-भक्ति, स्वतन्त्रता के आह्वान, निरंकुशता की आलोचना आदि को दिकाब्रिस्टों के गद्य तथा पद्य में पूरी अभिव्यक्ति मिलती है। इससे उन्नीसवीं शती के सन् बीस के वर्षों के उन अन्य प्रगति-शील लेखकों को भी प्रेरणा मिली जो गुप्त सभाओं के सदस्य न थे।

दिकाब्रिस्ट लेखकों तथा कवियों की रचना रूसी साहित्य की एक नयी प्रवृत्ति—रोमांटिसिज्म से संबंधित है जिसे निष्क्रिय या स्वप्निल रोमांटिसिज्म के प्रतिपक्ष में प्रगतिशील या क्रान्तिकारी रोमांटिसिज्म कहते हैं। इस प्रगतिशील रोमांटिसिज्म के समर्थकों ने क्लासिसिज्म के स्वच्छन्दता विरोधी नियमों का विरोध किया और साथ ही अभिजात वर्ग और उसकी विचारधारा का भी विरोध किया, जिससे कि क्लासिसिज्म को समर्थन प्राप्त होता था। उन्होंने निष्क्रिय रोमांटिसिज्म का भी विरोध किया जिसके समर्थक (जैसे ज़ुकोव्स्की, बत्यूश्कोव आदि) जीवन से दूर हटके, अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों में लीन रहस्यमय उदास मन के व्यक्तियों का चित्र प्रस्तुत करते थे।

दिकाब्रिस्टों की पराजय के बाद प्रतिक्रिया और दमन का युग शुरू हुआ जिससे जनता का हृदय निराशा के अंधकार से भर गया। इस समय केवल पुश्किन की साहसभरी आवाज़ गूँजती रही जिसमें दिकाब्रिस्टों के विचारों से अनुप्राणित स्वतन्त्रता के आह्वान का आशावादी स्वर था।

पुश्किन के जीवन के अंतिम चरण में स्वतन्त्रता के सेनानियों की नयी पीढ़ी सामने आ गयी। यह पीढ़ी क्रांतिकारी 'डिमोक्रेटों' की थी जिसे दिकाब्रिस्टों की क्रान्तिकारी परंपरा विरासत में मिली और जिसने इसे व्यापक तथा गंभीर बनाया। इसका प्रसिद्ध प्रतिनिधि बेलिंस्की है। पुश्किन के प्रभाव तथा बेलिंस्की के समर्थन से दिकाब्रिस्ट युग के बाद लेरमन्तोव तथा गोगल की प्रतिभा का विकास हुआ। लेरमन्तोव युवावस्था से ही दिकाब्रिस्ट कवियों की कविताओं से परिचित था और बाद में उनसे काकेशस में मिला था। अदोयेव्स्की से उसकी मित्रता भी थी। लेरमन्तोव की रचनाओं में दिकाब्रिस्ट भावों की अन्तिम तथा गंभीर गूँज मिलती है। बाद में पुश्किन के समान वह भी क्रांतिकारी रोमांटिसिज़्म से यथार्थवाद की ओर चला आया।

इसी प्रकार गोगल ने भी निकोलस के प्रतिक्रियावादी युग के बीच स्वतंत्रता-संघर्ष की परंपरा को बनाये रखा। अपनी कहानियों तथा नाटक 'मृत आत्मा' में उसने रूस के शासनाधिकारी स्तर की अवस्था तथा जमींदार और शासनाधिकारियों के मानसिक खोखलेपन का नग्न चित्र प्रस्तुत किया। उसकी व्यंग्यात्मक हँसी में रूस में उठती हुई उस नयी प्रगतिशील पीढ़ी की शक्ति थी जो रूढ़िवादी स्तर तथा निरंकुशता के समर्थकों को चुनौती दे रही थी।

९. इवान क्रीलोव

[१७६९–१८४४]

अठारहवीं शती के रूसी साहित्याकाश में क्रीलोव को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वह विशेषतया अपने नीतिपूर्ण अत्यन्त मर्मस्पर्शी तथा अन्योक्तिपूर्ण कथात्मक काव्य के लिए प्रसिद्ध है जिसे रूसी में 'बास्न्या' कहते हैं। ये ही उसकी प्रसिद्धि के मुख्य आधार हैं किन्तु 'बास्न्या' के पहले लगभग बीस साल तक वह कमेडी, व्यंग्यात्मक लेख तथा कविताएँ लिखता रहा जिनके माध्यम से इस युवक लेखक की प्रतिभा ने अपने प्रगतिशील व्यंग्यात्मक तथा दासता-विरोधी विचारों को बड़े साहस के साथ प्रकट किया। उसका साहित्यिक कार्यकलाप अठारहवीं शती से शुरू होता है और उन्नीसवीं शती के (लगभग) मध्य तक चलता रहता है।

इवान क्रीलोव का जन्म मास्को में एक सामान्य सैनिक अफसर के परिवार में हुआ था जो अमीर न था। नौकरी के सिलसिले में बराबर स्थान-परिवर्तन के कारण बच्चों की शिक्षा-दीक्षा ठीक से न हो सकी। दस वर्ष की अवस्था में उसके पिता की मृत्यु हो गयी और परिवार दीनता में निमग्न हो गया।

बचपन में क्रीलोव अक्सर बाजार तथा मेलों में जाया करता था और सामान्य व्यक्तियों के साथ घूमा करता था। इस प्रकार इसे सामान्य रूसी जीवन से परिचय प्राप्त हुआ और उसने जन भाषा के हास-विनोद, लोकोक्तियों तथा कहावतों को आत्मसात् किया। अपनी माँ के निर्देशन में उसने लिखना-पढ़ना सीखा। बाद में आत्म-शिक्षा द्वारा वह अत्यन्त उच्च शिक्षित व्यक्ति बन गया। उसका आरम्भिक जीवन बड़ी ही कठिनाइयों के बीच बीता। चार साल तक उसने दो रूबेल महीने की नौकरी की। नाटकीय अभिनयों में उसकी आरम्भ से ही बड़ी रुचि थी।

फ़ोनवीज़िन तत्कालीन नाटक के अभिनेता दिमित्रियेव्स्की के सम्पर्क में आया और उसने नाटककार बनने का निश्चय किया।

आरम्भिक कृतियाँ

इस बात की संभावना प्रकट की जाती है कि चौदह वर्ष के क्रीलोव ने हास्यप्रधान आपेरा 'कॉफ़ी की चक्की' लिखी जिसमें अधिकारविहीन किसानों का चित्रण तथा दासताविरोधी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया था। उसकी यह कृति न छपी और न रंगमंच पर इसका प्रदर्शन हुआ।

इसके बाद उसने क्लासिकल ट्रेजडी 'फ़िलोमेला' लिखी किन्तु दिमित्रियेव्स्की द्वारा समर्थित न होने के कारण क्रीलोव ने स्वयं इसे नष्ट कर दिया।

क्रीलोव ने १७८६–८८ में दो कामिक आपेरा 'पागल परिवार' तथा 'अमरिकन' लिखे किन्तु कलात्मक दृष्टि से यह उच्च कोटि के नहीं माने जाते। फिर भी यह समकालीनों के नाटकों से खराब नहीं हैं। क्रीलोव अपनी 'कमेडियों' में अभिजात वर्ग की बुराइयों की—उनकी अज्ञानता, फ्रांसीसी वस्तु तथा विचार की गुलामी, राष्ट्रीय भावना के अभाव, फ़िज़ूलखर्ची आदि की हँसी उड़ाता है। उनमें नौकर मालिकों से अधिक बुद्धिमान् चित्रित किये गये हैं जो कि अपने मूर्ख मालिकों को बेवकूफ़ बनाते रहते हैं।

पत्रकारिता

बीस वर्ष के इस नवयुवक लेखक ने इसके बाद पत्रकारिता आरम्भ की। चार वर्ष तक (१७८९–१७९३) वह व्यंग्यात्मक पत्रों के प्रकाशन में लगा रहा। उसके तीन पत्र 'आत्मिक डाकखाना' 'दर्शक' 'पीटर्सबुर्ग मर्करी' निकले।

'आत्मिक डाकखाना' व्यंग्य का संग्रह है जो पत्रों के रूप में है। यह पत्र पाताल, पानी और हवा में रहनेवाली आत्माओं के जादूगर 'मलिकुल्म-मुल्क' को लिखे गये पत्र हैं जो सब जगह जा सकते हैं और सब कुछ देखते हैं। इनमें व्यंग्यात्मिकपूर्ण ढंग से तत्कालीन दास प्रथानुयायी रूस तथा ज़ारशाही का चित्रण हुआ है।

'प्रेक्षक' पत्र में उसकी व्यंग्यात्मक प्रतिभा का विकास और भी देखने को मिलता है। इस पत्र में उसकी लिखी गयी कृतियों में से 'कैब' और 'बाबा का मरसिया' अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। 'कैब' में अन्योक्तिपूर्ण कथा के माध्यम से ज़ार की निरंकुशता पर बड़ा ही मार्मिक आक्षेप किया गया है और यह दिखाया गया है कि ज़ार अपने वज़ीरों पर निर्भर रहता है और प्रजा इन वज़ीरों के अत्याचार से कराहा करती है। 'बाबा का मरसिया' में सामान्य ज़मींदारों का व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। रूस के व्यंग्यात्मक साहित्य में क्रीलोव की इस कृति का बड़ा उच्च स्थान है।

१७९२ में पुलिस ने उसके प्रेस की तलाशी ली। कोई पक्का सबूत न मिलने के कारण उस पर अभियोग न चलाया गया, लेकिन पुलिस उस पर निगरानी रखने लगी। बाद में यह पत्र बन्द हो गया। यह कठिन समय था। आत्म-रक्षा के लिए उसने राजधानी छोड़ दी और प्रांतों में बिना किसी साधन तथा संरक्षण के घूमने लगा। १८०० में उसने निरादृत राजकुमार सर्गोलित्सिन के परिवार में शिक्षक की नौकरी कर ली और उसने कई नाटक प्रस्तुत किये।

बास्न्या

१८०६ से वह अन्योक्तिपूर्ण पद्यात्मक लघु कथाएँ 'बास्न्या' लिखने लगा, जिनके पात्र पशु-पक्षी हैं और जिनसे कोई-न-कोई नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है। क्रीलोव की ये 'बास्न्या' व्यंग्यात्मक, नैतिक तथा अन्योक्तिपूर्ण हैं। इनमें उस समय के सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक और घरेलू जीवन के सभी पक्ष और व्यक्ति—ज़ार, शासनाधिकारी, अभिजात वर्ग, सौदागर, किसान आदि—का स्पष्ट चित्रण है। इनमें प्रस्तुत जीवन-पर्यवेक्षण, जीवन-अभिव्यंजना, कथन-पद्धति, भाषा की सशक्तता और समास-शक्ति ने क्रीलोव की 'बास्न्या' को कला के उच्च स्तर पर पहुँचा दिया। क्रीलोव के जीवन-काल में ही से इनका व्यापक प्रचार हो गया और इन्होंने उसे विश्वख्याति प्रदान की। यूरोप की कई भाषाओं में इनका अनुवाद हुआ।

१० जुकोव्स्की

[१७८३–१८५२]

जुकोव्स्की तूला प्रान्त के अमीर जमींदार का पुत्र था और उसकी माँ तुर्की लड़ाई की कैदी थी। जुकोव्स्की मुक्तक गीतों का प्रथम रूसी कवि माना जाता है। वह प्रेम तथा व्यक्तिगत भावनाओं का कवि है। अँगरेजी कवि ग्रे की एलेजी के सुन्दर अनुवाद से लोगों का ध्यान उसकी ओर गया। नेपोलियन के रूस पर आक्रमण के समय उसकी देश-भक्ति के गीतों का बड़ा प्रचार रहा।

बाद में वह युवराज का शिक्षक नियुक्त किया गया और उसने देश-विदेश की यात्रा की। अन्त मे वह रूस छोड़कर जर्मनी में बस गया। १८५२ में बाडन-बाडन मे उसकी मृत्यु हो गयी।

जुकोव्स्की की ख्याति का मूल आधार उसके अनुवाद हैं। उसके 'नल दमयन्ती' 'रुस्तम सोहराब' 'ओडेसी' के अनुवाद बहुत प्रसिद्ध हैं।

जुकोव्स्की मानव की अन्तरतम अनुभूतियों का कवि है। वह मनुष्य की अन्यतम भावनाओं और आत्मा की खोज को अभिव्यक्ति देता है। उसके लिए काव्य और जीवन एक हैं।

तत्कालीन आलोचकों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। बेलिंस्की ने लिखा कि 'जुकोव्स्की के बिना हमें पुश्किन न मिलता।

११ अलेक्सान्द्र सेर्गेयविच ग्रिबयेदेव

[१७९५–१८२९]

ग्रिबयेदोव नव यथार्थवादी रूसी साहित्य के संस्थापकों में हैं। पुश्किन ... येवगेनी ओनेगिन और ग्रिबयेदेव की कमेडी 'चतुराई से दुख' में पहले ...हल रूसी जीवन की यथार्थता का काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।

...द्यार्थी-जीवन

अलेक्सान्द्र सेर्गेयविच ग्रिबयेदेव का जन्म एक प्राचीन अभिजात ...रिवार में १५ जनवरी १७९५ को मास्को में हुआ। उसकी माँ ने ...सकी शिक्षा दीक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। विदेशी गवर्नरों के ...तिरिक्त उसे मास्को विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पढ़ाते थे। ग्यारह ...र्ष की अवस्था में वह मास्को विश्वविद्यालय का विद्यार्थी बन गया। ...स समय उसके साथ भविष्य के कई दिसम्बरिस्ट भी मास्को विश्वविद्यालय ...में पढ़ते थे जो आपस में राजनीतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक विषयों ...र वाद-विवाद भी किया करते थे। कामचीविन तथा गांधिकाव के ...ख और रदीसच्यव की पुस्तक 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा' ...आदि इन गोष्ठियों में पढ़ी जाती थी तथा इन पर बहस होती थी। इन ...पने युवक ग्रिबयेदेव के दास-विरोधी तथा निरंकुशता-विरोधी दृष्टिकोण ...का निर्माण किया। विश्वविद्यालय में उसने विज्ञान, गणित तथा न्याय ...विभाग में शिक्षा प्राप्त की, किंतु सन् १८१२ में युद्ध छिड़ जाने से उसकी ...विश्वविद्यालय की शिक्षा का क्रम सहसा टूट गया। अपने देश की सेवा ...करने के लिए वह स्वयं सेवक के रूप में सेना में दाखिल हो गया।

...पीतरबुर्ग का जीवन

इस सैनिक सेवा के बाद वह पीतरबुर्ग वापस लौट आया, सेना से ...अवकाश ले लिया और विदेशी विभाग के कालेज में चला गया जहाँ ...उसका पुश्किन से परिचय हुआ। पीतरबुर्ग के इस निवास-काल का ...उसकी सारी दृष्टि के निर्माण पर व्यापक प्रभाव पड़ा। यह वह समय था

जब कि रूस में भविष्य के दिकाब्रिस्टों की 'गुप्त सभाएँ' शुरू हो गयी थीं। यद्यपि वह दिकाब्रिस्टों की सभाओं का सदस्य न था फिर भी उनके दृष्टिकोण और विचारों से उसे सहानुभूति थी। एक व्यक्तिगत घटना (द्वन्द्व युद्ध में साथी के रूप में विद्यमान रहने के कारण जिसमें एक की मृत्यु हुई) के कारण उसे राजनीतिक मिशन का सेक्रेटरी बनाकर ईरान भेज दिया गया। पीतरबुर्ग का जीवन समाप्त हो गया। इन्हीं वर्षों में उसने 'चतुराई से दुःख' कमेडी लिखने की सोची।

'चतुराई से दुःख' कमेडी

ईरान में रहते हुए वह तिफ़लिस प्रायः आता था। तिफ़लिस में उसने इस कमेडी के दो अंक पूरे किये और उसे अपने साथी दिकाब्रिस्ट कवि क्यूखेल बेकर को सुनाये। १८२१ में उसे छुट्टी मिली और उसने दो वर्ष पीतरबुर्ग तथा मास्को में बिताये। इस समय उसने अपनी यह कमेडी पूरी कर ली।

उसने अपनी यह कमेडी अपने मित्रों तथा परिचितों को सुनायी। थोड़े समय में इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ सारे देश में फैल गयीं। प्राचीनता के समर्थकों को इसमें अपना व्यंग्य-चित्र मिला और उन्होंने इसे वर्जित करने की बात उठायी और दिकाब्रिस्टों ने उसका समर्थन किया क्योंकि इसमें उन्हें निरंकुशता तथा दासता विरोधी अपने विचारों की झलक मिली।

किन्तु ग्रिबोयेदोव अपने जीवनकाल में न इसका मुद्रण और न इसका रंगमंच पर अभिनय ही देख सका। सन् १८३३ में यह पहली बार छपी। इसके पहले ही ईरान में उसकी हत्या कर दी गयी।

१८२६ में उसे दिकाब्रिस्टों के साथ अभिसंधि के संदेह में गिरफ्तार कर लिया गया। उसके मित्र जेनरल येरमोलोव ने उसे गिरफ्तारी से पहले ऐसे कागजों को जला डालने का अवसर दिया। कुछ महीने बाद वह मुक्त कर दिया गया और अपनी नौकरी पर चला गया।

रूसी ईरानी युद्ध के बाद वह ईरान में रूस का राजदूत बनाकर भेजा गया। रूस की राजनीति से असंतुष्ट तेहरान के मुसलमानों ने १८२९

में रूसी राजनीतिक मिशन पर हमला किया। ११ फरवरी १८२९ को दूतावास के सभी सदस्य (केवल एक को छोड़कर) मार डाले गये। इन मृतकों में ग्रिबोयेदोव भी था। उसका शव तिफ्लिस लाया गया और वहां दफनाया गया।

ग्रिबोयेदोव की कामदी 'चतुराई से दुःख' रूसी साहित्य का अनुपम रत्न है। उसका उच्च वस्तु तत्व, सुनिश्चित चरित्र-चित्रण, सुन्दर भाषा और सुन्दर कविता इन सब ने इस कृति को अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया।

'चतुराई से दुःख' कामेडी का वस्तु तत्त्व

इस कामेडी का मूलभूत विचार प्राचीन तथा नवीन विचारधारा का संघर्ष है। इसमें अभिजात वर्ग के उन प्रतिनिधियों पर कटाक्ष है जो रूढ़िवादी हैं जो दासाधिकार को बनाये रखना चाहते हैं और जो शिक्षा, प्रगतिशीलता आदि के कट्टर विरोधी हैं।

फामुसोव

इनका सबसे बड़ा प्रतिनिधि फामुसोव और उसके साथी स्कालोजुब ([illegible]) मोल्चालिन (मुन्शी) हैं। फामुसोव के जीवन का लक्ष्य किसी न किसी तरह अमीरी तथा पदवी प्राप्ति, अपने बच्चों का अमीरों से शादी और आनन्दमय जीवन है। वह विगत युग का समर्थक और नवीन विचारों का कट्टर शत्रु है।

इसी प्रकार स्कालोजुब प्रतिक्रियावादी सभी अफसरशाही का समर्थक है, निरंकुशता तथा दासाधिकार का पक्षपाती है और शिक्षा का विरोधी है।

मोल्चालिन अफसरों की खुशामद करता रहता है। वह उन लोगों का प्रतिनिधि है जो नौकरी को सम्पूर्ण ईमानदारी से काम करना नहीं वरन् अफसर की ताबेदारी समझते हैं और इस प्रकार ऊपर उठते हैं। वह सोफिया से प्यार नहीं करता किन्तु प्यार का ढोंग रचता है क्योंकि वह अमीर की लड़की है और वह उससे शादी करना चाहता है।

चात्स्की

फामुसोव के प्रतिकूल में चात्स्की का चित्र है जो प्रगतिशील व्यक्ति और भविष्य के दिग्दर्शक का चित्र है। वह अभिजात वर्ग के प्रगतिशील

नवयुवकों का प्रतिनिधि है। एक प्रकार से यह ग्रिबोयेदोव का ही जीवन है। वह फामूसोव के समाज का कट्टर आलोचक है क्योंकि उस समाज के जीवन का स्तर अत्यन्त निम्न और गिरा हुआ है। इसी प्रकार वह उन दासाधिकारियों का व्यंग्यचित्र प्रस्तुत करता है जिन्होंने दास कृषकों को पशु से भी नीचा और पतित बना दिया है और जिन्हें वे पशु के समान मां को पिता से और बच्चों को माता-पिता से अलग कर बेचते हैं।

इस प्रकार यह सामाजिक कमेडी है जिसमें न केवल पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताएँ अंकित की गयी हैं वरन् युग का सामाजिक राजनीतिक संघर्ष भी प्रस्तुत किया गया है। इसमें सन् १८१२ के युद्ध के बाद अभिजात वर्ग के प्रगतिशील विचारों का प्रादुर्भाव और प्राचीनतावादी स्तर के साथ उसकी टक्कर दिखायी गयी है। दिकाब्रिस्टों ने दास प्रथा के प्रति विरोध लक्षित किया और उन्हें इसमें रूढ़िवादी समाज की अवनतिशील दशा की व्यंग्यपूर्ण प्रखर आलोचना तथा प्रगतिशील विचारों का प्रतिपादन मिला।

इस कमेडी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सजीव चलती और चुभती भाषा है। इसके बारे में पुश्किन ने कहा था कि इसका आधा हिस्सा तो शीघ्र ही लोकोक्ति बन जायगा और सचमुच में इसकी बहुत सी उक्तियाँ या मुहाविरे के रूप में प्रयोग होने लगा। इसका मार्मिक व्यंग्य शक्तिशाली चुस्त बिजली-सदृश सी तरह भाषा स्वच्छन्द तथा सजीव संवाद इसकी जोरदार अभिव्यक्ति और कलात्मकता पात्रों का सजीव चित्रण इन सब ने इसे रूसी साहित्य की लोकप्रिय और अमर कृति बना दिया।

ग्रिबोयेदोव ने अपनी इस कमेडी में उन्नीसवीं सदी के सन् दस से बीस के वर्षों के रूसी जीवन की यथार्थता का चित्र अंकित किया। उसकी बुराइयों की आलोचना की ओर नायक के रूप में प्रगतिवादी व्यक्ति का यथार्थवादी एवं कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया। इस कमेडी ने रूसी नाट्य साहित्य में एवं रंग-मंच पर यथार्थवाद को प्रतिष्ठित कर दिया।

१२ अलेक्सान्द्र सेर्गेयेविच पुश्किन

[१७९९–१८३७]

पुश्किन रूसी साहित्य का महानतम एवं सर्वश्रेष्ठ लेखक है। रूसी साहित्य के राष्ट्रीय कवि और समकालीन रूसी भाषा के निर्माता के रूप में उसकी ख्याति है।

बचपन

पुश्किन का जन्म ६ जून सन् १७९९ में एक सम्पन्न प्राचीन अभिजात किंतु अब निर्धन वंश में हुआ था। उसके पिता ने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा की स्वयं चिन्ता न कर इसका भार गवर्नेस तथा दूसरों पर छोड़ दिया था। वह स्वयं अच्छा अभिनेता था और शौकिया नाटकों के अभिनय में हिस्सा लिया करता था।

उसकी दादी मारिया अलेक्सेयेवना हन्निबाल ने उसे रूसी लिखना और पढ़ना सिखाया। शैशव में पुश्किन के सबसे निकट उसकी नर्स अरीना रोदिओनोव्ना थी जिसने इस बच्चे को कहानियाँ सुनाकर रूस के लोक साहित्य से परिचित कराया।

पुश्किन की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही और विदेशी विशेषतया फ्रांसीसी गवर्नेस से मिली। फ्रांसीसी भाषा पर बालक पुश्किन का पूर्ण अधिकार था। वह रूसी के समान ही फ्रांसीसी बोलता था। उसके घर में एक बड़ा पुस्तकालय था और वह वहाँ घंटों पढ़ा करता था। इस प्रकार उसे कई भाषाओं और साहित्यों का अच्छा ज्ञान हो गया। उसके यहाँ बहुत से लोग आया जाया करते थे। इनमें करमज़ीन, दिमित्रियेव, बात्युश्कोव, झुकोव्स्की जैसे लेखक थे। उसका चाचा (वे० एल० पुश्किन) स्वयं प्रसिद्ध कवि था।

लीसियम

जब पुश्किन 'लीसियम' (कालेज) में भर्ती हुआ तो उस समय तक वह लमोनोसोव, देर्झाविन, करमज़ीन, झुकोव्स्की तथा अठारहवीं सदी

नवयुवको का प्रतिनिधि है। एक प्रकार से वह फ़ोनविज़िन का ही जीवन है। वह फ़ामूसोव के समाज का कट्टर आलोचक है, क्योंकि उस समाज के जीवन का स्तर अत्यन्त निम्न और गिरा हुआ है। इसी प्रकार वह उन दासाधिकारियों का रूपचित्र प्रस्तुत करता है जिन्होंने दास कृषकों को पशु से भी नीचा और पतित बना दिया है और जिन्हें वे पशु के समान मां को पिता से और बच्चों को माता-पिता से अलग कर बेचते है।

इस प्रकार यह सामाजिक कमेडी है जिसमें न केवल पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताएँ अंकित की गयी है वरन् युग का सामाजिक राजनीतिक संघर्ष भी प्रस्तुत किया गया है। इसमें सन् १८१२ के युद्ध के बाद अभिजात वर्ग के प्रगतिशील विचारो का प्रादुर्भाव और प्राचीनतावादी स्तर के साथ उसकी टक्कर दिखायी गयी है। त्रिबायेदोव ने दासप्रथा के प्रति विरोध व्यक्त किया और उन्हें इसमें रूढ़िवादी समाज की अध-पतित दशा की अत्यन्तपूर्ण प्रखर आलोचना तथा प्रगतिशील विचारो का प्रतिपादन मिला।

इस कमेडी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सजीव चलती और चुभती भाषा है। इसके बारे में पुश्किन ने कहा था कि इसका आधा हिस्सा तो शीघ्र ही लोकोक्ति बन जायगा और सचमुच में इसकी बहुत सी उक्तियों का मुहावरे के रूप में प्रयोग होने लगा। इसकी मार्मिक व्यंग्य शक्तिशाली चुस्त बिजली-स्पर्श की तरह भाषा स्वच्छन्द तथा सजीव संवाद इसकी बारबार अभिव्यक्ति और चमत्कृत पात्रों का अनकोखा चित्रण इन सब ने इसे रूसी साहित्य की लोकप्रिय और अमर कृति बना दिया।

त्रिबायेदोव ने अपनी इस कमेडी में उन्नीसवीं सदी के सन् दस से बीस के वर्षो के रूसी जीवन की यथार्थता का चित्र अंकित किया। उसकी बुराइयों की आलोचना की और नायक के रूप में प्रगतिवादी व्यक्ति का यथार्थवादी एवं कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया। इस कमेडी ने रूसी नाट्य साहित्य में एवं रंग-मंच पर यथार्थवाद को प्रतिष्ठित कर दिया।

१२ अलेक्सान्द्र सेर्गेयविच पुश्किन

[१७९९–१८३७]

पुश्किन रूसी साहित्य का महानतम एवं सर्वश्रेष्ठ लेखक है। रूसी साहित्य के राष्ट्रीय कवि और समकालीन रूसी भाषा के निर्माता के रूप में उसकी ख्याति है।

बचपन

पुश्किन का जन्म ६ जून सन् १७९९ में एक अत्यन्त प्राचीन अभिजात किन्तु अब निर्धन वंश में हुआ था। उसके पिता ने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा की स्वयं चिन्ता न कर इसका भार गवर्नेर तथा दूसरों पर छोड़ दिया था। वह स्वयं अच्छा अभिनेता था और शौकिया नाटकों के अभिनय में हिस्सा लिया करता था।

उसकी दादी मारिया अलेक्सेयेव्ना हनीबाल ने उसे रूसी लिखना और पढ़ना सिखाया। शैशव में पुश्किन के सबसे निकट उसकी धाय अरीना रदीओनोव्ना थी जिसने इस बच्चे को कहानियाँ सुनाकर उसे लोक-साहित्य से परिचित कराया।

पुश्किन की आरम्भिक शिक्षा घर पर ही और विदेशी विशेषतया फ्रांसीसी गवर्नेसों से मिली। फ्रांसीसी भाषा पर बालक पुश्किन का खूब अधिकार था। वह रूसी के समान ही फ्रांसीसी बोलता था। उसके घर में बहुत बड़ा पुस्तकालय था और वह वहाँ घंटों पढ़ा करता था। इस प्रकार उसे कई भाषाओं और साहित्यों का अच्छा ज्ञान हो गया। उसके यहाँ बहुत से नाम आया जाया करते थे। इनमें करमज़ीन, द्मित्रियेव, बात्यूश्कोव जैसे लेखक थे। उसका चाचा (वे० एल० पुश्किन) स्वयं प्रसिद्ध कवि था।

लीसियम

जब पुश्किन लीसियम (कालेज) में भर्ती हुआ तो उस समय तक वह लमनोसोव, देर्झाविन, करमज़ीन, ज़ुकोव्स्की तथा अठारहवीं सदी

के फ्रांसीसी लेखकों की रचनाओं से बहुत अच्छी तरह परिचित हो चुका था। लीसियम में उसने छ वर्ष बिताये और इसका उसके जीवन तथा लोकदृष्टि पर गहरा असर पड़ा। यहीं पर उसका सेना के अफ़सरों तथा भविष्य के 'दिकाब्रिस्टों' और विशेषतया चादाएव से परिचय हुआ और उसने रदीश्चेव की कृतियों को पढ़ा।

सन् १८१४ में पुश्किन ने 'त्सारस्कोये सेलो' (ज़ार का गाँव) की स्मृति' कविता लिखी जिसे उसने १८१५ में अपनी पब्लिक परीक्षा में सुनाया। देरझाविन जो परीक्षकों में था इसे सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ। इसमें नेपोलियन से रूस के साहसपूर्ण युद्ध का वर्णन है। लीसियम में पढ़ते हुए ही वह साहित्यिक गोष्ठी 'अरज़ामस' का सदस्य बना लिया गया और यहीं उसने अपनी बड़ी कविता 'रुस्लान और ल्युद्मिला' लिखनी शुरू की।

लीसियम के बाद वह विदेश विभाग के कालेज में पढ़ने के लिए पीतरबुर्ग भेजा गया।

प्रगीत मुक्तक (१८१७–१८१९)

सन् १८१७ से १८१९ के बीच उसने स्वतन्त्रता प्रेम से युक्त कई कविताएँ लिखीं जिनमें 'स्वतन्त्रता' 'चादाएव को' 'गाँव' प्रमुख हैं। राजनीतिक समकालीनता और क्रान्तिकारी वेग के कारण उसका प्रगीत 'स्वतन्त्रता' अभिजात वर्ग के नवयुवकों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुआ।

'चादाएव को' प्रगीत में समवयस्कों को देश सेवा के लिए अपनी आत्मा अर्पित कर देने का आह्वान है। कवि का विश्वास है कि निरंकुशता का पतन होगा और रूस में स्वतन्त्रता का प्रभात होगा। इस समय उसने बहुत से ज़ार विरोधी कमीशे भी लिखे जो इतने चुस्त और तेज़ थे कि सारे समाज में वे बड़ी जल्दी व्याप्त हो गये और उन्होंने राजनीतिक चेतना को बहुत जगाया। पुश्किन की इन राजनीतिक कविताओं से ज़ार बहुत असंतुष्ट हुआ। ज़ार अलेक्सान्द्र प्रथम ने लिखा कि उसने (पुश्किन ने) सारे रूस में क्रान्तिकारी कविताओं की बाढ़ सी ला दी अतः उसे साइबेरिया निर्वासित करने का विचार किया गया। किन्तु करमज़ीन और

चुकाम्स्की के बीच में पड़ने से उसे साइबेरिया भेजने के बजाय दक्षिण भेजा गया। उस पीतरबुर्ग छोड़कर यकातेरिनोस्लाव जाने का हुक्म दिया गया। इसी समय (१८२०) उसने 'रुस्लान और ल्युदमिला' काव्य पूरा किया।

दक्षिण का निर्वासन

यकातेरिनोस्लाव में पुश्किन अधिक समय तक न रहा। पुश्किन वहाँ बीमार था। तब कि कवि का परिचित जनरेल रएव्स्की वहाँ आया और उसे कवकाज़ ले जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। कवकाज़ तथा क्रीम के प्राकृतिक दृश्यों—समुद्र, झील, पहाड़ी प्रकृति आदि—का कवि पर बड़ा प्रभाव पड़ा। क्रीम में उसने गिरेई खाँ द्वारा अपनी मृत बन्दिनी प्रियतमा की स्मृति में निर्मित आँसुओं का फव्वारा देखा जिसके आधार पर उसने बाद में 'बाख्ची सराय का फव्वारा' काव्य लिखा।

इसके बाद उसे तीन साल किशीनेव में रहना पड़ा जहाँ उसका 'दिकाब्रिस्तों' की रहस्यी सभा के कई अफसरों से विशेषतया उनके नेता पस्तेल से परिचय हुआ। पुश्किन की क्रान्तिकारी मनोवृत्ति का सबूत उसकी इस समय की लिखी कविता 'खंजर' से मिलता है जिस में किसी निरंकुश के बार की हत्या के समर्थन के रूप में लिखा। उसकी 'कवकाज़ी कैदी', 'डाकू भाई', 'जिप्सी' आदि कविताएँ भी कवि के क्रान्तिकारी भावों का अंकन करती हैं। इनसे कवि के कलात्मक विकास का भी परिचय मिलता है।

उपन्यास

सन् १८२३ में किशीनेव में कवि ने अपना पद्यात्मक 'येवगेनि अनेगिन' शुरू किया। इसका पहला अध्याय कवि ने ओदेसा में पूरा किया जहाँ वह किशीनेव से भेजा गया था। इस पूरे समय में पुलिस उसके पीछे थी। उसके पत्र पढ़े जाते थे। उसके एक ऐसे ही पत्र के आधार पर—जिसमें उसने आत्मा की अमरता के बारे में लिखा था—उसे नया निर्वासन दिया गया। उसे शहर से दूर निरे देहात मिखाइलोव्स्कोये गाँव में रहने को भेजा गया।

मिखाइलोव्स्कोय का निर्वासन

मिखाइलोव्स्कोएसेको में पुश्किन दो साल रहा। इस समय उसका सारा परिवार यहीं था किन्तु बाद में उसका अपने पिता से झगड़ा हो गया क्योंकि वह अपने पुत्र पर जासूसी करने तथा उसके पत्रों को चुपचाप पढ़ने को तैयार हो गया था। इसके बाद उसका पिता वहाँ से चला गया और वह अपनी नर्स अरीना रडीओनोव्ना के साथ वहाँ अकेला रह गया। अपने बचपन की इस नर्स को पुश्किन सदा बड़े प्रेम से याद करता रहा और उसकी कई कविताएँ उससे सम्बन्धित हैं। इन्हीं रचनाओं में मिखाइलोव्स्काएसेको में लिखित उसकी कविता 'जाड़े की शाम' है। पुश्किन के कथनानुसार अरीना रडीओनोव्ना उसे शाम को अति सुन्दर रूसी लोक कथाएँ और गीत सुनाया करती थी।

इन वर्षों में वह अपने दास-किसानों के निकट आया। वह किसानों की बस्तियों में घूमा करता था उनकी कथाएँ, मजाक तथा गीत सुना करता था और बाजार तथा मेलों में घूमा करता था। इस प्रकार मिखाइलोव्स्कोए में उसे रूसी जन जीवन का अत्यन्त निकट से परिचय प्राप्त हुआ और उसके हृदय में रूसी जनता के प्रति सच्ची सहानुभूति प्रकट हुई और सच्चा प्रेम जगा।

यहाँ रहते हुए उसने अपने प्रसीद पुस्तक लिखा येवगेनि अन्येगिन' का तीसरा अध्याय पूरा किया 'बरीसगदूनोव दुखडी (दुखान्त नाटक) शुरू की और 'जिप्सी' कविता पूरी की। जिप्सी कविता में कवि का स्वातंत्र्य प्रेम प्रकट हुआ है।

'बरीसगदूनोव (१८२५) में कवि ने इतिहास के बीच जनता के योग दान तथा शासन और जनता के पारस्परिक संबंध के बारे में विचार अभिव्यक्त किए हैं। यह लोक-दुखान्त नाटक है जिसकी घटनाएं लम्बे समय के बीच घटती रहती हैं और कई स्थानों पर घटित होती हैं। यह कृति स्वच्छन्द छंद में लिखी गयी है।

'दिकाब्रिस्तों' की फांसी की खबर मिलने पर कवि ने मसीहा' (१८२६) कविता लिखी। पुश्किन ने इसमें कवि को मसीहा के रूप में

चित्रित किया है जो कि अपने को उच्च सामाजिक सेवा के लिए तैयार करने को रेगिस्तानों में घूमता है। इस कविता में कवि के उच्च कर्तव्य तथा स्पर्धा की व्यंजना की गयी है और यह बताया गया है कि कवि का काम अपने शब्दों द्वारा जनता के हृदय को उद्दीप्त करना है।

दिकाब्रिस्ट क्रान्ति के बाद

सितम्बर १८२६ में वह मास्को गया और ज़ार के समक्ष उपस्थित हुआ। ज़ार के यह पूछने पर कि यदि १४ दिसम्बर के विद्रोह के दिन वह पीतरबुर्ग में होता तो वह क्या करता? पुश्किन ने साहस के साथ जवाब दिया कि मैं विद्रोहियों की पंक्ति में होता। ज़ार निकोलस ने उसे अपनी ओर करने के लिए कहा कि रूस में बड़ा सुधार करने की मेरी इच्छा है। अपनी कृपा दिखाने के लिए ज़ार ने उससे कहा कि अब से मैं तुम्हारा सेंसर बनूँगा। शीघ्र ही कवि को मालूम हो गया कि इसका मतलब हुआ सामान्य सेंसर के साथ-साथ अब अपनी कृतियाँ पुलिस चीफ़ बेकेनदोर्फ़ को भी देना और साहित्यिक कार्यकलाप पर उसका नियंत्रण मानना।

१८२७ में कवि ने साइबेरिया में कविता लिखी और दिकाब्रिस्ट निकीता मुरावियोव की पत्नी के हाथ भेजी जो स्वेच्छा से अपने पति के पास रहने के लिए साइबेरिया जा रही थी। इसमें कवि ने कहा कि वह समय शीघ्र ही आयेगा कि जब हथकड़ियाँ टूट जायेंगी, अंधकार नष्ट हो जायगा और स्वाधीनता तुम्हारा स्वागत करेगी। पुश्किन के इस संदेश पर दिकाब्रिस्ट अलेक्सान्द्र ओदोयेव्स्की ने अपनी कविता में यह विचार प्रकट किया कि दिकाब्रिस्टों की चिनगारी से जनक्रान्ति की आग भड़क उठेगी।

१८१८ में कवि ने 'अंचार' कविता लिखी जिसे सेंसर से बचाने के लिए अन्योक्ति का रूप दिया गया। अंचार एक पेड़ है जो रेगिस्तान में होता है और जिसका सार ज़हरीला होता है। राजा अपने दास को यह सार लाने के लिए भेजता है। ग़रीब दास यह ज़हरीला गोंद लाता है और मर जाता है। राजा उस ज़हर से अपने तीर बनाता है और पड़ोसी राष्ट्र को नष्ट करता है। कविता का मुख्य भाव मनुष्य द्वारा मनुष्य के उत्पीड़न का विरोध है।

इस समय उसने 'पल्तावा' कविता लिखी जिसमें पीटर प्रथम के कार्यकलापों की प्रशंसा की गयी है और उसे राष्ट्र के प्रगतिशील शासक के रूप में चित्रित किया गया है।

१८३० में पुश्किन तीन महीने बोल्दिनो गाँव में रहा। इस समय वह मास्को की सुन्दरी नतालिया निकोलाएव्ना गनचारोवा की ओर आकृष्ट हुआ और उससे विवाह किया। बोल्दिनो में उसने 'येवगेनी ओन्येगिन' पूरा किया। छोटी-छोटी दुखान्त ट्रैजडी लिखीं, बेल्किन की कहानियाँ लिखीं तथा तीस कविताएं लिखीं। इस समय उसने गद्य की ओर भी ध्यान दिया और इस क्षेत्र में भी उसकी अद्भुत प्रतिभा का प्रकाश लोगों को मिला।

बेल्किन की कहानियों में प्रान्तीय अभिजात वर्ग के जीवन के चित्र हैं तथा छोटे छोटे कर्मचारियों और गरीब कारीगरों के जीवन की झलक दिखायी गयी है। इन कहानियों में पहली बार नायक के रूप में 'छोटे आदमियों' के प्रतिनिधि रूसी साहित्य के बीच प्रकट हुये हैं। कवि ने इनमें बड़ी सहानुभूति के साथ इन दलित तथा अपमानित व्यक्तियों का चित्र अंकित किया है। इनमें कवि की मानवतावादी काव्यदृष्टि की झलक मिलती है।

इन छोटी-छोटी ट्रैजेडी—'कंजूस राजा', 'मोत्सार्ट और सेलेरी', 'पथरीला मेहमान', 'प्लेग के समय दावत' में कवि ने हृदय पर ईर्ष्या, कंजूसी आदि अनुभूतियों का चित्रण किया है। कवि ने इनमें मनोविज्ञान का गंभीर परिचय दिया है। इनका विचारात्मक वस्तु-तत्व, गंभीर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, कलात्मक अभिव्यंजना तथा भाषागत संक्षिप्तता इन सबने इन छोटे-छोटे नाटकीय दृश्यों को विश्व-साहित्य के बीच उच्च स्थान प्रदान किया है।

उन्नीसवीं शती के सन् तीस के वर्षों में किसान-विद्रोह हुए जिनकी ओर पुश्किन का ध्यान गया। तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नों से संबंधित पुश्किन की कई कृतियाँ हैं जिनमें किसान-जमींदार संबंध ('दुब्रोव्स्की', 'कप्तान की लड़की') तथा शासन और जनता के संबंधों

('तांबे का घुड़सवार') की समस्या का संकेत मिलता है। १८३३ में पुश्किन ने 'पुगाचोव का इतिहास' लिखा। पुगाचोव विद्रोह से संबंधित सामग्री एकत्रित करने के लिए वह कज़ान, ओरेनबर्ग आदि पुगाचोव से संबंधित कई स्थानों में गया तथा संग्रहालय में अध्ययन किया। पुगाचोव विद्रोह से संबंधित 'कप्तान की लड़की' पुश्किन के इसी विद्रोह के ऐतिहासिक अध्ययन का कलात्मक परिणाम है।

प्रसिद्ध उपन्यास 'कप्तान की लड़की' पुश्किन के गद्य की सर्वोच्च उपलब्धि मानी जाती है। इसमें पुगाचोव विद्रोह के युग की कलात्मक तस्वीर है, प्रान्तीय अभिजात परिवार (ग्रिनेव) का चित्र है। मारिया इवानोव्ना का चित्रण है और निम्न वर्ग के कमांडर कप्तान मिरोनोव का वर्णन किया गया है। सबसे महत्त्वपूर्ण इसमें पुगाचोव का चित्रण है जो कि किसान-विद्रोह का नेता है।

पुश्किन गद्य की सर्वोत्तम कलात्मक कृतियों 'कप्तान की लड़की' तथा 'हुकुम की बेगम' का रूसी गद्य के विकास पर बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

इसी समय उसने लोक-कथा के रूप में मछली और मछुआ की कथा, पादरी और उसका नौकर बाल्दा और पश्चिमी स्लावों के गीत लिखे।

'तांबे का घुड़सवार' पीतर प्रथम से संबंधित पीतरबुर्ग की पद्यात्मक कथा है। पीतर प्रथम से संबंधित उसकी अन्य दो कृतियाँ 'पीतर प्रथम का गुलाम' और 'पोल्तावा' हैं। 'तांबे का घुड़सवार' रूस की शक्ति और उसकी प्रगतिशीलता का काव्य है। इस शक्ति का प्रतीक राजधानी पीतरबुर्ग है जो कि पीतर प्रथम की रचना है और जो जनता के संघर्ष और दमनता के बीच से निकली है। यह कृति पुश्किन के उत्तम काव्यों में गिनी जाती है।

अन्तिम वर्षों के प्रगीत मुक्तक

पुश्किन के जीवन के अंतिम वर्षों के प्रगीत मुक्तकों का मुख्य विषय राजनीतिक और दार्शनिक है। सन् तीस के वर्षों में उसने कई देशभक्ति पूर्ण रचनाएँ लिखीं। ('रूस को बदनाम करने वालों को', 'पवित्र समाधि

के सामने', 'सेनापति')। इन वर्षों की कविताओं में उसने अपनी जवानी के दोस्तों को याद किया है और जीवन तथा मृत्यु के बारे में चिंतन किया गया है।

पुश्किन की मृत्यु

पुश्किन का व्यक्तिगत वैवाहिक जीवन कुछ सुखमय न था। पति-पत्नी के मानसिक दृष्टिकोण में सामंजस्य न था। पत्नी को आमोद-विनोद, नाच आदि का जीवन पसंद था और कवि के कार्यकलाप में इससे बाधा पड़ती थी। उसकी पत्नी की ओर ज़ार का ध्यान गया और पुश्किन को दरबार से बाँधने के लिए उसने उसे सबसे छोटा (किंकर का) पद दिया जिसे कि कवि ने अपना अपमान समझा। फ्रांसीसी दान्तेस का उसकी पत्नी से कुछ घनिष्ठ परिचय था। उच्च समाज इससे संबंधित कुछ खबरें भी उड़ा रहा था। पुश्किन ने आत्मसम्मान की रक्षा में दान्तेस का द्वन्द्व युद्ध के लिए आह्वान किया। १८३७ की आठ फरवरी को यह द्वन्द्व-युद्ध हुआ जिसमें पुश्किन बुरी तरह घायल हुआ।

दो दिन बाद दस फरवरी (सन् १८३७) को पुश्किन की मृत्यु हो गयी।

जन प्रदर्शन के डर से पुलिस ने रातों रात उसका शव पीतरबुर्ग से हटा दिया। वह स्वियातोगोर्स्की के मठ में दफनाया गया।

येव्गेनिई अन्येगिन

पुश्किन की सबसे महत्त्वपूर्ण कृति उसका पद्यात्मक उपन्यास 'येव्गेनिई अन्येगिन' है। यह रूसी का पहला यथार्थवादी उपन्यास है। इसमें उन्नीसवीं शती के सन बीस के रूसी जीवन और समाज का अंकन हुआ है।

अन्येगिन

अन्येगिन इस उपन्यास का मुख्य पात्र है और वह उन्नीसवीं शती के सन बीस के अभिजात समाज के प्रगतिशील विचारशील पक्ष का प्रतिनिधि है। उसके माध्यम से पुश्किन ने उस व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें कि बुद्धि और विवेक है किन्तु जो व्यर्थ है क्योंकि वह

इसका उपयोग अच्छे जीवन की उपलब्धि के लिए नहीं कर सकता। इस समाज की आलोचना करते हुए भी वह न उसे ठीक कर सकता है और न उसे छोड़ ही सकता है। इसी से उसकी बुद्धि की प्रखरता उसे और भी चुभती है। वह इस समाज से सबसे अलग हो जाता है, फलतः वह अकेला पड़ जाता है, उसका जी ऊबता है और वह निरर्थक व्यक्ति बन जाता है। वह तातियाना लारीना के प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा देता है। उसका अपने पड़ोसी लेन्स्की से झगड़ा हो जाता है और वह द्वन्द्व युद्ध में उसे मार डालता है। इस अप्रत्याशित हत्या का उस पर बड़ा प्रभाव पड़ता है और वह पीतरबुर्ग को छोड़कर रूस की यात्रा पर निकल पड़ता है।

तातियाना

तातियाना के रूप में पुश्किन ने भावुक किन्तु कल्पनाशील नारी का चित्र प्रस्तुत किया है। तातियाना अन्येगिन को चाहती है और वह स्वयं प्रणय-पत्र भेजती है, अन्येगिन के रूखे उत्तर से उसे आघात लगता है फिर भी वह अपने को सँभाल लेती है। धीरे-धीरे इस भावुक बालिका का पूर्ण विकास होता है और उसका दूसरे से विवाह हो जाता है। अन्येगिन के लिए उसके हृदय में अब भी स्नेह है किन्तु वह अब पत्नी के अपना कर्तव्य समझती है और अपने पति के प्रति सच्ची रहना चाहती है।

लेन्स्की

लेन्स्की के रूप में कवि ने आदर्शवादी स्वप्नदर्शी नवयुवक का चित्र अंकित किया है। वह सन् बीस-तीस के अभिजात वर्ग के स्वप्न देखने वाले नवयुवकों का प्रतिनिधि है।

इस उपन्यास में यथार्थवादी अंकन के साथ-साथ प्रगीतात्मक अंश भी बड़े भावपूर्ण हैं और प्रकृति का चित्रण भी बड़ा सुन्दर हुआ है। बसन्त तथा पतझड़ के प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मार्मिक हैं।

यह उपन्यास अपनी भाषा तथा शैली के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। इसे पढ़ते हुए ऐसा मालूम होता है कि पाठक बराबर कवि से बात कर रहा है। पुश्किन ने इसे बातचीत की शैली में लिखा है। यदि इस

सबको अपने भाषणों प्रश्नों तथा पत्रों द्वारा अत्यन्त सजीव बनाता हुआ कथा कहता चलता है। इन सबसे इस उपन्यास को बातचीत की अत्यन्त सहज स्वाभाविक सजीव और चलती हुई शैली प्राप्त हो गयी है।

पुश्किन की सबसे बड़ी सेवा साहित्यिक रूसी (भाषा) की रचना मानी जाती है। तुर्गनेव के कथनानुसार पुश्किन ने दोहरा काम किया। रूसी भाषा की प्रतिस्थापना और साहित्य की रचना। पुश्किन ने साहित्यिक रूसी भाषा के मूल में जनता की भाषा रखी जिसमें सजीव बोलचाल की भाषा का भी रूप था और प्राचीन रूसी लोक-कथाओं और गीतों की भी भाषा थी।

रूसी रंगमंच और संगीत के विकास पर भी पुश्किन की प्रतिभा का गंभीर प्रभाव पड़ा। उसकी रचनाओं के आधार पर कई ओपेरा और बैले बनाये गये। ग्लीन्का ने 'रुसलान' और 'ल्युदमीला' का ओपेरा लिखा। दार्गोमीझ्स्की ने 'रुसाल्का' और 'मुसोर्गस्की ने 'बोरीस गुदोनोव' लिखा। चाइकोव्स्की ने 'येवगेनी अन्येगिन' मजेपा तथा 'हुकम की बेगम' का ओपेरा लिखा। इसी प्रकार ग्लीयेर ने 'तांबे का घुड़सवार' का बैले तैयार किया और असाफियेव ने 'बाख्ची सराय का फव्वारा' और 'कफकाजी कैदी' का बैले तैयार किया।

अपनी प्रतिभा और काव्य के द्वारा पुश्किन रूस का राष्ट्रीय कवि बन गया। उसके काव्य में रूसी जनता की सारी विशिष्टताएँ अभिव्यक्त हो गई हैं।

१३ मिखाइल यूरेविच लेरमन्तोव
[१८१४–१८४१]

बचपन

लेरमन्तोव का जन्म १४–१५ अक्तूबर १८१४ में हुआ। मातृपक्ष से वह एक प्राचीन अभिजात वर्ग से आता है। लेरमन्तोव तीन ही वर्ष का था जब कि उसकी माँ का देहान्त हो गया। उसका पालन नानी के घर में हुआ। नाना-नानी में अच्छे संबंध न होने के कारण उसे बराबर पिता वियोग सहना पड़ा जिसका उसे बड़ा दुःख रहा।

अभिजात वर्ग की तत्कालीन प्रथा के अनुसार लेरमन्तोव की शिक्षा भी विदेशी गवर्नेस तथा अभिभावकों के अधीन ही हुई। वह बचपन से फ्रांसीसी भाषा स्वच्छन्दता से बोलने लगा। लेरमन्तोव ने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि उसके शिक्षक विदेशी थे क्योंकि इस कारण वह रूसी साहित्य से परिचित न हो सका।

विश्वविद्यालय की पाठशाला

१८३० में लेरमन्तोव अपनी नानी के साथ मास्को आ गया और दूसरे वर्ष वह मास्को विश्वविद्यालय की पाठशाला (बोर्डिंग) में दाखिल हुआ। लेरमन्तोव को निजी तौर से पढ़ाने के लिए यूनिवर्सिटी के कतिपय प्राध्यापकों का प्रबन्ध उसकी नानी ने कर लिया।

विश्वविद्यालय की पाठशाला के अपने इस आवासकाल में उसने कई कविताएँ और 'तस्वीर' 'तुर्क की शिकायत' 'स्वच्छ पवन' लिखीं जिनसे उसके काव्य का दासता-विरोधी दृष्टिकोण तथा उसमें सहानुभूति स्पष्ट है। उस समय उसने सबसे अधिक कविताएँ लिखीं तथा कतिपय काव्य 'काकेशी कैदी' 'दैत्य' का आरम्भ भी लिखे।

सन् १८३०–३१ के बीच उसने राजनीतिक वस्तुओं पर कविताएँ लिखीं। सन् १८३० की कविता में उसने पोलिश विद्रोहियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। १८३० में ही फ्रांस की जुलाई क्रान्ति पर भी रचना की।

रूस की सन् १८३० की किसान-हलचल से संबंधित उसकी कविता 'भविष्यवाणी' है। इसमें कवि ने एसे आनेवाले समय की भविष्यवाणी की है जब कि ज़ार का ताज गिर पड़ेगा और मौत तथा खून ही बहुतों की खुराक होगी।

मास्को विश्वविद्यालय

सन् १८३० में लेरमन्तोव जब मास्को विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ उस समय इस विश्वविद्यालय में बलिंस्की स्तानकेविच गेर्त्सेन गनचारोव आदि भी पढ़ते थे। लेरमन्तोव अपने विद्यार्थी-जीवन के इन वर्षों को बड़ी भावुकता के साथ 'साश्का' कविता में याद करता है।

विश्वविद्यालय के इस जीवन-काल में लेरमन्तोव ने सौ से अधिक कविताएँ, कतिपय ट्रैजेडी और काव्य लिखे। इन्हीं वर्षों में 'दैत्य' काव्य की प्रथम यावना सामने आयी और 'निर्धन' 'देवदूत' 'पाल' जैसी कविताएँ रची गयीं। 'पाल' कविता में कवि की विद्रोही प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। इसमें उसका रोमांटिक रूप भी सामने आता है। जिस तरह कि नाव का पाल छोकर नाविक तट की शांति सुरक्षा और सुख को छोड़कर तूफान की ओर चल देता है, मानो तूफानों में ही शांति हो उसी तरह कवि भी क्रियाशीलता और संघर्ष चाहता है। इस समय वह अँगरेज़ कवि बायरन की ओर भी आकृष्ट हुआ और उससे प्रभावित हुआ। विश्वविद्यालय के कतिपय प्रोफ़ेसरों के विरुद्ध आपत्ति करने के कारण अन्य विद्यार्थियों के साथ उसे भी विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने में वह असफल रहा। इसके बाद वह सैनिक स्कूल में भर्ती हो गया। इस समय उसने हाजी अब्रेक' काव्य लिखा दैत्य' काव्य का नया रूप प्रस्तुत किया और 'वादिम' कथा का आरम्भ किया जो अपूर्ण रही।

सैनिक स्कूल

'वादिम' कथा का नायक निर्धन किन्तु अभिजात वंश का व्यक्ति है जिसे धमीर जमींदारों ने नष्ट कर दिया है। वह अपने अपमानकर्ता की ही नौकरी करता है। बाद में वह अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने

के लिए किसान-विद्रोह के नेता के रूप में प्रकट होता है। लेरमन्तोव की यह कथा 'दुब्रोव्स्की' से मिलती है और विद्रोह की भावना तथा जमींदारों की निरंकुशता के प्रति घृणा से परिपूर्ण है।

सैनिक स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद वह फौजी अफसर बन गया और 'हुसार' दस्ते में त्सारस्कोए सेलो भेजा गया। सन् १८३५-३६ में उसने काव्य 'बोयारिन ओर्शा' नाटक 'छद्मवेश' और कई कविताएँ लिखीं। इसी समय उसने 'राजकुमारी लिगोव्स्काया' लिखा। इसमें न केवल उच्च अभिजात वर्ग का जीवन ही चित्रित किया गया है वरन् राजधानी के छोटे-छोटे कर्मचारियों का भी अंकन हुआ है।

सन् १८३७ में कवि की महत्त्वपूर्ण रचना 'बोरोदिनो' छपी। स्वदेश-भक्ति की भावना से ओत-प्रोत इस कविता में बोरोदिनो के विख्यात युद्ध का वर्णन हुआ है। इसमें रूसी सैनिकों के साहस और दृढ़ता का गान है।

पुश्किन की (द्वन्द्व युद्ध में) मृत्यु पर लेरमन्तोव को दारुण दुःख और क्रोध हुआ क्योंकि उसने निरंकुश बादशाही को असली हत्यारा माना। पुश्किन की मृत्यु पर उसने 'कवि की मृत्यु' कविता लिखी जिसमें सारे राष्ट्र के शोक और क्रोध की व्यंजना हुई।

पहला निर्वासन

'कवि की मृत्यु' कविता बड़ी ही जल्द प्रिय हुई और जार उतना ही असंतुष्ट हुआ। फलतः लेरमन्तोव गिरफ्तार किया गया और काकेशस की एक टुकड़ी में भेज दिया गया। यह काकेशस में उसका पहला निर्वासन हुआ। काकेशस के निवास काल में लेरमन्तोव ने स्थानीय लोक-साहित्य की ओर अपनी विशेष रुचि दिखायी। उसने अजरबाइजान की लोक-कथा 'आशिक करीब' तथा अन्य स्थानीय कथाओं को लिपिबद्ध किया जिनका कि उसने अपने काव्य 'दैत्य' तथा 'म्त्सीरी' में उपयोग किया। यहीं उसने 'सौदागर कलाशनिकोव का गीत' पूरा किया जिसे कि उसने पीतरबुर्ग में शुरू किया था।

पीतरबुर्ग में वापसी

सन् १८३८ के शुरू में लेरमन्तोव को पीतरबुर्ग वापस लौटने क आज्ञा मिली। इस समय उसकी प्रतिभा का और भी विकास हुआ। इस समय उसकी कविता 'विचार' छपी जिसमें उसने अपनी समकालीन पीढ़ी की भीरुता तथा जार की खुशामद पर क्षोभ प्रकट किया।

अपनी कविता 'कवि' में लेरमन्तोव समकालीन कवि की कटा से तुलना करता है। खंजर कभी तो पहाड़ के घुड़सवारों का प्रतिष्ठापूर्ण शस्त्र था किन्तु अब वह सम्मानहीन 'सुनहरा खिलौना' मात्र रह गया है। इसी प्रकार आज का कवि भी अपना आदर्श गँवा चुका है।

धीरे-धीरे इस युग की राजनीतिक घुटन का वातावरण कवि को खा रहा था। न अपने को इस वातावरण के अनुकूल पाकर और न वातावरण को अपने अनुकूल बना सकने के कारण उसमें गहरी उदासी तथा आ भरती जा रही थी और अकेलापन उसे दबाता जा रहा था। 'रंग-बिरंगी भीड़ में घिरा' 'अब उदासी नहीं कि जिससे हाथ मिलाऊँ' 'बंदी' 'राजा' (अंधकार के बीच मौन खिड़की पर बैठा) 'बादल' 'पड़ोसी' आदि कविताओं में उदासी, क्षोभ तथा विरोध सभी कुछ व्यक्त हुआ है।

इसी समय फ्रांसीसी राजदूत के लड़के बरान्त और लेरमन्तोव के बीच द्वन्द्व हुआ। बरान्त निशाना चूक गया और लेरमन्तोव ने हवा में गोली छोड़ दी। द्वन्द्व युद्ध में भाग लेने के कारण लेरमन्तोव गार्ड रूम से पृ कर दिया गया।

दूसरा निर्वासन

सन् १८४० में लेरमन्तोव काकेशस भेजा गया। इस नये निर्वासन में जाते समय उसका उपन्यास 'अपने समय का नेता' छपा। काकेश जाते हुए वह मास्को रुका। ९ मई को वह गोगोल के नाम-दिन प उपस्थित था जहाँ उसने अपनी नयी कविता 'मित्सीरी' सुनायी।

'मित्सीरी' काव्य लेरमन्तोव की श्रेष्ठ रचनाओं में है। इसक नायक पहाड़ी युवक 'मित्सीरी' है जो छोटी ही अवस्था से बंदी है औ अपने देश से दूर पराधीनता में पड़ा है। वह मठ से निकल कर अपने देश

भाग जाना चाहता है जहाँ कि 'चट्टानें बादलों में छिपी रहती हैं और जहाँ लोग बाज (चीता) की तरह स्वच्छन्द हैं। इस काव्य में स्वातन्त्र्य प्रेम और देश-प्रेम, संघर्ष की उत्कट इच्छा, किशोरावस्था जीवन की कामना, प्रकृति-प्रेम आदि अनेक भावों की व्यंजना हुई है।

पीतरबुर्ग में आने के समय उसकी एक और भावपूर्ण रचना 'जन्म-भूमि' प्रकाशित हुई जो कि कवि के गहरे देश-प्रेम से ओत-प्रोत है। इसमें कवि का रूसी जनता तथा रूसी प्रकृति से गम्भीर प्रेम प्रकट हुआ है।

सन् १८३८ में 'दैत्य' काव्य की हस्तलिखित प्रतियाँ पीतरबुर्ग में फैल गयीं और पाठक आनन्द से भर गये। पाठक विशेष रूप से दैत्य के गर्वीले तेजस्वी विद्रोही रूप से बहुत प्रभावित हुए जो स्वयं आकाश और ईश्वर से संघर्ष करता है। दैत्य के आत्म-चरित्र में असीमित अधिकारों की लिप्सा, स्वतन्त्र होने का प्रयत्न और किसी के सामने न झुकने वाले साहसी मानवीय व्यक्तित्व का यशोगान है। लेरमन्तोव दैत्य को ज्ञान और स्वाधीनता का गाथा कहता है। दैत्य कफकाज की घाटियों के ऊपर उड़ते हुए तमारा को देखता है। उसका असाधारण सौन्दर्य दैत्य में प्रेम को जन्म देता है और वह आकाश में सुन्दर बनने की कोशिश करता है। इस काव्य में कफकाज के बड़े सुन्दर चित्र हैं।

अंतिम वर्षों के प्रगीत मुक्तक

पीतरबुर्ग से कफकाज जाते हुए 'विदा रूस' कविता लिखी जिसमें उसने 'गुलामों के देश, मालिकों के देश' रूस से विदा ली है। लेखक ओदोयेव्स्की ने लेरमन्तोव को जाते समय स्मृतिस्वरूप एक कापी दी जिसमें उसमें नयी कविताएँ लिखने की प्रार्थना की। लेरमन्तोव की मृत्यु के बाद यह कापी ओदोयेव्स्की के पास चली गयी। इसमें कवि की अन्तिम कविताएँ लिखी हुई हैं जिनमें 'तर्क', 'स्वप्न', 'पेड़ की पत्ती', 'मैं पथ पर अकेला जाता', 'चट्टान' जैसी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ हैं। इनमें कवि का अकेलापन और उदासी का भाव बड़ा प्रबल है।

उसकी अन्तिम कविता 'पैगम्बर' है जिसमें 'कवि पैगम्बर' का समकालीन समाज के द्वारा अपमान दिखाया गया है। समाज उसके प्रेम

और सत्य की शिक्षा का आदर नहीं करता वरन् कवि के शब्दों में
प्रिय सब मुझ पर पत्थर बरसाते हैं।

एक बार लेरमन्तोव का सैनिक स्कूल के अपने सहपाठी मर्तीन
से झगड़ा हो गया। मर्तीनोव ने उसको द्वन्द्व-युद्ध में आह्वान किया।
द्वन्द्व-युद्ध मशूक पहाड़ के नीचे २७ जुलाई (१८४१) की शाम
हुआ। मर्तीनोव की गोली से लेरमन्तोव की मृत्यु हो गयी। कुछों
कहना है कि यह द्वन्द्व युद्ध भी जारशाही तथा अभिजात वर्ग के लेरमन्
के अन्य शत्रुओं की साजिश का ही परिणाम था जो कि मर्तीनोव
लेरमन्तोव के विरुद्ध बराबर भड़का रहे थे।

'हमारे युग का नेता'

'हमारे युग का नेता' लेरमन्तोव की सर्वोच्च कृति है। इस उपन्य
का रूसी गद्य के विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

इसकी भूमिका में इस उपन्यास के नेता पेचारिन के बारे में लेरमन्त
ने लिखा कि हमारी पीढ़ी की सारी बुराइयों का वह संकलित चित्र
पेचोरिन की ऊब अपने चारों ओर के वातावरण से समझौते की अनि
तत्कालीन परिस्थिति के प्रति उसके विरोधाभिव्यंजन का ही एक
है। इस उपन्यास के द्वारा लेरमन्तोव ने यह प्रदर्शित किया है कि
लीन के प्रतिक्रियावादी वर्गों ने ऐसे लोगों को भी निष्क्रिय बना दि
जिनमें बुद्धि और प्रतिभा थी। व्यर्थता तथा विफलता की भाव
पेचारिन जैसे बुद्धिशाली व्यक्ति को बर्बाद बनाये रहती है।

प्रबन्धात्मकता

मुख्य पात्र के अन्तस् का दिग्दर्शन कराने के लिए इसका अधिक
पेचारिन की डायरी के रूप में लिखा गया है। फिर भी पेचारिन के बा
का परिचय देने के लिए लेरमन्तोव ने डायरी में दो अध्याय भूमिका
में जोड़ें हैं जिनमें वह नायक के बारे में अपने विचार व्यक्त करता है
उसके साथ मैक्सिम मक्सीमिच तथा आदि के सहयोगों की व्याख्या कर
है। यद्यपि इस उपन्यास में पाँच अलग-अलग कथाएँ हैं फिर भी

सब उपन्यास के मूलभूत भाव से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।

पेचोरिन

इसमें पेचोरिन का चित्र मनोविश्लेषणात्मक है। उसके चित्रण में लेखक ने नायक का हर पक्ष कलात्मकता तथा सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। उपन्यास में प्रस्तुत उसकी डायरी उसकी अपनी सारी दुर्बलता तथा बुराइयों का स्वीकरण है। बुद्धि और प्रतिभा के होते हुए उसे इसके सम्यक उपयोग का अवसर नहीं मिलता। यही उसकी बेचैनी का मूल कारण है। अपनी प्रतिभा के सम्यक प्रयोग के अवसर के अभाव में वह निरर्थक कामों में अपनी शक्ति का अपव्यय करता है और इधर-उधर भटकता है। वह सच्चे जीवन से वंचित रह जाता है और उसे शांति नहीं मिलती। वह समाज की आलोचना करता है, उसके खोखलेपन तथा तुच्छता को समझता है। किसी की सहानुभूति न प्राप्त कर सकने के कारण वह अकेलापन का अनुभव करता है और लक्ष्यविहीन जीवन के कारण उसका अस्तित्व ही निरर्थक हो जाता है। इसी से वह अशांत भटकता रहता है। वह दूर ईरान की यात्रा पर जा रहा है परन्तु क्यों? यह उसे नहीं मालूम। अपनी अनुभूति के कारण वह अपने समाज के अन्य लोगों से कहीं ऊँचा ऊपर उठा हुआ है।

स्त्री पात्रों में बेला का चित्र अत्यन्त भावुक है। वह उन लोगों में से है जिनके लिए प्रेम ही सब कुछ और उसका एक मात्र जीवन है। वह केवल एक बार ही प्रेम कर सकती है किन्तु फिर वह प्रेम जीवन भर चलता है।

उपन्यास में उन अफ़सरों के परिवारों तथा राजधानी के प्रतिनिधियों का व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया गया है जो पानी द्वारा करने इलाज के लिए [illegible] नहीं आते वरन् अपना कारोबार ठीक करने या मनबहलाव के लिए आते हैं। इसी प्रकार सेना के अफ़सर से वे भी [illegible] किया करते हैं और नाच-गान करते हैं। लेरमन्तोव एक बार व्यंग्यपूर्ण शब्दों में कहता है कि 'पेंशन के बाद से [illegible] भरा गिलास डाक्टर से वह ढंग से गटक जाते हैं।

'बेला' की कथा में रूसी साहित्य में पहली बार इन पहाड़ के रहने वालों का चित्र बिना किसी अतिशयोक्ति के प्रस्तुत किया गया है और उनके रीति-रिवाज तथा उनके स्वच्छन्द जंगली जीवन का अंकन हुआ है। इसके साथ ही उपन्यास में काकेशस की प्रकृति के बड़े सुन्दर चित्र मिलते हैं। ये प्राकृतिक दृश्य उपन्यास की प्रगीतात्मकता तथा भावुकता को और भी बढ़ाते हैं। प्रकृति का यथार्थवादी बाह्य अंकन अन्तर की प्रगीतात्मकता के साथ लेरमन्तोव द्वारा बड़ी ही कलात्मकता से संयोजित कर दिया गया है।

उसकी भाषा अत्यधिक स्पष्ट और साफ है और संवाद चुस्त तथा गठे हुए हैं। उसकी कलात्मकता बोलचाल की भाषा के अत्यन्त निकट है। लेरमन्तोव अपने गद्य में अत्यधिक अभिव्यंजना लाने का प्रयत्न करता है और उपमा का बड़ा ही युक्ति-युक्त प्रयोग करता है। फिर पुश्किन की तुलना में लेरमन्तोव का गद्य अधिक भावप्रवण है। उसकी तुलनाएँ तथा उसके विशेषण बड़े ही व्यंजनापूर्ण होते हैं। फलतः इस उपन्यास की भाषा अन्य लेखकों का आदर्श बन गयी है।

लेरमन्तोव के गद्य ने तुर्गनेव, तॉल्स्तॉय तथा चेखव की सर्जना को प्रभावित किया। उसके काव्य की नागरिकता तथा देशभक्ति की भावना से नेक्रासोव को प्रेरणा मिली।

लेरमन्तोव की रचनाओं के आधार पर प्रसिद्ध संगीतकारों ने कई रोमांस, आपेरा आदि की रचना की।

रूसी साहित्य में लेरमन्तोव का स्थान पुश्किन के समकक्ष है।

१४ निकोलाई वसीलिविच गोगोल
[१८०९–१८५२]

निकोलाई वसीलिविच गोगोल का जन्म अप्रैल १८०९ में युक्रेन के एक ज़मींदार वंश में हुआ था। उसका पिता शिक्षित व्यक्ति था और उसने कवितायें तथा कमेडी लिखी थी तथा वह रंगमंच पर अभिनय किया करता था। इससे गोगोल के हृदय में बचपन में ही रंगमंच के प्रति रुचि जग गयी। निझनेझियम में नाटकों का अभिनय भी हुआ करता था। इनमें गोगोल बड़ा अच्छा अभिनय करता था।

निझनेझियम में गोगोल की शिक्षा के वर्ष (१८२१–१८२८) रूस में दिसम्ब्रिस्टों की गुप्त समाजों के संगठन तथा अभिजात वर्ग के बीच प्रगतिशील स्वच्छन्दतावादी विचारों के प्रचार के वर्ष थे।

निझनेझियम में प्रगतिशील शिक्षकों का भी एक दल था जिसका नेता बेलाऊसाव था। १८३० में ज़ार सरकार ने इन पर स्वच्छन्द विचारों का अभियोग लगाया। इस सिलसिले में विद्यार्थी भी बुलाये गये। गोगोल ने बेलाऊसाव के प्रति सहानुभूति प्रकट की और उसके पक्ष में प्रमाण दिये। बेलाऊसाव के लेक्चर, पुश्किन, रील्येव तथा अन्य प्रगतिवादियों की रचनाओं ने गोगोल के प्रगतिशील दृष्टिकोण के निर्माण में बड़ा योग दिया। १८२८ में निझनेझियम की शिक्षा समाप्त कर गोगोल पीतरबर्ग चला गया।

पीतरबुर्ग का आरम्भिक जीवन

पीतरबुर्ग आते हुए गोगोल अपना रोमांटिक काव्य 'हान्स क्यूखेल्गार्टेन' लिखकर ले गया, वह उस पर पुश्किन की सम्मति चाहता था किन्तु ऐसा न हो सका। यह कृति छपी तो इसकी कड़ी आलोचना हुई। फलतः गोगोल ने उसकी सारी प्रतियाँ जला दीं।

पीतरबर्ग में शुरू में उसे कोई सफलता न मिली। वह अलेक्सान्द्र थियेटर में अभिनेता बनना चाहता था लेकिन असफल रहा। बड़ा

के लोग में धीरे-धीरे उसकी प्रतिभा का ह्रास हो जाता है। 'पागल की टिप्पणियाँ' में उस समाज के बीच सामान्य व्यक्ति के जीवन की करुण स्थिति दिखायी गयी है *जहाँ केवल धनी तथा उच्च कर्मचारियों का ही आदर* होता है और सामान्य व्यक्ति मात्र घृणा का पात्र है। कहानी का नायक इस स्थिति को न सह सका और पागल हो गया। 'ओवरकोट' कहानी में एक गरीब कर्मचारी की कथा है जो किसी तरह पैसे जोड़-जाड़ कर नया ओवरकोट सिलवाता है और वो शीघ्र ही चोरी चला जाता है। दुःख भार तथा ठंड से इस कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है। यह कहानी बड़ी प्रसिद्ध हुई। गोगल कर्मचारी की करुण दीनता का चित्र खींचता हुआ उच्च शासक वर्ग की हृदयहीनता पर व्यंग्य करता है। 'ओवरकोट' कहानी द्वारा गोगल ने साहित्य में विस्तृत तथा निम्न स्थिति के लोगों की रक्षा और सामाजिक अन्याय के विरोध की परंपरा की नींव डाली।

इन कहानियों से गोगल की प्रौढ़ कलात्मकता का पूर्ण परिचय मिल जाता है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता उसका सूक्ष्म व्यंग्य है जो पाठकों को हँसाता है और उदास बनाता है तथा साथ ही यह सोचने को भी बाध्य करता है कि ये पात्र सर्वथा हास्यास्पद नहीं हैं किन्तु परिस्थिति ने इनको यों दयनीय बना दिया है। बेलिंस्की ने इसी से गोगल के व्यंग्य को 'आँसुओं के बीच हँसी' कहा है।

सन् १८३५–३६ में गोगल और पुश्किन की घनिष्ठता बढ़ी। पुश्किन द्वारा प्रकाशित पत्र 'समकालीन' में गोगल सहयोग देने लगा। इसी वर्ष (१८३५) गोगल ने अपनी कमेडी 'इन्सपेक्टर' लिखी और 'मृत आत्माएँ' का लेखन शुरू किया। इन दोनों कृतियों का वस्तु विषय गोगल को पुश्किन से प्राप्त हुआ।

इन्स्पेक्टर

'इंस्पेक्टर' के बारे में गोगल ने कहा कि उसमें मैंने रूस की सारी बुराइयों को जिनसे कि मैं अवगत हूँ एक जगह एकत्रित करने का निश्चय किया है तथा उन सारे अन्यायों को जो कि उन जगहों और स्थितियों में किये जाते हैं जहाँ मनुष्य से सबसे अधिक

न्याय की माँग की जाती है और इन सब पर एक साथ हँसने का निश्चय किया है।

इसमें निकोलस के युग का जीवन तथा उन्नीसवीं सदी के सन् तीस और चालीस के वर्षों का ठेठ रूप चित्रित किया गया है। उस नगर का अध्यक्ष नागरिक कर्मचारियों को सावधान रहने की सूचना देता है क्योंकि इंस्पेक्टर जाँच करने के लिए आ रहा है। कमेडी का सारा कार्यकलाप इसी के चारों ओर केन्द्रित है।

इस कमेडी में रिश्वतखोरी, ग़बन, [illegible] अत्याचार, कर्मचारियों की ब्यूरोक्रेटिज़्म इन सब पर मार्मिक व्यंग्य है। गोगल ने दास-प्रथा और ब्यूरोक्रेटिज़्म की व्यवस्था का नग्न चित्र प्रस्तुत किया है, जिसमें कर्मचारी, न्यायाधीश सभी रिश्वतखोर, बेईमान और धनी व्यक्ति का पक्ष लेकर सामान्य व्यक्ति का सत्यानाश करते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि यह सारा चित्र गोगल के सूक्ष्म एवं गंभीर हास्य तथा व्यंग्य से मंडित है। तीक्ष्ण एवं अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण पात्रों को हास्यास्पद बनाता हुआ भी तत्कालीन जीवन के सत्य को अत्यन्त कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है।

इस कमेडी के अभिनय से प्रगतिशील तो प्रसन्न हुए पर प्रतिक्रियावादी बड़े रुष्ट हुए और इसे कर्मचारियों पर आक्षेप कहा और इस नाटक को बंद करने की माँग करने लगे। इन सब से गोगल बड़ा परेशान हुआ। इस समय उसका स्वास्थ्य भी खराब हो गया। फलतः गोगल ने थोड़े समय के लिए विदेशयात्रा का निश्चय किया जिससे कि वह थोड़ा आराम कर सके और 'मृत आत्माएँ' के लेखन कार्य में लग सके।

विदेश-यात्रा

फलतः १८३६ में गोगल विदेश चला गया। कुछ समय तक पेरिस में रहने के बाद वह रोम में बस गया। 'मृत आत्माएँ' के प्रकाशन के संबंध में वह कभी-कभी रूस आता था।

सन् १८४१ में गोगल ने 'मृत आत्माएँ' का पहला भाग पूरा किया और प्रकाशन के लिए उसे रूस भेजा। मास्को के सेंसर ने इसके प्रकाशन

साथ वह पात्र उस परिस्थिति का भी दिग्दर्शन कराते हैं जिसने कि उनको ऐसा बना दिया है। इसमें जमींदारों का विकास रहित आत्मतुष्ट एवं पशुतापूर्ण जीवन का अभिव्यंजन हुआ है। गोगल की ममस्पर्शी हँसी उनके तथाकथित सांस्कृतिक बाने को उघार देती है और उनका वास्तविक रूप हमारे सामने प्रस्तुत कर देती है।

मानिलोव

इस उपन्यास के पात्रो म मानिलोव का कोई व्यक्तित्व नहीं है। दास प्रथा के वातावरण ने उसकी भावनाओं को कुंठित कर दिया है और उसे खोखला बना दिया है। यथार्थ जीवन से असंबद्ध योजनाएं बनाना आत्मप्रदर्शन और खाली बातें बनाना उसकी विशिष्टता है।

करोबोचका

इसके विपरीत करोबोचका (विधिवा) गृह संचालन में अत्यन्त पटु है। उसने पास रुपए रखने के बहुत से बटुए हैं। वह प्रत्येक पाई का मूल्य समझती है और उसे बचाकर रखती है। इस तरह पैसा बचाने की आदत उसे सूम बना देती है। उसकी सारी भावनाएं सूख जाती हैं और वह स्वयं 'मृत आत्मा' हो जाती है। वह प्रत्येक नयी चीज को संशय की दृष्टि से देखती है। वह अकेली नहीं है वरन् वह उस समय के प्रान्तीय अभिजात वर्ग के अज्ञानपूर्ण रूढ़िवादी जमींदारो की प्रतिनिधि है।

नज्द्रेव

नज्द्रेव उन लोगों का प्रतिनिधि है जिनकी प्रपंच और झगड़े में बड़ी रुचि है जो गप्पें हाँकते है और शेखी बघारते हैं और जो बिना मतलब के झूठ बोला करते हैं। वह शोर-गुल मचाने वाला आदमी है।

सबाकेविच

सबाकेविच (कुत्ते का पिल्ला) 'कुलक' और शोषक है। उसके यहाँ जो किसान जीवित थे वह इसलिए कि वह उसकी जायदाद थे और उनको एकदम मार डालना फायदेमंद न था। जब वह चलता था तो अवश्य किसी न किसी का पैर कुचल जाता था। उसका बोलना मानो गुर्राना

था। वह दास प्रथा का कट्टर समर्थक है और प्रत्येक प्रकार की नवीनता तथा सुधार का घोर शत्रु।

प्ल्यूश्किन

प्ल्यूश्किन अभिजात वर्ग के नैतिक पतन की चरम सीमा का प्रतीक है। वह बहुत कंजूस है और अब वह मनुष्य नहीं रह गया। उसकी सारी भावनाएं सूख गयी हैं। प्ल्यूश्किन का ऐसा चित्र प्रस्तुत करते हुए गोगल जीवन की उन परिस्थितियों का भी निदर्शन कराता है जिन्होंने कि उसको ऐसा बना दिया। प्ल्यूश्किन के रूप में गोगल ने जमींदारों का दास-किसानों पर घोर अत्याचार प्रदर्शित किया है। प्ल्यूश्किन अपने दास-किसानों को भूखा मारता है। प्ल्यूश्किन के माध्यम से गोगल ने अभिजात वर्ग के नैतिक अध:पतन का बड़ा जोरदार चित्र प्रस्तुत किया है।

चिचिकोव

चिचिकोव भी अभिजात वर्ग का है किन्तु वह प्रखर बुद्धिवाला है और नयी पूँजीवादी परिस्थिति को समझता है जिससे कि प्राचीन जमींदार वर्ग नष्ट हो रहा है। उसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा परिस्थिति से लाभ उठाने की क्षमता है। स्कूल की शिक्षा पूरी कर उसने नौकरी की। शुरू में तो उसे बड़ी सफलता मिली लेकिन बाद में उसकी चालबाजी खुल गई और वह नौकरी से निकाल दिया गया और वह सारी धन दौलत खो बैठा। उसने फिर काम शुरू किया। चुंगी दफ्तर में वह छिपाकर माल ले जाने वालों से मिल गया और उसे बड़ा फायदा होने लगा। किन्तु अपने एक साथी कर्मचारी से झगड़ा हो जाने के कारण सारा भंडा फूट गया और सब कुछ नष्ट हो गया। इसके बाद उसकी बुद्धि ने उसे फिर अमीर बनने का रास्ता दिखाया और उसने मृत व्यक्तियों को खरीद कर शीघ्र अमीर बनने की योजना बनाई। उसे इसमें सफलता मिली किन्तु रहस्य भी खुल जाने से उसे जान बचाकर उस शहर से भागना पड़ता है। इसके साथ ही उपन्यास समाप्त होता है।

भाषा

पुश्किन की परंपरा का अनुसरण करते हुए गोगल की साहित्यिक

रूसी को बोलचाल की भाषा के अत्यधिक निकट लाया। अपनी भाषा को अत्यधिक सजीव बनाने के लिए और उसमें विभिन्न वर्गों की बोली का पुट देने के लिए उसमें कर्मचारियों, कारीगरों तथा किसानों आदि की भाषा बड़े ध्यान से सुनी और उनके खास मुहाविरे, विशिष्ट शब्दावली तथा कहावतों आदि को इकट्ठा किया। उनकी यह सजीव बोलचाल की सटीक भाषा सूक्ष्म हास्य और व्यंग्य से संयुक्त है। बोलचाल तथा दैनिक जीवन की जन-भाषा को साहित्यिक भाषा में ढालने का गोगल का यह प्रयत्न बड़ा सफल रहा और इसका परवर्ती लेखकों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। नेक्रासोव, साल्तिकोव-श्चेद्रिन, तुर्गनेव, दस्तोयेव्स्की जैसे बाद के लेखकों ने गोगल की इसी भाषा-परंपरा को अपनाया और आगे बढ़ाया।

भावना तथा प्रबन्धात्मकता दोनों की दृष्टि से 'मृत आत्माएँ' बड़ी उच्च स्तर की कलात्मक कृति है। तत्कालीन युग के रूसी जीवन तथा सामाजिक विचारों की इसमें बड़ी यथार्थ और गहरी अभिव्यक्ति हुई है। गोगल को इसी कारण यथार्थ जीवन का कवि कहा गया है।

गोगल की वाणी में कठोर मर्मस्पर्शी व्यंग्य है। सत्य तथा उच्च भावनावादी आदर्शों की शिक्षा में ही गोगल के यथार्थवाद की शक्ति है और विश्व साहित्य में उसका महत्व है।

१५ बेलिंस्की

[१८११-१८४८]

रूसी समालोचना के क्षेत्र में बेलिंस्की का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसने कला तथा साहित्य की प्रगतिशील सामाजिक तथा कलात्मक व्याख्या प्रस्तुत की जिससे रूसी साहित्य में यथार्थवादी प्रवृत्ति की ओर भी बढ़ावा। समालोचक के रूप में बेलिंस्की का तत्कालीन साहित्यिक गतिविधि में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मास्को विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए उसने सेंसर के नाम एक 'नाटकीय' कहानी (१८३१) भेजा जिसमें भूस्वामियों के अत्याचारों की निन्दा और दास प्रथा की बुराइयों का चित्रण किया गया। वह विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। १८३४ में उसका प्रथम महत्त्वपूर्ण लेख 'साहित्यिक भावनाएँ' छपा जिसने लोगों का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट किया।

उसकी आर्थिक स्थिति ठीक न थी। इसलिए उसे गंभीर मनन और चिंतन के साथ-साथ जीविकोपार्जन के लिए पुस्तक लेखन तथा 'ट्यूशन' भी करना पड़ता था और अन्त में वह 'पितृभूमि समाचार' में काम करने लगा।

उसके दार्शनिक चिन्तन ने उसे आदर्शवाद से भौतिकवाद तथा यथार्थवाद की ओर उन्मुख किया और उसने गुटबन्दी व कला कला के लिए के सिद्धान्त का बहिष्कार कर कला को जनमुखी तथा समाजमुखी का साधन माना। उसका कला का प्रगतिशील सामाजिक दर्शन उसकी क्रान्तिकारी भावना तथा जनता में उद्धारक शक्ति में विश्वास था और वह कला की स्वतन्त्रता तथा उच्च सामाजिक उद्देश्यों के लिए आह्वान करता था। उसका कहना है कि 'कला वास्तविकता की सत्यता में अभिव्यक्ति है। साहित्य हमेशा समाज की तस्वीर दिखाता है। उसे सामाजिक सत्ता के अधिकार से अलग करना कला को ऊँचा उठाना

नहीं प्रत्युत नीचे गिराना है। क्योंकि वह हमेशा इससे अपनी जीवन शक्ति अर्थात् विचार से वंचित हो जायगी और स्वैच्छा तथा विलास की चीज हो जायगी।

बेलिंस्की रूसी साहित्य की यथार्थवाद की ओर बढ़ती हुई प्रवृत्ति के महत्त्व को ठीक-ठीक समझ सका और उसका स्वागत किया। उस प्रवृत्तिवादी 'गोगल स्कूल' की रचनाओं में प्रगतिवादी सामाजिक आदर्श तथा रूसी जीवन के यथार्थ अंकन की झलक मिलती है। फलतः सन् १८४० में आस पास नगर तथा ग्राम जीवन से सबंधित यथार्थवादी रचनाओं को उसने तत्कालीन रूसी जीवन की वास्तविकताओं तथा आवश्यकताओं को अनुरूप अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया और उनका स्वागत किया। बलिंस्की ने सामान्य जनता क्लर्क कारीगर किसान के जीवन की कुरूपता और वीभत्सता के चित्रण का स्वागत और समर्थन किया क्योंकि वे सत्ताधीशों के द्वारा समर्थित शुद्ध सौन्दर्य के आदर्श के प्रतिपक्ष जीवन की कटु वास्तविकताओं को सामने लाकर जन चेतना को जगा कर बहुत बड़ी सेवा कर रहे थे। ऐसे प्रवृत्तिवादी विषयों के अंकन में बलिंस्की को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन की झलक मिली। साहित्य के बीच रूसी प्रकृतिवाद यथार्थवाद की आलोचना बेलिंस्की का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है। अपनी साहित्यिक आलोचनाओं के द्वारा वह बराबर निरंकुश बादशाही के विरुद्ध जनता के पक्ष में युद्ध करता रहा।

१८४६ में वह 'समकालीन' पत्र में काम करने लगा। इसी पत्र में उसने गोगल के 'मित्रों से पत्र व्यवहार' की तीव्र आलोचना की जिसमें गोगल ने अपनी क्रान्तिकारी कृतियों का निराकरण किया था। बलिंस्की के इस पत्र से गोगल बड़ा दुःखी हुआ और उसने बेलिंस्की को पत्र लिखा। बलिंस्की ने इसका जो उत्तर दिया वह उस समय न छप सका। किन्तु वह साहित्य की अत्यन्त प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण कृति बन गयी। यह पत्र शासन अत्याचार, नैतिक पतन की तीव्र एवं कलात्मक निन्दा है। इसमें उसने लिखा कि रूसी जनता को रूसी लेखकों ही में निरंकुशता से रक्षा करनेवाले दिखाई पड़ते हैं। उन्हीं में जनता की आशा है। इसलिए जनता

लेखक के कलाहीन पुस्तक के लिए क्षमा कर सकती है किन्तु दुष्ट पुस्तक के लिए कदापि नहीं। दूसरे साल पेत्राशेव्स्की गोष्ठी के सदस्यों को बेलिंस्की के इस पत्र का प्रचार करने के कारण कड़ी क़ैद की सजा दी गयी।

१८४७ में बेलिंस्की ने 'रूसी साहित्य पर विचार' लेख लिखा जिसका कलात्मक सिद्धान्त के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। बेलिंस्की तपेदिक का रोगी हो गया था। उसके मित्रों ने उसे आर्थिक सहायता देकर चिकित्सा के लिए विदेश भेजा। १८४८ में उसकी मृत्यु हो गयी। मौत ने उसे शारीरिक यातना और जेल की संभावना दोनों से छुटकारा दिला दिया।

बेलिंस्की ने केवल साहित्य के अतिरिक्त सभी तात्कालीन विषयों पर रंगमंच, इतिहास, दर्शन, सौन्दर्य, कला, विदेशी साहित्य—अपने क्रांतिकारी एवं जनवादी विचार प्रस्तुत किये।

उसके शत्रु उसे 'साहित्यिक विद्रोही' कहा करते थे। बेलिंस्की के बारे में तुर्गनेव लिखता है कि 'वह सुन्दरता और असुन्दरता दोनों को पहचान लेता था। और सच को झूठ से अलग कर निर्भीकता और साहस से अपना निर्णय देता था। वह लेखकों की प्रतिभा को तुरंत पहचान लेता था और उनको प्रोत्साहित करता था। उसका बड़ा प्रभाव था और यद्यपि उसके मित्रों में तुर्गनेव, नेक्रासोव जैसे प्रसिद्ध लेखक थे फिर भी वह अप्रसिद्ध और अज्ञात लेखकों को बराबर प्रोत्साहन देता था। प्रसिद्ध रूसी लेखकों के संबंध में बेलिंस्की के लिखे गये लेख रूसी आलोचना की सर्वोत्तम कृति के रूप में मान्य हैं।

१६ इवान अलेक्सेविच याकोव्ल्येव (गेर्त्सेन)

[१८१२-१८७०]

यह मास्को के एक सौदागर का जर्मन लड़की से गैरकानूनी पुत्र था। माता पिता ने उसे गहर्त्सेन (रूसी में गेर्त्सेन) कहते थे और बाद में वह इसी नाम से विख्यात हुआ।

उसकी शिक्षा दीक्षा, विश्वविद्यालय के मित्रों के वातावरण ने उसे प्रगतिशील विचारवाला व्यक्ति बना दिया। उसके निजी शिक्षकों में से एक ने फ्रांस की राज्यक्रान्ति में भाग लिया था और दूसरे ने उसे पुश्किन तथा रीलयेव की गैरकानूनी कविता से परिचित कराया था। ग्रेजुएट होने के एक वर्ष बाद गर्त्सेन और उसके दोस्त गिरफ्तार कर लिये गये और मास्को से निर्वासित कर दिए गये।

पाँच वर्ष के निर्वासन के बाद उसने पीतरबुर्ग में नौकरी कर ली। वहाँ पर बेलिन्स्की के निकट आया और उसके पत्र में लिखने लगा। थोड़े समय के बाद उसने सरकारी नौकरी छोड़ दी और सामाजिक साहित्यिक कार्य में लग गया। इस समय पाश्चात्यवादी तथा स्लावोफिल की गरमागरम बहस गोगल की ख्याति तथा बेलिन्स्की के प्रभाव का था। गर्त्सेन प्रगतिवादियों का नेता बन गया था।

गेर्त्सेन की रुचि दर्शन विज्ञान इतिहास तथा समाजवादी साहित्य सभी की ओर थी। उसने बहुत अधिक लिखा। उसकी कृतियों में विज्ञान में व्यक्तित्ववाद प्रकृति के अध्ययन पर पत्र डाक्टर क्रुपोव किसका अपराध विशेष रूप से उल्लेखनीय थी।

गेर्त्सेन का उपन्यास 'किसका अपराध' उसकी बहुत प्रसिद्ध कृति है। यह साधारण स्थिति के पति-पत्नी के गार्हस्थ्य जीवन की कहानी है। इसका मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि विवाहित जीवन और व्यक्तिगत आनन्द ही सब कुछ नहीं है एवं उसे जीवन की पूर्णता मान लेना बहुत बड़ी गलती है। यद्यपि बहुत से व्यक्ति ऐसी भ्रान्त धारणा में पड़े

है। गेर्त्सेन का कहना है कि इसका दोष व्यक्तियों पर नहीं है। वास्तव में अपराध समाज का है और उस व्यवस्था का है जो ऐसी भ्रान्त धारणा फैलाता है, जिसके फलस्वरूप लोग संकुचित व्यक्तिगत जीवन में सीमित रहते हैं और सामाजिक कार्यों से विमुख रहकर अपने जीवन के पूर्ण विकास से वंचित रह जाते हैं। इस उपन्यास का महत्व गार्हस्थ्य जीवन के करुण अन्त में न होकर उन छोटे पात्रों के जीवन के यथार्थ चित्रण में है जिनके द्वारा गेर्त्सेन विशेष रूप से गुलामी प्रथा पर अपने विचार प्रकट करता है। बेलिन्स्की ने इस उपन्यास की बड़ी प्रशंसा की। यह उपन्यास यथार्थवादी गद्य का उत्कृष्ट ग्रंथ है।

गेर्त्सेन १८४७ में पेरिस गया और वहाँ से इटली और फिर स्विटज़रलैंड। ज़ार निकोलस प्रथम की आज्ञा पर वापस न लौटने के कारण उसे शेष जीवन प्रवास में बिताना पड़ा। इन वर्षों के अनुभवों का अंकन उसकी पुस्तक 'दूसरे तट से' में हुआ है जिसने रूसी तथा विदेशी सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। १८५२ में वह लन्दन आया और उसने प्रगतिशील आंदोलन के पक्ष में दो पत्र 'ध्रुवतारा' तथा 'घंटा' निकाले। यह पत्र क्रान्तिकारी विचारों के केन्द्र बन गये। इस प्रकार देश से दूर रहते हुए भी वह रूस देश की सेवा करता रहा। उसकी सर्वश्रेष्ठ राजनीतिक कृतियाँ इन पत्रों में छपीं।

बाद में प्रगतिवादियों के बीच दो दल हो गए और धीरे-धीरे उसका प्रभाव घटने लगा फिर भी वह बराबर लिखता रहा। १८७२ में उसकी मृत्यु हो गई।

गेर्त्सेन की कृतियाँ रूस में १९०५ तक छपी नहीं। उसके ग्रंथों का प्रथम पूर्ण संस्करण अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति के बाद प्रकाशित हुआ। उसकी सर्वोत्तम कृति 'बीती बातें और विचार' है जो उसके जीवन के विविध प्रकार के अनुभवों और विचारों से पूर्ण है और जिसमें उसके व्यक्तिगत जीवन की झलक भी है। यह मानो रूसी व्यंग्यात्मक आवेगपूर्ण तथा वैज्ञानिक शैली का अत्यन्त चमत्कारक ग्रंथ है।

१७ इवान अलेक्सान्द्रोवीच गोंचारोव

[१८१२–१८९१]

गोंचारोव का जन्म सिम्बिर्स्क नगर के व्यापारी परिवार में हुआ था। परिवार संपन्न था और उसकी शिक्षा दीक्षा अच्छी तरह हुई थी। मास्को विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए उसकी बेलिन्स्की, हर्ज़ेन, स्तानकेविच आदि प्रगतिशीलों से मित्रता थी किन्तु वह किसी दल में शामिल न हुआ तथा राजनीति से अलग ही रहा।

उसकी पहली महत्वपूर्ण कृति 'सामान्य इतिहास' १८४७ में 'समकालीन' पत्र में छपी और उसने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। १८४९ में उसने अपने दूसरे उपन्यास के आरम्भिक अध्याय उसी पत्र में *'ओब्लोमोव के स्वप्न'* नाम से छपाने शुरू किए किन्तु यह उस समय अधूरा ही रह गया। यह कृति १८५७ में पूरी हुई और १८५९ में छपी। उसकी तीसरी प्रसिद्ध कृति 'कगार' है। १८५२ में वह एडमिरल के सेक्रेटरी की हैसियत से विश्व-यात्रा पर निकला और उसे अमेरिका और जापान के तट की यात्रा का हाल लिखने का आदेश दिया गया। फलतः १८५८ में दो भागों में गोंचारोव की यात्रा का ग्रंथ 'पल्लाडा जहाज' के शीर्षक से निकला।

'सामान्य इतिहास' में सन् चालीस के युग के रूसी जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है और पितृसत्ता के तथा बुर्जुआ संस्कृति के बीच का संघर्ष दिखाया गया है। लेखक ने इस उपन्यास में प्रगतिशील मध्यम वर्ग का समर्थन किया और दूसरे पक्ष की त्रुटियों का उद्घाटन किया।

'कगार' उपन्यास सन् साठ की चीज है। इस समय तक पितृसत्तात्मक जीवन समाप्त हो चुका था और बुर्जुआ स्थिति दृढ़ हो गई थी। किन्तु इसके साथ ही क्रान्तिकारी जनात्मक शक्ति भी विकसित हो रही थी और पूँजीवाद को चुनौती दे रही थी जिससे कि बुर्जुआ पक्ष चिन्तित हो उठा

था। गोंचारोव अब अनुदार और अपरिवर्तनवादी बन गया था। उसने बूर्जुआ पक्ष का उच्च पद का समर्थन किया और नयी प्रगतिशील सृजनात्मक शक्ति से विमुख रहा।

उसकी सब से प्रसिद्ध कृति 'ओब्लोमोव' है। इस उपन्यास में सन् पचास के जमाने का तीव्र संघर्ष प्रस्तुत किया गया है। दास प्रथा का प्रश्न इस समय की ज्वलन्त समस्या थी। गोंचारोव इसमें प्रगतिशील लेखक के रूप में आता है। वह प्राचीन व्यवस्था की आलोचना करता है यद्यपि उसके मन के एक कोने में इसके प्रति थोड़ी सहानुभूति भी है।

इस उपन्यास का नायक ओब्लोमोव साहित्यिक संसार में बड़ा प्रसिद्ध हुआ और रूसी में आलसी व्यक्ति का प्रतीक बन गया। ओब्लोमोव भावुक, सुसंस्कृत और बुद्धिमान युवक है किन्तु वह कोरा स्वप्नदर्शी ही बना रहता है और धीरे धीरे क्रियाशून्य बन जाता है। उसमें संघर्ष में पड़ने की न शक्ति रह जाती है और न इच्छा ही होती है और वह सामाजिक जीवन से बिल्कुल अलग हो जाता है। 'सोफ़ा' पर लेटा हुआ वह चंचल भावनाओं के स्वप्निल संसार में डूबा रहता है और उसके स्वप्न कोरे स्वप्न रह जाते हैं। आरम्भ में उसके मित्र उसे सुधारने का प्रयत्न करते हैं किन्तु वे भी निष्फल रहते हैं और उसका साथ छोड़ देते हैं। ओब्लोमोव अब किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं चाहता क्योंकि जीवन की स्थिर गतिविधि में बाधा पड़ने का भय है। वह अब पढ़ना भी छोड़ देता है और जमींदारी की देखभाल भी नहीं करता। उसका जीवन अब सचमुच क्रियाशून्य हो जाता है। वह पदार्थमात्र बराबर आलसी है।

गोंचारोव बताता है कि नायक की इस अकर्मण्यता का मूल कारण जमींदारी तथा दास प्रथा है। उसकी सेवा के लिए अनगिनत दास हैं और रियासत की आमदनी पर जीवन बिना किसी बाधा के सुखपूर्वक बिताया जा सकता है तो कोई संघर्ष में क्यों पड़े। फलतः इस जमींदारी तथा दास प्रथा ने जमींदारों को परोपजीवी बना दिया और उनको नीचे गिरा दिया। उनका कोई उच्च ध्येय न रहा। इस सामन्तवादी प्रथा और वातावरण ने उन्हें किसी काम का न रखा। ओब्लोमोव प्रेम करना भी छोड़ देता है।

इस सामाजिक संघर्ष ने नये प्रकार के बुद्धिवादियों को जन्म दिया। अब राजनीतिक सामाजिक संघर्ष में वे डिमोक्राट बुद्धिजीवी सामने आये जो उच्च वर्ग से नहीं सम्बन्धित थे वरन् जनता के बीच से आये थे। स्वयं अभाव और निर्धनता के बीच जीवन बिता चुकने के कारण ये (राज्नोचिन्त्सी) उच्च वर्ग से असंबद्ध बुद्धिजीवी अच्छी तरह जानते थे कि निरंकुश शासन तथा जमींदार और कर्मचारियों के अत्याचार के बीच जनता का जीवन कितना दयनीय तथा असह्य हो रहा है।

राज्नोचिन्त्सी

इस प्रकार रूसी साहित्य के क्षेत्र में अब नये बुद्धिजीवी 'राज्नोचिन्त्सी' लेखक—पम्यालोव्स्की (१८३५–१८६३) उस्पेन्स्की (१८४७–१८८९) रिशेत्निकोव (१८४१–१८७१) तथा अन्य आये जिनकी रचनाएँ सताई हुई जनता के प्रति गहरी सहानुभूति से परिपूर्ण थीं और जिनकी रचनाओं में सामाजिक असमानता और शोषण के विरुद्ध उग्र प्रतिवाद था। इन सब लेखकों ने एक स्वर से जमींदार-कर्मचारियों तथा बुर्जुआ व्यवस्था की कड़ी आलोचना की।

क्रान्तिकारी डिमोक्राट

सन साठ के रूसी समाज के प्रगतिशील पक्ष का संचालन यही क्रान्तिकारी डिमोक्राट कर रहे थे जिनके नेता चेर्निशेव्स्की और दोब्रोल्यूबोव थे। इन लोगों ने बड़े साहस और दृढ़ता के साथ किसानों का पक्ष लिया और जनता में क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया। इन लोगों ने सन् १८६१ के सुधारों की आलोचना की। उनकी व्यर्थता का दिग्दर्शन कराया और जनता में यह विचार फैलाया कि सुधारों से नहीं वरन् केवल क्रान्ति द्वारा ही जनता का जीवन ऊपर उठाया जा सकता है।

इन लोगों ने क्रान्तिकारी प्रचार को बड़ा महत्त्व दिया और कला तथा साहित्य को इसका प्रधान साधन बनाया। इन्होंने कहा कि "कला को जनता की सेवा अवश्यमेव करनी चाहिए और उसका लक्ष्य क्रान्ति के योद्धाओं को तैयार करना है।" चेर्निशेव्स्की ने इस विचार का प्रतिपादन किया कि

कला जीवन को प्रतिबिम्बित करती है और साहित्य को जीवन की पाठ्य पुस्तक बनाना चाहिए। लेखक का प्रथम कर्तव्य जनता का उद्धारक बनना और अत्याचार से मुक्ति दिलाना है। इसी प्रकार दोब्रोल्यूबोव ने साहित्य में सत्य तथा जीवन के आलोचनात्मक अभिव्यंजन और चित्रण की मांग की।

निग्लासोव ने दोब्रोल्यूबोव के बारे में लिखा कि गरीबी और कठोरता से भरा बाल्य-काल, भूख से भरे स्कूल के दिन, फिर चार साल का अथक परिश्रम और बाद में अपनी मृत्यु का आभास—यह दोब्रोल्यूबोव के जीवन की पूरी कहानी है। दोब्रोल्यूबोव पच्चीस वर्ष की अवस्था में मर गया था। फिर भी उसका समकालीनों तथा बाद की पीढ़ियों पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। पेडागागिक इंस्टीट्यूट में पढ़ते हुए उसका १८५६ में पहला लेख 'समकालीन' में छपा था और इस तरह वह 'समकालीन' के संपर्क में आया। १८५७ में उसने इंस्टीट्यूट छोड़ दिया और 'समकालीन' पत्र में काम करने लगा।

दोब्रोल्यूबोव ने समालोचना के स्तर को ऊँचा उठाया। उसने अपनी आलोचना को यथार्थवादी आलोचना कहा। उसके मतानुसार आलोचना का काम कलाकार के योगदान की व्याख्या और कृति के कलात्मक और सामाजिक मूल्य के निर्धारण में पाठक की सहायता करना है और कभी कभी कलाकार की कृति में छिपे हुए मन्तव्य को समझाना है। प्रगतिशील परंपरा को आगे बढ़ाने वाले उसके लेखों ने उसे सामान्य वर्ग के लेखकों का नेता बना दिया। साल्तिकोव शेद्रिन, ओस्त्रोवस्की, गोंचरोव, तुर्गेनेव आदि पर उसके आलोचनात्मक लेख रूसी साहित्य की स्थायी निधि माने जाते हैं।

दोब्रोल्यूबोव ने विशेष रूप से साहित्य के आलोचकों के सामने बड़ा ऊँचा आदर्श रखा और बताया कि आलोचक का कर्तव्य युक्तियुक्त समीक्षा द्वारा पाठकों में साहित्यिक कृतियों से सामाजिक तथा कलात्मक तत्वों के चयन और ग्रहण की क्षमता उत्पन्न करना है। कलाकार तथा कृति के गहन और सूक्ष्म विचारों की व्याख्या है और कृति

के मूल विचार की अभिव्यक्ति और उसका सामाजिक महत्त्व तथा मूल्य निर्धारित है।

दोब्रोल्यूबोव ने कहा कि जीवन साहित्य के मानदण्डों के अनुसार नहीं चलता वरन् साहित्य जीवन की गतिविधियों का अनुसरण करता है। उसके अनुरूप ढलता है। उसने साहित्य में यथार्थवाद और जनत्व के सिद्धान्तों का ज़ोरदार प्रचार और समर्थन किया और कहा कि यथार्थता ही सर्जना का मूल स्रोत है और हमारी सामाजिक चेतना के निर्माण में योग देने के कारण कला का सामाजिक जीवन में बहुमूल्य स्थान है। उसने कहा कि कला का काम समाज सेवा है और उसे युग के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर देना ही होगा और अवश्यमेव देना चाहिए।

इन क्रान्तिकारी डिमोक्रेटों का विश्वास था कि जनता में न केवल निरंकुश शासन को उलट देने की ही शक्ति है वरन् उसमें नई सामाजिक व्यवस्था की रचना की भी क्षमता है। उन्होंने जनता में क्रान्ति की अनिवार्यता की चेतना भरी और अपनी साहित्यिक आलोचनात्मक कृतियों द्वारा जीवन के क्रान्तिकारी तथा सर्वथा नव-निर्माण के विचार का प्रचार किया। इन क्रांतिकारी डिमोक्राटिक विचारों तथा प्रगतिशील यथार्थवादी रूसी साहित्य के प्रभावाधीन सन् साठ के वर्षों में चित्रकला तथा संगीत का भी विकास हुआ। इस समय क्राम्स्कोयपेरोव सवासोव तथा अन्य कलाकारों द्वारा यथार्थवादी चित्रकला की अभिवृद्धि हुई। बलाकिरेव मुसोर्गस्की बरोदिन तथा अन्य संगीतकारों ने रूसी राष्ट्रीय संगीत की जन-भावना के अनुरूप अपनी कृतियाँ प्रस्तुत कीं।

क्रान्तिकारी डिमोक्राटों ने यथार्थवादी साहित्य को बढ़ावा दिया और तुर्गेनेव चेख़रीव ऑस्त्रोव्स्की तोल्स्तोय आदि की कृतियों का स्वागत किया और उनका प्रचार किया। अपने आलोचनात्मक लेखों में उन्होंने इन लेखकों के उच्च कला-कौशल तथा उनकी उच्च विचारात्मकता का महत्त्व प्रतिपादित किया और अपने क्रान्तिकारी प्रचार कार्य में इनका उपयोग किया। इसके साथ ही उन्होंने इन लेखकों की अभिजात वर्गीय

लिबरल विचारधारा की आलोचना भी की और उसकी संकीर्णता का दिग्दर्शन कराया।

'समकालीन पत्र'

सन् साठ के वर्षों का सबसे अधिक प्रगतिशील पत्र 'समकालीन' था। इससे डिमाक्राटिक विचारधारा के प्रचार को महत्वपूर्ण योग प्राप्त हुआ। इसके संचालन और संपादन में चेर्निशेव्स्की दोब्रोल्यूबोव और नेक्रासोव थे और कुछ समय बाद इसमें साल्तिकोव श्चेद्रिन आये। १८६१ के सुधार के समय और उसके बाद भी यह पत्र इन सुधारों का खोखलापन प्रदर्शित करते हुए बराबर किसान क्रान्ति के पक्ष में प्रचार करता रहा। यह पत्र बड़ा लोकप्रिय रहा। विशेष रूप से चेर्निशेव्स्की तथा दोब्रोल्यूबोव के क्रान्तिकारी लेखों ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर सबसे अधिक आकृष्ट किया।

फलतः इस पर शासन की कुदृष्टि पड़ी और सेंसर का दमन चक्र चला। सन् साठ के युग का पूर्वार्ध इसके लिए विशेष संकट का समय था। १८६१ में दोब्रोल्यूबोव की मृत्यु हो गयी और १८६२ में चेर्निशेव्स्की गिरफ्तार कर लिया गया। सन १८६२ में यह पत्र आठ महीने के लिए बंद कर दिया गया। इस पाबन्दी के बाद जब इसका पहला अंक निकला तो स्पष्ट हो गया कि यह पत्र पूर्ववत् लोकप्रिय है और प्रगतिशील है। इसे दो बार और चेतावनी दी गई और १८६६ में जब अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या का प्रयत्न हुआ तो यह पत्र एकदम बन्द कर दिया गया।

१८६१ के सुधार के बाद बुद्धिजीवियों के बीच कला के संबंध में दो विचारधाराओं का संघर्ष छिड़ गया। उनमें एक दल (फ़ेत, द्रूझिनिन आदि) तो 'शुद्ध कला' का समर्थक था। उसका कहना था कि सब कुछ परिवर्तनशील है। मानवता का केवल सत्य, शिव और सुन्दर का विचार अमर है। इसलिए उन्होंने अपरिवर्तनशील समय तथा देश से परे 'शुद्ध कला' के सर्जन की बात कही और उसे जीवन तथा जनता से अलग कर दिया। उनकी दृष्टि में काव्य सामान्य जनता के लिए न होकर केवल कतिपय चुने हुए 'विशिष्ट जनों' के लिए है।

इसके विपरीत क्रान्तिकारी डिमोक्राट चेर्निशेव्स्की दोब्रोल्यूबोव आदि का पक्ष था जो कि 'शुद्ध कला' के सिद्धान्त का विरोधी था। वह कला को सामाजिक अभिव्यक्ति मानता था और उसे जनहित का साधन कहता था तथा उसका जनता की राजनीतिक सामाजिक स्वतन्त्रता के लिए उपयोग करता था। इस दल का रूसी साहित्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा और फलतः रूसी साहित्य की यथार्थवादी विचारधारा इससे और पुष्ट हुई। आगे चलकर रूसी साहित्य प्रधानतया समाजोन्मुख बन गया और उसने जनहित का पक्ष लिया जिसकी परिणति अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति थी। सन् साठ के क्रान्तिकारी डिमोक्राटों का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान इस क्रान्ति की भावना का संवर्द्धन गठन और पोषण है।

१९ इवान सेर्गेइविच तुर्गेनेव

[१८१८-१८८३]

इवान सर्गेइविच तुर्गेनेव का जन्म सन् १८१८ में एक जमींदार परिवार में हुआ। इस परिवार में दासों के साथ बड़ा कठोरतापूर्ण व्यवहार होता था। तुर्गेनेव की माता बड़ी ही कठोर थी और तुर्गेनेव को अक्सर सजा मिला करती थी। तुर्गेनेव के हृदय में बचपन से ही दास अधिकार के प्रति घृणा पैदा हो गयी।

शिक्षा

तुर्गेनेव पहले तो मास्को विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ और बाद में पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। यहाँ की शिक्षा समाप्त कर वह दर्शन की पढ़ाई पूरी करने के लिए बर्लिन विश्वविद्यालय चला गया। वह दर्शन का प्राध्यापक बनना चाहता था किन्तु उसकी यह इच्छा पूरी न हो सकी क्योंकि जार सरकार ने पश्चिम तथा रूस में स्वतन्त्रता आंदोलन की लहर से डरकर विश्वविद्यालयों में दर्शन की पढ़ाई बंद कर दी। इसके बाद तुर्गेनेव ने अपने को पूर्ण रूप से साहित्य सर्जन में लगा दिया।

सन् १८४३ में उसका पहला काव्य 'पराशा' छपा। इसी समय के आस-पास उसकी कहानी 'अन्द्रेइ कोलोसोव' और नाटक 'धनाभाव' प्रसिद्ध हुए।

शिकारी की डायरी

इस समय की उसकी महत्त्वपूर्ण कृति उसकी कहानियाँ और टिप्पणियाँ हैं जो कि बाद में 'शिकारी की डायरी' में संकलित हुईं। सन् १८४७ में 'समकालीन' पत्र में उसकी कहानी 'खोर और कलीनिच' छपी जिसमें दास-किसानों का चित्रण किया गया है। खोर अनुभवी है और अपने कार्य में बड़ा कुशल है। कलीनिच भावुक और काव्य प्रेमी है। स्वभाव से अलग होने पर भी दोनों मित्र हैं और एक दूसरे के पूरक हैं। इस कहानी में सामान्य किसानों के चित्रण द्वारा किसानों का आत्मिक

सौन्दर्य पहली बार प्रस्तुत किया गया। बलिंस्की ने इस कहानी का उच्च मूल्यांकन करते हुए कहा कि तुर्गेनेव जनता के पास उस ओर से पहुँचा जिस ओर से उसके पास तुर्गेनेव को छोड़कर इसके पहले कोई न पहुँचा था। इसके बाद किसानों के जीवन से संबंधित उसकी अन्य कहानियाँ ('एरमोलाइ' और 'पनचक्की वाले की स्त्री' 'ल्गोव' 'गायक' आदि) छपीं जो बाद में 'शिकारी की डायरी' में संकलित हो गईं। इस पुस्तक पर तुर्गेनेव ने कई वर्ष तक परिश्रम किया और वह बराबर इसमें नयी कहानियाँ तथा टिप्पणियाँ जोड़ता रहा। इनमें से प्रत्येक कहानी महत्त्वपूर्ण साहित्यिक घटना बन गयी। प्रत्येक नयी कहानी में रूसी किसान का जीवन अधिकाधिक व्यापकता के साथ चित्रित किया गया है। सामान्य रूसी व्यक्ति की आत्मिक समृद्धि का चित्रण करते हुए तुर्गेनेव ने दास-कृषक के जीवन की कठिन और असह्य परिस्थितियों पर कठोर आक्रमण किया है। इन कहानियों में जमींदारों द्वारा विनष्ट भावों का चित्र भी मिलता है। 'शिकारी की डायरी' दास प्रथा के विरुद्ध अभियोग है और इसमें उनको मुक्त करने का आह्वान है।

१८५२ में गोगाल की मृत्यु पर तुर्गेनेव ने उसके बारे में लेख लिखा जिसे पीतरबुर्ग के सेंसर ने छापने की आज्ञा नहीं दी। तुर्गेनेव ने इसे मास्को भेजा और वहाँ यह लेख छपा। इसी सबब से सेंसर के किसी नियम-भंग के अपराध में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी की इस अवधि में उसने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'मूमू' लिखी जिसका वस्तु विषय दास प्रथा विरोधी है। इसके बाद वह स्पास्कोये-लुतोविनोवो निर्वासित कर दिया गया। यह निर्वासन डेढ़ वर्ष का था।

रुदिन

१८५५ में उसने 'रुदिन' उपन्यास लिखा। इसका प्रधान नायक रुदिन चार चालीस के वर्षों के रूसी बुद्धिजीवियों का ठेठ प्रतिनिधि है। वह उच्च विचारों का प्रचारक है किन्तु प्रतिक्रियावादी परिस्थिति के बीच वह स्वयं निष्क्रिय बना रहता है। जीवन के अनुकूल अपने को ढालने की क्षमता का अभाव और दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी तथा संघर्ष

की असमर्थता उसे अनावश्यक व्यक्ति बना देते हैं और वह बराबर असफल रहता है। फलतः कई गुणों के होते हुए भी रुदिन अपने युग की बलि चढ़ जाता है। रूस के समकालीनों ने इस कृति का स्वागत किया और इसका उच्च मूल्यांकन किया। इस कृति में उन्हें युग के ज्वलन्त प्रश्नों की झलक मिली और व्यक्तिगत जीवन में अपने को सीमित न कर इन प्रश्नों को सुलझाने का आह्वान मिला।

अभिजात वर्ग का नीड़

'रुदिन' उपन्यास के बाद 'अभिजात वर्ग का नीड़' (१८५९) और 'उपारम्भ पर' (१८६०) उपन्यास लिखे जिनमें लेखक ने उन्नीसवीं शती के मध्य के रूसी जीवन से संबंधित प्रश्नों को प्रस्तुत किया।

'अभिजात वर्ग का नीड़' उपन्यास में अभिजात वर्ग के नीड़ को विघटित होते दिखाया गया है। इसका नायक लावरेत्स्की सुसंस्कृत किन्तु परिश्रम के लिए अक्षम व्यक्ति है। उसे लीज़ा से हार्दिक प्यार है। लीज़ा भी उसे चाहती है किन्तु उनका विवाह न हो सका क्योंकि लावरेत्स्की की पत्नी की मृत्यु की खबर ग़लत निकली। भाग्य के इस आघात को न सह सकने के कारण लीज़ा मठ में सन्यासिनी बन जाती है और पत्नी के रहते हुए भी लावरेत्स्की का जीवन एकाकी ही रहता है। यह उपन्यास उस समय भी बहुत लोकप्रिय था और आज भी है। लीज़ा का कर्तव्यशील और आत्मबलिदानी रूप बड़ा ही आकर्षक है।

उपारम्भ पर

'उपारम्भ पर' उपन्यास का नायक इंसारोव बल्गारिया का रहने वाला है और रुदिन तथा लावरेत्स्की से विपरीत कर्मठ व्यक्ति है। उसके जीवन का लक्ष्य अपने देश की जनता को तुर्कों की अधीनता से मुक्त करना है और वह इसके लिए अपने को पूरी तरह से तैयार करता है।

उसकी नायिका रूसी लड़की येलेना स्ताखोवा है। इस व्यक्ति के साथ अपने को संयोजित कर वह अपने पिता द्वारा अपने लिए निर्धारित व्यक्ति को अस्वीकार कर देती है और इंसारोव के साथ उसकी

सहायता के लिए बुल्गारिया जाने को तैयार है। इंसारोव की रास्ते में मृत्यु हो जाती है किन्तु यह लड़की अपने मित्र के इस साहसपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाती है।

तुर्गेनेव के इस उपन्यास में क्रान्तिकारी नायक के रूप में रूसी की जगह बुल्गारिया के निवासी को प्रस्तुत करने का मुख्य कारण यह था कि उसके द्वारा तुर्गेनेव यह प्रदर्शित करना चाहता था कि रूसी यथार्थता के बीच अभी क्रान्तिकारी भावना का आविर्भाव नहीं हुआ है। तुर्गेनेव के समकालीनों ने इसे रूसी वास्तविकता की ही अभिव्यक्ति मानी और इंसारोव के रूप में उन्हें अपने वैचारिक साथियों की ही झलक मिली।

दोब्रोल्यूबोव ने इस उपन्यास की आलोचना की और अपना क्रान्तिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। तुर्गेनेव इससे सहमत न था क्योंकि उसका अभी तक 'सुधारों' में विश्वास था और वह सोचता था कि दास-किसानों को बिना क्रान्ति के मुक्त किया जा सकता है। फलतः दोनों में मतभेद बढ़ गया और तुर्गेनेव 'समकालीन' पत्र के सहयोगी मंडल से अलग हो गया। फिर भी वह प्रतिक्रियावादियों की श्रेणी में नहीं गया।

सन् १८६२ में तुर्गेनेव की सर्वोत्तम कृति उसका उपन्यास 'पिता और पुत्र' निकला। जिसमें उसने निम्नस्तर अभिजात वर्ग की आलोचना की और जनवादी बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि का बड़ी सहानुभूति के साथ चित्रण किया।

पिता और पुत्र

उपन्यास में केवल 'पिताओं' अर्थात् पुरानी पीढ़ी तथा 'पुत्रों' अथवा नवीन पीढ़ी की ही चर्चा नहीं है वरन् पुरानी पीढ़ी से लेखक का आशय प्राचीन रूढ़िवादी दृष्टिकोण से है और नई पीढ़ी से उसका मतलब उस जनवादी 'राज्नोचिन्त्सी' या बुद्धिजीवी वर्ग से है जो नयी सामाजिक शक्ति के रूप में अभिजात वर्ग की प्राचीन विचारधारा के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। 'पिता और पुत्र' की मुख्य विषय-वस्तु इन दो सामाजिक वर्गों की विचारधारा एवं दृष्टिकोण का संघर्ष है। प्राचीन दृष्टिकोण का प्रतिनिधि पावेल पेत्रोविच है और नवीन का येवगनिई बज़ारोव है।

बजारोव प्रत्येक वस्तु का निराकरण करता है और तुर्गनेव उसे 'निहिलिस्ट' (नास्तिवादी) कहता है। वह अभिजात वर्ग की संस्कृति जीवन पद्धति मार्क्सवादी दर्शन तथा 'रोमांटिक' प्रेम आदि सभी का निराकरण करता है। अपनी प्रखर बुद्धि तथा तीक्ष्ण तर्क से सबको पराजित करता है।

ऐसी प्रतिभा से संयुक्त बजारोव बहुत कुछ कर सकता था किन्तु वह बिना कुछ किए ही मर जाता है लोगों ने इसका अर्थ यह लगाया कि तुर्गनेव का विचार यह है कि 'रूसी इंसारोव' तो आ गये किन्तु अभी उनका कार्य समय पूर्ण नहीं हुआ है। बजारोव के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए भी लेखक उसके दृष्टिकोण से सहमत नहीं है और इसी से उसने इस पात्र के चरित्र की केवल विषमता ही प्रदर्शित की है। बजारोव बड़े कामों की बात करता है फिर भी कुछ कर नहीं पाता। प्रेम का निराकरण करता है और फिर भी प्रेम करता है। इन विषमताओं को प्रदर्शित करते हुए भी लेखक ने उसे प्राचीन पीढ़ी के 'पिताओं' से उच्चतर ही चित्रित किया है।

अपनी कलात्मक विशिष्टताओं के कारण 'पिता और पुत्र' की गिनती रूसी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों के बीच की जाती है। यह उपन्यास बहुत बड़ा नहीं है फिर भी इसमें तत्कालीन रूसी समाज के ज्वलन्त प्रश्नों का बड़ा व्यापक समावेश है। तुर्गनेव के अन्य उपन्यासों की तरह इसमें भी ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ कई प्रश्नों और समस्याओं पर वाद-विवाद प्रस्तुत किया गया है जिससे पात्रों की विशिष्टता और उनके चरित्र की झलक मिलती है।

तुर्गनेव रूसी प्रकृति के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। प्रकृति का वह चित्रण पात्रों की अनुभूतियों से उनके आनंद और दुःख से घनिष्ठता से संबंधित है। उपन्यास का अन्तिम दृश्य शोक और प्रगीतात्मकता से ओत-प्रोत है और यह तुर्गनेव की उच्च कलात्मकता का संकेत है।

जीवन के अन्तिम वर्ष

तुर्गनेव की अन्तिम प्रौढ़ कृति उसका उपन्यास 'अछूती ज़मीन' है

जिसमें रूसी बुद्धिजीवियों की जनता के बीच 'यात्रा' दिखाई गयी है।

सन् ७० के वर्षों में तुर्गनेव ने 'गद्य में काव्य' और 'साहित्यिक तथा दैनिक संस्मरण' लिखे।

तीन सितम्बर १८८३ में तुर्गनेव की मृत्यु हो गयी।

तुर्गनेव की कथायें, कहानियाँ और उपन्यास उन्नीसवीं सदी के सन् चालीस से लेकर सन् सत्तर तक के वर्षों के रूसी जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

सामाजिक चेतना के बीच उभरते [illegible] युग के नये विचारों और नयी आवश्यकताओं को वह तुरन्त समझ गया और अपनी कृतियों में उसने उन प्रश्नों को प्रस्तुत किया जो कि समस्त को मथने लगे थे।

तुर्गनेव ने रूसी साहित्य को विश्व साहित्य के प्रांगण में उच्च एवं सम्मानित स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।

२० निकोलाइ अलेक्सेयेविच नेक्रासोव
[१८५१-१८७८]

नेक्रासोव के नाम के साथ रूसी काव्य के विकास का उन्नीसवीं सदी के सन् चालीस से लेकर सन् सत्तर तक का पूरा युग जुड़ा हुआ है। वह रूसी क्रांतिकारी जनवादी प्रतिभाशाली कवि है। वह बेलिन्स्की का अनुगामी और क्रान्तिकारी जनवादी चेर्निशेव्स्की और दोब्रोल्युबोव का सहयोगी है।

निकोलाइ अलेक्सेयेविच नेक्रासोव का जन्म १० दिसम्बर १८२१ में हुआ। उसका बचपन अपने पिता की जमींदारी में बीता जहाँ वह प्रथम बार दास-कृषकों के कठोर जीवन से परिचित हुआ। उसके पिता का अपने दास-कृषकों के प्रति बड़ा ही कठोर व्यवहार था। वोल्गा पर उसने नाव खींचनेवालों को देखा और उनके गीत सुने और व्लादीमिर की सड़क पर उसने बेड़ियों में जकड़े साइबेरिया भेजे जाते हुए राजनीतिक बंदियों के समूहों को देखा। इन सबने बालक नेक्रासोव के हृदय में शोषकों और अत्याचारियों के प्रति घृणा और क्रोध भर दिया।

साहित्यिक कार्यकलाप का आरम्भ

नेक्रासोव का पिता चाहता था कि उसका पुत्र पीतरबुर्ग जाकर सेना का अफसर बने। नेक्रासोव पीतरबुर्ग तो आया किन्तु सेना में न जाकर पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में दाखिल होने की असफल कोशिश की। वह कवि और लेखक बनना चाहता था। फलस्वरूप पिता ने रुष्ट होकर उसकी आर्थिक सहायता बंद कर दी। विवश होकर नेक्रासोव को रोटी के लिए काम की खोज में भटकना पड़ा।

उसने अपना पहला काव्य संग्रह 'स्वप्न और स्वर' के नाम से छपाया, जिसकी बड़ी कड़ी आलोचना हुई। असफलताओं के बावजूद नेक्रासोव बराबर व्यंग्यात्मक कविताएँ, छोटी कहानियाँ तथा टिप्पणियाँ आदि पत्रों में लिखता रहा। उसकी सबसे अधिक सहायता बेलिन्स्की ने

की तथा बेलिंस्की के प्रभाव में ही उसका साहित्यिक मार्ग प्रशस्त हुआ।

सन् चालीस और पचास के वर्षों में नेक्रासोव की सर्जना

१८४५ में नेक्रासोव का संग्रह 'पीतरबुर्ग का रूप रंग' निकला। उसमें उसका लेख 'पीतरबुर्ग के कोने' भी था। उसमें इस शहर के दूर के हिस्सों का चित्र प्रस्तुत किया था जिसमें गंदे घर और उनके आनन्द-विहीन रहने वालों का जीवन दिखाया था। बेलिंस्की ने इस लेखक की असाधारण पर्यवेक्षण शक्ति और चित्रण कौशल की बड़ी प्रशंसा की।

इसके बाद नेक्रासोव ने कई कविताएँ लिखीं जिनमें लोगों की निर्धनता का बड़ा व्यापक चित्र था और जीवन के ऐसे दुःखों का वर्णन था जिनकी अभिव्यक्ति उसके पहले किसी कवि ने न की थी। अपनी कविता 'जा रहा हूँ रात में' वह दम्पति के शोक का चित्रण कर रहा है। घर में दरिद्रता और अभाव है। बच्चे का ताबूत खरीदने को भी पैसा नहीं है। बच्चे के अंतिम संस्कार के लिए और भूखे पति को भोजन देने के लिए पत्नी अपना शरीर बेचने का निश्चय करती है। उस कविता के मार्मिक प्रभाव की चर्चा तुर्गेनेव और साल्तिकोव-श्चेद्रिन ने भी की।

शहर वालों की दरिद्रता का चित्रण नेक्रासोव की 'सड़क पर' तथा 'मौसम के बारे में' कविताओं में भी हुआ है। इन कविताओं में जन-जीवन की विरूपता तथा सामान्य जनता के आँसू हैं। और सबसे बड़ी बात यह कि नेक्रासोव पूर्ववर्ती कवियों के विपरीत दरिद्रता का बड़ा व्यापक चित्रण प्रस्तुत करता है। वह कुछ भी नहीं छिपाता और पाठकों के सामने कटु-सत्य प्रस्तुत कर देता है।

नेक्रासोव की इस समय की कविताओं में शहरी जीवन के वस्तु-विषय के साथ किसानों के जीवन का वस्तु-विषय भी प्रमुख है। बेलिंस्की से प्रभावित होकर ही नेक्रासोव ने इन विषयों को चुना था। किसान जीवन से संबंधित नेक्रासोव की प्रथम प्रभावपूर्ण कविता 'सड़क में' है। इसमें कम्मी दास लड़की की दुःख-भरी कथा है जिसका ताल्लुकेदार की लड़की के साथ ही लालन-पालन हुआ है किन्तु जिसे गये ताल्लुकेदार ने घर से

चित्रण किया है। किसान के कठिन परिश्रमी जीवन से अनभ्यस्त हो पाने के कारण उस लड़की का जीवन अब बड़ा दारुण हो जाता है।

नेक्रासोव द्वारा काव्य में प्रस्तुत किसान जीवन की विषय-वस्तु भी इस समय के लिए नयी थी। इसका प्रगतिशील पक्ष ने हार्दिक स्वागत किया।

इस समय किसान जीवन से संबंधित नेक्रासोव की कई कविताएँ निकलीं जिनमें 'मातृभूमि', 'गाँव में', 'विस्मृत गाँव' आदि बड़ी प्रभावपूर्ण रचनाएँ हैं। मातृ-भूमि में कवि दुःख और असंतोष के साथ अपने पिता के सामन्ती जीवन और उसकी निरंकुशता की याद करता है। इसमें जमींदारों के अत्याचार और उत्पीड़न के मार्मिक चित्र हैं।

'विस्मृत गाँव' में किसानों के अभावों और उनकी अधिकारहीनता का चित्र है। ताल्लुकेदार गाँव से बड़ी दूर रहता है और उसके कारिन्दे किसानों पर मनमानी करते रहते हैं। गाँव वालों को आशा है कि मालिक आएगा और सब ठीक करेगा किन्तु मालिक नहीं आया, नहीं आया। एक दिन रास्ते में लोगों ने भीड़ देखी और ऊँची गाड़ी पर ताबूत देखा। ताबूत के अन्दर मालिक था और ताबूत के पीछे नया मालिक। पुराने मालिक के लिए प्रार्थना पढ़ी गई। नये मालिक ने आँसू पोंछे, गाड़ी में बैठा और फिर वापस शहर चला गया। यह कविता एक प्रकार से सारे रूस के दास-कृषकों की दयनीय अवस्था का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है।

'प्रधान प्रवेश द्वार पर विचार विमर्श' (१८५८) कविता में गरीब किसान अपने मालिक से भेंट करने के लिए मुख्य द्वार पर इन्तजार करते रहते हैं किन्तु मालिक उनसे नहीं मिलता और उनको निकलवा देता है। कविता में यह बताया गया है कि जिनके हाथ में अधिकार है वे जनता की ओर आँख उठाकर देखना भी नहीं चाहते। गरीब किसान निराश होकर मुख्य द्वार से खाली हाथ वापस लौटते हैं।

१८५६ में नेक्रासोव का पहला काव्य संग्रह निकला। यह संग्रह अपनी नागरिक भावना तथा युगानुरूप प्रवृत्ति के कारण बड़ा ही लोकप्रिय हुआ। इसमें जनता की तड़पन, समाज के वर्गीय परिवेश, दास अधिकार की

चाटुकारिता तथा अमीर उत्पीड़कों के प्रति घृणा का अभिव्यंजन हुआ। इसके प्रकाशन से शासक वर्ग में बड़ी हलचल हुई और इसके छपने की आज्ञा देने वाले सेंसर को डाँट पड़ी।

विशेष रूप से इस संग्रह की कविता 'कवि और नागरिक' से शासक वर्ग बड़ा असंतुष्ट हुआ। इसमें कवि ने 'शुद्ध कला' पर आक्षेप किया और बताया कि कवि कोई हो या न हो उसे नागरिक अवश्य होना चाहिए। कवि को भी नागरिक होना चाहिए और देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। उसने कहा कि शोक के वर्षों में आकाश, समुद्र और घाटियों की सुन्दरता और प्रेम का गान अत्यन्त लज्जाजनक है। उसने कहा कि 'तू चाहे कवि न हो सके किन्तु नागरिक होना तो तेरे लिए अत्यावश्यक है और नागरिक क्या है?—मातृ-भूमि का सुयोग्य पुत्र होना। पुत्र अपनी माँ के दुख को शान्तिपूर्वक नहीं देख सकता। उसी तरह योग्य नागरिक देश के प्रति उदासीन नहीं हो सकता। नेक्रासोव की ये पंक्तियाँ देश के कोने-कोने में फैल गयीं और प्रगतिशील युवक वर्ग ने इसे कण्ठस्थ कर लिया तथा इसे अपने नारे के रूप में ग्रहण किया।

प्रकाशन और सम्पादन कार्य

अपने साहित्यिक कार्यकलाप के साथ-साथ नेक्रासोव प्रकाशन और संपादन कार्य भी करता जाता था। सन् १८४७ में वह 'समकालीन' पत्र के संपादन और प्रकाशन में लग गया। पुश्किन की मृत्यु के बाद इस पत्र की स्थिति बड़ी खराब हो गई थी किन्तु नेक्रासोव के हाथ में पड़कर यह पत्र चमक उठा। करीब बीस वर्ष तक उसने इसका प्रकाशन किया। इसमें उस समय के सभी प्रसिद्ध रूसी लेखकों—बेलिंस्की, ओस्त्रोव्स्की, तुर्गेनेव, तॉल्स्तॉय, गोंचरोव आदि की रचनाएँ छपीं। क्रान्तिकारी जनवादी राजनीतिक पत्र होने के कारण इस पर शासकों की बराबर कड़ी दृष्टि रही। उसे कई बार चेतावनी मिली। कई बार थोड़े समय के लिए बंद किया गया और फिर १८६६ में हमेशा के लिए बन्द कर दिया गया।

सन् ६० और सन् ७० के वर्षों में नेक्रासोव की सर्जना

'समकालीन' पत्र के बन्द होने पर वह हताश न हुआ और नये

प्रकाशन के लिए प्रयत्न करने लगा। सन् १८६८ में 'पितृभूमि टिप्पणियाँ' पत्र निकाला। इस पत्र में साल्तिकोव-श्चेद्रिन, अस्त्रोव्स्की, ग्लेब उस्पेन्स्की जैसे शक्तिशाली लेखकों ने सहयोग दिया। इस पत्र का तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान था।

सन् साठ और सन् सत्तर के वर्षों में भी रूसी गाँव और रूसी जन जीवन ही नेक्रासोव के काव्य की मुख्य विषय-वस्तु है। अपनी कविता 'ऐलेजी (शोक गीत)' में उसने राजनीतिक सुधारों के बाद की जन स्थिति का चित्रण किया है और यह संकेत किया कि जनता की हालत सुधरी नहीं वरन् पूर्ववत् बड़ी दयनीय है। नेक्रासोव ने इसे अपनी प्रिय कविता कहा है।

अपनी कविता 'सैनिक की माँ अरीना' में सेना के सामान्य सैनिकों का कष्टमय जीवन चित्रित किया गया है और अपने सैनिक पुत्र की मृत्यु पर दुखद स्त्री के शोक का वर्णन किया गया है। निकोलस प्रथम के समय में सेना में सामान्य सैनिकों पर बड़ी सख्ती होती थी। सैनिक नियम भंग करने पर कोड़ों की मार पड़ती थी और कभी-कभी कोड़ा द्वारा मृत्यु दंड दिया जाता था। सम्भवतः ऐसा ही दंड पाकर अरीना का पुत्र सेना से वापस घर लौटा। सेना में जाने के पहले वह बड़ा शक्तिशाली और हृष्ट-पुष्ट था और अब वापस लौटा तो रोगी। नौ दिन वह तड़पता रहा और दसवें दिन मर गया। सेंसर इस कविता के आलोचनात्मक प्रभाव को अच्छी तरह समझता था और उसने इसके छपने की इजाज़त नहीं दी। नेक्रासोव अपनी चतुरता से ही किसी प्रकार बड़ी मुश्किल से यह कविता छपा सका।

'पाला-लाल नाक' कविता में कवि का रूसी जनता के प्रति असीम प्रेम व्यक्त हुआ है और रूसी स्त्रियों की शक्ति और सौंदर्य का गुण-गान किया गया है। इस कविता में एक परिवार की दुखद कथा है। प्रोक्ल परिश्रमी और ईमानदार व्यक्ति है। समय के फेर में उसे कोचवान बनना पड़ता है। एक यात्रा में उसे सर्दी लग जाती है और वह मर जाता है। उसकी पत्नी दार्या बड़ी ही हिम्मती है और रात में जंगल में लकड़ी काटने

जाती है जिससे कि उसका पति अच्छा हो जाय। वह वैधव्य का दारुण दुःख सहती है। जंगल में वह ठिठुर कर मर जाती है। कविता का अन्त दुःखद है किन्तु उसमें सामान्य रूसी स्त्री और पुरुष के आत्मिक सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

१८६८ में लिखी उसकी छोटी-सी कविता आजादी आनंद के बिना बड़ी घुटन है में खुले रूप में क्रान्ति का आह्वान है।

नेक्रासोव ने क्रान्तिकारी डिमाक्राट नेताओं के काव्य-चित्र भी प्रस्तुत किए हैं। १८५५ में उसने 'बेलिन्स्की' लिखा दो कविताएँ १२ नवम्बर १८६१ ई० और 'दोब्रोल्यूबोव की स्मृति' उसने दोब्रोल्यूबोव को समर्पित की और 'भविष्यवाणी' में चेर्नीशेव्स्की का चित्र प्रस्तुत किया।

रूसी स्त्रियाँ में दिसम्बरिस्टों की उन पत्नियों का वर्णन किया गया है जो कि अपने निर्वासित पतियों का साथ देने के लिए अनेक संकट झेलते हुए उनके पास स्वेच्छा से साइबेरिया आदि कठिन स्थानों में पहुँचती हैं। इसमें सामान्य जनता की इन वीर नारियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की गयी है। नेक्रासोव की इस कविता के संबंध में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने अतीत की विषय-वस्तु को लेकर भी उसे वर्तमान की क्रान्तिकारी अनुभूति से आप्लावित कर दिया।

'कौन रूस में आनन्द से रहता है ?'

इन्हीं वर्षों में उसने अपना प्रसिद्ध और प्रधान काव्य 'कौन रूस में आनन्द से रहता है' लिखा। नेक्रासोव ने इसे अपने जीवन का प्रधान कार्य माना।

इसमें कवि ने १८६१ के सुधार के बाद के किसान जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत किया है। आरम्भ में वह 'मुक्त किसानों' की अशिक्षा निर्धनता आदि को अपने काव्य का मुख्य विषय बनाना चाहता था जिससे कि वह प्रदर्शित कर सके कि इन सुधारों से किसानों का कुछ भी भला न हुआ। बाद में उसका झुकाव क्रान्तिकारी आंदोलन और उन युवकों की ओर हुआ जो जनसेवा को अपना लक्ष्य बनाकर निरंकुशता और अत्याचार

के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। ग्रीशा दोब्रोस्कलोनोव इन्हीं का प्रतिनिधि है।

नेक्रासोव ने अपने काव्य को जन सुलभ बनाने के लिए लोक-काव्य की युक्तियों और शैली का बहुत उपयोग किया। इसमें अद्भुत पक्षी तथा जादू वाले मेजपोश आदि लोकयुक्तियों का समावेश है तथा लोक कहावतों, मुहावरों, लोकोक्ति आदि का प्रयोग हुआ है।

काव्य का आरम्भ भी लोक-कथाओं के ढंग पर होता है। सात किसानों में इस बात पर बहस होती है कि रूस में कौन आनन्द से रहता है? इस प्रश्न का हल करने के लिए और सच्चे सुखी व्यक्ति को ढूंढने के लिए ये सातों किसान देश की यात्रा पर निकल पड़ते हैं। इस यात्रा के माध्यम से नेक्रासोव ने रूसी जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत किया है और सभी प्रकार के लोगों को जमींदार गुलाम किसान आदि को चित्रित किया है। फिर भी स्पष्ट है कि नेक्रासोव की सहानुभूति किसानों के उस पक्ष के साथ है जो जमींदारों से संघर्ष करने को उत्सुक है।

इस युद्धशील किसान पक्ष के प्रतिनिधि सवेली, याकिम नगोय, एर्मिल गीरिन आदि हैं। सवेली ने बहुत लम्बे समय तक पहले शलाश-निकोव का और फिर जर्मन फोगेल का अत्याचार सहा। अन्त में जब उसका धीरज टूट गया तो अपने कुछ साथियों की सहायता से उस जर्मन को जिन्दा ही जमीन में गाड़ दिया। बीस वर्ष की सजा काट कर वह अपने लिए कहता है कि 'मुहरलगा हूँ किन्तु गुलाम नहीं हूँ'।

इसी प्रकार याकिम नगोय किसानों की वस्तु-स्थिति की अभिव्यक्ति बड़े मार्मिक शब्दों में करता है। उसका कहना है कि किसान के परिश्रम पर तीन लोग जीवित रहते हैं— ईश्वर, जार और जमींदार।

एर्मिल गीरिन को किसानों के हितों का रक्षक चित्रित किया गया है। किसान उसकी इज्जत करते हैं और उसका समर्थन करते हैं। उसका अन्त में क्या होता है। नेक्रासोव के संकेतों से समझा जा सकता है कि उसे जमींदार के विरुद्ध किसानों के आन्दोलन के कारण गिरफ्तार किया गया और जेल में डाल दिया गया।

मात्रेना तिमोफ़ेयेवना के रूप में नेक्रासोव ने रूसी कृषक स्त्री का जीवन भी प्रस्तुत किया है। भोली किसानों को किसी ने बताया कि इस स्त्री का जीवन आनन्दपूर्ण है लेकिन पता चलता है कि वस्तुस्थिति इससे उल्टी है। बचपन से ही इसका जीवन बड़ा कठोर परिश्रम का था। शादी होने पर वह पति की मार और सास ससुर की खरी-खोटी सहती रही। उसके पहले बच्चे को सुअर ने मार डाला और पति को गैरकानूनन फ़ौज में रंगरूट बना लिया गया। स्त्रियों के संबंध में वह कहती है कि 'नारी के सुख और स्वतन्त्रता की कुंजी तो फेंक दी गयी है खो गयी है।

उतातिनिकोव फ्योक जाति को कठोर अत्याचारी के रूप में चित्रित किया गया है। एक दूसरा जमींदार अबोलेस्त अबोलेस्स्येव कहता है कि 'जिसे चाहूँ उस पर कृपा करूँ, जिसे चाहूँ उसे सजा दूँ। मेरी इच्छा कानून है, मेरा घूँसा पुलिस है।

रूसी जीवन का चित्रण करते हुए भी स्वयं कवि का दृष्टिकोण क्रान्तिकारी था। वह अपने काव्य से स्पष्ट कर देता है कि किसान तब तक सुखी नहीं हो सकता जब तक कि जमींदार है। केवल क्रान्ति ही किसानों का मुक्ति द्वार है और काव्य में इसी क्रान्ति के लिए आह्वान है।

ग्रीशा के रूप में कवि की इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। ग्रीशा को जनता के नेता और उसके आनन्द मार्ग को प्रशस्त करने वाले के रूप म चित्रित किया गया है। ग्रीशा ही इस काव्य में प्रसन्न व्यक्ति है क्योंकि उसके सामने जीवन का लक्ष्य और मार्ग स्पष्ट है और वह यह भी जानता है कि उसका मार्ग बड़ा कँटीला है, भाग्य ने उसके लिए सम्मान का मार्ग तैयार किया है, जनरक्षक का नाम तैयार किया है, क्षय और साइबीरिया तैयार किया है। ग्रीशा निर्भय इस रास्ते पर चलता है। कवि का यह संकेत है कि यदि यह सात किसान इस जनरक्षक ग्रीशा के बारे में जानते होते तो उनको सच्चा सुखी आदमी मिल जाता।

नेक्रासोव के इस काव्य को 'रूसी जीवन की इंसाइक्लोपीडिया' कहा जाता है।

कठोर परिश्रम के कारण उनका स्वास्थ्य बड़ा जर्जर हो गया था। लम्बी और असाध्य बीमारी के बाद ८ जनवरी १८७८ में उनकी मृत्यु हो गयी। हजारों आदमियों ने उसे अंतिम श्रद्धांजलि समर्पित की।

नेक्रासोव रूसी साहित्य में क्रान्तिकारी डिमोक्रेटिक काव्य का सर्व श्रेष्ठ प्रतिनिधि माना जाता है। उनकी कृतियों ने युवक वर्ग में क्रान्ति की प्रेरणा और स्फूर्ति भर दी।

अपनी रचना के द्वारा उन्होंने रूसी जीवन के एक लम्बे युग (सन् चालीस से सन् सत्तर तक) को अभिव्यक्ति दी और उसका ऐसा सजीव वर्णन किया कि अतीत की जनता के उत्पीड़न की और उसके संघर्ष की स्पष्ट तस्वीर हमारे सामने आ जाती है। नेक्रासोव की यही सबसे बड़ी सेवा है और इसी में उनके काव्य का महत्त्व है।

२१ फ्योदोर मिखाइलोविच दस्तयेवस्की

[१८२१-१८८१]

विश्व के महान् लेखकों में गिने जानेवाले इस कलाकार का सर्जनात्मक कार्य उन्नीसवीं सदी के सन् चालीस में शुरू हुआ। उसकी प्रतिभा का विकास 'गरीब (१८४५-१८४६) नामक पुस्तक से मिलने लगता है जिसकी शैली गम्भीर और मनोवैज्ञानिक है तथा इसमें एक नवयुवक के आत्मगौरव का चित्रण है। बेलिन्स्की ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और उसकी ख्याति की भविष्यवाणी की। दस्तयेवस्की पेत्राशेव्स्की गोष्ठी का सदस्य था। १८४९ में इसके सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये और १८५० में अन्य सदस्यों के साथ दस्तयेवस्की को फांसी की सजा मिली। फांसी के तख्ते पर वह और उसके साथी खड़े किये गये किन्तु उसी मिनट एक अफ़सर ने आकर मुक्ति की घोषणा सुनाई। जब वे लोग तख्ते से उतारे गये तो वह पागल हो गया और दस्तयेवस्की ने चार वर्ष की कड़ी कैद साइबेरिया में बिताई। और फिर पाँच वर्ष सेना की एक बटालियन के साथ रहा। निर्वासन से लौटने के बाद उसका दृष्टिकोण बदल गया और प्रगतिशील गोष्ठियों से उसका सम्बन्ध न रहा और वह रहस्यवादी बन गया। विषमताओं को सुलझाने के लिए सामाजिक क्रांति की जगह वह पारस्परिक सामंजस्य और नैतिक सुधार की आवश्यकता बताने लगा। १८५९ में 'स्तेपान चिकोवो का गाँव' छपा। १८६१ में उसने 'समय' और 'युग' पत्र चलाये। इन पत्रों के कारण उस पर बड़ा कर्ज हो गया। कर्जदारों से बचने के लिए वह कई वर्षों तक विदेश में घूमता रहा। उसकी महत्वपूर्ण पुस्तकें 'मेरे घर के समाचार' और 'जुर्म और सजा' १८६६ में छपीं।

रूस के निर्वासन के बाद के विचार 'जुर्म और सजा' में बड़ी कलात्मकता के साथ व्यक्त हुए हैं। इसका नायक यह समझता है कि

सबल व्यक्ति सब कुछ कर सकता है और उसके लिए सब कुछ क्षम्य है। वह सूद देनेवाली एक स्त्री की हत्या कर देता है। बाद में अपने गुनाह के भार से दबकर वह अपने मन से अपने को अधिकारियों को सौंप देता है और सपरिश्रम कारावास स्वीकार करता है। इसमें नायक की विद्रोही वैयक्तिकता की निंदा और ईसाइयों की नम्रता और दुःख सहने का प्रचार है। मनोवैज्ञानिक चित्रण की गहराई तथा तत्कालीन युग के शक्तिशाली अंकन के कारण दस्तयेवस्की की यह कृति विश्व-साहित्य की महान् रचना बन गयी है। यह उपन्यास दस्तयेवस्की की अपूर्व कलात्मकता का अन्यतम उदाहरण है।

उसने 'बेवकूफ' और शैतान' उपन्यास लिखे। इस दूसरे उपन्यास में दस्तयेवस्की ने अपने समकालीनों ग्रानोव्स्की तुर्गेनेव आदि के चित्र प्रस्तुत किए हैं। लोगों ने इसे अशिष्ट व्यक्तिगत आक्रमण माना। इस पुस्तक से लेखक की प्रतिक्रियावादी प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है। उसने दो और महत्वपूर्ण उपन्यास 'करामाज़ोव भाई' और 'जवान' लिखे जिनसे लेखक की कलात्मक शक्ति और उसकी दुर्बलता दोनों प्रकट होती है।

२२ अलेक्सान्द्र निकोलाएविच अस्त्रोव्स्की

[१८२३-१८८६]

अलेक्सान्द्र निकोलाएविच अस्त्रोव्स्की रूस के बड़े नाटककारों में गिना जाता है और रूसी राष्ट्रीय रंगमंच का संस्थापक माना जाता है।

अस्त्रोव्स्की का जन्म सन् १८२३ में मास्को में हुआ। नाटकों की ओर उसकी रुचि बचपन से ही थी और उसे पढ़ने का बड़ा शौक था। मास्को विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने के बाद उसने मास्को की कचहरी में नौकरी कर ली जहाँ बालकों और माता-पिता के बीच के झगड़े निपटाये जाते थे। इसके बाद वह व्यापारियों की अदालत में काम करने लगा। न्यायालय में इस अनुभव ने उसे मास्को के व्यापारियों के पारिवारिक जीवन के धूमिल पक्ष से पूर्णतया परिचित करा दिया और उसे सर्जना के लिए प्रभूत सामग्री दी।

सन् १८४९ में उसने अपनी पहली कमेडी 'अपने लोगों का ख्याल रखेंगे' के कुछ के दृश्य लिखे। इसमें अस्त्रोव्स्की ने रूसी व्यापारियों की बर्बरता कठोरता का उद्घाटन किया और यह दिखाया कि वे व्यापारी जल्दी से जल्दी अमीर बनने के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं और मुनाफाखोरी इनको मनुष्य नहीं बने रहने देती।

यह कमेडी बहुत सफल रही। इसके बाद उसने 'गरीब बहू' तथा 'अपनी गाड़ी में न बैठो' लिखे। इस अन्तिम नाटक का १८५३ में माली थियेटर' में अभिनय हुआ। इसके साथ ही नाटककार के रूप में अस्त्रोव्स्की की ख्याति बढ़ गयी।

सन् ५० से ६० के बीच की अस्त्रोव्स्की की सर्जना

सन् पचास-साठ के बीच के वर्षों में अस्त्रोव्स्की स्लाव्यानोफिल या स्लाववादियों के निकट आया। इस गोष्ठी में येवनिकोलपोल्स्की अपु-लोव तुर्गेनेव पीसेम्स्की अपोलोनियोव ग्रिगोरोव्स्की जैसे लेखक और

नाटककार थे। इस पीढ़ी को रूस के अतीत से बड़ा प्रेम था और वे यथार्थता से दूर थे और प्राचीनता का आदर्शीकृत रूप प्रस्तुत करते थे। वे परंपरा तथा परिवार के कुल-ज्येष्ठ द्वारा शासन की परिपाटी का आकर्षण तथा आदर्श चित्र प्रस्तुत करते थे। अस्त्रोव्स्की पर भी इस वर्ग का प्रभाव पड़ा और वह इस वर्ग के अपरिवर्तनवादियों को सहयोग देने लगा। वह थोड़े समय के लिए गोगल की आलोचनात्मक परंपरा से दूर चला गया और उसका ध्यान नैतिक समस्याओं की ओर गया।

'गरीबी दोष नहीं है'

व्यापारियों के रहन-सहन का आदर्शीकृत रूप 'गरीबी दोष नहीं है' कमेडी में और स्पष्टता से प्रकट हुआ है। इसमें परिवार के कुल-ज्येष्ठ के अधिकारों को स्वीकार किया गया है और यह दिखाया गया है कि वह परिवार का संचालन करता है और परिवार के अन्य सदस्य उसकी आज्ञा को कर्तव्य रूप में स्वीकार करते हैं।

अपरिवर्तनवादी स्लाववादियों ने इस कमेडी से बहुत प्रसन्नता प्राप्त की, क्योंकि इसमें उनके आदर्शों को कलात्मक रूप मिला। किन्तु चेर्निशेव्स्की ने इसकी 'समकालीन' पत्र में आलोचना की और कहा कि नाटककार ने उस परंपरा को एक लुभावना और आकर्षक रूप दिया है जो कि न लुभावनी है और न जिसे ऐसा लुभावना होना चाहिए। चेर्निशेव्स्की ने अस्त्रोव्स्की से सत्य और निर्मम आलोचना के अपने पूर्वपरीक्षित रास्ते पर चलने को कहा। चेर्निशेव्स्की की आलोचना तत्कालीन सामाजिक तथा अन्य कारणों का उस पर प्रभाव पड़ा और वह स्लाववादियों से अलग हट गया। १८५६ में वह उस युग के प्रगतिशील पत्र 'समकालीन' में सहयोग देने लगा।

'फ़ायदे की जगह'

सन् १८५७ में अस्त्रोव्स्की ने 'फ़ायदे की जगह' नाटक लिखा जिसमें उसने यथार्थता का आलोचनात्मक अंकन प्रस्तुत किया। इसमें विभिन्न सामाजिक स्तरों से आए हुए किन्तु समान वृत्ति वाले सरकारी कर्मचारियों का समान जीवन दिखाया गया है। सब का लक्ष्य है ऐसी जगह पहुँचना

या ऐसे पद पर पहुँचना जो फायदेमंद हो जहाँ अधिक से अधिक रिश्वत मिल सके। नाटकों में बहुत से रिश्वतखोर कर्मचारियों के बीच एक पात्र ऐसा भी है जो ईमानदारी का जीवन व्यतीत करना चाहता है और जादोव ऐसे ही नये ईमानदार और शिक्षित लोगों का प्रतिनिधि है।

सन १८५६ में आस्त्रोवस्की ने मछुओं के जीवन से परिचित होने के लिए वोल्गा की यात्रा की। इस यात्रा ने उस वोल्गा की प्रकृति और उसके तट के निवासियों के जीवन का गहरा परिचय दिया और इसका उनके ऊपर प्रभाव भी बहुत पड़ा। वह 'वोल्गा पर रातें' नाम से एक नाटक माला प्रस्तुत करना चाहता था। यद्यपि नाटककार की यह इच्छा पूरी न हुई फिर भी वोल्गा यात्रा के प्रभावों की छाप उसके कई नाटकों में मिलती है।

'बिजली तूफान'

बिजली तूफान' आस्त्रोवस्की की सर्वोत्तम कृति है जिसमें नाटककार की वोल्गा यात्रा की छाप है। इसकी घटनाएँ एक छोटे-से प्रान्तीय शहर में होती हैं जहाँ आत्मीयता क्रूरता से कुचल दी जाती है और जहाँ स्त्रियों का जीवन दूभर है तथा जहाँ धनी का शासन चलता है।

दीकोय ऐसा ही धनी झूठा व्यापारी है। उसकी शक्ति का स्रोत उसका धन है। वह लालची और अहंमन्य है। फायदे के लिए वह हर प्रकार का कपट जाल रचने को तैयार है। वह व्रत उपवास तथा अन्य धार्मिक कर्मकांड बराबर करता है फिर भी इससे उसके शोषण तथा अत्याचार में कोई कमी नहीं आती। वह क्रूरता से अपने भतीजे बरीस को साइबेरिया भेज देता है। दीकोय के रूप में व्यापारियों का ढंग रहन सहन दिखाया गया है।

कुलीगिन का चित्र इसके विपरीत है। वह इन लोगों की हठधर्मी और अत्याचार की आलोचना और विरोध करता है और वह उन लोगों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है जो कि इस अत्याचार के शिकार हैं।

कुर्गीनिन के समान कैतेरिना भी झूठ तथा झूठी नैतिकता से कोई समझौता नहीं कर सकती। कैतेरिना का पति उसे नहीं समझ पाता और उसकी सास उस पर अपनी इच्छाएं लादती है। उसका घरेलू जीवन अत्यन्त कठिन हो जाता है। पहले तो वह बोरीस से जिसे कि वह चाहती है नहीं मिलती परन्तु फिर उससे छुपकर मिलती है। इस प्रकार वह सामाजिक परिस्थितियों से अपना विरोध प्रकट करती है। अन्त में अपने घरेलू जीवन की परिस्थितियों से ऊबकर वह वोल्गा में कूद कर अपनी जान दे देती है। इस प्रकार जान देकर वह अपना विरोध प्रकट करती है पर आत्म समर्पण नहीं करती।

उनका तूफान नाटक उस समय (१८५९) प्रकाशित हुआ जब कि रूसी जीवन का मुख्य प्रश्न दास-किसानों की मुक्ति और मानवीय व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता थी। इस नाटक में जबरदस्ती और निरंकुशता के प्रति जो विरोध प्रकट किया गया है और नये जीवन की प्रतिष्ठा का जो प्रयत्न किया गया है उसका दोब्रोल्यूबोव ने हार्दिक स्वागत किया। नवीन का प्राचीन से संघर्ष ही इस नाटक का मूलभूत द्वन्द्व है।

इसकी भाषा बड़ी ही कलात्मक समृद्ध सजीव तथा अलंकारमय है। प्रत्येक पात्र की अपनी विशिष्ट भाषा है जिससे उसकी अपनी विशेषता प्रकट हो जाती है। नाटककार बड़ी ही कलात्मकता के साथ प्रत्येक व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत कर देता है।

सन् ६० से सन् ८० के वर्षों में अस्त्रोव्स्की की सर्जना

अस्त्रोव्स्की अपने आरम्भ के नाटकों में व्यापारियों के जीवन और रहन-सहन के व्याख्याता तथा आलोचक के रूप में सामने आता है। किन्तु ज्यों ज्यों उसका अनुभव बढ़ता गया उसकी काव्यदृष्टि व्यापक होती गयी। अतः उसके बाद के नाटकों में जीवन चित्रण की व्यापकता तथा बहुरूपता परिलक्षित मिलती जाती है। नाटककार का ध्यान सम्पूर्ण रूसी जीवन की ओर जाता है और वह रूसी समाज के विभिन्न वर्गों तथा विभिन्न सामाजिक स्तरों का चित्रांकन करता है। यह सच है कि उसने ऐतिहासिक विषयों पर भी नाटक लिखे फिर भी उसकी रुचि समकालीन यथार्थता

के विनाश की ओर अधिक है। पूँजीवादी नये शोषक और अभिजात वर्ग के नाश का वस्तु-विषय अब उसके नाटकों में प्रधानता प्राप्त करता है। इस दृष्टि से उसके सब से महत्वपूर्ण नाटक हैं—'जंगल' 'भेड़ें और भेड़िये' तथा 'बिना दहेज की लड़की'।

'जंगल' कमेडी में अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण है। इसमें अभिजात वर्ग से संबंधित एक लड़की का चित्रण है जिसकी शादी धनाभाव के कारण धनी व्यापारी के लड़के से नहीं हो पाती। यद्यपि उसको वह चाहती है। व्यापारी दहेज चाहता है। इसमें सभी धनी व्यक्ति ढोंगी हैं और सहारा देने का स्वांग रचते हैं। इस पूरे जंगल में सभी पशु हैं वस्तुतः मनुष्य कोई नहीं। केवल एक अभिनेता इस लड़की के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है और अपनी आखिरी पाई तक उसकी मदद में दे देता है। इसी प्रकार 'भेड़ें और भेड़िये' में भी अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'बिना दहेज की लड़की' में मनुष्य को विक्रय की वस्तु बना देने वाले समाज की आलोचना की गयी है। इसमें एक लड़की लरीसा का भाग्य दिखाया गया है जो कि उच्चवर्ग के पराटोव से प्रेम करती है और जो अन्त में उसे धोखा देता है। दो अन्य व्यापारी उसे अपनी धनशक्ति द्वारा खरीदना चाहते हैं। लरीसा आत्मसमर्पण नहीं करती और अन्त में आत्महत्या कर लेती है।

अस्त्रोव्स्की रूसी नाटकों का जनक कहलाता है । इससे पहले रूसी रंगमंच पर फ्रेंच से अनूदित कमेडिया ट्रेजेडिया आदि का ही प्रदर्शन होता था । पुश्किन और ग्रिबोयेदोव के नाटक इस समय तक रंगमंच पर अभिनीत नहीं हुये थे । मृत्यु के बहुत समय बाद उनका अभिनय हुआ । इस प्रकार अस्त्रोव्स्की के नाटक ही प्रथम पहले रंगमंच पर प्रस्तुत किए गए । अस्त्रोव्स्की ने बावन नाटक लिखे । छः नाटक उसने अन्य नाटककारों के सहयोग से लिखे ।

दोब्रोल्युबोव ने उसके नाटकों को 'जीवन के नाटक' की संज्ञा दी । उसकी सर्वोत्तम कृतियों में जन-जीवन और जन प्रयत्न का चित्रण हुआ है और उनमें मूलभूत सामाजिक संघर्ष का अनुभावन है । रूसी साहित्य की यथार्थवादी परंपरा को अस्त्रोव्स्की के नाटकों से बड़ा बल मिला ।

के चित्रण की ओर अधिक है। पूँजीवादी नये शोषक और अभिजात वर्ग के नाश का वस्तु-विषय अब उसके नाटकों में प्रधानता प्राप्त करता है। इस दृष्टि से उसके सब से महत्वपूर्ण नाटक हैं—'जंगल' भेड़ें और भेड़िये' तथा 'बिना दहेज की लड़की'।

'जंगल' कमेडी में अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण है। इसमें अभिजात वर्ग से संबंधित एक लड़की का चित्रण है जिसकी शादी धनाभाव के कारण धनी व्यापारी के लड़के से नहीं हो पाती। यद्यपि उसको वह चाहती है। व्यापारी दहेज चाहता है। इसमें सभी धनी व्यक्ति ढोंगी हैं और सहारा देने का स्वांग रचते हैं। इस घने जंगल में सभी पशु हैं सहृदय मनुष्य कोई नहीं। केवल एक अभिनेता इस लड़की के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है और अपनी आखिरी पाई तक उसकी मदद में दे देता है। इसी प्रकार 'भेड़ें और भेड़िये' में भी अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'बिना दहेज की लड़की' में मनुष्य को विक्रय की वस्तु बना देने वाले समाज की आलोचना की गयी है। इसमें एक लड़की लरीसा का भाग्य दिखाया गया है जो कि उच्चवर्ग के परातोव से प्रेम करती है और जो अन्त में उसे धोखा देता है। दो अन्य व्यापारी उसे अपनी धनशक्ति द्वारा खरीदना चाहते हैं। लरीसा आत्मसमर्पण नहीं करती और अन्त में आत्महत्या कर लेती है।

अस्त्रोव्स्की ने सामाजिक जीवन के विकास में भी सक्रिय योग दिया। उसने कई साहित्यिक कलात्मक संस्थाओं की स्थापना के लिए बड़ा प्रयत्न किया। वह रूसी राष्ट्रीय रंगमंच की स्थापना करना चाहता था। यद्यपि वह इसमें कृतकार्य न हुआ फिर भी बाद में उसने थियेटर स्कूल की स्थापना की जिसमें अभिनेता तैयार किए जाते थे। इसके अतिरिक्त उसने विद्वानों तथा साहित्यिकों की सहायता सभा 'कलात्मक गोष्ठी' तथा रूसी नाटककारों और अपेरा संगीतकारों की सभा स्थापित की।

२ जून सन् १८८६ में अस्त्रोव्स्की की मृत्यु हो गई।

अस्त्रोव्स्की रूसी नाटक का जनक कहलाता है। इसके पहले रूसी रंगमंच पर फ्रेंच से अनूदित कमेडियाँ ट्रेजिडियाँ आदि का ही प्रदर्शन होता था। पुश्किन और लेर्मोन्तोव के नाटक इस समय तक रंगमंच पर अभिनीत नहीं हुए थे। मृत्यु के बहुत समय बाद उनका अभिनय हुआ। इस प्रकार अस्त्रोव्स्की के नाटक ही सबसे पहले रंगमंच पर प्रस्तुत किए गये। अस्त्रोव्स्की ने बावन नाटक लिखे। छः नाटक उसने अन्य नाटककारों के सहयोग से लिखे।

दोब्रोल्युबोव ने उसके नाटकों को 'जीवन के नाटक' की संज्ञा दी। उसकी सर्वोत्तम कृतियों में जन-जीवन और जन-प्रयत्न का चित्रण हुआ है और उनमें मूलभूत सामाजिक संघर्ष का उद्घाटन है। रूसी साहित्य की यथार्थवादी परंपरा को अस्त्रोव्स्की के नाटकों से बड़ा बल मिला।

२३ मिखाइल येवग्राफोविच साल्तिकोवश्चेद्रिन

[१८२६-१८८९]

विश्व के प्रसिद्ध व्यंग्यकारों में गिने जाने वाले इस लेखक का जन्म २७ जनवरी सन् १८२६ में हुआ । इसका बचपन दास प्रथा वाली ठेठ जमींदारी में बीता और इसने जमींदारों के निरंकुश अत्याचार और दास-कृषकों की दयनीय स्थिति के अनेक दारुण दृश्य देखे । स्वयं साल्तिकोवश्चेद्रिन के शब्दों में वह दासाधिकार की गोद में बड़ा हुआ ।

प्रारंभिक शिक्षा उसे घर में मिली । उसके बाद अभिजात वर्ग के इंस्टिट्यूट में भेजा गया और फिर बहुत अच्छा विद्यार्थी होने के कारण उसे त्सारस्कोएसेलो के स्कूल में भेजा गया वहाँ जहाँ कि कभी पुश्किन ने शिक्षा पाई थी । वहाँ की शिक्षा समाप्त करने पर उसे युद्ध मंत्री के विभाग में नौकरी मिली किंतु यह उसे पसंद न आयी । वह लेखक बनना चाहता था ।

साहित्यिक कार्यकलाप का आरम्भ

पीतरबुर्ग में पेत्राशेव्स्की की गोष्ठियाँ थीं जिसमें साल्तिकोवश्चेद्रिन जाया करता था । वह इस गोष्ठी के निरंकुशता विरोधी और दास प्रथा विरोधी रुख से बड़ा प्रभावित हुआ । इसी गोष्ठी से प्रभावित होकर उसने अपनी पहली कहानियाँ 'विषमताएं' (१८४७) 'पेचदार मामला' (१८४८) लिखी और उनमें समाजवाद के विचार का प्रचार किया ।

फ्रांस की राज्यक्रान्ति से जार सरकार डर गयी थी और उसने रूस में क्रान्तिकारियों की गिरफ्तारी शुरू कर दी । इन कहानियों के कारण साल्तिकोवश्चेद्रिन पर भी शक हुआ और उसे मई १८४८ में गिरफ्तार कर व्यात्का निर्वासित कर दिया गया । सात वर्ष उसने निर्वासन में बिताये और प्रान्तीय विभाग में काम करता रहा । १८५५ में उसे

पीटरबुर्ग वापस आने की आज्ञा मिली और वह साहित्यिक काम में लग गया।

प्रान्तीय रेखाचित्र

इस निर्वासन के बीच प्रान्तीय विभाग में उसे जो अनुभव प्राप्त हुआ उसके आधार पर उसने अपनी पुस्तक 'प्रान्तीय रेखाचित्र' श्चेद्रिन नाम से छपाई। इस पुस्तक में निरंकुशता नौकरशाही की धांधली, रिश्वतखोरी तथा शोषण का नग्न चित्र प्रस्तुत किया। पुस्तक बड़ी ही सफल और लोकप्रिय हुई। १८५५ में उसे रयाज़न का उपगवर्नर नियुक्त किया गया और दो वर्ष बाद त्वेर में उसे यही पद दिया गया।

पत्रकारिता

वह १८६० में 'समकालीन' पत्र का सहयोगी बन गया और सरकारी नौकरी छोड़ दी तथा अब पूरी तरह से साहित्यिक कार्य में लग गया। 'समकालीन' में उसके व्यंग्य रेखाचित्र 'गांव से नगर' छपे।

'समकालीन' पत्र के बंद कर दिए जाने पर उसने 'पितृभूमि समाचार' पत्र चलाया जिसका लक्ष्य 'समकालीन' की प्रगतिशील परंपरा को आगे बढ़ाना और प्रगतिशील लेखकों को एकत्रित करना था।

एक नगर का इतिहास

साल्तिकोव-श्चेद्रिन की पैनी व्यंग्य प्रतिभा का परिचायक उसकी विख्यात पुस्तक 'एक नगर का इतिहास' है। इसमें राजनीतिक व्यंग्य है और बनावटी नगरी के जीवन के चित्रण की आड़ में तत्कालीन रूसी जीवन की वास्तविकता का व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस चित्रों में गवर्नर के चित्र ने विशेष ध्यान आकृष्ट किया। गवर्नर के खाली दिमाग में एक बाजा था जिसमें केवल दो शब्द निकलते थे। 'नहीं बरदाश्त करूंगा' और 'नष्ट कर दूंगा'।

सन् ७०–८० के वर्षों में जब कि नरोदनिकी कहते थे कि रूस में पूंजीवाद कभी न होगा साल्तिकोव-श्चेद्रिन ने कहा कि पूंजीवाद आ गया और जम गया। बुर्जुआई लोगों, कुलकों और पूंजीवादियों को उसने

गये मुँहवाला कहा। देरुनोव एस्काएव कम्पापुष के माध्यम से लेखक ने जमींदारों के स्थानापन्न जिन्दगी के नये मालिकों के शोषक रूप का व्यंग्य चित्र प्रस्तुत किया है। देरुनोव धीरे-धीरे बड़ा धनी बन जाता है। वह कुछ भी नहीं छोड़ता और सब चीजों का व्यापार करता है। चारों ओर से उसके पास रुपया आ रहा है। पाठक जानते हैं कि वह जनता को लूट कर धनी बन रहा है। लेखक ने इन पात्रों पर मार्मिक व्यंग्य किया है।

१८७५ में साल्तिकोवश्चेद्रिन बीमार पड़ा और उसे दवा के लिए विदेश जाना पड़ा। स्वदेश लौटने पर उसने नये रेखाचित्र 'विदेश में' लिखे जिसमें उसने बड़े जोरदार शब्दों में यूरोपीय पूँजीवाद के नग्न सत्य का उद्घाटन किया।

श्रीमान् गलवयेव

सन् सत्तर के वर्षों में उसने रूसी जमींदारों के बारे में बड़ा उपन्यास लिखने का विचार किया। इसके आरम्भिक अध्याय अलग-अलग रेखा-चित्र के रूप में 'सुसंस्कृत वाणी' पुस्तक में छपे। पूरा उपन्यास सन् १८८० में श्रीमान् गलवयेव के नाम से छपा। इस उपन्यास के मुख्य नायक इयूदुश्का गलवयेव के माध्यम से तत्कालीन शोषक वर्ग की कठोरता, उत्पीड़न दंभ तथा उसके ढोंग का बड़ा ही व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है। दास प्रथा के जीवन पर जो कुप्रभाव और संस्कार पड़ गए हैं इयूदुश्का उनका मूर्त रूप है और शोषण, उत्पीड़न प्रवंचना तथा अधमता के प्रति घृणा का प्रतीक है।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में उसने नये रेखाचित्र प्रस्तुत किए और पशेखोन्स्कोयेसमय लिखा जिसमें दास प्रथा के अवशेषों का मार्मिक व्यंग्य था।

इन्हीं वर्षों में वह एक और लेखमाला विस्तृत रूप में प्रस्तुत करना चाहता था जिसमें वह क्रान्तिकारी डिमोक्रेट [illegible] था। प्रस्तुत करना चाहता था। किन्तु उसकी मृत्यु हो, [illegible] गई

कार्यान्वित न हो सका। मई १८८९ की १० तारीख को सात्तिकोव श्चेद्रिन की मृत्यु हो गई।

इन्हीं वर्षों में उसने अन्योक्तिपूर्ण कथाएं भी लिखीं जो बड़ी प्रसिद्ध हुईं।

कथाएँ

सन् ८० के पश्चात् प्रतिक्रियावादी युग में भी सात्तिकोव-श्चेद्रिन निरंकुश शासन, लिबरल तथा शासक वर्गों पर व्यंग्य करता रहा। किन्तु सैंसर से बचने के लिए अब वह ईसप के ढंग की अन्योक्तिपूर्ण कथाएं लिखने लगा जिनके पात्र पशु, पक्षी तथा मछली आदि होते थे किन्तु जिनका संकेत स्पष्टतया व्यक्तियों की ओर होता था। पशु-पक्षियों का यह वर्णन वास्तव में छिपे रूप में उस समय के व्यक्तियों पर ही आक्षेप और व्यंग्य था। इन कथाओं के द्वारा हृदय पर मर्माघात भी होता था और लेखक सैंसर की पकड़ से बाहर और सुरक्षित भी रहता था। इनमें से अधिकांश कथाएं सन् १८८४–८५ में लिखी। सब मिलाकर श्चेद्रिन ने तीस से अधिक कथाएं लिखीं। लेखक की साहित्यिक सर्जना की अन्तिम कृति होने के कारण उनमें उसके चालीस वर्ष के साहित्यिक अनुभव तथा प्रौढ़ता का निचोड़ है। इनमें तत्कालीन रूस के शासक वर्ग पर (सेनापति भालू, सिंह महिमा) खोखली बात करने वाले डरे हुए और कायर 'लिबरल' (उदार दल वाले) पर, लिबरल आदर्शवादी वर्ग (मछली) पर, जनता के शोषकों और अत्याचारियों पर (जंगली जमींदार) तथा अन्य लोगों पर तीक्ष्ण व्यंग्य है।

'टट्टू घोड़ा' कथा में उस घोड़े का वर्णन है जिसे बहुत परिश्रम करना पड़ता है किन्तु जिसे भर पेट भोजन भी नहीं मिलता। परिश्रम के भार से वह दबा जा रहा है। घोड़ा किसान का प्रतीक है और केवल खाली बात करने वाले लिबरल स्लावोफिल्स तथा नरोद्निकी के प्रतिनिधि हैं। इनमें से प्रत्येक घोड़े के कठिन जीवन पर वाद-विवाद करता है किन्तु इनमें से कोई भी सचमुच उसकी मदद नहीं करना चाहता। लेखक कहता है कि औरों को तो अच्छा भोजन किन्तु घोड़े को घास भी

नहीं। इन शब्दों के द्वारा ज़ारकालीन रूस में किसान के शोषण का व्यंग्य चित्र और भी स्पष्ट हो जाता है।

सेनापति भालू म तप्तीगिन प्रथम रक्तपात द्वारा ही इतिहास में अमरता प्राप्त करना संभव समझता है। इससे वह मेढ़कों को और छापेखाने को नष्ट करता है।

अपने पिता के अनुभव पर तप्तीगिन द्वितीय किसान के घोड़े को तथा भेड़ और सुअर को मार डालता है। किन्तु वह इनको नहीं ले जा पाता कि लोग आ जाते हैं और उसे मार डालते हैं।

इतिहास के इस अनुभव से चतुर बनकर तप्तीगिन तृतीय बड़ी सावधानी से काम करता है और वह निष्क्रिय नीति चलाता है। कई वर्षों तक उसे किसानों से सुअर, मुर्गे, घोड़े आदि मिलता रहा किन्तु अन्त में उसका भी वही हाल हुआ जो कि सभी लम्बे बाल वाले जानवरों का होता है। लोगों ने उसे मार डाला।

तप्तीगिनों की कथा द्वारा व्यंग्यकार ने ज़ारशाही के जनविरोधी रूप का और उसके अनिवार्य नाश का संकेत किया है।

इसी प्रकार ज्ञानी मछली में उन लोगों पर व्यंग्य है जो भय से जीवन में संकुचित रहते हैं और सामाजिक जीवन में हिस्सा नहीं लेते। राजनैतिक प्रतिक्रिया के युग में इस कथा का बड़ा महत्त्व था। अपने पिता के इच्छानुसार दुनिया की सब चीज़ों से मछली डरती रही वह जीवित रही और काँपती रही—बस जीवन में यही उसने किया। सौ वर्ष से अधिक वह अपनी अँधेरी ठंडी जगह में जीती रही न उसने किसी को जाना और न किसी ने उसको जाना। वह मानती है कि ईश्वर का धन्यवाद (किसी ने मुझको नहीं मारा) मैं अपनी मृत्यु से ही मर रही हूँ जैसे कि मेरे माता पिता मरे। इस अन्योक्ति ने लोगों की राजनीतिक चेतना जगाई और उनमें संघर्ष की भावना भरी।

आदर्शवादी (कार्प) मछली कथा का विशेष महत्त्व है। इसमें स्वप्निल कल्पनात्मक समाजवाद पर व्यंग्य है जिसकी ओर जवानी में स्वयं लेखक आकृष्ट हुआ था।

इन कथाओं की उच्च विचारात्मकता, राजनीतिक तीक्ष्णता तथा विषय-वस्तु की सामयिकता का प्रभाव इसलिए और भी बढ़ गया कि वह ऐसे रूप में (कथा) प्रस्तुत की गयी कि वह जनता के अत्यधिक निकट आ गयी और उसके लिए अत्यन्त सुबोध थी। इसमें उसे क्रीलोव की व्यंग्यात्मक लघु कथाओं से बड़ी प्रेरणा और शिक्षा मिली।

व्यंग्यकार के रूप में साल्तिकोव-श्चेद्रिन क्रीलोव, ग्रिबोयेदोव और गोगोल की परंपरा में आता है। उसकी तीक्ष्ण पर्यवेक्षण तथा विश्लेषणात्मक शक्ति और गंभीर देशभक्ति उसकी सर्जना की बहुत बड़ी विशेषताएं हैं। उसकी व्यंग्य की प्रतिभा उसे देशकाल की सीमा से ऊपर उठाकर विश्व-साहित्य के प्रांगण में प्रतिष्ठित कर देती है।

२४ निकोलाइ गवरीलोविच चेर्निशेव्स्की

[१८२८-१८८९]

क्रान्तिकारी डिमोक्रेट दार्शनिक तथा आलोचक चेर्निशेव्स्की का रूसी साहित्य के बीच बड़ा ऊँचा एवं सम्मानित स्थान है। साहित्य-शास्त्र एवं आलोचना के क्षेत्र में उसका कार्य बड़ा विख्यात और महत्त्वपूर्ण है। बाद की पीढ़ियों के लेखकों पर उसका बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा।

शिक्षा

चेर्निशेव्स्की का जन्म २४ जुलाई सन् १८२८ में एक पुरोहित के परिवार में हुआ। बचपन से ही उसे पढ़ने का व्यसन था। सोलह वर्ष की अवस्था में ही उसे लातीनी ग्रीक फ्रेंच जर्मन और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान हो गया। पिता के इच्छानुसार उसने आरम्भ में धार्मिक पाठशाला में शिक्षा पाई किन्तु उसकी पुरोहित बनने की इच्छा न थी। उस पाठशाला को छोड़कर वह पीतरबुर्ग गया और वहाँ के विश्वविद्यालय की परीक्षाएं बड़ी सफलता के साथ दीं। विश्वविद्यालय में उसने स्वतन्त्र रूप से अठारहवीं सदी के जर्मन आदर्शवादी एवं भौतिकवादी दर्शन तथा अँगरेज अर्थशास्त्रियों और समाजशास्त्रियों के ग्रन्थों का अध्ययन किया। उसने रूसी जीवन की गहरी विषमताओं को लक्षित किया और इस निश्चय पर पहुँचा कि क्रान्ति अनिवार्य है और आवश्यक है। यह क्रान्ति उसके जीवन का लक्ष्य बन गयी और इसे घटित एवं फलित करने के लिए उसने अपना सारा जीवन इसकी सेवा में लगा दिया।

विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त कर वह अपने शहर सरातोव वापस लौटा और वहाँ के 'जिमनेजियम' में साहित्य का अध्यापक हो गया। उसने अध्यापन का कार्य बड़े अनुराग से किया। उसके व्याख्यान क्रान्तिकारी विचारों से परिपूर्ण रहते थे और उनका विद्यार्थियों पर बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा।

प्रबन्ध

कला, साहित्य आदि के विषय में उसने अपने विचार एवं दृष्टिकोण अपने प्रबन्ध (थीसिस) 'कला का यथार्थता से सौन्दर्यवादी संबंध' में प्रस्तुत किए, जिसे उसने पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय की उच्च उपाधि के लिए लिखा था। इसमें उसने अपने इस विचार की प्रतिष्ठा की कि जीवन कला से कहीं ज्यादा ऊँचा है और सच्चा कलाकार अपनी कृति द्वारा समाज की सेवा करता है। कला में सामाजिक जीवन का कलात्मक दृष्टिकोण से सच्चा अभिव्यंजन होना ही चाहिए। जीवन का अभिव्यंजन करती हुई कला उसकी व्याख्या करती है और पाठकों का ठीक-ठीक चयन एवं मूल्यांकन में सहायता देती है और इस प्रकार जीवन की पाठ्य पुस्तक बन जाती है। 'साहित्य को एक या दूसरे प्रकार के विचारों की सर्वाविधि का सेवक बनना ही पड़ेगा।' चेर्निशेव्स्की के ये विचार कला की आदर्शवादी भावना, 'शुद्ध कला' या 'कला कला के लिये' के विरुद्ध थे।

उसने अपने इस निबन्ध का बड़ी सफलता से प्रतिपादन किया। रूस के प्रगतिशील पत्र ने इसका स्वागत किया किन्तु विश्वविद्यालय के प्रतिक्रियावादी अधिकारियों और प्रोफेसरों ने इसमें बाधा डाली और दो साल तक उसे उपाधि न मिली।

आलोचनात्मक एवं प्रचारात्मक कार्य

इससे चेर्निशेव्स्की हताश न हुआ और उसका साहित्यिक एवं क्रांतिकारी कार्यकलाप चलता रहा। वह आलोचना और प्रचार कार्य में लगा रहा। वह 'सव्रेमेन्निक' पत्र के सहयोगी मंडल में हो गया जिसका सम्पादक नेक्रासोव था। इसमें काम करते हुए उसने कई महत्त्वपूर्ण साहित्यिक एवं आलोचनात्मक लेख लिखे जिनमें उसने अपने प्रबन्ध के सिद्धान्तों की व्याख्या की।

क्रान्तिकारी डिमोक्रेट के रूप में उसने उन सभी कृतियों का स्वागत किया जो इस प्रतिक्रिया के भाव से परिपूर्ण थीं और जिनमें निरंकुश दास प्रथा का विरोध था। उसने तोल्स्तोय की प्रतिभा को पहचान लिया। उसने गोगोल द्वारा ([illegible]) लर्मोन्तोव की महानता की तथा

'सोव्रेमेन्निक' की व्यंग्य प्रतिभा की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उसने प्रगतिशील लेखकों की कृतियों का क्रान्तिकारी प्रचार में उपयोग किया। वह प्रगतिशील युवक वर्ग का अत्यन्त लोकप्रिय लेखक बन गया।

किन्तु ज्यों-ज्यों उसकी लोकप्रियता बढ़ती गयी वह ज़ार सरकार की नज़रों में खटकने लगा। उसका क्रान्ति का कार्य बराबर चल रहा था और वह कई गुप्त क्रान्तिकारी सभाओं का संचालन करता था तथा क्रान्ति का आह्वान करते हुए लेख और मैनिफ़ेस्टो लिखा करता था।

गिरफ्तारी

सन् १८६२ में वह गिरफ़्तार कर लिया गया। प्रमाण के अभाव में भी उस पर दो वर्ष तक मुकदमा चलता रहा और उसे चौदह साल का कठिन परिश्रम और साइबेरिया-निर्वासन का दण्ड मिला। निर्वासन के पहले उसे आम जगह पर सजा सुनायी गई और नागरिक अधिकारों से वंचित करने की रस्म अदायगी हुई। उसे एक खम्भे पर खड़ा किया गया। खम्भे से बाँधा गया और गले में तख्ती लटकाई गयी जिस पर लिखा था 'सरकारी अपराधी'। चेर्निशेव्स्की को खुले आम ज़लील करने के लिए ज़ार सरकार ने यह स्वांग रचा और यह सब किया। किन्तु जनता ने अपने प्रिय व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित की और उस पर चारों ओर से फूलों की वर्षा होने लगी। तख्ता फूलों से भर गया और पुलिस ने चेर्निशेव्स्की को जल्दी से वहाँ से हटा लिया।

निर्वासन का जीवन

जेलों में उसने परिश्रम के कठिन सात वर्ष बिताए। कठोर परिस्थिति के बीच भी उसका साहित्यिक कार्यकलाप चलता रहा। गिरफ़्तार होने पर उसने अपना उपन्यास 'क्या किया जाय' चार महीने में समाप्त किया। उसने 'सफ़ेद बाल से कहानियाँ' 'उपोद्घात' और 'वार्ता' लिखा। उसकी सब कृतियाँ लोगों को न प्राप्त हो सकीं क्योंकि तलाशी के भय से उसने स्वयं कई कृतियों को नष्ट कर दिया।

कठिन परिश्रम के दंड की अवधि समाप्त होने पर भी उसे रूस में

जाने की आज्ञा न मिली और उसे याकुत्स्क भेज दिया गया। प्रतिकूल जलवायु और परिस्थितियों ने उसका स्वास्थ्य नष्ट कर दिया। अन्त में सन् १८८० में उसे सरातोव वापस लौटने की आज्ञा मिली। अक्तूबर १८८९ में उसकी मृत्यु हो गयी।

क्या किया जाय

उसका उपन्यास 'क्या किया जाय' बड़ा ही लोकप्रिय हुआ और सब से पहले 'समकालीन' पत्र में सन् १८६३ में छपा। इसे चेर्निशेव्स्की ने अपनी गिरफ्तारी के बीच चार महीने में लिख डाला। इस उपन्यास में लेखक ने बताया कि देश और जनता की सेवा करते हुए लोगों को कैसे जीना चाहिए। इसमें नये लोगों की आशा और आकांक्षाओं का चित्र है और जीवन के नये आदर्शों के लिए संघर्ष है।

नये लोगों का चित्रण किरसानोव, लपूखोव और वेरापाव्लोव्ना के माध्यम से हुआ है। ये लोग सन् ६० के जमाने के स्वतन्त्र विचारों के संवाहक और नयी सामाजिक शक्ति के प्रतिनिधि हैं। इन सामान्य लोगों के बीच क्रान्तिकारी युवक वर्ग के नेता रखमेतोव का विशिष्ट स्थान है। इसके साथ ही इस उपन्यास में पुराने विचारवालों का भी चित्रण हुआ है।

किरसानोव और लपूखोव सामान्य जनता के व्यक्ति हैं जो ईमानदार हैं और अपने स्वार्थसाधन के लिए नहीं वरन् जनता की सेवा के लिए परिश्रम करते हैं। लेखक का कहना है कि 'नये लोगों' को ऐसा ही होना चाहिए।

इसकी नायिका वेरापाव्लोव्ना भी नये लोगों में है। वह दृढ़ और स्वतन्त्र है। अपनी माता द्वारा निर्णीत व्यक्ति को न स्वीकार कर वह लपूखोव से प्रेम करती है। वह स्त्रियों की शिक्षा और सुधार का काम करती है और स्त्रियों की स्वतन्त्रता और समानाधिकार के लिए संघर्ष करती है। वह परिश्रमशील है और काफ़ी समय समाज सेवा में लगाती है।

चेर्निशेव्स्की का कहना है कि सब गुणों से युक्त होते हुए भी ये

'नये मानव' असाधारण व्यक्ति न होकर सामान्य व्यक्ति ही हैं और जो चाहे वही ऐसा बन सकता है।

क्रान्तिकारी रख्मेतोव का चित्र विशिष्ट है। चेर्निशेव्स्की कहता है कि भविष्य का मार्ग क्रान्ति के बीच से ही गया है और क्रान्तिकारी को नेता रूप में जीवन का पथ-निर्माता बनना होगा। रख्मेतोव के जीवन का लक्ष्य क्रान्ति है और वह दृढ़ता के साथ क्रान्ति द्वारा शक्ति हस्तगत करने के लिए अपने को तैयार करता है। 'नये लोगों' और रख्मेतोव के चित्रण द्वारा चेर्निशेव्स्की ने प्रगतिशील रूसी युवकों को क्रान्तिकारी बनना सिखाया।

'वेरापाव्लोव्ना' के स्वप्न के माध्यम से लेखक भविष्य के समाज और जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है जिसमें सभी लोग प्रसन्न हैं और उनके समानाधिकार हैं। चेर्निशेव्स्की कहता है कि 'भविष्य सुन्दर है और उज्ज्वल है। इससे प्यार करो। इसकी ओर बढ़ो। इसे निकट लाओ और इसमें से जितना वर्तमान में ला सकते हो ले आओ।' भविष्य के आकर्षक चित्रण ने लोगों को क्रान्ति के लिए संघर्ष करने को प्रेरित किया और समाज के क्रान्तिकारी पुनर्निर्माण की प्रेरणा दी।

इस उपन्यास ने पश्चिम के विशेषतया स्लाव देशों के प्रगतिशील लोगों को बहुत प्रभावित किया। अपनी ओर से बहुत कुछ कहने के साथ साथ लेखक सेंसर से बचने के लिए अन्योक्तिपूर्ण भाषा और सांकेतिक भाषा का भी प्रयोग करता है। उपन्यास में व्यंग्य की भी कमी नहीं है।

रूसी साहित्य में क्रान्तिकारी विचारों के व्याख्याता रूप में चेर्निशेव्स्की का बहुत बड़ा महत्त्व है। उसकी कलात्मक कृतियों तथा साहित्यिक आलोचनात्मक लेखों ने रूसी कला विशेषतया चित्रकला के विकास को बहुत अधिक प्रभावित किया।

देश हित चेर्निशेव्स्की के जीवन का सर्वोच्च आदर्श था। उसके लिए अपने देश की क्षणिक नहीं वरन् शाश्वत प्रतिष्ठा में और मानवता के कल्याण में सहायता देने से ऊँचा और स्पृहणीय काम और क्या हो सकता है? क्रान्ति और देश हित के लिए चेर्निशेव्स्की ने अपनी सारी प्रतिभा, सारी शक्ति और अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

५ लेव निकोलाएविच तोल्स्तोय

[१८२८–१९१०]

बचपन

तोल्स्तोय का जन्म सन् १८२८ में ९ सितम्बर को यास्नायापोल्याना में एक अभिजात परिवार में हुआ। वह दो वर्ष का भी न हुआ था कि उसकी माँ की मृत्यु हो गई और नौ वर्ष की अवस्था में उसके पिता परलोक सिधारे। इसके पश्चात् पूरा तोल्स्तोय परिवार कज़ान चला गया।

सोलह वर्ष का तोल्स्तोय आरम्भ में कज़ान विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा विभाग में दाखिल हुआ। किन्तु यहाँ कुछ अधिक पसंद न आने के कारण कानून के विभाग में पढ़ने लगा। इसी समय से तोल्स्तोय जीवन के सर्वांग प्रश्नों का मनन करने लगा है और नैतिक पूर्णता को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मानकर अपने को विलास जीवन तथा उच्च परिवार की परंपरा से सर्वथा अलग कर सर्वथा नये रास्ते पर चलने की कोशिश करने लगा।

प्रारम्भिक जीवन

१८४७ में उसने कज़ान विश्वविद्यालय छोड़ा। उसी समय भाइयों के बीच जायदाद का बँटवारा हुआ और यास्नायापोल्याना का इलाका उसके हिस्से में आया। विश्वविद्यालय छोड़कर वह अपनी ज़मींदारी में आ गया और अच्छा मालिक तथा दयालु ज़मींदार बनने का स्वप्न धारण करने लगा। यास्नायापोल्याना में आते हुए वह स्वयं इतिहास, भूगोल, विधि, भाषाएँ, कृषि व्यवस्था, संगीत आदि के अध्ययन में लगा। उसने ग्राम के सम्बन्ध में नोट लिये। उपन्यास रचना का विचार किया। स्कूल का संगठन किया और किसानों की दशा सुधारने की योजना बनायी।

यद्यपि इन सब कार्यों का आरम्भ तो हो गया किन्तु इनका अन्त तक निर्वाह न हो सका।

इसके बाद वह कज़्ज़ाक चला गया और कज़्ज़ाकों के बीच रहने लगा। इनके बीच उसको आत्मिक शान्ति मिली और उसने साहित्यिक कार्य शुरू करने का निश्चय किया। शीघ्र ही वह सैनिक कारखाने के तोपखाने में नौकरी करने लगा। कज़्ज़ाक के जीवन और सैनिक नौकरी ने उसे और भी जनता के अधिक निकट ला दिया जिससे उसे साहित्यिक सर्जना के लिए बड़ी सामग्री मिली।

सन् पचास के वर्षों की साहित्यिक सर्जना

उसका पहला साहित्यिक कार्य उसकी आत्मकथा 'बचपन' है जो 'समकालीन' पत्र में सन् १८५२ में छपी और जिसकी काफ़ी प्रशंसा हुई। इस सफलता से प्रेरणा पाकर उसने 'कौमार्यावस्था' तथा 'जवानी' लिखी जो एक प्रकार से प्रथम कृति का ही क्रमिक विकास है।

आत्मकथात्मक त्रयी

इस त्रयी का मुख्य पात्र निकोलेंका इर्तेनियेव है जो एक प्रकार से तोल्स्तोय का ही रूपान्तर है। तोल्स्तोय के समान इसे भी मनुष्य की सार्थकता जीवन के लक्ष्य नैतिक कर्तव्य आदि के प्रश्न जीवन के आरम्भ में ही उद्वेलित करने लगते हैं। नैतिक पूर्णता की प्राप्ति का प्रयत्न जो कि निकोलेंका की विशिष्टता है, तोल्स्तोय की आगामी कृतियों में और भी व्यापकता से अभिव्यक्त हुआ है। निकोलेंका अभिजात वर्ग की शिक्षा दीक्षा और वातावरण में पलकर भी तोल्स्तोय के समान ही अभिजात वर्ग से दूर चला जाता है।

यह 'त्रयी' हमें अभिजात वर्ग के रहन-सहन से परिचित कराती है और हमें तोल्स्तोय के आत्मिक विकास को समझने में सहायता देती है। कलात्मक कृति के रूप में रूसी साहित्य के बीच इस 'त्रयी' का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

कज़्ज़ाक के निवास ने उसे सैनिक जीवन के चित्रण का अवसर प्रदान

किया। 'आक्रमण' तथा 'जंगल का काटना' ऐसी ही कहानियाँ हैं। १८५३ में क्रीमिया के युद्ध के शुरू होने पर उसने इस युद्ध में सक्रिय भाग लेने का निश्चय किया और सेबास्तोपोल भेजा गया जो कि युद्ध के भयानक स्थलों में से एक था। सेबास्तोपोल के युद्ध के अनुभव के आधार पर उसने १८५५ में 'दिसम्बर में सेबास्तोपोल' 'मई में सेबास्तोपोल' और 'अगस्त में सेबास्तोपोल' कहानियाँ लिखीं।

'सेबास्तोपोल कहानियाँ' रूसी तथा विश्व-साहित्य में बड़ी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि तोल्स्तोय से पहले युद्ध का ऐसा सच्चा वर्णन किसी ने नहीं प्रस्तुत किया था। तोल्स्तोय ने सबसे पहले इन कहानियों में युद्ध की भयानकता, वीभत्सता तथा उसके कष्टों का यथातथ्य वर्णन प्रस्तुत किया। इन कहानियों में सेबास्तोपोल की रक्षा के साहसपूर्ण दृश्यों का वर्णन है जिसमें कि वीरों ने स्वदेश रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

सन् १८५६ में तोल्स्तोय की आत्मकथात्मक कृतियाँ 'बचपन' और 'कैशोर्यावस्था' तथा 'युद्ध की कहानियाँ' के अलग-अलग संस्करण प्रकाशित हुए। चेर्निशेव्स्की ने इन कृतियों का स्वागत किया और तोल्स्तोय की प्रतिभा की विशेषता बताते हुए अपने लेख में लिखा कि 'हम भविष्यवाणी करते हैं कि अब तक जो कुछ तोल्स्तोय ने हमारे साहित्य को दिया है वह उसकी सफलता मात्र है जो कि वह बाद में प्रदान करेगा। कितना समृद्ध और कितना सुन्दर यह बताना है।' चेर्निशेव्स्की की यह भविष्यवाणी एकदम सच निकली।

'जमींदार का सबेरा'

सन् १८५६ में उसने 'जमींदार का सबेरा' लिखा। इसमें नेख्ल्यूदोव के रूप में स्वयं तोल्स्तोय का ही जीवन है, जब कि वह विश्व-विद्यालय छोड़कर यास्नायापोल्याना में बस गया था। नेख्ल्यूदोव किसानों का जीवन सुधारने के लिए वैयक्तिक रूप से प्रयत्न करता है और उनके लिए स्कूल तथा अस्पताल बनाता है किन्तु किसानों की सहानुभूति उसे प्राप्त नहीं होती और वे उसका विश्वास नहीं करते। इस कहानी में

कृषक जीवन के प्रति लेखक की गहरी रुचि और किसानों के मानस का यथातथ्य अंकन है।

अध्यापन कार्य

सन् १८५७ में तोल्स्तोय ने विदेश की यात्रा की जिसका उस पर बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा। वहाँ से लौटकर वह किसानों के अधिकाधिक निकट आने का प्रयत्न किया है। उसका यह विश्वास था कि किसानों के जीवन के सुधारने का सर्वोत्तम साधन शिक्षा है और इस उद्देश्य से १८५९ में यास्नयायास्याना में किसानों के बच्चों के लिए स्कूल स्थापित करता है और स्वयं अध्यापन कार्य करता है।

सन् १८६१ के सुधार के पहले ही तोल्स्तोय ने अपने किसानों को मुक्त करने की योजना बना ली थी। १८६१ के सुधार के बाद किसानों के लाभ के लिए वह जमींदारों और किसानों के बीच के झगड़ों को तय करानेवाली कमेटी का निर्णायक बन गया। निर्णायक के रूप में तोल्स्तोय ने किसानों का पक्ष लिया जिससे जमींदार उससे बहुत असन्तुष्ट हो गये।

स्कूल तथा निर्णायक के कार्य-कलाप ने तोल्स्तोय को जनता के और भी निकट ला दिया और उसे जनहित को समझने में बड़ी सहायता दी।

कज़ाकी

सन् साठ के वर्षों में उसने 'कज़ाकी' और 'पोलिकूश्का कथाएँ' पूरी की और युद्ध और शांति उपन्यास की रचना में लगा। 'कज़ाकी' कहानी में कज़ाकों के जीवन का चित्रण हुआ है। ये कज़ाक बड़े सादे सरल हैं और इनके जीवन और मन में कोई जटिलता नहीं है। सभ्य समाज का ओलेनिन पीटर्सबुर्ग की दुनिया से थक कर कज़ाकों आता है, वहाँ के किसानों से मिलता-जुलता है वहाँ की प्रकृति से आनन्दित होता है फिर भी उसे शांति नहीं मिलती। तोल्स्तोय इसके द्वारा यह प्रकट करना चाहता है कि प्रकृति के साहचर्य द्वारा उस व्यक्ति में नवजीवन का संचार नहीं किया जा सकता जो कि कृत्रिम समाज द्वारा बिगड़ चुका है।

युद्ध और शांति

१८६३–१८६९ में तोल्स्तोय ने विश्व-साहित्य की अन्यतम कृति 'युद्ध और शांति' प्रस्तुत की।

'युद्ध और शांति' उपन्यास में उन्नीसवीं शती के प्रथम दो दशकों के रूसी जीवन का अत्यन्त विशद् चित्र प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि उपन्यास के आरम्भिक अध्यायों में ज़ार के यूरोपीय (१८०५–१८०७) युद्ध का विस्तार से वर्णन किया गया है फिर भी उपन्यास का मुख्य आकर्षण केन्द्र सन् १८१२ का नेपोलियन का आक्रमण और रूसी युद्ध है। युद्ध के दृश्यों के साथ-साथ इसमें शांतिमय जीवन के भी अनेक चित्र हैं जिनका विधान तोल्स्तोय द्वारा संगृहीत विशाल ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर और यास्नायापोल्याना के लेखक के जीवन तथा वातावरण के आधार पर तथा मास्को और पीतरबुर्ग के राजधानी के जीवन के आधार पर किया गया है।

सामान्य जनता

इस उपन्यास में सामान्य जनता का ऐतिहासिक घटनाओं की प्रधान तथा निश्चयात्मक शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें प्रदर्शित किया गया है कि नेपोलियन से युद्ध के बीच रूसी जनता में देश भक्ति का किस प्रकार उदय हुआ और उसने अपने अपूर्व साहस एवं दृढ़ता का परिचय दिया। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए जनता ने छापामार टोलियाँ बनाईं। लेखक ने इस उपन्यास में इन छापामार टोलियों के क्रिया-कलाप का जनता की स्वदेश रक्षा के जन-आन्दोलन के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार सामान्य जनता का चित्रण करते हुए लेखक ने उसके साहस दृढ़ता देश भक्ति आदि सामान्य विशिष्टताओं का बराबर चित्रण किया है।

कुतुज़ोव

सेनापति कुतुज़ोव इस युद्ध का मुख्य संचालक है। लेखक ने उसे बहुत बड़े देश भक्त और बुद्धिमान नेता के रूप में चित्रित किया है। वह घटनाओं की गतिविधि को ठीक-ठीक समझता है और तदनुसार अपने को उनके अनुरूप बनाने की क्षमता रखता है। वह जानता है कि सब घटना

कृषक जीवन के प्रति लेखक की गहरी रुचि और किसानों के मानस का यथातथ्य अंकन है।

अध्यापन कार्य

सन् १८५७ में तोलस्तोय ने विदेश की यात्रा की जिसका उस पर बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा। वहाँ से लौटकर वह किसानों के अधिकाधिक निकट आने का प्रयत्न किया है। उसका यह विश्वास था कि किसानों के जीवन के सुधारने का सर्वोत्तम साधन शिक्षा है और इस उद्देश्य से १८५९ में यास्नयापोल्याना में किसानों के बच्चों के लिए स्कूल स्थापित करता है और स्वयं अध्यापन कार्य करता है।

सन् १८६१ के सुधार के पहले ही तोलस्तोय ने अपने किसानों को मुक्त करने की योजना बना ली थी। १८६१ के सुधार के बाद किसानों के लाभ के लिए वह जमींदारों और किसानों के बीच के झगड़ों को तय करानेवाली कमेटी का निर्णायक बन गया। निर्णायक के रूप में तोलस्तोय ने किसानों का पक्ष लिया जिससे जमींदार उससे बहुत असंतुष्ट हो गये।

स्कूल तथा निर्णायक के कार्य-कलाप ने तोलस्तोय को जनता के और भी निकट ला दिया और उसे जनहित को समझने में बड़ी सहायता दी।

कज़ाकी

सन् साठ के वर्षों में उसने 'कज़ाकी' और 'पोलिकूश्का' कथाएँ पूरी की और 'युद्ध और शांति' उपन्यास की रचना में लगा। 'कज़ाकी' कहानी में कज़ाकों के जीवन का चित्रण हुआ है। ये कज़ाक बड़े सादे लोग हैं और इनके जीवन और मन में कोई जटिलता नहीं है। उच्च समाज का ओलेनिन शोरगुल की दुनिया से थक कर कवकाज़ आता है वहाँ के किसानों से मिलता-जुलता है वहाँ की प्रकृति से आनन्दित होता है फिर भी उसे शांति नहीं मिलती। तोलस्तोय इसके द्वारा यह प्रकट करना चाहता है कि प्रकृति के साहचर्य द्वारा उस व्यक्ति में नवजीवन का संचार नहीं किया जा सकता जो कि कृत्रिम समाज द्वारा बिगड़ चुका है।

युद्ध और शांति

१८६३–१८६९ में तोल्स्तोय ने विश्व-साहित्य की अन्यतम कृति 'युद्ध और शांति' प्रस्तुत की।

'युद्ध और शांति' उपन्यास में उन्नीसवीं शती के प्रथम दो दशकों के रूसी जीवन का अत्यन्त विशद् चित्र प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि उपन्यास के आरम्भिक अध्यायों में ज़ार के यूरोपीय (१८०५–१८०७) युद्ध का विस्तार से वर्णन किया गया है फिर भी उपन्यास का मुख्य आकर्षण केन्द्र सन् १८१२ का नेपोलियन का आक्रमण और रूसी युद्ध है। युद्ध के दृश्यों के साथ-साथ इसमें शांतिमय जीवन के भी अनेक चित्र हैं जिनका विधान तोल्स्तोय द्वारा संगृहीत विशाल ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर और यास्नयापोल्याना के लेखक के जीवन तथा वातावरण के आधार पर तथा मास्को और पीतरबुर्ग के राजधानी के जीवन के आधार पर किया गया है।

सामान्य जनता

इस उपन्यास में सामान्य जनता को ऐतिहासिक घटनाओं की प्रधान तथा निश्चयात्मक शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें प्रदर्शित किया गया है कि नेपोलियन से युद्ध के बीच रूसी जनता में देश-भक्ति का किस प्रकार उदय हुआ और उसने अपने अपूर्व साहस एवं दृढ़ता का परिचय दिया शत्रुओं को नष्ट करने के लिए जनता ने छापामार टोलियाँ बनाईं। लेखक ने इस उपन्यास में इन छापामार टोलियों के कार्य-कलाप को जनता के स्वदेश रक्षा के जन-आन्दोलन के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार सामान्य जनता का चित्रण करते हुए लेखक ने उसके साहस दृढ़ता देश भक्ति आदि ग्रामीण्य विशिष्टताओं का बराबर चित्रण किया है।

कुतुज़ोव

सेनापति कुतुज़ोव इस युद्ध का मुख्य संचालक है। लेखक ने उसे बहुत बड़े देश भक्त और बुद्धिमान नेता के रूप में चित्रित किया है। वह घटनाओं की गतिविधि को ठीक-ठीक समझता है और तदनुसार अपने को उसके अनुरूप बनाने की शक्ति रखता है। वह जानता है कि कब लड़ना

चाहिए और कब हट जाना चाहिए। और हटने में अपनी मान-हानि नहीं समझता। तोल्स्तॉय ने उसे युद्ध-कला के आचार्य के रूप में चित्रित किया है। युद्ध-सभा के अवसर पर मास्को छोड़ देने और सेना को पीछे हटने की आज्ञा देने की शक्ति उसी में है जब कि सब सेनानी उसके इस मत के विरुद्ध हैं। वह निर्भीक है और ज़ार के सामने अपनी सम्मति निस्संकोच प्रकट करता है। युद्ध के भयानक क्षणों में भी वह सैनिकों से हँसकर बोलता है और उनको प्रोत्साहित करता है। कुतुज़ोव की शक्ति सेना तथा जनता के साथ उसकी एकता में है। इसीलिए एक ओर जहाँ वह सेना का संचालन करता है वहाँ जनता की छापामार टोलियों का भी समर्थन करता है।

अभिजात वर्ग के चित्रण में वह वसीली कुरागिन जैसे अवसरवादियों का नग्न रूप भी प्रस्तुत करता है जिनमें देश भक्ति का लेशमात्र भी नहीं है और उच्च विचारवाले रस्तोव तथा बल्कोन्स्की-परिवार का भी अंकन करता है जो शिक्षित शिष्ट और सिद्धान्तवादी हैं। अभिजात वर्ग के दो व्यक्तियों—अन्द्रेइ बल्कोन्स्की और पियेर बजूखोव—का उपन्यास में विशेष रूप से चित्रण हुआ है।

अन्द्रेइ बल्कोन्स्की

अन्द्रेइ बल्कोन्स्की उच्च विचारों का व्यक्ति है। तथाकथित उच्च समाज में उसे अहंभाव और दम्भ ही दिखाई पड़ता है और वह इस समाज के जीवन से छुटकारा चाहता है, किन्तु अभिजात वर्ग के संस्कारों के कारण इससे मुक्त नहीं हो पाता। उसका जीवन खोज का जीवन है और उत्थान पतन तथा चित्त अवसाद और निराशा का जीवन है। पहले वह यश और कीर्ति का इच्छुक था किन्तु आस्टरलिट्ज़ के युद्ध ने इस यश का नग्न रूप उसके सामने प्रस्तुत कर दिया और अब उसे इसकी भी इच्छा न रही। निराशा उसके जीवन में घर कर गई है और उसे अपने जीवन में आनंद की कोई आशा नहीं है। वह किसी के काम में बिना व्याघात डाले किसी प्रकार जीवन के दिन बिताना चाहता है, किन्तु सहसा नताशा रस्तोवा के प्रति प्रेम जाग पड़ने के कारण उसके लिए जीवन में फिर आकर्षण आ

जाता है, किन्तु यह आकर्षण अधिक समय तक न रह सका क्योंकि नताशा दूसरे व्यक्ति अनातोली के प्रति आकृष्ट हो गयी। अब युद्ध की घटनाएँ उसमें जीवन जगाती हैं। सामान्य रूसी सैनिकों के साथ रहने पर अन्त में उसकी समझ में आता है कि जीवन की सार्थकता जनता की सेवा और उससे प्रेम करने में ही है। बोरोदिनो के युद्ध में अन्द्रेइ बुरी तरह घायल हुआ। मृत्यु से कुछ दिन पहले वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जीवन की सार्थकता प्रेम में है—अपने निकट के लोगों से प्रेम करने में और अपने शत्रुओं से भी प्रेम करने में। इस समय उसके हृदय में उस अनातोली के प्रति भी विद्वेष न था जिसने कि उसके जीवन के व्यक्तिगत आनन्द को नष्ट कर दिया था।

अन्द्रेइ बल्कोन्स्की के माध्यम से तोल्सतोय ने क्षमा, अहिंसा और आत्मिक प्रेम के अपने आदर्श की अभिव्यंजना की है। अन्द्रेइ बल्कोन्स्की तोल्सतोय के ही क्षमा तथा अहिंसा और प्रेम के आदर्शों का अनुगामी बन जाता है।

पियोर बेज़ूखोव

उपन्यास का एक अन्य पात्र पियोर बेज़ूखोव का भी इन्हीं सिद्धान्तों में विश्वास है। इस आरम्भ में वह उच्च वर्ग के राग रंग के जीवन में व्यस्त रहता है किन्तु बाद में वह इनसे ऊब जाता है और उपकार, धर्म रोमांटिक प्रेम आदि में जीवन का सच्चा अर्थ ढूंढ़ता है। युद्ध की घटनाएँ उसके जीवन में भी परिवर्तन लाती हैं। वह युद्ध के बाद नेपोलियन की हत्या करने के लिए मास्को में ही रह जाता है। वह बाद में बंदी हो जाता है और सामान्य रूसी प्लातोन करातायेव के संपर्क में आता है। उसके सहवास में धीरे-धीरे उसकी आत्मा से संदेह का बोझ हटता है और उसे स्पष्ट हो जाता है कि जीवन की सार्थकता प्रेम, हिंसा द्वारा बुराई के विरोध न करने और अपने को भाग्य के अधीन कर देने में है।

अपने एक पत्र में तोल्सतोय ने लिखा 'अत्यन्त चिन्ता, परिश्रम, संघर्ष त्याग—ये अनिवार्य परिस्थितियाँ हैं। जिनसे एक सेकेंड के लिए भी एक भी आदमी को छुटकारा पाने की बात न सोचनी चाहिए।

चरित्र सरलात्मकता के बीच तथा विकासशील दिखाया गया है।

प्रकृति का चित्रण भी पात्रों के अनुरूप हुआ और उपन्यास के प्राकृतिक दृश्य पात्रों के मनोभाव और अनुभूतियों के उद्घाटन में सहायता करते हैं। उदाहरणतः बसन्त का चित्रण अन्द्रेई के रोस्तोवों के यहाँ जाने के समय दो बार हुआ है। पहली बार तो उससे उसकी निराशा निखरती है और दूसरी बार बसन्त का चित्रण अन्द्रेई की आशावादिता पर जोर देता है।

तोल्स्तोय का उपन्यास अपनी समाविष्ट विषय वस्तु की व्यापकता और विशदता के कारण सर्वथा नया साहित्यिक रूप प्राप्त करता है जिसे 'उपन्यास महाकाव्य' कहते हैं जिसमें ऐतिहासिक अतीत की अनेक सामाजिक अभिव्यक्तियों का गंभीर उद्घाटन हुआ है और जिसमें रूसी जीवन का अनेक रूपात्मक तथा बहुपक्षी चित्रण उच्च नैतिकता तथा वातावरण के साथ समन्वित है। इसी से 'युद्ध और शांति' का जातीय तथा शिक्षात्मक महत्त्व है। युद्ध और शांति रूस की जातीय साहित्यिक कृति है।

सन् ७०-९० के वर्षों में उसकी सर्जना

सन् ७०-९० के वर्षों में उसकी सर्जना में उसके दृष्टिकोण की विषमता और भी तीक्ष्ण तथा स्पष्ट हो जाती है। उसने स्पष्टतया जान लिया था कि रूस के सामाजिक जीवन में अब अभिजात वर्ग की प्रधानता और प्रभुता नष्ट हो गई है और बुर्जुआ वर्ग सामाजिक उत्तराधिकारी के रूप में सामने आ रहा है। अभिजात वर्ग के जीवन में अब उसे सार्थकता नहीं दिखाई पड़ती थी क्योंकि इस वर्ग का जीवन नैतिक सामाजिक हर दृष्टि कोण से ह्रासशील था। इसके साथ ही उस बुर्जुआ विकास में भी रूस के लिए कोई अच्छाई नहीं दिखाई पड़ रही थी। वह तो बुर्जुआ विकास को सामान्य जनता के लिए बहुत बड़ा खतरा समझता था। क्योंकि उसकी दृष्टि में वह मानवीय व्यक्तित्व को नैतिक ह्रास की ओर ले जा रहा है। इसलिए वह अभिजात वर्ग और बुर्जुआ वर्ग दोनों की आलोचना करता है। तोल्स्तोय नैतिक आत्मविकास की शिक्षा देता है और किसानों के पितृसत्तात्मक व्यवस्था को आदर्श जीवन के रूप में ग्रहण करता है। और

इन्हीं के द्वारा वह अपने युग की बुराइयों का निराकरण संभव समझता है। परिश्रम में वह मनुष्य का त्राण बताता है और परोपजीवियों प्रभुवर्ग शासन तथा शासन के सबल रूप में संगठित धर्म की आलोचना करता है। तोल्स्तोय परिश्रमशील जनता के और भी निकट आने का प्रयत्न करता है और उसके जीवन में घुल-मिल जाना चाहता है।

अन्ना करेनिना

'अन्ना करेनिना' उपन्यास में इन्हीं विषमताओं का चित्रण हुआ है। इसमें लेखक के मन को उद्वेलित करनेवाले समकालीनता के सभी प्रश्न प्रस्तुत किये गए हैं। इस उपन्यास के लेखन में उसे पाँच वर्ष लगे।

इस उपन्यास की प्रधान नायिका अन्ना करेनिना है जिसका उस अभिजात वर्ग के वातावरण से असामंजस्य हो जाता है जिसमें कि उसका जन्म हुआ है और जिसमें वह पली है। अन्ना को अपने पति से प्यार नहीं है और वह व्रोन्स्की से प्यार करती है और उसी में उसे जीवन की खुशी प्राप्त होती है। उच्च समाज द्वारा परित्यक्ता और अपने प्रिय पुत्र से जबरदस्ती अलग की हुई अन्ना अत्यन्त व्यथित है और बचाव की कोशिश करती है। इस प्रकार से तिरस्कृत और असफल होने के कारण तथा किसी से सहानुभूति न प्राप्त कर सकने के कारण वह आत्महत्या कर लेती है।

शहरी जीवन और बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना करते हुए तोल्स्तोय ने इस उपन्यास में बड़ी सहानुभूति के साथ पितृसत्तात्मक जीवन का चित्रण किया है क्योंकि उसमें उसका विश्वास था और उसका यही आदर्श था तथा वह इसी को जनता की रक्षा और सुधार का साधन समझता था। इसी से उसने अन्ना करेनिना के समाज के लोगों का जीवन विफल और खोखला दिखाया है और उनके परिवारों को विशृंखलित चित्रित किया है और इसके विपरीत लेविन का जीवन आनन्दमय दिखाया है। उसे अपने पारिवारिक जीवन में आनन्द की प्राप्ति होती है यद्यपि उसकी आत्मा जीवन की सार्थकता की खोज में व्यस्त है। किसानों के अधिकाधिक निकट आते हुए और उनके परिश्रमपूर्ण जीवन में हिस्सा लेते हुए वह

पितृसत्तात्मक कृषक व्यवस्था से संयुक्त हो जाता है और इसमें आत्मिक शांति प्राप्त करता है।

तोल्स्तोय अभिजात वर्ग और बुर्जुआ दोनों की आलोचना करता है किन्तु जानता है कि सामाजिक शक्ति के रूप में अब बुर्जुआ प्रबल हो रहा है और अब वही जीवन का मालिक है। रिबीनिन के रूप में तोल्स्तोय ने जीवन के इसी नवीन मालिक को प्रस्तुत किया है। लेखक के मतानुसार रिबीनिन और उसके साथी परिश्रमशील कृषकों को और भी नष्ट कर रहे हैं।

१८८१ में तोल्स्तोय परिवार के साथ मास्को आ गया। मास्को की जन गणना में हिस्सा लेते हुए उसने परिश्रमशील जनता की ओर प्रतीकों को लक्षित किया किन्तु क्रान्तिकारी संघर्ष की जगह उसने नैतिक आत्म-सुधार को ही इस अन्याय के निराकरण का साधन माना।

इन वर्षों में उसकी कृतियों में 'हिंसा द्वारा बुराई के अवरोध का भाव' और भी प्रबल हो जाता है और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लिए संघर्ष का रास्ता न जाननेवाली जनता की निराशा की भावना और भी तीक्ष्ण तथा गहरी हो जाती है। तोल्स्तोय समझता है कि सुदूर अतीत में पितृसत्तात्मक जीवन की परिस्थितियों में सामान्य जनता का जीवन बुर्जुआ समाज के बीच पनपते हुए उसके जीवन से कहीं अधिक अच्छा था। इसी से समकालीन समस्याओं के समाधान के रूप में बराबर नैतिक पूर्णता या नैतिक आत्मसुधार और पितृसत्तात्मक जीवन की आदर्श व्यवस्था पर जोर देता रहा और उसने अपने समय के क्रान्तिकारी विचारों को नहीं ग्रहण किया। उसकी सर्जना के आरम्भ से उसकी कृतियों में दृष्टिकोण का जो वैषम्य लक्षित होता है वह इन वर्षों में और भी तीव्र तथा तीक्ष्ण हो जाता है।

पुनर्जन्म

उसकी बुर्जुआ व्यवस्था की आलोचना का निदर्शन उसका उपन्यास 'पुनर्जन्म' है जिसे कि उसने १८८९ में शुरू किया और कई व्यवधानों के बीच दस वर्ष में पूरा किया। तोल्स्तोय की यह कृति उन्नीसवीं सदी

के अन्त के आलोचनात्मक यथार्थवाद की श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। इसमें रूसी समाज के विभिन्न स्तरों और वर्गों के जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास के केन्द्र में राजकुमार नेख्ल्यूदोव और कत्यूशा मास्लोवा (सामान्य लड़की) है। न्यायालय में वह अभियुक्त के रूप में खड़ी कत्यूशा को पहचानता है जो कि उसके विश्वासघात का शिकार बन चुकी है और उसकी आत्मा पश्चात्ताप करने लगती है। इस अभागी स्त्री के प्रति किये गये अपने पाप के प्रक्षालन का प्रयत्न करता हुआ उसका 'पुनर्जन्म' होता है। वह अपने सामाजिक विशेषाधिकारों को छोड़ देता है अपनी ज़मीन किसानों को पट्टे पर उठा देता है और बाद में इस ज़मीन से अपना अधिकार त्याग देता है। इस प्रकार वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मनुष्य का आनन्द निकटवर्तियों से प्रेम में है। सब को क्षमा करने में है, तथा ईश्वरीय इच्छा के अविरोध में है।

कत्यूशा में भी बड़ी मानसिक हलचल है। नेख्ल्यूदोव द्वारा प्रवंचित होकर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि ईश्वर के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह सब केवल इसलिए कि लोगों को धोखा दिया जाय। उसका 'अच्छाई' या 'भलाई' से विश्वास उठ जाता है। थोड़े समय के लिए उसकी आत्मा कुंठित हो जाती है किन्तु फिर धीरे धीरे उसके अन्तर में जो कुछ 'अच्छा' बचा है उसका पुनर्जन्म होता है और वह उसे आत्मिक 'पुनर्जन्म' की ओर ले जाता है।

इन पात्रों की ट्रेजेडी का मूल स्रोत लेखक के मत में रूस के अभिजात वर्ग और बुर्जुआ वर्ग की कुत्सित सामाजिक तथा शासकीय व्यवस्था है। फलतः तोल्स्तोय सत्ताधीश लोगों की अवसरवादिता तथा ढोंग की, न्यायालय की बेईमानी की और धोखा देने वाले शासन के सहायक बने हुए चर्च के मिथ्यात्व की कड़ी आलोचना करता है। उसे प्रत्येक व्यक्ति की आत्मशुद्धि में तथा नैतिक पूर्णता में ही इससे छुटकारा दिखाई देता है। ईश्वरीय (शासन) बादशाही (शासन) हमारे भीतर है ऐसा वह ज़ोर देकर कहता है।

इन सब के होते हुए भी आलोचनात्मक यथार्थवादी कृति के रूप में 'पुनर्जन्म' उपन्यास का बड़ा महत्त्व है। इसमें उन्नीसवीं शती के रूस के निरंकुश शासन के बीच रूसी जनता की कठिन परिस्थिति का यथातथ्य चित्रण हुआ है।

जीवन के अन्तिम वर्ष

शासन और धर्म दोनों का नग्न रूप प्रस्तुत करने के कारण और उनकी कटु आलोचना करने के कारण दोनों ही उसके विरुद्ध थे। किन्तु लेखक की व्यापक लोकप्रियता तथा प्रभाव के कारण शासन उसके दमन में डरता था। धर्म ने फतवा पढ़ा और तोल्स्तोय को धर्म से निकाल दिया। इसी का फल यह हुआ कि तोल्स्तोय जनता में और भी लोकप्रिय हो गया।

जीवन के अन्तिम वर्षों में तोल्स्तोय किसानों की तरह रहने लगा। वह जमीन जोतता था, लकड़ी काटता था, जूते सीता था, पानी खींचता था और किसानों की तरह कपड़े पहनता था।

१८९१, १८९२, १८९८ में उसने अकालपीड़ित किसानों के लिए सहायता का आयोजन किया। सन् १९०५ की क्रान्ति के दिनों में उसने लिखा कि वह करोड़ों किसानों के पक्ष में है और जब क्रान्ति के बाद उसने कठोर दमन, अंधाधुंध मृत्यु दंड तथा निर्वासन का दृश्य देखा तो वह विचलित हो उठा और 'मैं मौन नहीं रह सकता' लेख लिखा। इसके बाद उसे अभिजात वर्ग के अपने विशेषाधिकार और भी बोझ मालूम पड़ने लगे। १० नवम्बर १९१० की सुबह तोल्स्तोय अपने डाक्टर मित्र (डा० मकोवित्स्की) के साथ यास्नाया पोल्याना छोड़कर दक्षिण की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे निमोनिया हो गया और २० नवम्बर को अस्तोपवा स्टेशन पर स्टेशन मास्टर के घर में उसकी मृत्यु हो गई। यास्नाया पोल्याना में इस महान् लेखक की अत्यन्त साधारण कब्र है जिससे उसकी आत्मा की महानता और भी प्रकट होती है।

रूस के इस महान लेखक की मर्यादा का रूस के अन्य महान् व्यक्ति लेनिन ने मुक्त कंठ से आदर किया। तोल्स्तोय के विषय में लेनिन ने कई

लेख ('रूसी क्रान्ति का दर्पण लेव तोल्स्तोय', 'लेव निकोलाएविच तोल्स्तोय', 'तोल्स्तोय और उसका युग', 'तोल्स्तोय और समकालीन श्रमिक आन्दोलन', 'तोल्स्तोय और प्रोलितारियत संघर्ष' आदि) लिखे जिनमें उसने तोल्स्तोय की महत्ता और उसकी रचना की विषमता का विश्लेषण किया था। उसकी प्रगतिशीलता और उसकी प्रतिक्रियावादिता को स्पष्ट किया और उसकी समकालीनता तथा उसकी प्राचीनतावादिता के कारण बताये। उसने लिखा कि तोल्स्तोय ने कलात्मक कृतियों की ऐसी माला दी जिसने उसे संसार के उच्च लेखकों के बीच प्रतिष्ठित कर दिया। जिसने बड़ी शक्ति, विश्वास और ईमानदारी के साथ समकालीन राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था की मूलभूत विशिष्टताओं से संबंधित प्रश्नों की एक पूर्ण शृंखला प्रस्तुत की।

लेनिन आगे लिखता है कि 'तोल्स्तोय की कृतियों, दृष्टिकोणों, शिक्षाओं और 'स्कूल' की विषमताएँ बड़ी मुखर हैं। एक ओर तो वह मौलिक कलाकार है जिसने न केवल रूसी जीवन का अतुलनीय चित्र प्रस्तुत किया वरन् विश्व-साहित्य की प्रथम कोटि की रचनाएँ प्रस्तुत कीं, दूसरी ओर जमींदार और ईसा में विश्वास करनेवाला सनकी। एक ओर तो सामाजिक मिथ्यात्व और ढोंग का जोरदार, सीधा और ईमानदारी से पूर्ण विरोध है—और दूसरी ओर तोल्स्तोयवादी अर्थात् समय से पिछड़ा हुआ चिल्लानेवाला मूर्ख कथित (रूसी 'इंटेलिजेंट' बुद्धिमान) पब्लिक में अपनी छाती ठोंकता हुआ कहता है कि 'मैं खराब हूँ, मैं कुत्सित हूँ किन्तु मैं नैतिक आत्मपूर्णता में लगा हुआ हूँ; मैं अब मांस नहीं खाता हूँ और चावल के कटलेटों पर जीवित रहता हूँ।' एक ओर तो पूँजीवादी शोषण की खरी आलोचना, शासकीय जबरदस्ती, न्यायालय तथा सरकारी संचालना के नाटक का पर्दाफाश, बढ़ती समृद्धि तथा सांस्कृतिक सम्प्राप्तियों की वृद्धि और गरीबी, बर्बरता तथा जनता के भूखेपन की वृद्धि के बीच की विषमता का गंभीर उद्घाटन और दूसरी ओर 'बुराई के अविरोध' की मूर्खतापूर्ण शिक्षा। एक ओर तो गंभीर यथार्थवाद, हर प्रकार के चेहरों को उतार फेंकना और, दूसरी ओर दुनिया की

अत्यन्त कुत्सित वस्तुओं में से एक की शिक्षा—अर्थात् धर्म की शिक्षा धर्म के पुरोहितों की जगह—नैतिक विश्वास के पुरोहितों को स्थापित करने का प्रयत्न अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म और फलतः अत्यन्त घृणित पुरोहिती की स्थापना।

मानवता के त्राण का नया नुस्खा प्रस्तुत करने वाले मसीहा के रूप में तोल्स्तोय हास्यास्पद है किन्तु उन विचारों और मनोभावों के अभिव्यंजक के रूप में वह महान् है 'जो कि रूस के बुर्जुआ आन्दोलन के आरम्भ के समय तक करोड़ों रूसी किसानों में प्रादुर्भूत हो गए थे।

तोल्स्तोय विश्व का अत्यन्त लोकप्रिय लेखक और बहुत से योरोपीय साहित्यकारों को प्रेरणा देनेवाला सिद्ध हुआ।

२६ अन्तोन पाव्लोविच चेखव

[१८६०–१९०४]

प्रारम्भिक जीवन

रूस के प्रसिद्ध कहानीकार और नाटककार अन्तोन पाव्लोविच चेखव का जन्म २९ जनवरी १८६० में तगनरोग के शहर में एक छोटे से व्यापारिक परिवार में हुआ।

उसके बचपन के दिन स्वच्छन्दता और सुख के दिन न थे। उसका पिता अपने बच्चों पर कठोरता से शासन करता था। बच्चों को घंटों चर्च में खड़ा रहना पड़ता था। चर्च-गीत सीखना पड़ता था और दूकान का हिसाब जोड़ना पड़ता था। आज्ञा भंग करने पर उनको कोड़ों की सजा मिलती थी। आगे चलकर अपने बचपन की याद करते हुए चेखव ने लिखा है कि 'बचपन की मैंने बचपन ही न जाना।'

विद्यार्थी जीवन

चेखव को पहले अपनी माँ से शिक्षा मिली। फिर वह स्थानीय (ग्रीक) स्कूल में भेजा गया और बाद में 'जिमनेज़ियम' में दाखिल हुआ। पिता के कारबार के नष्ट होने पर उसका परिवार मास्को चला गया। इस समय चेखव को न केवल अपने लिए आश्रय ढूँढ़ना पड़ा वरन् परिवार की भी सहायता करनी पड़ी। वह लोगों को पढ़ाकर किसी तरह अपना जीवन चला रहा था।

'जिमनेज़ियम' की शिक्षा पूरी कर चेखव यूनिवर्सिटी की आयुर्वेद फैकल्टी में भर्ती हुआ। विद्यार्थी जीवन से ही वह हास्यरस के पत्रों में सहयोग देने लगा। उसकी पहली प्रकाशित कृति 'डान के ज़मींदार स्तेपान व्लादीमिरोविच का विद्वान् पड़ोसी डाक्टर फ्रीड्रिक का पत्र' (१८८०)।

चेखव ने अपने समय की ज्वलन्त समस्याओं पर लिखा। उसकी

छोटी कहानियों की विषय वस्तु बड़ी ही व्यापक और सारगर्भित होती थी। इन कृतियों में रूसी जीवन के विविध पक्ष प्रतिबिम्बित हैं। धीरे धीरे चेखव की इन कहानियों में मनोवैज्ञानिक अंकन के साथ-साथ सामाजिक विषय वस्तु भी अधिकाधिक व्यापक होती गयी। और फलतः उसकी प्रारम्भिक रचनाओं में 'मोटा और दुबला' 'चेहरा' 'गिरगिटान' 'प्रिशिबेयेव' जैसी महत्वपूर्ण कहानियाँ भी हैं। जिनमें अन्याय शोषण शासन की निरंकुशता जनता पर अत्याचार, मानवीय व्यक्तित्व की अवमानना आदि तत्कालीन सामाजिक प्रश्नों की ओर संकेत किया गया है।

गिरगिटान

'गिरगिटान' कहानी में तत्कालीन कर्मचारियों की अपने से बड़े अफसर की खुशामद चित्रित की गई है और जनता के प्रति उनका उपेक्षा पूर्ण संबंध दिखाया गया है। यह कर्मचारी सामान्य जनता की शिकायतों की ओर कोई ध्यान नहीं देते।

प्रिशिबयेव

'प्रिशिबेयेव' में चेखव सन् अस्सी के जमाने के पुलिस शासन का उद्घाटन कर रहा है। प्रिशिबेयेव इस पुलिस शासन का मूर्त रूप है। वह हर एक के व्यक्तिगत जीवन में दखल देता है और किसी को शान्ति से नहीं बैठने देता। वह लोगों को आम सड़क पर एकत्रित होने से भी मना करता है। पुलिस शासन पर व्यंग्य के कारण सेंसर ने इसके छापने की आज्ञा नहीं दी।

कर्मचारी की मृत्यु

'कर्मचारी की मृत्यु' में सामान्य क्लर्कों की खुशामदी प्रवृत्ति तथा अफसरों से सदा आतंकित रहने की स्थिति का चित्रण किया गया है। मामूली क्लर्क चेर्व्याकोव थियेटर में नीचे बैठे हुए जेनरल के सिर पर छींक देता है। जेनरल की आशंका उसकी शांति भंग कर देती है। कई बार उसने जेनरल से क्षमा-याचना की कोशिश की

लेकिन उसे सतोष न हुआ । अन्त में भय से उसकी मृत्यु हो जाती है।

सन् नब्बे के वर्षों में चेखव की सर्जना

सन् अस्सी के युग के अन्त से चेखव की प्रौढ़ रचनाएँ सामने आती हैं। 'स्तेप' कहानी ऐसी ही है जिसमें मनमोहक प्राकृतिक पृष्ठभूमि में उस समय का अरोचक रूसी जीवन प्रस्तुत किया गया है।

सखालिन टापू

रूसी जीवन का व्यापक परिचय प्राप्त करने की इच्छा से चेखव १८९० में सुदूर पूर्व गया। उसका ध्यान विशेष रूप से सखालिन ने आकृष्ट किया जो कि उस समय के रूस से निर्वासितों और बंदियों की बस्ती थी। निर्वासितों पर किये जानेवाले अत्याचारों से वह काँप उठा और रूस लौट कर उसने 'सखालिन टापू' पुस्तक लिखी। यद्यपि पुस्तक निर्वासितों की दशा सुधारने के अपने लक्ष्य में सफल न हुई क्योंकि सखालिन निर्वासितों का पूर्ववत् नरक बना रहा फिर भी पुस्तक एक दृष्टि से कृतकार्य हुई। पुस्तक ने जारशाही के विरुद्ध जनता के हृदय में घृणा जगायी।

वार्ड नम्बर ६

१८९२ में उसकी प्रसिद्ध कहानी 'वार्ड नंबर ६' छपी जिसमें अस्पताल के मानसिक रोगियों के वार्ड का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसमें तोल्स्तोय के 'बुराई के अविरोध' के सिद्धान्त की आलोचना की गई है। डाक्टर रोगी मनुष्य का भाग्य आत्मपूर्णता में देखता है और मानसिक रोगी ग्रोमोव से उसका मतभेद है जो कि 'बुराई के अविरोध' का विरोधी है। तोल्स्तोय के सिद्धान्तों का यह समर्थक डाक्टर निष्क्रिय रहता है और अस्पताल में फैलती हुई बुराइयों को रोकने की कोशिश नहीं करता है फलतः वहाँ अस्पताल में इन्सानियत नहीं है और रोगी पीटे जाते हैं। अन्त में डाक्टर स्वयं बीमार होकर रोगी के रूप में इस वार्ड में आता है और जब वार्ड के नौकरों द्वारा वहाँ की परिस्थितियों का विरोध करने पर पीटा जाता है तो उसे 'बुराई के अविरोध' के सिद्धान्त की गलती का अनुभव होता है। मार खाने के बाद डाक्टर उस दिन से एक

शब्द भी न बोला और न उसने खाना ही छुआ। थोड़े दिन बाद वह मर गया। पाठकों ने इस कहानी को समकालीन रूसी जीवन की आलोचना के रूप में ग्रहण किया।

जनसेवा

चेखव जनसेवा के बारे में बराबर सोचा करता था। १८९२ में उसने मध्य वोल्गा के अकाल पीड़ित किसानों के लिए धन एकत्रित किया। उसी साल उसने मेलिख़ोवो में मास्को के बाहर के अपने निवास स्थान पर सामाजिक कार्य का आयोजन किया। उसने हैजा स्टेशन खोला और वहाँ की जनता को मुफ्त दवा दी। अपने साधनों के बल पर उसने मेलिख़ोवो और पास के गाँवों में स्कूल खोले तथा गरीबों को कपड़ों आदि से सहायता की।

किसान

गाँवों के जीवन का चेखव ने जो पर्यवेक्षण किया उसके आधार पर उसने 'किसान' कहानी लिखी जिसमें पूँजीवाद द्वारा नष्ट किये गये किसानों के अभाव-ग्रस्त अंधकारपूर्ण जीवन का चित्र है।

सन् अस्सी और नब्बे के ज़माने के रूसी जीवन के अपने पर्यवेक्षण में चेखव ने उस 'ब्यूरोक्रेसी' को भी देखा जो कि जीवन की स्वच्छन्द गति को रोकती है और इस प्रकार ज़ारशाही का अवलम्ब बनी हुई है। वह प्रत्येक प्रकार की नवीनता और प्रगति का विरोधी है। चेखव ने इसे केवल नौकरशाही के ही बीच नहीं लक्षित किया वरन् जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी इसके पोषकों को देखा।

आवेष्ठित व्यक्ति

'आवेष्ठित व्यक्ति' में चेखव ने इसी प्रकार के व्यक्ति का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक स्कूल में ग्रीक भाषा का शिक्षक है जो कि सरकारी कायदे कानून पर चलने वाला व्यक्ति है और हर प्रकार की नवीनता और स्वतंत्रता का कट्टर शत्रु है। वह अपने को बराबर ढँके रहता है कि उसे हवा भी न लगने पाए। हर मौसम में वह लम्बे बूट

छाता और रुई वाले अँगरखे में आवेष्ठित रहता है। इसी प्रकार उसका व्यक्तिगत जीवन भी ढँका हुआ है और दूसरों से छिपा हुआ है। स्कूल के बच्चे उससे डरते हैं और उसके दबाव में स्कूल के शिक्षक विद्यार्थियों के अंक घटा देते हैं और हल्की शरारतों पर भी उनको स्कूल से निकाल देते हैं। स्कूल के अतिरिक्त वह शहर के लोगों के लिए भी भयानक है। उसके कारण लोग जोर से बात करते हुए भी डरते हैं। इस कहानी के द्वारा चेखव ने मानवीय व्यक्तित्व के विकास और स्फुरण को रोकनेवाले प्रतिक्रियावादी शासन तथा वातावरण के नष्टकारी प्रभाव का संकेत किया है। इस कहानी में दूसरे शिक्षक भी हैं जो केवल 'सर्कूलर' के आधार पर ही नहीं जीवित रहना चाहते जो गतिहीनता के विरोधी हैं और जो नव संचार चाहते हैं। जीवन को बदलना ही होगा—यह कहानी का संकेत है।

इओनिच

इसी वर्ष (१८९८) चेखव की कहानी 'इओनिच' प्रकाशित हुई जिसमें रूसी बुद्धिजीवियों की संकीर्ण आराम पसन्द ज़िन्दगी का अंकन और उसकी आलोचना है। इसमें डाक्टर स्तारत्सेव की करुण कहानी है जो समाज के लिए उपयोगी बनना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे आत्मसेवी बन जाता है और उसके आरम्भ के उच्च आदर्श लुप्त हो जाते हैं।

मिलनसार यौवन के उत्साह और जनता के प्रति प्रेम से पूर्ण युवक डाक्टर प्रान्त के एक छोटे से शहर में आता है। शहर के पास के अस्पताल में वह बड़े आत्मत्याग के साथ काम करता है। किन्तु अधिक समय तक वह ऐसा न बना रह सका। धीरे-धीरे वह स्वयं आत्मसेवी बन जाता है। अब उसका लक्ष्य समस्त समाज सेवा नहीं वरन् आत्मसेवा है और धन प्राप्ति मात्र उसके जीवन का उद्देश्य रह जाता है। अब वह समाज और जनता के बीच बहुत कम दिखाई पड़ता है। अब वह लोगों के यहाँ इसलिए नहीं जाता कि रोगियों की चिकित्सा करे वरन् उन लोगों का घर देखकर अपने लिए घर खरीदने की इच्छा से। समाज सेवा के उसके स्वप्न सब सदा के लिए लुप्त हो गये।

शब्द भी न बोला और न उसने खाना ही छुआ। थोड़े दिन बाद वह मर गया। पाठकों ने इस कहानी को समकालीन रूसी जीवन की आलोचना के रूप में ग्रहण किया।

जनसेवा

चेखव जनसेवा के बारे में बराबर सोचा करता था। १८९२ में उसने मध्य वोल्गा के अकाल पीड़ित किसानों के लिए धन एकत्रित किया। उसी साल उसने मेलिखोवो में मास्को के बाहर के अपने निवास स्थान पर सामाजिक कार्य का आयोजन किया। उसने हैजा स्टेशन खोला और वहाँ की जनता को मुफ्त दवा दी। अपने साधनों के बल पर उसने मेलिखोवो और पास के गाँवों में स्कूल खोले तथा गरीबों को कपड़ों आदि से सहायता की।

किसान

गाँवों के जीवन का चेखव ने जो पर्यवेक्षण किया उसके आधार पर उसने 'किसान' कहानी लिखी जिसमें पूँजीवाद द्वारा नष्ट किये गये किसानों के अभाव-ग्रस्त अन्धकारपूर्ण जीवन का चित्र है।

सन् अस्सी और नब्बे के जमाने के रूसी जीवन के अपने पर्यवेक्षण में चेखव ने उस 'ब्यूरोक्रसी' को भी देखा जो कि जीवन की स्वच्छन्द गति को रोकती है और इस प्रकार जारशाही का अवलम्ब बनी हुई है। यह प्रत्येक प्रकार की नवीनता और प्रगति का विरोधी है। चेखव ने इसे केवल नौकरशाही में ही नहीं लक्षित किया वरन् जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी इसके पोषकों को देखा।

आवेष्ठित व्यक्ति

'आवेष्ठित व्यक्ति' में चेखव ने इसी प्रकार के व्यक्ति का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक स्कूल में ग्रीक भाषा का शिक्षक है जो कि सरकारी कायदे कानून पर चलने वाला व्यक्ति है और हर प्रकार की नवीनता और स्वतन्त्रता का कट्टर शत्रु है। वह अपने को बराबर ढँके रहता है कि उसे हवा भी न लगने पाए। हर मौसम में वह लम्बे बूट

ता और रुई वाले कंबलों से आवेष्ठित रहता है। इसी प्रकार उसका क्तिगत जीवन भी ढंका हुआ है और दूसरों से छिपा हुआ है। स्कूल के भी उससे डरते हैं और उसके दबाव में स्कूल के शिक्षक विद्यार्थियों के क घटा देते हैं और हल्की शरारतों पर भी उनको स्कूल से निकाल देते । स्कूल के अतिरिक्त वह शहर के लोगों के लिए भी भयानक है। सके कारण लोग जोर से बात करते हुए भी डरते हैं। इस कहानी के रा चेखव ने मानवीय व्यक्तित्व के विकास और स्फुरण को रोकनेवाले तिक्रियावादी शासन तथा वातावरण के नाशकारी प्रभाव का संकेत दिया है। इस कहानी में दूसरे शिक्षक भी हैं जो केवल 'सरकुलर' के आधार र ही नहीं जीवित रहना चाहते जो गतिहीनता के विरोधी हैं और ा नव संचार चाहते हैं। जीवन का बदलना ही होगा—यह कहानी का क्ष्य है।

इयोनिच

इसी वर्ष (१८९८) चेखव की कहानी 'इयोनिच' प्रकाशित हुई जिसमें रूसी बुद्धिजीवियों की संकीर्ण आराम पसंद जिंदगी का वर्णन और उसकी आलोचना है। इसमें डाक्टर स्तारत्सेव की करुण कहानी है जो समाज के लिए उपयोगी बनना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे आत्मसेवी बन जाता है और उसके आरम्भ के उच्च आदर्श लुप्त हो जाते हैं।

मिलनसार जीवन के उत्साह और जनता के प्रति प्रेम से पूर्ण युवक डाक्टर प्रान्त के एक छोटे से शहर में आता है। शहर के पास के अस्पताल में वह बड़े आत्मत्याग के साथ काम करता है। किन्तु अधिक समय तक वह ऐसा न बना रह सका। धीरे-धीरे वह स्वयं आत्मसेवी बन जाता है। अब उसका लक्ष्य समस्त समाज सेवा नहीं वरन् आत्मसेवा है और धन प्राप्ति मात्र उसके जीवन का उद्देश्य रह जाता है। अब वह समाज और जनता के बीच बहुत कम दिखाई पड़ता है। अब वह रोगियों के यहाँ इसलिए नहीं जाता कि रोगियों की चिकित्सा करे वरन् उन रोगियों का घर देखकर अपने लिए घर खरीदने की इच्छा से। समाज सेवा के उसके स्वप्न अब सदा के लिए लुप्त हो गये।

चेखव की कहानियों में उसके समकालीनों को केवल पूँजीवाद का ही उद्घाटन न मिला वरन् किसानों की सहकारिता की आशा लगाए हुए 'नरोदनिकी' के भ्रम की भी आलोचना दिखाई पड़ी। उसकी कहानियों में तोल्स्तोय के 'बुराई के अविरोध' के सिद्धान्त और 'बुर्जुआई' छोटे कामों के सिद्धान्त' का भी विरोध था।

'नरोदनिकी' तोल्स्तोय तथा बुर्जुआ सिद्धान्तों की आलोचना करते हुए भी चेखव के पास अपना कोई जीवन-दर्शन या सामाजिक दर्शन न था जो वह अपने देश को व जनता और जनता को किसी एक निश्चित रास्ते पर चला सकता। यद्यपि वह सामाजिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण के क्रान्तिकारी मार्ग से अवगत न था तथा उससे दूर था फिर भी उसकी कृतियों में आशावादिता का सूत्र है। उसे उसके उज्ज्वल भविष्य में विश्वास है और वह जानता है कि महान् रूसी जनता का सर्वसाधारण परिश्रम निकट भविष्य में इस देश का पुष्पित उद्यान में परिवर्तन कर देगा। उसकी अन्तिम कहानियों में 'दुलहिन' रूस के उज्ज्वल भविष्य के विश्वास से ओत-प्रोत है। इसमें अभिजात वर्ग की लड़की नाद्या का चित्र है जो इस वर्ग की परोपजीवी जिन्दगी को छोड़कर भविष्य में विश्वास रखती हुई संघर्ष के रास्ते पर चल पड़ती है। जीवन का निरीक्षण करते हुए चेखव के पास अनुभव की प्रचुर सामग्री एकत्रित होती दिखाई दी जिसकी विस्तृत अभिव्यक्ति कहानी की लघु सीमा में ज्यों की त्यों पूरी-पूरी संभव न थी। इसी से युग के द्वन्द्व और संघर्ष के सजीव अंकन के लिए उसने साहित्य के एक अन्य रूप नाटक को चुना। सन् अस्सी के वर्षों और नब्बे की दशाब्दी के अन्त में चेखव की नाटकीय प्रतिभा का अपूर्व प्रतिफलन देखने को मिलता है। नाटककार के रूप में उसे प्रथम महत्त्वपूर्ण सफलता 'चाइका (समुद्री पक्षी)' (१८९६) नाटक में मिली। उसके अन्य प्रसिद्ध नाटक 'चाचा वान्या' (१८९७) 'तीन बहनें' (१९०१) 'चेरी की बगिया' (१९०४) हैं। सामान्यतया इन नाटकों में युग का पूरा-पूरा चित्र उतर आया है। इन नाटकों में अभिजात वर्ग के बुर्जुआ शक्ति के प्रादुर्भाव विचारशीलों की निराशा जो कि बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं किन्तु

प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों से प्रमुख बाधाओं के सामने सिर झुका देते हैं और युवकों की आशावादिता का बड़ा मार्मिक अभिव्यंजन हुआ है।

'चेरी का बगिया' चेखव की नाटकीय कला का उत्कृष्टतम निदर्शन है। इसका मूल कथावस्तु अभिजात वर्ग और उसकी सम्पत्ति का ह्रास है। पूँजीवाद के विकास के साथ-साथ अभिजात वर्ग का आधिपत्य धीरे धीरे नष्ट हो रहा है और बड़े-बड़े व्यापारियों और कारखानेदारों के हाथ में आ रहा है। अभिजात वर्ग स्वप्न-लोक में रह रहा है और बुर्जुआ शक्ति उनकी स्थानापन्न होकर कार्यशीलता के क्षेत्र में आ रही है। यही इस नाटक का ऐतिहासिक सामाजिक पक्ष है। इस नाटक का व्यक्तिगत पक्ष यह है कि रानेव्स्काया और गायव की जमींदारी में चेरी की बगिया है। अभिजात वर्ग के इन व्यक्तियों की जमींदारी की दशा बड़ी शोचनीय है। जायदाद कर्ज से लदी है और यदि इसका ब्याज न दिया गया तो जायदाद नीलाम कर दी जायगी। इस परिवार का मित्र व्यापारी लोपाखिन इस परिवार को उद्धार का रास्ता बताता है कि इस जमीन को टुकड़ों में बाँटकर किराए पर उठा दो। इससे कर्जा भी चुकता हो जायगा और आमदनी भी होगी। लोपाखिन की सलाह अच्छी है किन्तु पुरानी भावनाओं से ग्रस्त रानेव्स्काया और गायव सहमत नहीं होते। वे कहते हैं कि सारे इलाके में चेरी की बगिया प्रसिद्ध है और स्थान की सुन्दरता का कारण है। अन्त में बगिया नीलाम हो जाती है और उस लोपाखिन के हाथ में आ जाती है जिसके पूर्वज इसी अभिजात परिवार के दास कृषक थे। वह इस बगिया को काट कर मकान बनायेगा जिससे कि पूँजी तथा शक्ति भी बढ़ेगी। नाटक का अंत इस दृश्य से होता है कि एक ओर तो परिवार इस जायदाद को छोड़कर हमेशा के लिए जा रहा है और उधर चेरी के पेड़ों के काटे जाने की आवाज सुनाई पड़ रही है। चेरी की बगिया अभिजात वर्ग का प्रतीक है। इधर अभिजात वर्ग सामाजिक रंगमंच से हट रहा है और उधर चेरी का बगिया कट रही है।

यह नाटक समाजशास्त्र के सिद्धान्तों का प्रवर्तन नहीं है वरन् यह

परोक्ष तथा पारिवारिक जीवन का व्यक्तिगत नाटक है जिसके बीच से यह तथ्य अपने आप प्रस्फुटित होते हैं। इसके पात्र अत्यन्त सजीव हैं। उनकी अपनी व्यक्तिगत विशिष्टताएं हैं और उनमें मानव सुलभ सभी भावनाएं हैं।

गायेव बातूनी है और उसमें कर्मशीलता नहीं है। वह हमेशा यही सोचता है कि कितना अच्छा होता यदि कहीं से विरासत मिल जाती। कितना अच्छा होता यदि आन्या की शादी किसी अमीर से हो जाती।

उनकी बहन रनेव्स्कया का चरित्र अत्यन्त भावुक है। उसका पुत्र इसी जमींदारी के तालाब में खेलता हुआ डूब गया। बाद में पति की भी मृत्यु हो गई। पुत्र और पति को खोकर शोक विह्वला यह नारी पेरिस चली जाती है और वहाँ एक व्यक्ति से प्रेम करने लगती है और वह भी अंत में उसे धोखा देता है। सब ओर से दुखी यह नारी अब अपने जीवन के अंतिम दिन बिताने स्वदेश लौटती है। इस जायदाद का एक स्थान उसके लिए अनेक स्मृतियों से समन्वित है। यहीं उसका बचपन बीता और यहीं उसके पुत्र की मृत्यु हुई। अनेक स्मृतियों में लिपटी हुई चेरी की बगिया को छोड़ने में इन लोगों को बड़ा कष्ट हो रहा है। चेखव ने इस मानवीय पक्ष का बड़ा ही स्वाभाविक एवं भावपूर्ण अंकन किया है। अभिजात वर्ग का यह परिवार बुरा नहीं है। उनमें दया कृपा सब कुछ है। केवल यह कार्यकुशल और कर्मठ नहीं है।

लोपाखिन इन लोगों से सर्वथा भिन्न है। लोपाखिन के पूर्वज इसी परिवार के दास कृषक थे जो अपने परिश्रम से ही अपनी मुक्ति प्राप्त कर सके हैं। लोपाखिन इसी परिश्रम और शक्ति का मूर्त रूप है। वह बिना काम के रह ही नहीं सकता। व्यापारी होने के कारण वह हर चीज का हिसाब-किताब जोड़कर उस काम में लगता है। चेरी की बगिया वह इसलिए नहीं खरीदता कि वह बड़ी सुन्दर है वरन् इसलिए कि यह आमदनी बढ़ाने का जरिया है। वह इस बगिया के भूतपूर्व मालिकों के चले जाने तक भी नहीं रुकता और पेड़ों को कटाना शुरू कर देता है। लोपाखिन नयी उभरती हुई सामाजिक शक्ति का प्रतीक है।

फिर भी चेखव की सहानुभूति लोपाखिन के प्रति नहीं है।

चेखव की सहानुभूति युवक पात्र त्रफीमोव और आन्या के साथ है जो चेरी की बगिया को प्राचीन रूढ़िग्रस्त समाप्तप्राय जीवन की प्रतीक मानते हैं और जो उसे छोड़कर इसके बंधनों से अपने को मुक्त कर बड़े उत्साह के साथ जीवन के नये मार्ग पर चलना चाहते हैं। इसी से चेखव ने लोपाखिन को सच्चे नायक के रूप में नहीं प्रस्तुत किया। नाटक का सच्चा नायक प्रयत्नशील परिश्रमशील नये जीवन का नया राही युवक वर्ग है जिसके प्रतिनिधि त्रफीमोव और आन्या हैं। यद्यपि नाटक में इनकी अभिव्यक्ति कुछ धुंधली ही हुई है।

त्रफीमोव और आन्या अतीत की ओर न देखकर भविष्य की ओर सम्मुख और प्रयत्नशील हैं। उनमें परिश्रम का संकल्प है। असीम उत्साह है और उज्ज्वल भविष्य का दृढ़ विश्वास है।

त्रफीमोव तथा आन्या की यह आशावादिता स्वतः चेखव की आशावादिता है जिसकी झलक उसकी अनेक कृतियों में मिलती है। प्रतिक्रिया के अंधकार के बीच चेखव की अपने देश के प्रकाशमान उज्ज्वल भविष्य के विश्वास से आलोकित कृतियाँ अनेक हृदयों को आशा और उत्साह से दीप्त करती रहीं।

चेखव को बहुत पहले तपेदिक हो गया था। सन् नब्बे के अन्त में उसकी बीमारी बढ़ गई और उसे मास्को आना पड़ा। १९०४ में उसकी मृत्यु हो गयी।

रूसी साहित्य के इतिहास में चेखव आलोचनात्मक यथार्थवाद का बहुत बड़ा प्रतिनिधि माना जाता है। उसका नाम 'रूसी साहित्य के अन्यतम लेखकों—पुश्किन गोगल लेरमन्तोव तुर्गनेव तोल्स्तोय—के साथ बड़े आदर के साथ लिया जाता है। बर्नार्डशा ने चेखव के बारे में लिखा कि 'योरोपीय नाटककारों के महान मंडल में चेखव अत्यन्त प्रकाशमान तारे के सदृश चमक रहा है।

२७ उन्नीसवीं शती का अन्त और बीसवीं का आरम्भ

उन्नीसवीं शती के सन् नब्बे के ज़माने को लेनिन ने रूसी स्वातन्त्र्य आन्दोलन के तृतीय (प्रोलितारियन) युग का आरम्भ काल कहा है। इस समय देश में बिखरी हुई अलग-अलग प्रगतिशील पार्टियों को एक में मिलाकर रूसी सोशल डिमोक्रेटिक मजदूर पार्टी की स्थापना हुई (जो बाद में कम्यूनिस्ट पार्टी के नाम से विख्यात हुई) और जिसने आगे चल कर बीसवीं शताब्दी में अक्तूबर १९१७ में सफल क्रान्ति की और जिसके फलस्वरूप देश में सोवियत समाजवादी शासन की स्थापना हुई। समाजवादी सोवियत शासन के साथ ही समाजवादी संस्कृति और समाजवादी साहित्य का भी विकास शुरू हुआ।

बीसवीं शताब्दी की अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति द्वारा जिस प्रोलितारियत या सर्वहारा वर्ग के शासन, साहित्य और संस्कृति का सोवियत संघ में सूत्रपात हुआ उस सर्वहारा वर्ग का प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शती के अन्त में ही हो गया था। इस नये वर्ग के प्रादुर्भाव और पोषण में उन्नीसवीं सदी के साहित्य का बहुत बड़ा हाथ है और इसका श्रेय इस सदी की यथार्थवादी और मानवतावादी परंपरा को देना चाहिए। जीवन का यथार्थ अंकन, देश की जनता की सेवा, स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रवाद का प्रचार और उच्च कलात्मकता उन्नीसवीं सदी के रूसी साहित्य की विशेषताएं हैं। इस युग में बहुत से उच्च कोटि के मानवतावादी लेखक हुए जो अपने वर्ग के संकीर्ण हितों से ऊपर उठ, जिन्होंने अपने समय की सामाजिक बुराइयों की कलई खोली—जिन्होंने जनमत की अभिलाषा के वश निर्वासन गरीबी निराशा और मृत्यु तक को अपनाया।

उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं शती के आरम्भ के इस संक्रान्ति काल के रूसी साहित्य में विश्व ख्याति के कई बड़े लेखक देखने को मिलते

हैं और कई प्रवृत्तियाँ लक्षित होती हैं। आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रतीकवाद की प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हीं वर्षों में तोल्स्तोय और चेखव जैसे उच्च कलाकारों की प्रतिभा का विकास हुआ और प्रगतिशील पाठकों के बीच मामिन सिबिर्याक, कारोलेंको, वैरेसायेव, कुप्रिन, अन्द्रयेव, बूनिन आदि प्रसिद्ध लेखकों की कृतियों को लोकप्रियता प्राप्त हुई। ये लेखक आलोचनात्मक यथार्थवाद के बहुत बड़े प्रतिनिधि हैं और इनमें से कुछ थोड़े समय तक प्रगतिशील भी थे।

आलोचनात्मक यथार्थवाद के इन प्रतिनिधियों की रचना के प्रगतिशील महत्त्व को स्वीकार करते हुए भी यह कहना आवश्यक है कि ये लेखक यथार्थता का गंभीर और व्यापक विश्लेषण करने तक रुक गये और आगे न बढ़ सके। इन लेखकों ने जीवन का विश्लेषण तो प्रस्तुत किया किन्तु उन प्रश्नों और समस्याओं का उत्तर न दिया जिनको कि युग और जीवन प्रस्तुत कर रहा था। इसलिये रूसी मजदूर वर्ग के कार्यकलाप की क्रान्तिकारिता नहीं दिखाई और न वे उस दयनीय स्थिति से छुटकारे का कोई रास्ता ही दिखा सके, जिसमें कि रूसी जनता अक्तूबर क्रान्ति के पहले तक पड़ी रही।

आलोचनात्मक यथार्थवाद के समान ही 'प्रतीकवाद' भी इस सन्धिकाल की विशेष प्रवृत्ति थी। प्रतीकवाद यथार्थवाद से विमुख था और इसके लेखक व्यक्तिवादिता, रहस्यवादिता और शुद्ध कला के पक्षपाती थे। आगे चलकर इस प्रवृत्ति के दो प्रमुख लेखक ब्र्यूसोव और ब्लाक इससे अलग हो गए और उन्होंने अक्तूबर क्रांति का स्वागत किया।

फिर भी आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रतीकवाद जन-जीवन की प्रमुख धारा से तटस्थ ही रहा। प्रतीकवाद ने युग की हलचल और जीवन के संघर्ष से आँख मूँद ली और आलोचनात्मक यथार्थवाद इनके बीच दूर तक न देख सका और न समझ सका कि जनता का यह क्रान्तिकारी आंदोलन १९०५ में सारे देश को हिला देगा और १९१७ में विजयी होगा। फलतः इन साहित्यकारों से न तो युग के ज्वलंत प्रश्नों का ही उत्तर दिया जा सका, न जन-जीवन को ही पथ-प्रदर्शन मिल सका।

यह काम मैक्सिम गोर्की ने किया। उसने युग की आवश्यकताओं को समझा और साहित्य का क्रान्तिकारी प्रतिनिधित्व प्रदान की। उसने लिखा कि 'हमारे चारों ओर जीवन में खलबलाहट है। नयी भावनाएं जग रही हैं, नयी साहसपूर्ण मांग सामने आ रही है। नये मनुष्य का जन्म हो रहा—यह नया मनुष्य जीवन और आत्मा के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का जवाब मांगता है। यह जानना चाहता है कि सत्य और न्याय कहां है, कहां दोस्त निर्दोष और कौन दुश्मन है।

मैक्सिम गोर्की ने इस नये मनुष्य का पक्ष लिया और वाह्यार्थता या तटस्थता का ढोंग न रच कर बताया कि कहां दोस्त निर्दोष और कौन दुश्मन है। उसने नयी मांगों को समझा और फलतः साहित्य के नये कर्त्तव्याकर्त्तव्य का प्रतिपादन किया। उसने साहित्य को इस नये मनुष्य को क्रान्तिकारी प्रोलितारियत की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का अभिव्यंजक ही न बताया वरन् उसे इसका पथप्रदर्शक भी बना दिया। उसने शुद्ध कला या 'तटस्थ साहित्य' को अस्वीकार कर साहित्य को सर्वहारा वर्ग का समर्थक बना दिया और समाजवादी संस्कृति का निर्माण तथा पोषण साहित्य का लक्ष्य बताया।

इस काम में उसे लेनिन से बड़ी प्रेरणा मिली। इस क्षेत्र में लेनिन के लेख 'पार्टीवादी संगठन और पार्टीवादी साहित्य' का बड़ा प्रभाव और महत्त्व है। इस लेख में लेनिन ने प्रोलितारियत साहित्य के प्रति कम्यूनिस्ट पार्टी का पक्ष निश्चित कर दिया और साहित्य का जनता के हित के साथ संबंधित और समन्वित कर दिया। उसने वर्ग विभक्त समाज में 'शुद्ध कला के सिद्धान्त' को असंभव ठहराते हुए लिखा कि 'समाज में रहते हुए समाज से स्वतन्त्र हो जाना असंभव है।' इसलिए उसने साहित्य और कला को प्रोलितारियत द्वारा कम्यूनिज्म की स्थापना के लिए छेड़े गये संग्राम के सामान्य लक्ष्य का एक अंग बताया और फलतः साहित्य में क्रान्तिकारी दृष्टिकोण से सामाजिक राजनीतिक घटनाओं के मूल्यांकन की मांग की। उसने लिखा कि साहित्य को अवश्यमेव पार्टीवादी होना चाहिए।

फलतः अक्तूबर क्रान्ति के बाद जब देश में सोवियत शासन की

स्थापना हुई और शासन सूत्र कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में आ गया तो इस नये युग में रूसी साहित्य के निर्माण और विकास को अपूर्व अवसर मिला और वह सर्वथा नयी दिशा की ओर प्रवृत्त हुआ। अक्तूबर क्रान्ति के बाद का रूसी साहित्य 'सोवियत साहित्य' कहलाता है जिसका संस्थापक मैक्सिम गोर्की है और जिसका मूल प्रेरक लेनिन है, जिसका रूप पार्टीवादी है जो प्रोलितारियतीय समाजवादी संस्कृति का पोषक है और जो कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन में समाजवाद के निर्माण के बीच निर्मित हुआ है। आगे के पृष्ठों में इसी 'सोवियत साहित्य' की रूपरेखा प्रस्तुत की जायगी।

यह काम मैक्सिम गोर्की ने किया। उसने युग की आवश्यकताओं को समझा और साहित्य को क्रान्तिकारी गतिविधि प्रदान की। उसने लिखा कि 'हमारे चारों ओर जीवन में खलबलाहट है। नयी भावनाएं जन्म रही हैं नयी महत्वपूर्ण मांगें सामने आ रही हैं, नये मनुष्य का जन्म हो रहा—यह नया मनुष्य जीवन और आस्था के अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्नों का जवाब मांगता है। वह जानना चाहता है कि सत्य और न्याय कहां है, कहां दोस्त मित्र और कौन दुश्मन है।

मैक्सिम गोर्की ने इस नये मनुष्य का पक्ष लिया और वाह्यार्थता या तटस्थता का ढोंग न रच कर बताया कि कहां दोस्त मित्र और कौन दुश्मन है। उसने नयी मांगों को समझा और फलतः साहित्य के नये कर्तव्याकर्तव्य का प्रतिपादन किया। उसने साहित्य को इस नये मनुष्य की क्रान्तिकारी प्रोलितारियत की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का अभिव्यञ्जक ही न बताया वरन् उसे इसका पथप्रदर्शक भी बना दिया। उसने शुद्ध कला या 'तटस्थ साहित्य' को अस्वीकार कर साहित्य को सर्वहारा वर्ग का समर्थक बना दिया और समाजवादी संस्कृति का निर्माण तथा पोषण साहित्य का लक्ष्य बताया।

इस काम में उसे लेनिन से बड़ी प्रेरणा मिली। इस क्षेत्र में लेनिन के लेख 'पार्टीवादी संगठन और पार्टीवादी साहित्य' का बड़ा प्रभाव और महत्त्व है। इस लेख में लेनिन ने प्रोलितारियत साहित्य के प्रति कम्यूनिस्ट पार्टी का रुख निश्चित कर दिया और साहित्य को जनता के हित के साथ संबंधित और समन्वित कर दिया। उसने वर्ग विभक्त समाज में 'शुद्ध कला के सिद्धान्त' को असंभव ठहराते हुए लिखा कि 'समाज में रहते हुए समाज से स्वतन्त्र हो जाना असंभव है। इसलिए उसने साहित्य और कला को प्रोलितारियत द्वारा कम्यूनिज्म की स्थापना के लिए छेड़े गये संग्राम के सामान्य लक्ष्य का एक अंग बताया और फलतः साहित्य में क्रान्तिकारी दृष्टिकोण से सामाजिक राजनीतिक घटनाओं के मूल्यांकन की मांग की। उसने लिखा कि साहित्य का अवश्यमेव पार्टीवादी होना चाहिए।

फलतः अक्तूबर क्रान्ति के बाद जब देश में सोवियत शासन की

स्थापना हुई और शासन सूत्र कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में आ गया तो इस नये युग में रूसी साहित्य के निर्माण और विकास को अपूर्व अवसर मिला और वह सर्वथा नयी दिशा की ओर प्रवृत्त हुआ। अक्तूबर क्रान्ति के बाद का रूसी साहित्य सोवियत साहित्य कहलाता है जिसका संस्थापक मैक्सिम गोर्की है और जिसका मूल प्रेरक लेनिन है, जिसका रूप पार्टीवादी है, जो प्रोलितारियतीय समाजवादी संस्कृति का पोषक है और जो कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन में समाजवाद के निर्माण के बीच निर्मित हुआ है। आगे के पृष्ठों में इसी 'सोवियत साहित्य' की रूपरेखा प्रस्तुत की जायगी।

भाग २

१ मैक्सिम गोर्की

जीवन

मजदूर क्रांति के साथ रूसी साहित्य ने जो समाजवादी पथ अपनाया उस पर मैक्सिम गोर्की प्रकाश-स्तम्भ के समान स्थित है। कलात्मक क्षेत्र में मैक्सिम गोर्की सर्वहारा-साहित्य का प्रस्थापक और समाजवादी यथार्थवादिता का कलाकार तथा व्याख्याता माना जाता है। क्रांतिकारी आंदोलन तथा गोर्की ने एक दूसरे को विकसित तथा पुष्ट किया। अतएव सोवियत साहित्य के उल्लेख के आरम्भ में मैक्सिम गोर्की के जीवन और उसके साहित्य का उल्लेख आवश्यक है।

आविर्भावकाल की परिस्थिति

उन्नीसवीं शती के अंत में गोर्की का निर्माण या गठन होता है और यही समय है जब कि स्वाधीनता या स्वतन्त्रता आंदोलन का नया युग शुरू होता है जिसमें मजदूर वर्ग सामने आते हैं। इस संबंध में सन् १९१४ में लेनिन ने लिखा कि[1] रूसी स्वाधीनता आंदोलन की तीन मंजिलें हैं जो कि रूसी समाज के तीन मुख्य वर्गों के अनुरूप हैं। इन वर्गों की इस आन्दोलन पर अपनी छाप है

(१) सन् १८२५ से १८६१ तक—सरदारी युग।
(२) १८६१–१८९५ तक—बुर्जुआ डिमाक्रेटिक युग।
(३) १८९५–वर्तमान समय तक—सर्वहारा या प्रोलितारियत् युग।

१८८४ से १८९४ के समय को लेनिन रूस में क्रांतिकारी मार्क्सवादी सिद्धान्त की रचना का युग मानता है और १८९४ से १८९८ के समय को जनव्यापी क्रांतिकारी आन्दोलन में इन सिद्धान्तों के समावेश का समय समझता है।

---

[1]रूस्काया सावेत्स्काया लितेरातूरा ल० इ० तिमोफेयेव पृ० २८।

१८७५ में 'मजदूरों का दक्खिनी रूसी संघ' स्थापित होता है। १८७८ में पीतरबुर्ग में 'रूसी मजदूरों का उत्तरी संघ' बनाया जाता है। १८८३ में प्लेखानोव ने जेनेवा में 'श्रम की स्वाधीनता' की स्थापना की। सन् १८९० के आसपास मास्को तथा अन्य नगरों में मजदूरों के विभिन्न क्रांतिकारी संगठन बन जाते हैं। १८९३ में लेनिन पीतरबुर्ग आता है और असंख्य क्रांतिकारी समुदायों को एक में मिलाकर १८९५ में "मजदूर वर्ग की स्वाधीनता युद्ध का संघ" की रचना करता है। १८९८ में "रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक मजदूर पार्टी' का प्रथम अधिवेशन होता है। दिसम्बर १९०० में लेनिन विदेश से प्रसिद्ध पत्र 'चिनगारी' (इस्क्रा) का प्रकाशन करता है जिसका क्रांतिकारी आंदोलन के संगठन में बड़ा हाथ रहा है। जुलाई १९०३ के रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी के द्वितीय अधिवेशन (ब्रुसेल्स-लंदन) ने श्रमिक क्रांतिकारी आंदोलन में मार्क्सवाद को और भी दृढ़ बनाया और पार्टी के अधिनियम और कार्यक्रम को निश्चित किया।

इस प्रकार मार्क्सवाद ने सुसंगठित और सशक्त मजदूर या श्रमिक वर्ग स्वतंत्रता आंदोलन में सबसे आगे लाया जिसने लेनिन तथा स्तालिन के नेतृत्व में इस आंदोलन का रूप ही बदल दिया और उसे नयी दिशा की ओर उन्मुख किया। देश में अब हड़तालों की लहरें उठने लगीं जिससे शासन कांप उठा और जिससे प्रोलितारियत् या सर्वहारा की बढ़ती हुई शक्ति का परिचय मिला। इन हड़तालों में लाखों मजदूरों ने शामिल होकर अपनी दृढ़ता और एकता का प्रदर्शन किया।

सन् १९०० से क्रांतिकारी आंदोलन का नया रूप सामने आया जो सशस्त्र विद्रोह का रूप था। १९०१ में पीतरबुर्ग के अबूखोवस्की कारखाने में पहली मई को मजदूरों की हड़ताल में सिपाहियों का शस्त्रों के साथ मुकाबिला किया गया। क्रांतिकारी विचार तथा आंदोलन अब फौज तथा नौसेना में भी फैलने लगा। १९०५ की क्रांति ने सारे देश को हिला दिया। क्रांतिकारी आंदोलन की व्यापकता का आभास या अंदाज इसी से मिल सकता है कि इस क्रांति की पराजय के बाद जो दमन-चक्र

चला उसमें आंदोलन में भाग लेने के अपराध में तीन लाख व्यक्ति पिसे फिर भी क्रांतिकारी-आंदोलन नष्ट न हुआ और निरंकुश शासन के अत्याचारों को झेलते हुए मजदूर या सर्वहारा वर्ग मजबूत तथा सुदृढ़ होकर सामने आया। इसने स्पष्टतया प्रदर्शित कर दिया कि वह प्राचीन व्यवस्था को मिटाने तथा शासन की बागडोर अपने हाथ में ले लेने में पूर्णतया सक्षम तथा समर्थ है। आगे चलकर लेनिन ने इसी सर्वहारा वर्ग को संगठित कर जारशाही का तख्ता उलट दिया और देश में सोवियत शासन की स्थापना की।

जन्म, बचपन तथा जवानी

स्वाधीनता आंदोलन के नये युग का यह अत्यन्त संक्षिप्त चित्र है जो कि सन् नब्बे (१८९०) से शुरू होता है। इसी समय अलेक्सेई मेक्सीमोविच गोर्की का कार्यक्षेत्र में प्रवेश होता है। अलक्सेइ मेक्सीमोविच पेस्कोव (मैक्सिम गार्की) का जन्म १६ (२८) मार्च सन् १८६८ में निज्नी नोवोगोरद में हुआ। उसके जन्म के चार वर्ष बाद ही उसके पिता की हैजे से मृत्यु हो गई और उसकी माँ (वारवरा वसील्येव्ना) अपने पिता के परिवार में रहने चली गयी जहाँ रंगसाजी का काम होता था।

गोर्की की माँ परिवार में बहुत कम रही गोर्की का पालन-पोषण प्रधानतया उसकी नानी अकुलीना इवानोव्ना कशीरीना ने किया। वह बुद्धिमती तथा अत्यन्त सदय थी। इसका रूसी भाषा पर बड़ा अच्छा अधिकार था। वह बहुत सी कथाएं और गीत जानती थी और शिशु गार्की को वह कथाएं तथा गीत सुनाया करती थी।

गोर्की का बचपन बड़ा कष्टपूर्ण बीता। उसे ठीक शिक्षा भी न मिल सकी क्योंकि माता का परिवार निर्धन हो गया था। उसे स्कूल से तीसरे दर्जे से ही हटा लिया गया। बचपन में उसे सभी प्रकार के काम करने पड़े। परिवार की सहायता करने के लिए वह दरवाजे-दरवाजे चिथड़े कागज रद्दी आदि इकट्ठा किया करता था और उसे दो चार पैसों में बेंच दिया करता था। एक बार काम करते हुए उसके हाथ भी जल गये। वह एक 'ड्राफ्ट्स मैन' के यहाँ भी शिक्षा पाने के लिए भेजा गया किन्तु वहाँ

उसे बराबर बर्तन धोने पड़ते थे और फ़र्श साफ़ करनी पड़ती थी। गोर्की वहाँ से भाग गया।

वहाँ से भाग कर वह घर न गया और वोल्गा नदी पर बोझा ढोने वालों की सहायता करने लगा। इस समय उसकी उम्र कुल ग्यारह वर्ष की थी। उसने एक स्टीमर पर नौकरी कर ली जहाँ सुबह से शाम तक उसे बर्तन धोने पड़ते थे। इस तरह उसका बचपन बीत गया और वह यह न जान पाया कि बचपन कैसा होता है। अब 'जनता के बीच' उसके जीवन का आरम्भ हुआ।

कई वर्षों तक गोर्की एक जगह से दूसरी जगह घूमता-भटकता रहा और हर पेशे का काम करता रहा। उसने नानबाई की नौकरी की रेल पर सामान ढोता रहा तथा रात का पहरेदार बना। निज्नी से वह कज़ान पहुँचा और कज़ान से कैस्पियन सागर के तट पर मछली पकड़ने वालों के बीच जा पहुँचा। फिर भी वह बराबर पढ़ता रहा और परिश्रम द्वारा लिखने पढ़ने में पूर्ण पटु हो गया। ऐसे कठिन जीवन के बीच गोर्की का चरित्र दृढ़ हुआ उसका अनुभव बढ़ा और जनता के साथ उसका सबंध घनिष्ठता से जुड़ा।

साहित्यिक कार्य-कलाप की तैयारी

नानी के गीतों और कथाओं से गोर्की के हृदय में कलात्मकता का बीज अंकुरित हुआ। फिर स्टीमर पर बर्तन धोने की नौकरी करते समय जब उसका परिचय स्टीमर के रसोइये से हुआ तो वह उसके विकास का दूसरा महत्वपूर्ण क्षण सिद्ध हुआ क्योंकि इस रसोइये (स्मूरी) को पढ़ने का व्यसन था और वह गोर्की से ज़ोर-ज़ोर से पढ़वा कर सुनता था। इस रसोइये का सन्दूक मानो एक छोटा सा पुस्तकालय था जिसमें गोर्की को गोगल नेक्रासोव ग्लेब उस्पेन्स्की आदि की पुस्तकें पढ़ने को मिलीं।

१८८४ में कज़ान में आकर वह बुद्धिजीवियों तथा तरुण क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आया और उसका गम्भीर क्रान्तिकारी साहित्य से परिचय हुआ। गोर्की ने इस समय मार्क्स का ग्रंथ 'पूँजी' (कपिटल) पढ़ा। इस समय वह बड़े परिश्रम के साथ आत्म-शिक्षा में लगा और उसने स्व

तथा विदेशी 'क्लासिक' पढ़। १८८९ तक वह इतना पढ़ गया था कि इस सन् में वह निज्नी नगर आकर एक वकील का मुंशी बन गया। इसी समय उसका साहित्यिक कार्यकलाप शुरू हुआ। उसने एक बड़ी कविता (आख्यानक) 'पुराने वृक्ष का गीत' लिखी और बहुत सी दूसरी कविताएं रचीं।

गोर्की ने यह बड़ी कविता कोरोलेन्को को दिखलाई। कोरोलेन्को की आलोचना इतनी तीखी थी कि गोर्की ने आगे न लिखने का निश्चय कर लिया और सचमुच दो साल तक उसने कुछ न लिखा।

१८९१ में गोर्की ने रूस की पहली लम्बी यात्रा पूरी की। इसमें वह वोल्गा डान यूक्रेन बसाराबिया ओदेसा क्रीम, कुबान आदि की पैदल यात्रा करते हुए तिफ्लिस तक पहुंचा। रास्ते में किसी किसान के यहां काम करते हुए या बोझा ढोनेवाले का काम करते हुए वह बराबर आगे बढ़ता गया। इस यात्रा ने गोर्की को अमूल्य सृजनात्मक सामग्री प्रदान की। 'मकार चुद्रा' 'च्यल्काश' 'बुढ़िया इजरगिल' आदि गोर्की की कृतियां इसी यात्रा के अनुभवों पर आधारित हैं। इस यात्रा ने उसे देश के, किसानों की जिन्दगी से शहर के मजदूर, आवारा तथा भिन्न अंगों सभी से अच्छी तरह परिचित करा दिया।

गोर्की के 'बचपन', 'जनता के बीच', 'मेरे विश्वविद्यालय' का आत्मकथात्मक महत्त्व

गोर्की का व्यक्तित्व अब परिपुष्ट हो गया था। गोर्की ने अपने शैशव तथा जवानी की जो 'बड़ी' कथा लिखी है वह उसकी महत्त्वपूर्ण रचनाओं में मानी जाती है। उसकी इन कृतियां—'बचपन' (१९१२ में लिखित) 'जनता के बीच' (१९१४–१९१५) 'मेरे विश्वविद्यालय' (१९२३) का आत्मकथात्मक महत्त्व है। इन कथाओं से पता चलता है कि तरुण गोर्की का किस प्रकार निर्माण हुआ तथा उसके विचारों तथा आदर्शों ने उसे किस और प्रेरित किया उसने इनमें न केवल अपने बचपन की [illegible] तस्वीर खींची है वरन् उन्नीसवीं सदी के अन्त के

रूसी जीवन का व्यापक चित्र भी प्रस्तुत किया है जिसमें रूसी जनता के अनेक रोचक रूप एवं पक्ष अंकित किये गये हैं।

रूसी साहित्य में शैशव से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ हैं और यह सभी ऐसे शैशव का चित्रण करती हैं जिसे 'सर्वसामान्य शैशव' कहा जा सकता है, जहाँ शिशु प्रेमपूर्ण परिवार में बड़ा होता है, जहाँ उसकी शिशु आत्मा का क्रमिक विकास होता है जहाँ उसके मानवीय चरित्र का निर्माण होता है और जिसकी याद लोग बाद में बड़ी कोमलता के साथ किया करते हैं। गोर्की शैशव के संस्मरण के रूप में ऐसी सर्वथा नयी विषय वस्तु को प्रस्तुत करता है जिसमें सामाजिक जीवन की ऐसी परिस्थितियों का चित्रण किया गया है जिसमें निम्न सामाजिक स्तर के बच्चों का बचपन बीतता है, जो निर्धनता के बीच बड़े होते हैं और जहाँ उनकी अच्छी-अच्छी अभिरुचियों का दम घुट जाता है।

किन्तु इसके साथ ही इन आत्मचरितात्मक कथाओं का मूल आधारभूत वस्तु-विषय गोर्की का व्यक्ति में विश्वास है—इस बात का विश्वास कि रूसी व्यक्ति आनन्दमय या सुखदायक जीवन के रास्ते की जितनी रुकावटें और कठिनाइयाँ हैं उनको दूर हटाने में पूर्णतया सक्षम है। उसने 'बचपन' में लिखा[1]

रूसी जीवन की इन बीभत्सताओं तथा कुरूपताओं को याद करता हुआ मैं हर क्षण अपने से पूछता हूँ कि क्या इनकी चर्चा करने से कोई लाभ है? और बड़े विश्वास के साथ जवाब देता हूँ कि 'हाँ लाभ है'।—यह वह सत्य है कि जिसकी उसकी तह या जड़ तक जानना अनिवार्य है, जिससे कि उसे स्मृति से मनुष्य की आत्मा से, और अपनी कुत्सद तथा शर्मनाक जिन्दगी से जड़ से उखाड़ कर फेंक दें।

"एक दूसरा कारण भी है जिसने मुझ इन कुरूपताओं के चित्रण के लिए बाध्य किया, यद्यपि ये कुरूपताएं अरुचिकर हैं और हमारा

[1]—दस्तया सबेत्सकया लितेरातुरा से० तिमोफ़ेयेव पृ० १२।

बम घोट रही है—फिर भी रूसी व्यक्ति की आत्मा इतनी स्वस्थ तथा प्रबल है कि वह इन पर विजय पा रहा है और इन पर विजय पाएगा।

इन तीनों कथाओं के बीच अल्योशा (अलेक्सेइ) का चरित्र प्रस्तुत किया गया है जो वास्तव में गोर्की ही है। कशीरिन परिवार में जीवन स्टीमर पर काम नानबाई की नौकरी वोल्गा की यात्रा किसानों के बीच क्रांतिकारी कार्य तरुण गोर्की के जीवन के यह सभी महत्त्वपूर्ण क्षण इन कथाओं में चित्रित हैं। अल्योशा के माध्यम से गोर्की रूसी जीवन की विशिष्टता प्रदर्शित करने वाले विभिन्न लोगों तथा विभिन्न घटनाओं का चित्रण करता है। किंतु लोगों तथा घटनाओं का जो मूल्यांकन किया गया है वह अल्योशा का ही दृष्टिकोण है। उसकी मुख्य विशिष्टताएं हैं—न्यायप्रियता अत्याचारी के प्रति घृणा आत्मविकास के लिए अथक परिश्रम तथा सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति।

साहित्य की महत्ता विशेषतया रूसी साहित्य का महत्त्व यह इन आत्मकथाओं के मूल भूत विषय-वस्तुओं में से एक है। गोर्की यह चित्रित करता है कि अल्योशा को साहित्य में वह आत्मिक शक्ति मिलती है जिससे कि वह पशुता के विरुद्ध व्यक्ति में अपना विश्वास पोषित करता है, शांति प्राप्त करता है, और अपने चारों ओर के लोगों को ऊपर उठाता है।

सन् नब्बे (१८९०) के रूसी जीवन की हीनता का जो चित्र गोर्की मृदु तथा निष्पक्ष सत्यता के साथ अंकित करता है वह एकांगी ही रह जाता यदि गोर्की अपने को केवल इस नकारात्मक जीवन तक ही सीमित रखता। ऐसे जीवन के प्रतिपक्ष में—जो कि लोगों को दबाता और नीचे गिराता है—गोर्की उस आत्मिक शक्ति को चित्रित करता है जो कि रूसी जनता में है—और यह है रूसी जनता की प्रतिभा तथा उसकी उदारता। स्टीमर पर अल्योशा की मदद रसोइया स्मूरी करता है। ड्राफ्ट्समैन के यहां काम करते हुए बहादुर तथा प्रसन्नचित्त वोविन नताल्या कज्लोव्स्काया उसका पक्ष लेती है इसी प्रकार उसे हर

क्रांतिकारी नवयुवक मण्डली के सम्पर्क में आया। १८८८ में उसने वोल्गा पर रहने वाले किसानों के बीच क्रांतिकारी प्रचार किया। १८८९ में गोर्की पहली बार गिरफ्तार किया गया किन्तु महीने भर में ही छोड़ दिया गया। इसके बाद वह कई बार गिरफ्तार किया गया। १९०५ में गोर्की ने एक घोषणा-पत्र तय्यार किया जिसमें निकोलाई द्वितीय की सरकार को उलट देने के लिए कहा गया था क्योंकि ९ जनवरी को उसने जनता के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर गोली चलाने का हुक्म दिया था।

दिसम्बर १९०५ में विद्रोह के दिनों में मास्को में गोर्की ने बड़ा काम किया। उसके घर में बम तय्यार किये जाते थे। हथियार खरीदने के लिए उसने बहुत रुपया इकट्ठा किया उसने बोल्शेविक समाचार पत्र 'नूवा' (नवी) के संगठन में योग दिया जो क्रांति के समय १९०५ में निकलता था इसी समय पीतरबुर्ग में लेनिन और गोर्की की पहली बार भेंट हुई। मास्को क्रांति के दमन के बाद १९०६ में गोर्की पार्टी की आज्ञा से देश छोड़कर बाहर चला गया। वह इटली में कैप्री टापू पर रहने लगा। इन्हीं वर्षों में (१९०६) 'माँ' उपन्यास लिखा गया।

विदेश में गोर्की

विदेश में रहते हुए गोर्की बराबर साहित्यिक और सामाजिक कार्य करता रहा। इन वर्षों में (१९०८–१९११) उसने अनावश्यक आदमी का जीवन 'मत्वेइ कोज़ेम्याकिन का जीवन' 'बचपन' 'गर्मी' 'इटली' की कहानियाँ आदि लिखीं। रूसी क्रांतिकारियों के लिए उसने स्कूल का संगठन किया जहाँ वह स्वयं रूसी साहित्य के इतिहास पर लेक्चर देता था। १९०७ में वह 'रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी' के अधिवेशन में लंदन गया। इस समय वह लेनिन के निकट आया और फिर दोनों के बीच बड़ा प्रेमपूर्ण संबंध रहा।

रूस में गोर्की का पुनरागमन

गोर्की १९१३ में स्वदेश वापस लौटा। सदा की भांति इस समय

भी वह तरुण कर्मी लेखकों से संबंध बनाए रहा। लेखन आरम्भ करने वाले तरुण प्रोलितारियत लेखकों की सहायता करना वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझता था। १९१४ में उसने 'प्रोलितारियत लेखकों की रचनाओं' का संकलन प्रकाशित किया। १९१५-१६ में 'लेतोपिस' पत्र के संगठन में उसने योग दिया जिसमें कि उसने मायकोव्स्की की कविता 'युद्ध और शांति' छापी। इसी समय गोर्की का मायकोव्स्की से परिचय हुआ। 'जनता के बीच' इसी समय की चीज है। १९१७ में उसने 'प्रोलितारियत लेखकों' का दूसरा संकलन निकाला। १९१७ में गोर्की पेत्रोग्राद में था जहाँ वह जारशाही के विरुद्ध बराबर (लेतोपिस पत्र में) प्रचार करता रहा।

आरम्भ में गोर्की १९१७ की क्रांतिकारी घटनाओं के महत्त्व को ठीक तरह से नहीं समझ सका। लेनिन तथा स्तालिन ने गोर्की की ग़लतियों की आलोचना की जिससे कि वह फिर ठीक रास्ते पर आ गया और वह बोल्शेविकों के साथ हो गया। गोर्की ने अपने लेख 'लेनिन' में अपनी इस समय की ग़लतियों की चर्चा की है।

अक्तूबर क्रांति के बाद गोर्की का जीवन

अक्तूबर क्रांति के आरम्भिक दिनों में ही गोर्की सोवियत शासन को समाजवादी संस्कृति की स्थापना में सहायता देने लगा। विद्वानों की सहायता के लिए उसने कमीशन की स्थापना की और 'अखिल विश्वसाहित्य' प्रकाशन की व्यवस्था की। १९१९ में उसने लियो तोल्स्तोय के संबंध में अपने संस्मरण लिखे।

कार्याधिक्य के कारण गोर्की की तपेदिक की बीमारी बढ़ गई और लेनिन के अत्यधिक आग्रह पर उसे इलाज के लिए विदेश जाना पड़ा। विदेश में उसने 'मेरे विश्वविद्यालय' 'आर्तामोनोवों का धंधा' तथा कोरोलेन्को ब्लाक एसेनिन क्रासिन लेनिन के संबंध में अपने संस्मरण लिखे और 'क्लिम समगिन का जीवन' का आरम्भ किया।

१९२८ में गोर्की स्वदेश वापस लौटा। मास्को में बेलोरुस्की स्टेशन पर उसका भव्य स्वागत किया गया और वह 'सेन्ट्रल इक्ज़ेक्यूटिव कमेटी

क्रांतिकारी नवयुवक मण्डलों के सम्पर्क में आया। १८८८ में उसने मोस्मा पर रहने वाले किसानों के बीच क्रांतिकारी प्रचार किया। १८८९ में गोर्की पहली बार गिरफ्तार किया गया किन्तु महीने भर में ही छोड़ दिया गया। इसके बाद वह कई बार गिरफ्तार किया गया। १९०५ में गोर्की ने एक घोषणा-पत्र तय्यार किया जिसमें निकोलाई द्वितीय की सरकार को उलट देने के लिए कहा गया था क्योंकि ९ जनवरी को उसने जनता के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर गोली चलाने का हुक्म दिया था।

दिसम्बर १९०५ में विद्रोह के दिनों में मास्को में गोर्की ने बड़ा काम किया। उसके घर में बम तय्यार किये जाते थे। हथियार खरीदने के लिए उसने बहुत रुपया इकट्ठा किया उसने बोल्शेविक समाचार पत्र 'नूवा' (नवी) के संगठन में योग दिया जो क्रांति के समय १९०५ में निकलता था इसी समय पीतरबुर्ग में लेनिन और गोर्की की पहली बार भेंट हुई। मास्को क्रांति के दमन के बाद १९०६ में गोर्की पार्टी की आज्ञा से देश छोड़कर बाहर चला गया। वह इटली में कैप्री टापू पर रहने लगा। इन्हीं वर्षों में (१९०६) 'माँ' उपन्यास लिखा गया।

विदेश में गोर्की

विदेश में रहते हुए गोर्की बराबर साहित्यिक और सामाजिक कार्य करता रहा। इन वर्षों में (१९०८–१९१३) उसने 'बेकाम आदमी का जीवन' 'मत्वेइ कोझेम्याकिन का जीवन' 'बचपन' 'गर्मी' 'इटली की कहानियाँ' आदि लिखीं। रूसी क्रांतिकारियों के लिए उसने स्कूल का संगठन किया जहाँ वह स्वयं रूसी साहित्य के इतिहास पर लेक्चर देता था। १९०७ में वह 'रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी' के अधिवेशन में लन्दन गया। इस समय वह लेनिन के निकट आया और फिर दोनों के बीच बड़ा प्रेमपूर्ण सम्बंध रहा।

रूस में गोर्की का पुनरागमन

मार्च १९१३ में स्वदेश वापस लौटा। सदा की भाँति इस समय

भी वह तरुण रूसी लेखकों से सम्बन्ध बनाए रहा। सर्वप्रथम आरम्भ करने वाले तरुण प्रोलितारियत लेखकों की सहायता करना वह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझता था। १९१४ में उसने 'प्रोलितारियत लेखकों' की रचनाओं का संकलन प्रकाशित किया। १९१५–१६ में 'लेतोपिस' पत्र के सम्पादन में उसने योग दिया जिसमें कि उसने मायकोव्स्की की कविता 'युद्ध और शान्ति' छापा। इसी समय गोर्की का मायकोव्स्की से परिचय हुआ। 'जनता के बीच' इसी समय की चीज है। १९१७ में उसने 'प्रोलितारियत लेखकों' का दूसरा संकलन निकाला। १९१७ में गोर्की पेत्रोग्राद में था जहाँ वह जारशाही के विरुद्ध बराबर (लेतोपिस पत्र में) प्रचार करता रहा।

आरम्भ में गोर्की १९१७ की क्रांतिकारी घटनाओं के महत्व को ठीक तरह से नहीं समझ सका। लेनिन तथा स्तालिन ने गोर्की की त्रुटियों की आलोचना की जिससे कि वह फिर ठीक रास्ते पर आ गया और वह बोल्शेविकों के साथ हो गया। गोर्की ने अपने लेख 'लेनिन' में अपनी इस समय की त्रुटियों की चर्चा की है।

अक्तूबर क्रांति के बाद गोर्की का जीवन

अक्तूबर क्रांति के आरम्भिक दिनों से ही गोर्की सोवियत शासन की समाजवादी संस्कृति की स्थापना में सहायता देने लगा। विद्वानों की सहायता के लिए उसने कमीशन की स्थापना की और अखिल विश्वसाहित्य प्रकाशन की व्यवस्था की। १९१९ में उसने लियो तोल्स्तोय के सम्बन्ध में अपने संस्मरण लिखे।

कार्याधिक्य के कारण गोर्की की तपेदिक की बीमारी बढ़ गई और लेनिन के अत्यधिक आग्रह पर उसे इलाज के लिए विदेश जाना पड़ा। विदेश में उसने 'मेरे विश्वविद्यालय' 'आर्तामोनोवों का काम' तथा कोरोलेन्को, ब्लाक, एसेनिन, अन्द्रेयव, लेनिन के संबंध में अपने संस्मरण लिखे और 'क्लिम समगिन का जीवन' का आरम्भ किया।

१९२८ में गोर्की स्वदेश वापस लौटा। मास्को में बेलोरूस्की स्टेशन पर उसका भव्य स्वागत किया गया और वह 'सेन्ट्रल एक्जीक्यूटिव कमेटी

क्रांतिकारी नवयुवक मण्डलों के सम्पर्क में आया। १८८८ में उसने वोल्गा पर रहने वाले किसानों के बीच क्रांतिकारी प्रचार किया। १८८९ में गोर्की पहली बार गिरफ्तार किया गया किन्तु महीने भर में ही छोड़ दिया गया। इसके बाद वह कई बार गिरफ्तार किया गया। १९०५ में गोर्की ने एक घोषणा-पत्र तय्यार किया जिसमें निकोलाई द्वितीय की सरकार को उलट देने के लिए कहा गया था क्योंकि ९ जनवरी को उसने जनता के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर गोली चलाने का हुक्म दिया था।

दिसम्बर १९०५ में विद्रोह के दिनों में मास्को में गोर्की ने बड़ा काम किया। उसके घर में बम तय्यार किए जाते थे। हथियार खरीदने के लिए उसने बहुत रुपया इकट्ठा किया। उसने बोल्शेविक समाचार पत्र 'युद्ध' (बर्बा) के संगठन में योग दिया जो क्रांति के समय १९०५ में निकलता था। इसी समय पीतरबुर्ग में लेनिन और गोर्की की पहली बार भेंट हुई। मास्को क्रांति के दमन के बाद १९०६ में गोर्की पार्टी की आज्ञा से देश छोड़कर बाहर चला गया। वह इटली में कैप्री टापू पर रहने लगा। इन्हीं वर्षों में (१९०६) 'माँ' उपन्यास लिखा गया।

विदेश में गोर्की

विदेश में रहते हुए गोर्की बराबर साहित्यिक और सामाजिक कार्य करता रहा। इन वर्षों में (१९०८–१९११) उसने 'अनावश्यक आदमी का जीवन' 'मत्वेई कोज़्याकिन का जीवन' 'बचपन' 'गर्मी' 'इटली की कहानियाँ' आदि लिखीं। रूसी क्रांतिकारियों के लिए उसने स्कूल का संगठन किया जहाँ वह स्वयं रूसी साहित्य के इतिहास पर लेक्चर देता था। १९०७ में वह 'रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी' के अधिवेशन में लंदन गया। इस समय वह लेनिन के निकट आया और फिर दोनों के बीच बड़ा प्रेमपूर्ण संबंध रहा।

रूस में गोर्की का पुनरागमन

मार्च १९१३ में स्वदेश वापस लौटा। सदा की भाँति इस समय

इस समय की उसकी रचनाएँ हैं—'मकार चुद्रा' (१८९२) 'एमेल्यान पिल्याई' (१८९३) 'बाबा अर्खीप और ल्योन्का' (१८९४) "बाज का गीत' (१८९५) 'बुढ़िया इज़रगिल' (१८९५) 'चेल्काश' (१८९५) 'कनवालोव' (१८९७) 'ऊब के कारण' (१८९८) "वारेन्का ओलेसोवा' (१८९८) तथा अन्य।

इन वर्षों की गोर्की की कलात्मक सर्जना की मुख्य विशेषता यह है कि उसे मनुष्य के सभी कार्यों में दिलचस्पी है और मानवता की तड़पन से उसके हृदय का स्पन्दन मिल जाता है। इसके साथ ही गोर्की केवल मानवता की तड़पन का ही चित्र नहीं खींचता वरन् उसका मनुष्य की शक्ति में विश्वास है, और सबसे अधिक उसे रूसी जनता की शक्ति में विश्वास है। उसने लिखा कि "मैं देखता हूँ कि रूसी जनता असाधारण तथा प्रतिभागामी है। आशा को आश्चर्य में डालनेवाली यह जनता वीरता की अनोखी दिलचस्पी विशालता और बहुता को दिखाएगी।"[1] गोर्की इसी मानवता व सुख तथा स्वाधीनता का मार्ग ढूँढ रहा है। गोर्की की इसी मानवता ने उसे सारे संसार का प्रिय लेखक बना दिया।

सतत लेखन की इस प्रथम अवस्था में गोर्की एक बार तो रूसी क्लासिकल साहित्य के रूपों और युक्तियों के उत्तराधिकारी के रूप में सामने आता है और दूसरी बार नये युग की नयी विषय वस्तुओं का इसमें समावेश करता है।

गोर्की के आरम्भिक युग का क्रान्तिकारी रोमांटिसिज्म या स्वच्छंदतावाद

गोर्की की पहली कहानी 'मकार चुद्रा' रोमांटिक या स्वच्छंदतावादी रचना है जो पुश्किन लरमन्तोव गोगल की प्रगतिशील रोमांटिसिज़्म के निकट है।

इसके मध्य में एक पात्र—लाइका जबार और राद्दा है जो अपने विचार तथा विश्वासों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं जैसे

[1] रूस्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा ल० इ० तिमोफ़ेयेव पृ० ४१।

कमेटी" का सदस्य चुना गया। १८१२ में उसके साहित्यिक कामकलाप की चालीस वर्षीय जुबिली मनाई गयी। गोर्की के सम्मान में निज्नी नोवोगोरद (जहाँ वह पैदा हुआ था) का नाम बदल कर गोर्की रख दिया गया तथा बहुत सी संस्थाओं का नाम गोर्की के नाम पर रखा गया।

गोर्की के शत्रु उसकी हत्या के प्रयत्न में थे। १९३४ में उन्होंने उसके पुत्र (म० म० पेश्कोव) की हत्या कर दी। गोर्की ने इस आघात को धीरतापूर्वक सहा और वह अपने काम में लगा रहा। इसी समय वह सोवियत् लेखकों के संघ का सभापति चुना गया। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों तक गोर्की साहित्यिक तथा प्रचारात्मक कार्य में लगा रहा। इन अन्तिम वर्षों में उसने जो कहानियाँ लिखीं उन्हें उसने 'बहादुरों की कहानियाँ' नाम दिया। इन कहानियों में उसने उन मजदूरों तथा अन्य काम करने वालों का चित्र खींचा है जो समाजवादी समाज की रचना कर रहे हैं।

धीरे-धीरे गोर्की का रोग बढ़ता गया और (१८ जून) १९३६ में उसका शरीरान्त हो गया।

गोर्की सोवियत्-संस्कृति का केन्द्र बिन्दु बन गया था। इसके साथ ही वह विश्व-साहित्य का सपूत भी था। इसी से उसका व्यक्तित्व तथा उसकी कृतियाँ विभिन्न देशों तथा विभिन्न रुचियों के लेखकों को सदा स्फूर्ति और प्रेरणा देती रहीं। फ्रांसीसी लेखक हेनरी बारब्यूस ने कहा कि 'वर्तमान समय में गोर्की संसार को प्रकाशित करने वाला महान प्रकाश है।"

उसकी मृत्यु पर मोलोतोव ने कहा कि "हमारे देश तथा मानवता के लिए गोर्की की मृत्यु लेनिन की मृत्यु के बाद सबसे बड़ी हानि है।"

गोर्की के लेखन की पहली अवस्था

गोर्की की कलात्मक कृतियों का पहला युग १८९२ से १८९९ तक माना जाता है।

इस समय की उसकी रचनाएं हैं—'मकार चुद्रा' (१८९२) 'एमेलियान पिल्याइ' (१८९३) 'दादा अरखीप और ल्योन्का' (१८९४) "बाज का गीत" (१८९५) 'बुढ़िया इजरगिल' (१८९५) 'चेल्काश' (१८९५) 'कनवालोव' (१८९७) 'ऊब के कारण' (१८९८) "वारेन्का ओलेसोवा" (१८९८) तथा अन्य।

इन वर्षों की गोर्की की कलात्मक सर्जना की मुख्य विशेषता यह है कि उसे मनुष्य के सभी कार्यों में दिलचस्पी है और मानवता की तड़पन से उसके हृदय का स्पन्दन मिल जाता है। इसके साथ ही गोर्की केवल मानवता की तड़पन का ही चित्र नहीं खींचता वरन् उसका मनुष्य की शक्ति में विश्वास है, और सबसे अधिक उसे रूसी जनता की शक्ति में विश्वास है। उसने लिखा कि "मैं जानता हूं कि रूसी जनता असाधारण तथा प्रतिभाशाली है। लोगों को आश्चर्य में डालनेवाली यह जनता वीरता की अनोखी जिन्दगी बिताएगी और चमत्कारों को दिखाएगी।[1] गोर्की इसी मानवता के सुख तथा स्वाधीनता का मार्ग ढूंढ रहा है। गोर्की की इसी मानवता ने उसे सारे संसार का प्रिय लेखक बना दिया।

अपने लेखन की इस प्रथम अवस्था में गोर्की एक ओर तो रूसी क्लासिकल साहित्य के रूपों और युक्तियों के उत्तराधिकारी के रूप में सामने आता है और दूसरी ओर नये युग की नयी विषय वस्तुओं का इसमें समावेश करता है।

गोर्की के आरम्भिक युग का क्रांतिकारी रोमांटिसिज़्म या स्वच्छंदतावाद

गोर्की की पहली कहानी 'मकार चुद्रा' रोमांटिक या स्वच्छन्दतावादी रचना है जो पुश्किन, लरमनतोव, गोगल की प्रगतिशील रोमांटिसिज़्म के निकट है।

इसके मध्य में ऐसे पात्र—लाइका जबार और राद्दा हैं जो अपने विचार तथा विश्वासों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, जैसे

[1]रूस्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा ल० इ० तिमोफ़ेयेव पृ० ४१।

मिलती और तारास बुल्बा। उनके लिए जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण वस्तु है स्वतन्त्रता और वे उसकी रक्षा में सब कुछ होम कर देने को तय्यार हैं।

रोमांटिक चित्र या चित्रण की प्रधान विशेषता यह है कि इसमें लेखक मानवीय चरित्र की ऐसी विशिष्टताओं को प्रदर्शित करता है जिनको वह जीवन के लिए अमूल्य मानता है और उनको ऐसी परिस्थितियों के बीच चित्रित करता है जो कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से मेल नहीं खाती। रोमांटिक चित्र की शक्ति लेखक के आदर्श के स्पष्ट एवं सबल अभिव्यंजन में है और उसकी सीमा इस बात में है कि आदर्श स्वतः सिद्ध रूप में प्रदर्शित किया जाता है, और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के बीच नहीं जहां कि उसकी पूरी-पूरी परीक्षा हो सके।

स्वतन्त्रता का मोह अपने आदर्श के लिए मौत तक के लिए तय्यार रहना—मानव व्यक्तित्व की इस शक्ति और साहस की गाथा गोर्की अपनी पहली कहानी में पाठकों को सुना रहा है। उसने पाठकों में प्रतिकार और दृढ़ता की वह भावना भरी जो कि आने वाले क्रांतिकारी युद्ध के लिए नितान्त आवश्यक थी। इसी से गोर्की का स्वच्छंदतावाद क्रांतिकारी स्वच्छंदतावाद है। उसका नायक योद्धा है जो साहसपूर्ण कार्यों के लिए तय्यार है, और जनता के लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मृत्यु की भी परवाह नहीं करता।

'मकार चुद्रा' कहानी स्वच्छंदतावादी रचनाओं की विशिष्टताओं से युक्त है। इसकी घटनाएं वास्तविक जीवन की घटनाओं से दूर असाधारण रूप में होती हैं। भाषा भावावेश की है जो कि कहानी के प्रति लेखक के लगाव या आत्मराग को प्रकट करती है।

'बाज का गीत' 'बुढ़िया इज़रगिल' 'खान और उसका बेटा' 'लड़की और मौत' तथा गोर्की की अन्य रचनाएं कथा गीत आदि के रूप में लिखी गई हैं जो जीवन को पुष्ट करने वाले रोमांटिसिज़्म से पूर्ण हैं।

गोर्की का क्रांतिकारी रोमांटिक नायक

गोर्की की रोमांटिक रचनाओं में मुख्य चित्र वीर पुरुष का उभरता

है जो जनता के हित के लिए निःस्वार्थ काम करने को तैयार है। ऐसे पक्ष के उद्घाटन में 'बुढ़िया इजरगिल' कहानी का विशेष महत्त्व है। कहानी का मुख्य भाव यह है कि "यदि मैं अपने लिए नहीं तो कौन मेरे लिए? किन्तु "यदि मैं केवल अपने ही लिए हूँ फिर मैं किसलिए?" इसमें वह दो कथाएं कहता है जिसमें दांको तथा लारा के दो चित्र एक दूसरे के प्रतिरूप उभरते हैं। दोनों ही शक्तिशाली व्यक्ति हैं किन्तु लारा की सारी शक्ति केवल अपने लिए है। उसका कोई उच्च लक्ष्य नहीं है, और उसका अंत प्रतिष्ठाहीन होता है। उसके रूप में गोर्की बुर्जुआ व्यक्तिवादिता की आलोचना करता है।

इस व्यक्तिवादिता के विरुद्ध गोर्की व्यक्ति के संबंध में ऐसी मानवतावादी भावना की प्रतिष्ठा करता है जिसमें व्यक्ति अपनी सारी शक्ति जनहित में लगा देता है। दांको ऐसा ही व्यक्ति है। वह अपनी जाति के सुख के लिए अपनी बलि चढ़ा देता है। रोमांटिक रूप में गोर्की इस चित्र में ऐसे व्यक्ति का उद्घाटन करता है जो जनहित के साहसपूर्ण कार्यों में आनन्द प्राप्त करता है।

इस कथा में बूढ़ी इजरगिल के यथार्थ चित्र का भी विशेष महत्त्व है। इजरगिल बड़ी विलासिन है। वह अपनी स्वतन्त्रता को सब से अधिक मूल्यवान समझती है। उसमें साहस भी है। वह 'अरकादक' की रक्षा भी करती है किन्तु वह उसके पास से चली जाती है जब उसे यह मालूम होता है कि वह उसे प्यार नहीं करता। उसका जीवन आनंदहीन हो जाता है। गोर्की इसके माध्यम से यह बताना चाहता है कि उसकी सारी शक्ति क्षीण हो गई क्योंकि वह केवल अपने लिए जी रही थी। उसके सामने कोई उच्च आदर्श नहीं था जिसके साथ वह बढ़ सकती और व्यक्तिगत जीवन में विफल होने पर भी उसकी आत्मा ऊँची उठी रहती।

यही साहस और उन्नयन की भावना 'बाज का गीत' में है। गोर्की लिखता है — 'प्रखर साहस-बस यही जीवन का सार है। ओह! साहसी बाज! शत्रुओं से युद्ध में तूने अपना खून बहाया। समय आयेगा और तेरे खून की गर्म बूंदें जिन्दगी के अंधेरे में चिनगारियों की तरह भड़क उठेंगी

और बहुत से हृदय स्वतंत्रता और प्रकाश की कामना से दीप्त हो उठेंगे।

"कोई बात नहीं कि तू मर गया। बहादुरों और ताकतवरों के गीतों के लिए तू सजीव उदाहरण है और स्वाधीनता तथा प्रकाश का मर्मपूर्ण आह्वान है।"

गोर्की ने जनता की इन विषय-वस्तुओं तथा प्रतीकों का आधार लेते हुए इनको लोक साहित्य रूपों से संयोजित कर दिया। उसने गीतों तथा कथाओं आदि लोक साहित्य-रूपों का उपयोग किया अपनी रचनाओं में वह प्रायः जनगाथाओं या जनकथा शुभाशंसाओं का समावेश करता है और जन-कथाओं की विशिष्टताओं को सुरक्षित रखता है। सबसे बड़ी बात यह है कि उसके आदर्शों का रूप लोक मर्यादा पर आधारित है। बाज का परम्परा प्राप्त लोक-प्रतीक उसकी रचना 'बाज का गीत' के मूल में है। गोर्की की आरम्भिक रचनाओं में जन उद्धारक (या स्वतंत्रता दिलाने वाले) नायक का लोक-स्वप्न नया रूप प्राप्त करता है।

रूसी क्लासिक की प्रगतिशील रोमान्टिक परम्पराओं का निर्वाह करने के साथ-साथ गोर्की ने उसमें अपनी ओर से कुछ नया (विषय-वस्तु) भी जोड़ा। उसकी रोमांटिक रचनाओं का महत्त्व इस बात में है कि जनता के उठते हुए क्रांतिकारी भाव की उन विशेषताओं को उसकी तीक्ष्ण दृष्टि ने पहचान लिया और कलाकार गोर्की ने उनको अंकित किया यद्यपि वे अभी तक स्वतः जीवन में पूर्णतया स्थिर या निश्चित नहीं हुई थीं।

किसान तथा मजदूरों का पुलिस तथा फौज के साथ संघर्ष उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में केवल शुरू ही हुआ था। किन्तु जनता में क्रांति का भाव इससे पहले ही परिपक्व हो चला था। गोर्की की रोमांटिक रचनाओं ने मजदूर तथा किसानों के इसी बढ़ते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के उभार को व्यक्त किया। गोर्की के रोमांटिक युग की रचनाओं का यही व्यापक भाव है और इसी में उनका मौलिक महत्त्व है।

गोर्की के आरम्भिक युग की सर्जना में यथार्थवाद

रोमांटिक कृतियों के साथ साथ गोर्की इन्हीं वर्षों में ऐसी यथार्थवादी रचनाएं भी प्रस्तुत करता है जिनमें उसने आलोचनात्मक यथार्थवाद की

रूसी क्लासिकल परम्पराओं को विकसित किया। ऐसी रचनाओं में 'एमेल्यान पिल्याई' 'बाबा आरखीप और ल्योन्का' 'निष्कर्ष' 'कनावालोव' आदि हैं।

रूस की यात्रा के बीच गोर्की ने जो कुछ देखा-सुना उसी की कटु अनुभूति दुःख झेलते हुए और तड़पते हुए आदमी के चित्रण में व्यक्त हुई है जो जीवन की परिस्थितियों की बलि बन जाता है। गोर्की की आरम्भिक यथार्थ रचनाएं ऐसे व्यक्ति के प्रति वेदना से परिपूर्ण हैं जो जीवन के निर्मम प्रहारों से नीचे गिर जाता है। फिर भी इसमें उसका कोई दोष नहीं है कि जिन्दगी ऐसी हो गयी। कोई दूसरी निर्मम शक्ति उसे दुःख और नाश की ओर ढकेल देती है और वह उसकी बलि चढ़ जाता है। इसी बलि-पशु या अन्यायपूर्ण जीवन की बलि चढ़े हुए व्यक्ति का चित्र आरम्भिक यथार्थवादी गोर्की की विशिष्टता है। 'बाबा आरखीप और ल्योन्का' में बाबा और पोता अकाल पीड़ित क्षेत्र से थकित रोगी और उन्हीं लोगों के द्वारा पात्र बनकर निकलते हैं जिन्होंने उन्हें भीख मांगने को छोड़ दिया। बच्चे में अब भी थोड़ी जीवन शक्ति अवशिष्ट है किन्तु उसके लिए भी कोई रास्ता नहीं है। मरते हुए बाबा के पास से मारे डर के भागता हुआ रात में बिजली कड़कने पर वह कगार से गिर कर डूब जाता है और मर जाता है। "निष्कर्ष" में औरत व्यभिचारी अपने पति की बलि बन जाती है जो उसका मज़ाक बनाता रहता है। गोर्की ऐसे निरपराध तड़पते हुये व्यक्तियों के अनेक चित्र प्रस्तुत करता है।

तड़पते हुये व्यक्ति के चित्र के साथ प्रश्न उठता है कि अपराधी कौन है? कौन इनको तड़पने के लिए बाध्य करता है और तड़पने को छोड़ देता है? इसके उत्तर में गोर्की तड़पनेवालों के चित्रों के साथ उन नवीन चित्रों की सर्जना करता है जो दूसरों को तड़पाते हैं, जो अपने लाभ के लिए घृणित से घृणित काम करने को तय्यार हैं। इन कार्यकलापों के मूल में सामाजिक असमानता है और रुपए का लोभ है जिससे इस समाज में सब कुछ पाया जा सकता है और व्यक्ति निर्लज्ज रह सकता है। ल्योन्का एक रोती हुई लड़की को देखता है और उसे शांत करता है। किन्तु जब वह

उसको उसके घर तक पहुँचाना चाहता है तो वह कहती है कि नहीं तुम मत चलो। माँ दरिद्रों को नहीं चाहतीं'। सामाजिक असमानता इस प्रकार छोटी बच्ची की आत्मा को मलिन करने लगती है और वह मानवीय संबंधों का अनुभव नहीं कर पाती। इसी प्रकार 'चेलकश' कहानी में थोड़े रुपया के लिए हत्या की तय्यारी भी दिखाई जाती है, और गवरीला थोड़े रुपया के लिए अपनी आत्मा को नष्ट करने को तय्यार है।

गोर्की स्पष्ट रूप से देखता है कि वर्गीय समाज दो टुकड़ों में बँट जाता है—दबे पड़े हुए या सताए हुये लोगों की दुनियाँ और सतानेवालों की दुनियाँ। सामाजिक असमानता दुनियाँ को नष्ट कर रही है और रुपया या सुनहला कीड़ा' मानवीय आत्मा को खा रहा है। गोर्की ने वास्तविक संसार की भयानकता के प्रतिपक्ष में ऐसे नायक की रोमांटिक कल्पना को प्रस्तुत किया जो मनुष्य के सुख या आनन्द प्राप्ति के रास्ते की बाधाओं पर विजयी हो सकेगा और जब रूसी जनता की शक्ति जाग्रत हो गयी और वह युद्ध के लिए तय्यार हो गयी तो गोर्की की रोमांटिक कल्पना पूर्णता के साथ अभिव्यक्त हुई तथा और भी अधिक वास्तविक क्रांतिकारी विषय वस्तु से संयोजित हुई। जीवन की परिस्थिति में जितना ही अधिक दबाव आया और वह जितनी ही अधिक दयनीय हुई उतनी ही उसके साथ लड़ने की तीव्र भावना जागी।

पुरुषोत्तम नायक में विश्वास

आरम्भ में यह नायक वास्तविक जीवन की परिस्थिति के बाहर चित्रित किया गया है किन्तु फिर गोर्की धीरे-धीरे—और यह उसकी नवीनता या मौलिकता है—जीवन में ही व्यक्ति में ही उस शक्ति का अनुभव करता है जो कि जीवन की व्यवस्था में परिवर्तन प्रस्तुत कर सकती है। धीरे धीरे उसके नायक साहित्य में सामाजिक आदर्श के संवाहक बन जाते हैं।

जीवन चाहे कितना ही कठोर क्यों न हो गया हो फिर भी गोर्की का मनुष्य में और उसमें जो शुभ-अंश है उसमें सदा विश्वास बना रहा।

मानवीय आत्मा की इस उदात्तता में गोर्की ने सबसे पहले उस शक्ति को ढूँढा जो कि मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों के विरुद्ध तन कर लड़ने में सहायता देगी।

जीवन से ठुकराया हुआ एमेल्यान पिल्याइ हाथ में छुरा लिए पुल पर व्यापारी यव्तीखोव की ताक में है। वह हर प्रकार का अपराध करने को तय्यार है। किंतु जब दुःख से पागल लड़की नदी में कूदने के लिए पुल पर आती है तो इसी व्यक्ति में ऐसी अनुभूति और ऐसे शब्द जगते हैं जो इस लड़की में शक्ति और जीवन में विश्वास का फिर से संचार कर देते हैं और लड़की हँसने लगती है।

गोर्की का इस बात में दृढ़ विश्वास है कि मानवीय आत्मा की यह शक्ति (और सौन्दर्य) जीवन के अन्याय से कभी समझौता नहीं करने देगी चाहे आदमी कितना ही नीचे क्यों न गिर गया हो। और गोर्की स्वतः जीवन में प्रतिवाद प्रतिरोध की तत्परता और दृढ़ता की उन विशिष्टताओं को ढूँढता है जिनको कि उसने सामान्य रूप में अपने रोमांटिक चित्रों में प्राप्त कर लिया था।

मरीना ('उसके कारण') ने जीवन में कभी सुख न पाया। सहसा उसके हृदय में ममारोव के प्रति प्रेम जग पड़ा। संचालक उनकी इस घनिष्ठता को जानकर उन पर व्यंग्य करता है। मरीना इतनी असहाय है कि सताने वालों के प्रति उसके मन में न तो लड़ने की और न प्रतिवाद की ही भावना उठती है। फिर भी वह इस बात का अस्पष्ट तथा अचेतन रूप में अनुभव करती है कि इस प्रकार की ज़िन्दगी वह और नहीं बिता सकती। रात में वह फंदा लगा कर मर जाती है। यद्यपि मरीना ने कोई प्रतिकार न किया फिर भी उसकी मौत स्वतः अत्याचार के विरुद्ध बहुत बड़ा प्रतिकार है। आगे इस प्रकार जीना असंभव था। जीवन त्याग के द्वारा यह स्पष्ट हो गया कि वह अत्याचार के साथ कोई समझौता करने को तय्यार नहीं है।

अपने साहित्यिक कार्यकलाप के आरम्भ में ही गोर्की इसी प्रतिवाद की खोज में व्यस्त है (चाहे इस प्रतिवाद का रूप कितना ही सामान्य

क्यों न रहा हो)। वह फक्कड़ स्वतंत्र जीवन में ही इस शक्ति की खोज करता है जिसे जीवन की बुराइयों के विरोध में प्रस्तुत किया जा सकता है।

समाज में निम्नस्तर का चित्रण

यह धारा गोर्की को उन सर्वथा नये नायकों की ओर ले गयी जिन्होंने विशेष रूप से समाज का ध्यान आकृष्ट किया और जिनके चित्रण के कारण समाज का ध्यान गोर्की की ओर गया। वह थे—'आवारा' (बोसियाक)।

इस ओर लोगों का ध्यान इसलिए गया कि सन् ९० के वर्षों में गाँवों में निर्धनता बहुत बढ़ गई थी। लाखों आदमी गाँव छोड़कर बेकारी की हालत में शहरों की ओर गये और वहाँ की बेकारी और भी बढ़ गयी। ये बेरोजगार लोग बिना घरबार के सारे देश में घूम रहे थे। 'आवारा' की समस्या पर इस समय के समाचारपत्रों में काफ़ी लिखा गया। इन पर लेख लिखे गये और कहानियाँ लिखी गईं।

गोर्की के 'आवारा' की नवीनता

गोर्की की 'आवारों' की कहानियों के विषय में लोगों का जो ध्यान गया वह इसलिए नहीं कि उसने 'आवारों' के बारे में लिखा वरन् इस लिए कि उसने उनमें वह देखा जो कि दूसरा न देख सका। उसका मनुष्य में विश्वास था और उसने यह दिखाने की कोशिश की कि समाज के निम्नतम स्तर के आदमी में भी आत्मा सुरक्षित है और सबसे बड़ी बात थी कि यह 'आवारे' गोर्की का ध्यान इसलिए आकृष्ट कर सके क्योंकि वह उनमें प्रतिवाद की वह शक्ति देख सका जिससे मनुष्य अत्याचार का जवाब दे सकता है।

गोर्की की रचनाओं में समाज के निम्न स्तर पर धकेल दिये गये यह आवारे उन लोगों की अपेक्षा अधिक मनुष्य हैं या उनमें उन लोगों से अधिक मनुष्यता है, जो कि शासक वर्ग में हैं और इनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

अनजान शहर में आया हुआ नवयुवक बिना पैसे और सहारे के है। उसे किसी से न सहायता मिलती है और न सहानुभूति। अन्त में उसे ये

चीज़ें उस दुःखी 'घूमनेवाली' लड़की से मिलती हैं जिसके साथ वह रात में उलटी हुई नाव के नीचे छिपकर अपने को पानी से बचाता है। जब वह मारे दुःख के फूट कर रो पड़ता है तो यह लड़की उसे सान्त्वना देती है (एक बार शिशिर में)।

केवल यह मानवता ही गोर्की के (समाज के) निचले तले के लोगों को विशिष्ट नहीं बनाती वरन् मुख्यतया उनकी प्रतिवाद की शक्ति और आन्तरिक स्वच्छता जिसे उन्होंने सामान्य जीवन के घेरे से बाहर निकल कर प्राप्त की। वे अब उन दुःखों की परवाह नहीं करते जिसकी छाया इस स्तर पर बराबर बनी रहती है। वरस्तीव कुवाल्दा न धन की शक्ति से डरता है (और इसी से व्यापारी पेतुन्निकोव का विरोध करता है) और न शासन की शक्ति से। यह साहस और सामान्य जीवन की उन सीमाओं से परे जाने की शक्ति—जो कि सामान्य व्यक्ति को अपराजेय प्रतीत होती हैं—गोर्की के इन आवारों को अपने चारों ओर के लोगों से अलग करती है।

निम्न स्तर के लोगों का दुर्बल पक्ष

इसके साथ ही गोर्की उनकी दुर्बलताओं का प्रदर्शन भी करता है। कुवाल्दा तथा 'च्येलकश' जैसे व्यक्तियों की दुर्बलता इसमें है कि उनके सामने कोई स्वीकारात्मक या प्रेरक उद्देश्य नहीं है जिसके लिए वह लड़ सके। वह जो कुछ करते हैं उसका रूप नकारात्मक है। वे केवल अपने लिए लड़ते हैं और इस लड़ाई में भी वह किसी नवीन आदर्श की रचना नहीं करते वरन् उस प्राचीन का केवल निराकरण ही करते हैं जो कि सचमुच में खराब है।

'निचले तले' के इन लोगों के इस दुहरे रूप (शक्ति तथा दुर्बलता) का पूरा-पूरा उद्घाटन गोर्की की कहानी 'च्येलकश' करती है। इसमें इस बात पर भी विचार किया गया है कि जीवन की परिस्थितियों से प्रतिवाद करनेवाले मनुष्य को कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए यदि वह सचमुच में इन परिस्थितियों को बदलना चाहता है।

गवरीला के रूप में हमारे सामने वह किसान है जो आमबाद जोड़ना

चाहता है। यह धन-लिप्सा उसे पैसे का गुलाम बना देती है और वह पैसे के लिए बुरे से बुरा कार्य करने को तय्यार है। वास्तव में वह अच्छा आदमी था किन्तु इस दुनिया ने उसे ऐसा बना दिया जिसमें कि धनहीन मनुष्य को घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। गवरीला का चरित्र इस बात का निदर्शन है कि धन सम्पत्ति या जायदाद की लिप्सा किस प्रकार मनुष्य की आत्मा को खोखला बना देती है और वह गुलाम बन जाता है।

चेलकश गवरीला से ऊंचा उठा हुआ है। वह बुद्धिमान बहादुर और उदार है। दूसरी बात यह कि पैसा उसे नहीं खरीद सकता और उसमें लोभ नहीं है। वह स्वयं गवरीला के सामने पैसा फेंक देता है।

इन गुणों के होते हुए भी चेलकश उतना ही असहाय है जितना कि गवरीला। उस पर धन का प्रभुत्व इसलिए नहीं है क्योंकि वह सामान्य जीवन से बाहर चला गया है और अकेला है। वह इसलिए स्वतंत्र है क्योंकि उसने सब बंधनों से अपने को मुक्त कर लिया—और अब वह किसी के लिए जरूरी नहीं है। और निश्चय ही इस रास्ते पर चलकर—सब चीजों से अलग होकर—जीवन का युद्ध नहीं चलाया जा सकता।

गोर्की स्पष्ट रूप से दिखाता है कि विभिन्न चरित्र के होते हुए भी दोनों का भाग्य एक ही है। दोनों ही समाज की बलि बन गये हैं। यद्यपि गोर्की चेलकश की ओर इसलिए आकृष्ट होता है क्योंकि उसमें कतिपय गुण हैं और उसमें जीवन के प्रति असन्तोष और प्रतिवाद तथा युद्ध की भावना है, फिर भी इसका विशेष मूल्य नहीं है क्योंकि वह उस विषमता को नहीं समझ पाता जो कि समाज के मूल में है। वह जीवन में कुछ नया नहीं लाता।

नवीनता का संवाहक वस्तुतः श्रमिक वर्ग है जो जीवन के आधार भूत मूल्यों की रचना करता है। गुलाम बनानेवाली परिस्थितियों का प्रतिवाद और प्रतिरोध करनेवाले इन श्रमिकों के चित्रण में जीवन की वीभत्सता का यथार्थ चित्रण और गोर्की का सतत् युद्धशील व्यक्ति के आविर्भाव का रोमांटिक विश्वास, यह दोनों साथ-साथ प्रकट हुए हैं।

'नटखट' और 'कनवालोव'

१८९६ में गोर्की ने 'नटखट' (बालक) कहानी लिखी। यह प्रेस में काम करनेवाले एक छोटे बालक की कहानी है जो लिखने—अखबार के सम्पादकीय में कुछ समय अवसर पाकर अपनी ओर से जोड़ देता है जिसका आशय यह है कि यह अखबार जो सुधार करने का दम भरता है, वह स्वयं अपने यहाँ अत्याचार करता है, और सब झूठ लिखता है।

इस कहानी में कोई क्रान्तिकारी बात नहीं है फिर भी इसमें प्रतिवाद की भावना परिलक्षित हो गयी है। यह 'अर्दिनारोवा' (ऊब के कारण) निष्क्रिय प्रतिवाद नहीं है जो मरकर जीवन को ठुकराकर अपना प्रतिवाद प्रकट करती है। यह 'चेलकश' का व्यक्तिवादी प्रतिवाद भी नहीं है जो जीवन से अलग हट कर अपने भाव को प्रकट करता है, वरन् यह उस व्यक्ति का प्रतिवाद है जो दूसरों से जीवन के बीच खड़ा है। उसे केवल अपनी ही चिन्ता नहीं करता वरन् दूसरों की भी चिन्ता है। वह इस बात से उत्तेजित है कि प्रेस काम करने वालों को पूरी रोटी नहीं देता यहाँ बच्चे पीटे जाते हैं और अखबार सच नहीं लिखता। फिर भी यह प्रतिवाद एक आकस्मिक घटना है। यह कहानी उस व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करती है जिसमें जीवन के प्रति प्रारम्भिक असंतोष भर गया है किन्तु जिसका अभी वास्तविकता के साथ सम्बन्ध न सर्वथा स्पष्ट एवं स्थिर नहीं हो सका है। यह कमजोर बनी चेतना प्रबल रूप नहीं धारण कर सका है।

मजदूर जनता में धीरे-धीरे बढ़ते हुए इस प्रारम्भिक असंतोष का उद्घाटन 'कनवालोव' कहानी में भी हुआ है। कनवालोव [illegible] आवारा नहीं है वरन् वह मजदूर है यद्यपि वह इधर से उधर [illegible] है और नशाखोरी तथा आत्महत्या में उसका अंत होता है। वह [illegible] है कि 'यहाँ रेल बनाई जा रही है बाद में यहाँ बन्दरगाह होगा। [illegible] बना रहा है? जनता। और इसका फ़ायदा किसको है? [illegible], जनता भुखमरी करेगी और काम की खोज में आग [illegible] और कुछ नहीं। और बन्दरगाह में यह जायेंगे [illegible]

अन्य ? चूँकि वह अवस्थिति में मजबूर है इसलिए उसके प्रतिवाद में इसकी सामाजिक झलक भी है। इसमें अत्याचार और उसका विरोध दोनों का संकेत है। गोर्की ने यथार्थ परिस्थिति को पहचानकर उसी में उस शक्ति को भी प्राप्त किया जो इसीलिए पैदा हुई है कि परिस्थिति से मुक्त किया जाय। जार के सेंसर ने इसके कुछ पन्ने निकाल कर ही इसके छपने की आज्ञा दी। 'कनवालोव' कहानी पाठकों को क्रान्तिकारी निष्कर्षों की ओर ले गयी यद्यपि कनवालोव स्वयं वास्तविक क्रान्ति से दूर है।

कथाकार गोर्की का रूप

गोर्की की रचनाओं में केवल उसके पात्र ही नहीं कुछ कहते-सुनते दिखाई पड़ते हैं वरन् स्वयं लेखक भी कभी निरीक्षक के रूप में कभी साथी सहचर के रूप में और कभी कहानीकार के रूप में अपनी ओर से टिप्पणियाँ जोड़ता चलता है और इस प्रकार अपनी रचनाओं में पूरक का काम करता है। इन टिप्पणियों से इस प्रकार उसके दृष्टिकोण तथा मनोभावों तथा व्यक्तित्व का परिचय भी मिलता रहता है। इसके कारण इन टिप्पणियों में वह उन चीजों पर जोर देता है जिन्हें पात्रों के कार्यकलाप या भाषा के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता है और इनके प्रयोग द्वारा वह नये प्रकार के व्यक्ति का संकेत देता है। स्वयं कथाकार के रूप में गोर्की एक व्यक्ति का चित्रण करता है जिसे जीवन की विषमताओं के हटाने का रास्ता मालूम है, जो सामाजिक विचारक है। इन्हीं टिप्पणियों में वह सामाजिक स्तर के पुनर्संगठन तथा राजनीतिक परिवर्तन का स्वप्न देखता है (एक बार शिशिर में)। इसी प्रकार वह अन्य रचनाओं में भी पात्रों के गम्भीर प्रश्नों का उत्तर देता है (एमेल्यान पिल्याई 'कनवालोव')। इसी प्रकार उसके निष्कर्ष भी पाठकों को कहानी के मुख्य विचार को अधिक गहराई से समझने को बाध्य करते हैं। इसी तरह विभिन्न पात्रों के अनुकूल विभिन्न प्रकार की भाषा का सक्षम प्रयोग उन पात्रों की विशिष्टताओं को बड़ी स्पष्टता के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार गोर्की के जीवन की [illegible] सकता है कि इसमें [illegible] वादी परम्पराओं का [illegible] नवीनता का [illegible] किया। [illegible] बनानेवाली जीवन की [illegible] की [illegible] दी जिसका [illegible] है। [illegible] उसने मानव के [illegible] वादी तथा वास्तविक [illegible] में निर्मित या [illegible]।

सन् नब्बे के वर्षों में [illegible] युग प्रकट हुआ। इन्हीं वर्षों में [illegible] विकास का आरम्भिक युग भी [illegible] है। [illegible] के अनुरूप ही गोर्की भी [illegible] क्रान्तिकारी बना दिया।

गोर्की के जीवन की दूसरी अवस्था [illegible] के उस उभार और तेजी से [illegible] है [illegible] है और प्रथम रूसी क्रान्ति के युग [illegible] करती है।

गोर्की के जीवन का [illegible]

सन् नब्बे (१८९०) का [illegible] के लेखन का नया युग है। इन वर्षों में [illegible] कहानी उपन्यास नाटक—[illegible]

पहला गद्यलेख

१८९९ में गोर्की ने अपना [illegible]

इसके पहले अपनी कहानियों में गोर्की यह बता चुका है कि धनाधिपत्य या मिल्कियत किस प्रकार मनुष्य की आत्मा को नष्ट करती है और धन लिप्सा आदमी को आदमी नहीं रहने देती। यह बच्चों के मन को कलुषित कर देती है (बाबा अरखीप और ल्योन्का) और आदमी को अपराध करने को प्रेरित करती है (च्येलकश) और अत्याचारियों या पीड़कों को जन्म देती है (व्यापारी पेतुनिकोव) जिन्हें गोर्की 'जिन्दगी के मालिक' कहता है।

उपन्यास 'फ़ोमा गर्देयेव' में गोर्की ने इन्हीं 'जिन्दगी के मालिकों' का चित्रण किया है। पाठकों के सामने रूसी व्यापारियों—इग्नात गर्देयेव, अनानी श्चुरोव, याकोव मयाकिन—की बड़ी स्पष्ट तस्वीरें आती हैं जिन्हें जीवन ने प्रभुत्वशाली और कठोर बना दिया है और जो अपने को दूसरों के जीवन का मालिक समझते हैं। किन्तु यह प्रभुत्व औरों को दबाकर और नष्ट करके प्राप्त किया गया है और यह अधिकार न्यायोचित नहीं है। गोर्की इसकी आलोचना करता है और यह प्रदर्शित करता है कि 'यह जीवन के मालिक केवल दूसरों को दबाते ही नहीं हैं वरन् स्वतः भी आदमी नहीं रह जाते (जैसे कि च्येलकश में गवरीला)।

इस उपन्यास में गोर्की ने विभिन्न प्रकार के व्यापारियों के चित्रण की ओर विशेष ध्यान दिया है और वह उस अन्यायपूर्ण मार्ग को दिखाता है जिस पर चलकर इन लोगों ने बुरे से बुरे ढंग से धन इकट्ठा किया जिससे कि इनको अत्याचार करने की इतनी शक्ति दे दी। उपन्यास के अंत में फ़ोमा उत्सव में एकत्रित हुए इन व्यापारियों और शहर के अमीरों की काली करतूतों को दिखाता है। चूंकि इन लोगों के पास निर्माण है, शक्ति है, और धन है इसलिए उनका उत्पीड़न और भी गहरा हो जाता है। फ़ोमा का पिता इग्नात गर्देयेव ऐसा ही है जिसके समृद्ध चरित्र की विशिष्टताएं कृपणता तथा मद्यव्यसन में नष्ट हो जाती हैं। याकोव मयाकिन में गोर्की उन विशिष्टताओं को प्रदर्शित करता है जो कि जनता के बीच से आये हुए या बने हुए व्यापारियों में सुरक्षित रहीं। उनमें चतुरता है बुद्धि है तथा काम के प्रति अभिरुचि है। उनमें व्यावहारिकता भी है। किन्तु

इन्हीं के सहारे उसका अत्याचार और भी विषम हो जाता है।

उपन्यास में गोर्की व्यापारियों की दूसरी पीढ़ी का चित्रण भी करता है। ल्यूबा तरास मयाकिन और स्मोलिन दूसरी पीढ़ी के लोग हैं। धन ने ल्यूबा का लोगों से सजीव संबंध न रहने दिया। वह किताबों में मग्न रहती है। उसके विचार अच्छे हैं किन्तु आगे चलकर स्पष्ट हो जाता है कि उसके चारों ओर का वातावरण उसके विचारों तथा भावनाओं को नष्ट कर रहा है और वह वैसी ही है जैसे कि उसके वर्ग के अन्य लोग। मयाकिन और स्मोलिन सुसंस्कृत व्यक्ति हैं और वे ज्ञान इसलिए चाहते हैं कि जनता को और सूक्ष्म किन्तु और गहराई से चूस सकें। दूसरी पीढ़ी का चित्रण करते हुए गोर्की यह कहना चाहता है कि यह उत्पीड़न या अत्याचार इसलिए नहीं है कि यह व्यापारी अपढ़ या अर्धसंस्कृत हैं वरन् यह बताना चाहता है कि संस्कृति या ज्ञान यदि धन वृद्धि की सेवा में लगा दिया जाता है तो वह जनता के उत्पीड़न को और भी तीव्र कर देता है। संस्कृति तथा ज्ञान को जन कल्याणी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसे इस पराधीनता से मुक्त किया जाय।

इस प्रकार गोर्की ने आलोचनात्मक यथार्थवाद के परम्परागत वस्तु विषय को आगे बढ़ाया और उन बुराइयों का उद्घाटन किया जो कि पूँजीवादी समाज में मनुष्य को नष्ट कर रही हैं। इस विषय-वस्तु को विकसित करते हुए गोर्की दूसरे ही निष्कर्ष पर पहुँचा। उसने केवल इस समाज का चित्रण ही न किया वरन् इस समाज का पूरा-पूरा निराकरण किया और ऐसे समाज पर आक्रमण किया।

उपन्यास के केन्द्र में फ़ोमा गर्देयेव है जिसे पिता की सारी सम्पत्ति विरासत में मिली है। इसके साथ ही उसमें ऐसी अनुभूतियाँ भी हैं जिनके कारण वह स्वतंत्र स्वस्थ जीवन बिताना चाहता है। उसमें कभी-कभी यह भावना जगती है कि वह इस सम्पत्ति का मालिक नहीं वरन् गुलाम है। जब याकोव मयाकिन यह कहता है कि व्यापारी अग्रगण्य व्यक्ति है वह जवाब देता है कि 'तुमने जीवन की नहीं जेल की रचना की व्यवस्था नहीं स्थापित की, मनुष्य पर जंजीरें डाली हैं, दम घुट रहा है, संकीर्णता है

कार्य मानता है। साथ ही वह यह भी जानता है और अपने लेख 'नाटक' में स्पष्ट कहता है कि अन्य साहित्यिक रूपों की अपेक्षा नाटक कठिनतम रूप है। फिर भी वह नाटकों की ओर मुड़ा क्योंकि वह जानता है कि तीक्ष्ण सामाजिक संघर्ष के युग में नाट्य-रूप विशेष प्रकार से युग की सामाजिक विषमता को गहराई के साथ अभिव्यक्त कर सकता है। इसी से वह नाटकों की ओर आकृष्ट हुआ और चेख़ोवीय शैली के नाटकों की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं को अपनाने के साथ-साथ उसने उनमें अपनी ओर से नया योग भी दिया। उसने सर्वथा दूसरे प्रकार के—सामाजिक राजनीतिक— नाटकों की रचना की जिनमें उसने अपने समय की सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया—जैसे पूँजीवाद से मजदूर वर्ग का युद्ध ('शत्रु') बुर्जुआ समाज में व्यक्ति की 'ट्रेजडी' और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उसका प्रयत्न ('निचले तल पर') रूसी बुद्धिजीवियों का भाग्य ('मकान में रहने वाले' 'सूर्य के बच्चे') आदि। गोर्की इस युग या समय को स्वतः नाटकीय मानता है और इसी से वह नाटकों की ओर आकृष्ट हुआ। युग के संबंध में उसका कहना है कि 'हम पूर्णतया गम्भीर नाटकीय युग में नाश तथा निर्माण के तनावपूर्ण व्यापार के नाटकीय युग में रह रहे हैं।

'निचले तले पर' और 'शत्रु' नाटकों को छोड़कर सन् १९०० के वर्षों के नाटक अधिकतर रूसी बुद्धिजीवी वर्ग के उस ह्रासशील मानसिक स्थिति से युद्ध कर रहे हैं जिसने कि उन्हें संकीर्ण व्यक्तिवादी बना दिया है। इसमें 'मकान में रहने वाले' में इन बुद्धिजीवियों को उन लोगों में बदल दिया जो जीवन से गहराई से नहीं बँधे हैं और जो जनता के हितों के साथ अपने को न जोड़ सकने के कारण उद्देश्यहीन और करुण जीवन बिता रहे हैं ('सूर्य के बच्चे')।

नाटकों में श्रमिकों का रूप

जनता से विच्छिन्न इन बुद्धिजीवियों के प्रतिपक्ष में गोर्की उन नये लोगों का प्रस्तुत करता है जो इस विषय में बिल्कुल स्पष्ट हैं कि जीवन

कैसा होना चाहिए, जो दृढ़ता के साथ जीवन के नये सत्यों का संग्रहण कर रहे हैं। ये नये लोग श्रमिक या मजदूर हैं। 'मेरचान्य' नाटक में श्रमिक नील का विशेष स्थान है। साहित्य में यह श्रमिक या मजदूर—क्रान्तिकारी का पहला चित्र है। उसमें जीवन के प्रति सामाजिक संबंध की विशिष्टताएं स्पष्ट हैं। वह काम करना चाहता है और साथ ही अपने मनुष्य के अधिकारों के लिए लड़ने को भी तय्यार है। परिश्रम और युद्धप्रियता द्वारा गठित यह नील साहित्य में नया रूप है। उसके पीछे क्रान्तिकारी युद्ध के लिए मुस्तइ मजदूर या श्रमिक वर्ग खड़ा है। फिर भी नील के रूप में नये व्यक्ति का सर्वांगीण चित्र नहीं प्रस्फुटित हो सका है। वह समुदाय से बाहर प्रदर्शित किया गया है।

'शत्रु' नाटक इस दिशा में नया कदम है। इस नाटक में श्रमिकों का एक पूरा समूह है। वे अपने चारों ओर के लोगों—मिल मालिक शासनाधिकारी बुद्धिजीवी आदि—से बिल्कुल भिन्न हैं। वे जीवन के नये सत्य को जानते हैं और यह ज्ञान उन्हें दूसरों से ऊँचा उठा देता है। यह नया सत्य है—सोशलिज्म या समाजवाद इससे उनको नैतिक शक्ति मिलती है। अपने साथी की रक्षा के लिए वे आत्मत्याग के लिए तय्यार हैं और वह हिम्मत के साथ जल जाते हैं क्योंकि उनको अपने कार्य के औचित्य में विश्वास है। नाटक का अन्त इन शब्दों से होता है कि ये लोग जीतेंगे। इस प्रकार 'मटकट बालक' से मुक्त होकर नये व्यक्ति का रूप क्रमश उभरता और निखरता गया और पूर्ण होता गया। उसमें परिस्थितियों के विरुद्ध प्रतिकार की विशिष्टताएं मिलीं जिनका पूर्ण उत्कर्ष जनता के अत्याचारियों के विरुद्ध संघर्ष और युद्ध में हुआ।

'निचले तले पर'

इस नाटक की रचना 'मास्को कला थियेटर' ('मखात' अर्थात् मस्कोवस्की अकादमीचेस्की ख़ुदोजेस्तवेन्नी तियात्र) के साथ गोर्की के घनिष्ठ संबंध के फलस्वरूप हुई। गोर्की के पहले इस थियेटर की मनोदृष्टि व्यापक रूप से सामाजिक राजनीतिक न थी। उसकी सबसे अच्छी कृतियाँ चेखव के मनोवैज्ञानिक नाटकों का अभिनय थीं। गोर्की के आगमन से यह थियेटर

सामने रखा। इस थियेटर के संस्थापक के० एस० स्तानिस्लावस्की के शब्दों में "हमारे थियेटर के सामाजिक राजनीतिक मार्ग का निर्माता और प्रस्तावक गोर्की है।" इस थियेटर के प्रस्ताव पर गोर्की ने आरम्भ में 'मेश्चाने' लिखा और फिर बाद में (१८ दिसम्बर १९०२) 'निचले तले पर' नाटक का अभिनय हुआ। दोनों नाटकों का जनता ने बड़ा स्वागत किया। इनमें 'निचले तले पर' नाटक को अपूर्व सफलता मिली।

इस नाटक ('निचले तले पर') ने पाठकों और दर्शकों के वास्तविक भावों और विचारों के मर्म को छू लिया। नाटक के मुख्य पात्र जीवन के यथार्थ व्यक्ति हैं (सातिन, बुबनोव, बरोन)। इनके चित्रण में गोर्की की प्रतिभा की मूल विशेषताएं पूर्णतया स्पष्ट होती हैं—जनता के प्रति अथाह प्रेम। पात्रों का ऐसा चित्रण हुआ है कि वे पाठकों के बिल्कुल निकट आ जाते हैं। इस नाटक में पाठक बराबर नायक के साथ रहता है।

मुख्य चरित्र

गोर्की ने इस नाटक में विविध चरित्रों की सृष्टि की है और इनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्टता है। इस 'निचले तले पर' समाज के विविध स्तरों के लोग मिलते-जुलते पहुंच जाते हैं। मिखाईल इवानोविच कस्तिल्योव के रात्रि-निवास स्थान पर जहां कि लोग सिर्फ रात में सोते हैं—विभिन्न प्रकार के लोग दिखाई पड़ते हैं। यह 'बरोन' (उच्च वर्ग का) है जिसका चरित्र और आत्म प्रमुखों के ह्रास की कथा कह रहा है। परिश्रम में अक्षम जनता की मेहनत पर जीवन व्यतीत करने वाला यह उच्च वर्ग का व्यक्ति धीरे-धीरे सारी शक्ति और गुरुता खो देता है और निम्नतम दुर्बलताओं का शिकार बन जाता है और अतीत की याद किया करता है। वह अब जिस गड्ढे में गिर गया है उससे निकलने की कोशिश भी नहीं करता। वह इसे स्वीकार करता है और कहता है कि मालूम होता है कि मुझमें चरित्र नहीं है।

इसके विपरीत क्लेश केवल ८ महीना इस रात्रि-निवास-स्थान में रहा है और वह बराबर इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि इसमें से निकल

कर वह जीवन में अपना कोई स्थान बनावे । किन्तु दरिद्रता तथा अधिकारहीनता न जिसम कि ज़ारशाही रूस की जनता पड़ी हुई थी—कभी मनुष्य को ऊपर उठने का मौका न दिया यदि वह एक बार समाज के निचले तह पर पहुँच गया । इसस पाठकों को मालूम हो जाता है कि वस्का का यह स्वप्न पूर्ण न होगा । शुरू म तो वह प्रयत्नशील है किन्तु अन्त में वह परिस्थितियों स समझौता कर लेता है।

रात्रि-निवास-स्थान में रहनेवालों में स अधिकांश जीवन की परिस्थितियों स युद्ध करना छोड़ देते हैं । टोपी बनानेवाला अभिमानपूर्ण अपने तथा दूसरों क बारे में कहता है कि उन किसी में विश्वास नहीं है । पेपल कहता है कि "मेरा पिता जीवन भर जेल म रहा और वही जगह मेरे लिए भी है।"

पूँजीवादी समाज को विभक्त करनेवाली सामाजिक विषमताओं का गार्की बड़ा व्यापक चित्रण करता है । पीड़क तथा पीड़ित का यह युद्ध इस रात्रि-निवास-स्थान में भी बराबर चलता रहता है । लोग इस स्थान के मालिक केस्तिल्याव की मुट्ठी में हैं और वह इनको खटमल की तरह चूस रहा है । उसकी पत्नी वसिलीसा उससे भी बढ़कर है । ऐसे पूँजीवादी समाज में जहाँ कि मनुष्य मनुष्य का सहायक नहीं वरन् एक दूसरे के लिए भेड़िया है जहाँ एक की खुशी दूसरे की व्यथा पर ही निर्भर है उसकी पत्नी अपने आनन्द क लिए अपने पति की हत्या के लिए भी तय्यार है, और उसकी हत्या करवा देती है और हत्यारे को पकड़वा भी देती है।

इस नाटक के विविध पात्रों का अपना व्यक्तित्व है अपनी ज़बान है और अपना विशिष्ट चरित्र है । गार्की ने उनका बड़ा सजीव चित्रण किया है । वे कितने ही नीचे क्यों न गिर गए हों फिर भी उनम कुछ न कुछ मानवता सुरक्षित है । वे भी आदमी बन जाते यदि उनके मार्ग में बुर्जुआ समाज की घातक बाधा स्वरूप आकर खड़ी न हो जाती । पात्रों के ऐसे जीवन्त चित्रण के कारण नाटक का वस्तु-तथ्य बड़ा शक्तिशाली बन गया है । इसके सार तत्व को समाजवादी मानवता कहा जा सकता है ।

यह नाटक मानवतावादी भावना से ओतप्रोत है । गोर्की पाठक को इस बात का अनुभव करा देता है कि प्रत्येक व्यक्ति में—चोर, वेश्या

सपाटी—उदात्त मानवीय भावनाएं जीवित और सुरक्षित हैं। यदि ये भावनाएं पूर्णतया विकसित नहीं हो पाती तो यह व्यक्ति का दोष नहीं यह उसका दुर्भाग्य है उसकी व्यथा है और यह उन असह्य सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है जिसमें कि वह पड़ा हुआ है। यह अनुभूति पाठकों को इस क्रान्तिकारी निष्कर्ष की ओर प्रेरित करती है कि मनुष्य मनुष्य बन सके। इसलिए उस सामाजिक विधान का तोड़ना परमावश्यक है जो जीवन को निचले तले पर पटक देता है। इस विचार ने इस नाटक को अत्यधिक सामाजिक महत्त्व प्रदान किया।

गोर्की बड़ी कलात्मकता के साथ उस विषमता को प्रकट करता है जो कि व्यक्ति के सामाजिक अधःपतन और उसके अपने उद्धार के स्वप्न में लक्षित होती है। प्रत्येक पात्र का अपना स्वप्न और अपना प्रयत्न है और व्यक्ति की उदारता और शक्ति में विश्वास है। यह विश्वास नताशा के स्वप्नों में, पेपल के फिर से आदमी बनने के प्रयत्न में और अभिनेता के उस चमत्कारी नगर के विश्वास में जहां कि वह नीरोग हो जायगा प्रकट होता है। इस प्रकार नाटक में प्रत्येक पात्र की अपनी विशिष्टता है और प्रत्येक के साथ उसका विशिष्ट सामाजिक वातावरण है।

सातिन का चित्र

सातिन का चित्र इस नाटक में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस नाटक के पात्रों में केवल वही है जिसने हार नहीं मानी तथा जो बराबर परिस्थितियों से युद्ध करता रहा और जिसकी मानवीय उदात्तता तथा जीवन में विश्वास डिगा नहीं। फिर भी गोर्की ने इस पात्र की दुर्बलताओं पर पर्दा नहीं डाला है। इसी से इस पात्र के विश्वास को व्यवहार में कार्य रूप में नहीं परिणत किया। गोर्की ने अपने नाटक के संबंध में स्वयं कहा है कि मैं उन लोगों के मुख से समाजवाद की शिक्षा नहीं दिला सका जिन्हें कि जीवन ने नष्ट कर दिया है।" फिर भी महत्त्व की बात यह है कि उसने आत्म-समर्पण नहीं किया और वह सतत युद्ध करता रहता है। उन लोगों के बीच जो कि अब पूरी तरह झुक गये हैं, जिनके लिए अब यह कहा जा

सकता है कि 'वे कभी आदमी थे' मानव की महत्ता की घोषणा करने वाले सातिन के यह शब्द गूँज उठते हैं "मानव स्वतंत्र है मानव महान् है, उसकी इज्जत करनी चाहिए। सान्त्वना या दया द्वारा उसे नीचे न गिराओ।"

मानव के प्रति इस विश्वास में मानव के पक्ष में उसकी स्वतंत्रता के लिए युद्ध का आह्वान भी है। सातिन इस युद्धशीलता का प्रतीक है।

लुका का चित्र

इस नाटक में निरन्तर युद्धशीलता के मुख्य भाव के साथ दया या सान्त्वना का भाव भी मुख्य है। लुका इस दया या सान्त्वना के भाव का प्रतीक है। वह प्रत्येक पात्र को उसके लिए बिना कुछ करे-धरे सिर्फ सांत्वना दिया करता है और उनको शान्त करता रहता है। इस प्रकार का दुख हल्का करने का हल्का ढंग झूठ के सहारे ही चल सकता है और लुका इसी का आश्रय लेता है। इसी के सहारे वह सबों का मोह लेता है। इस प्रकार की झूठी सान्त्वना क्षणिक शान्ति तो चाहे दे दे लेकिन वास्तव में वह बड़ी घातक है। अपनी शक्ति को एकत्रित कर युद्ध के लिए सन्नद्ध करने के बजाय ऐसी झूठी सान्त्वना लोगों को दुर्बल बनाती है उनकी शक्ति को व्यर्थ कर देती है और उनको नष्ट कर देती है। गोर्की ने इस संबंध में कहा है कि 'इस प्रकार की झूठी सान्त्वना देनेवाले लोग बड़े बुद्धिमान और मिष्ठभाषी होते हैं और इसी से वे बड़े घातक भी हैं।"

सातिन इसी दुर्बल बनानेवाली झूठी सान्त्वना के विरुद्ध युद्ध करता रहता है। वह कहता है कि 'बहुत से लोग हैं जो सान्त्वना देने के लिए झूठ बोला करते हैं। मैं जानता हूँ कि झूठ शामककारी होता है, परिस्थितियों से समझौता करानेवाला होता है। झूठ उस कठोरता का समर्थन करता है जिससे कि मजदूर के हाथ को कुचल दिया और जो भूख से मरनेवालों को पापी ठहराता है। झूठ की जरूरत उनको है जो कम-जोर दिल के हैं। जो स्वाधीन हैं उनको इसकी क्या जरूरत। झूठ

गुलामों का धर्म है और सत्य स्वतंत्र व्यक्ति का देवता है।

सत्य कठोर सत्य जो झूठी आशाओं तथा झूठे आत्म-संतोष को कोई स्थान नहीं देता वही मनुष्य को ऊपर उठा सकता है और उसे अत्याचार के विरुद्ध युद्ध करने की शक्ति दे सकता है। सातिन के शब्द इसी सत्य के द्योतक हैं।

नाटक का रचना-विधान और भाषा

इस नाटक के रचना विधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जीवन्त परिस्थितियाँ—जो कि उस समय और शासन के यथार्थवादी सजीव संबंध के अनुकूल हैं—पात्रों के पारस्परिक संबंध और संघर्ष का अभिव्यंजन करती हैं। रात्रि-निवास-स्थान में रहनेवाले पात्रों के बीच जो आपसी संबंध है उनसे पाठक भली भाँति परिचित हो जाता है और वह यह भी जान जाता है कि विभिन्न पात्र जीवन के किन रास्तों से चलते हुए इस 'निचले तले पर' पहुँचे हैं। लुका के आने पर थोड़े ही दिनों में ये संबंध और संघर्ष चरम स्थिति पर पहुँच जाते हैं जो वास्का पेपल को जेल में भेज देते हैं। नताशा को अस्पताल भेजते हैं और अभिनेता की आत्महत्या करा देते हैं। नाटक बड़ी ही तीक्ष्ण विषमताओं वैपरीत्य और संघर्ष पर आधारित है जिनकी तीक्ष्णता नाटक की घटनाओं से स्वतः स्पष्ट है। स्वयं नाटक का शीर्षक 'निचले तले पर' यह ध्वनित करता है कि विषमताएँ जीवन को विभक्त कर रही हैं और रही हैं। यदि ऐसा निचला तला यह स्तर है जहाँ कि लोग धकेल दिए गए हैं तो निश्चय ही सच्चा जीवन भी होगा जिससे कि वे अब वंचित हो गए हैं और जिसको विश्वास के आधार पर फिर से प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य का मनुष्य द्वारा उत्पीड़न है तब तक उत्पीड़ित व्यक्ति फिर से मनुष्य नहीं बन सकता। इसके साथ ही नाटक का यथार्थवादी आधार, क्रान्तिकारी रोमांटिक महत्त्व भी प्राप्त कर लेता है। सातिन का आत्म-कथन तथा दूसरे पात्रों की भावना इस बात का संकेत दे रही है कि यह विषमता न्यायोचित नहीं है इसे अवश्य बदलना चाहिए और यह अवश्य बदलेगी। नाटक में यथार्थ जीवन का ऐसा

ज़ोरदार चित्रण हुआ है कि वह ऐसे जीवन के प्रति निरन्तर विरोध की आवाज़ उठाए बिना नहीं रहता।

नाटक के पात्रों की भाषा अत्यन्त वैयक्तिक है। प्रत्येक पात्र अपनी मनोवृत्ति तथा उस सामाजिक वातावरण के अनुरूप ही बोलता है जिसमें कि वह पला है। अभिनेता की भाषा अपने पेशे से पुष्ट है, बरोन की भाषा में अतीत की स्मृतियाँ हैं, नास्त्या की भाषा में सस्ते उपन्यासों की विशिष्टता है और लूका की भाषा में किसानों की भाषा की झलक है। यह सब यथार्थवादी भाषा के उदाहरण हैं। फिर भी गोर्की ने भाषा की बाहरी झलक को इतना गहरा नहीं किया कि सब अजीब या किसी दूसरी दुनिया के जीव लगने लगें। गोर्की में सामान्य व्यापक भाषा का प्रयोग है और यह भाषा उनके व्यक्तित्व को मुखरित करने के साथ-साथ सबसे अधिक यथार्थवादी सामाजिक समस्या—कि उनके अध:पतन का कारण उनका व्यक्तित्व नहीं वरन् सामाजिक परिस्थितियाँ हैं जिन्होंने उनके व्यक्तित्व को दबा दिया है—को स्पष्ट करती है।

नाटक का महत्त्व

गोर्की का यह नाटक एक ओर तो समाज के उस निचले तले को स्पष्टता के साथ प्रदर्शित करता है जो अत्याचार और उत्पीड़न पर आधारित है और जिसमें समा कर मनुष्य फिर उबर नहीं पाता और दूसरी ओर यह इस विश्वास से पूर्ण है कि मनुष्य स्वयं अपने को इस अत्याचार से मुक्त कर सकता है। यह मानवतावाद तो है किन्तु यह पुरुषार्थी मानवतावाद है जो अपने रास्ते से सारी बाधाओं को दूर फेंकता चलता है। गोर्की के नाटक का यह आधारभूत वस्तु-तथ्य है। यह समाजवादी मानवतावाद है। यद्यपि जीवन ने इन पात्रों की कमर तोड़ दी है और वे स्वयं परिस्थितियों से अधिक लड़ने में समर्थ नहीं हैं फिर भी इनका अन्त नव विचारों को जन्म देता है और पाठकों को इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि ऐसे समाज का अन्त कर देना चाहिए। यह नाटक मनुष्य के अध:पतन का विरोध करता है और उस झूठी मिथ्यापूर्ण सान्त्वना को भी ठुकराता है जो मनुष्य को परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति नहीं देती वरन् शिथिल

बनाती है। बाद में गोर्की ने स्वयं कहा कि नाटक में विद्रोह का 'सिगनल' है। सचमुच में इस नाटक का क्रान्तिकारी महत्त्व है। नाटक की सफलता ने ज़ारशाही को इतना डरा दिया कि उसने आज्ञा निकाली कि प्रान्तीय नगरों में इसके प्रदर्शन के लिए वहाँ के पीठ की अनुमति आवश्यक है और इन पीठों को गुप्त रूप से लिख भेजा गया कि यथाशक्ति इसके प्रदर्शन की आज्ञा न दें। यह सब होते हुए भी यह नाटक रूस में तथा देश विदेश सब जगह अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और कोई भी रोक या बाधा इसके सामाजिक कलात्मक प्रभाव को कम न कर सकी।

तूफ़ानी चिड़िया का गीत

गोर्की के उन विचारों की अभिव्यक्ति उन रोमांटिक रचनाओं में भी हुई जो १९०० के आरम्भिक वर्षों में लिखी गईं 'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' (१९०१) और 'मनुष्य' (१९०३)।

'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' में गोर्की ने काव्यात्मक ढंग से बढ़ती हुई क्रान्ति की भावना का गीत गाया है। यह चिड़िया क्रोध से गरजते हुए समुद्र के ऊपर उड़ती हुई गाती है। 'शीघ्र ही तूफ़ान गरजेगा' यह इस गीत में कहा गया है। चिड़िया की कूक विजय का उद्घोष है 'और ज़ोर से तूफ़ान गरजे।' ज़ारशाही ने उस पत्र ('जीवन') को बंद कर दिया जिसमें कि यह गीत छपा था। यह गीत अत्यधिक व्यापक हुआ और क्रान्ति के पूर्व के वर्षों में आनेवाली क्रान्ति का प्रतीक बन गया।

'मनुष्य'

यदि 'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' आनेवाली क्रान्ति का प्रतीक है तो 'मनुष्य' में उसके उच्च लक्ष्य की अभिव्यक्ति—मनुष्य की स्वतंत्रता—हुई है। यह कविता 'मनुष्य का गीत' है। मनुष्य के इस प्रतीकात्मक चित्र में गोर्की बताता है कि मनुष्य को कैसा होना चाहिए। गोर्की के लिए मनुष्य के सारे कार्यकलाप का लक्ष्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति 'मनुष्य' बन सके। मनुष्य की शक्ति और उसकी उच्च प्रगति के विश्वास से ओत प्रोत यह गीत गोर्की की मानवतावाद की ज़ोरदार अभिव्यक्ति है। 'सब कुछ

मनुष्य में है—सब कुछ मनुष्य के लिए—आत्मा की थकान के इस दुखद क्षण में मैं अपनी कल्पना की पूरी शक्ति के साथ अपने समस्त मनुष्य की महानता के रूप का आह्वान कर रहा हूँ—देखो वह फिर स्वतंत्र और उन्मुक्त गर्व से अपना सिर उठाए धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ पगों से प्राचीन अंधविश्वासों के बीच से आ रहा है। मनुष्य के रास्ते का अन्त नहीं है। क्रान्तिकारी मनुष्य इस प्रकार बढ़ता चला आ रहा है—आगे और ऊँचे आगे और ऊँचे।

उपन्यास की 'माँ'

१९०९ में गोर्की ने अपनी विश्वविख्यात कृति 'माँ' प्रस्तुत की जिसकी रचना उसने सन् १९०३ में आरम्भ कर दी थी। १९०७ में सोशल डिमोक्रेटिक पार्टी के अधिवेशन के समय जब गोर्की तथा लेनिन लंदन में मिले थे लेनिन ने उसकी त्रुटियों का उल्लेख करते हुए भी इसके महत्त्व की चर्चा करते हुए गोर्की से कहा था कि 'अब तक क्रान्तिकारी आन्दोलन में बहुत से मजदूर अचेतन रूप में योग दे रहे थे। अब वे इसे पढ़ेंगे और लाभ उठाएँगे। यह अत्यन्त समयोपयोगी पुस्तक है'[1]—यह लेनिन की टिप्पणी थी। इस भेंट के बाद लेनिन ने गोर्की को लिखा कि 'अपनी कलात्मक प्रतिभा के द्वारा तुमने रूस के और न केवल अकेले रूस के वरन् समस्त संसार—मजदूर आन्दोलन को बड़ा लाभ पहुँचाया है। आगे तुम और भी लाभ पहुँचाओगे।

उपन्यास में प्रस्तुत समस्याओं की महत्ता के कारण चित्रांकन की नवीनता कलात्मक साधन तथा युक्तियों की मौलिकता और संसार भर के पाठकों पर अपनी प्रभावात्मकता के कारण गोर्की की यह कृति बीसवीं शताब्दी के आरम्भ की विश्व-साहित्य की महत्त्वपूर्ण पुस्तक बन गयी। इस पुस्तक का संसार की बहुत-सी भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है।

'माँ' उपन्यास में गोर्की ने उस नयी शक्ति का पूरा-पूरा चित्रण किया

---

[1] वसल्या सवेत्स्कया लितेरातुरा अ० इ० तिमोफ़ेयेव पृ० ७७।

है जो कि जीवन में तथा अत्याचारियों के विरुद्ध युद्ध में प्रकट हो गयी थी। इस उपन्यास में वे सब चित्र एक में सम्मिलित हो गये हैं जिनको उसकी सर्जना ने पहले अलग-अलग प्रस्तुत किया था—'मकार चुद्रा' 'चेलकाश' 'पेस्त्रान्ये' तथा 'दान्को'—रोमांटिक योद्धा नायक का चित्र मानवता के उद्धारक का चित्र तथा स्वतंत्रता के लिए युद्ध-सन्नद्ध यथार्थ व्यक्ति का चित्र। उपन्यास के केन्द्र में मजदूर—क्रान्तिकारियों के चित्र हैं जिनमें उस समय के मजदूर आन्दोलन की यथार्थ विशेषताएँ तथा उसकी व्यापकता प्रतिबिम्बित है। जिस प्रकार कि 'फ़ोमा गर्दयेव' में पूँजीवाद का वस्तु-चित्र प्रस्तुत किया गया था इसी प्रकार 'माँ' उपन्यास में अत्याचारियों के विरुद्ध क्रान्तिकारी आंदोलन का पूरा-पूरा वस्तु चित्र अंकित हुआ।

उपन्यास की सामग्री

इस उपन्यास की मुख्य विशेषता इस बात से प्रकट होती है कि इसमें यथार्थ व्यक्ति और घटनाएँ प्रतिबिम्बित हैं। इसके मूल में गोर्की ने उन घटनाओं का विन्यास किया है जो निज़्नी नोवगोरोद और सोरमोवो में सन् १९ १–१९०२ में घटीं (सोरमोवो में पहली मई का प्रदर्शन और उसके सदस्यों के विरुद्ध अदालती कार्रवाई)। पावेल व्लासोव और उसकी माँ पेलागेया नीलोव्ना—उपन्यास के मुख्य पात्र सोरमोवो के प्रदर्शनकारियों (पीतर अन्द्रेयेविच जालोमोव और उसकी माँ अन्ना किरीलोव्ना) के बहुत निकट हैं। फिर भी गोर्की की कलात्मकता इन व्यक्तियों तथा घटनाओं के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध से सीमित न हुई। उसने क्रान्तिकारी युद्ध की व्यापकता का पूरा-पूरा चित्रण किया और नये क्रांतिकारी योद्धा बोल्शेविक की रचना की। रूसी मजदूर वर्ग के प्रगतिशील स्तर के साथ घनिष्ठ संबंध से गोर्की की कलात्मक शक्ति प्रदीप्त है। साथ ही जब गोर्की की क्रान्ति दृष्टि ने उसके उपन्यास के स्तर को ऊपर उठा दिया और वह इस आन्दोलन की मुख्य विशिष्टताओं को समझ सका और अंकित कर सका।

उपन्यास में मजदूर और क्रांतिकारी बुद्धिजीवी

इस समय का ज्वलन्त प्रश्न था मजदूर वर्ग का उत्पीड़कों के विरुद्ध आन्दोलन। 'माँ' उपन्यास मूल में इसी मूलभूत महत्वपूर्ण समस्या का पूरा-पूरा चित्रण कर रहा है। इसके पात्र दो शिविरों में बँटे हुए हैं—उत्पीड़क और उत्पीड़ित—जो एक-दूसरे के जानी दुश्मन हैं और जिनका वर्ग संघर्ष बराबर चल रहा है। एक शिविर में तो पूँजीपति हैं और उनके कारिन्दे जारशाही के न्यायालय, जारशाही की पुलिस तथा जासूस और उनके द्वारा धोखे में डाली गई जनता और दूसरी ओर हैं मजदूर, मार्क्सवाद का मजदूर वर्ग में प्रचार करनेवाले क्रांतिकारी नवयुवक, तथा मजदूरों के साथ संयुक्त किसान।

इन पात्रों के माध्यम से सामाजिक संघर्ष के वे महत्त्वपूर्ण प्रश्न अभिव्यक्त हुए हैं जिनको गोर्की ने अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है, और वर्ग संघर्ष के उस यथार्थ संबंध को प्रकट किया गया है जिसने कि इस समय सामाजिक संघर्ष की गतिविधि को निश्चित किया।

प्रत्येक पात्र का चित्र या चित्रांकन उपन्यास में विशिष्ट कार्य का सम्पादन कर रहा है। पावेल का पिता पुरानी पीढ़ी के मजदूरों का प्रतिनिधि है जिसको कि उत्पीड़न ने पूरी तरह पीस दिया है। उसमें शक्ति थी लेकिन जीवन के प्रति उमड़ते हुए अन्दर के विरोध के अभिव्यंजन का उसे कोई ठीक चेतन मार्ग न मिल सका और मदिरा पान, लड़ाई-झगड़ा तथा पत्नी पर व्यंग्य कटाक्ष उसका में अन्त होता है। पावेल की माँ भी पिता की तरह दलित और दबी है जो सबसे डरती है किन्तु जिसे क्रांतिकारी नवयुवकों के सम्पर्क ने आदमी बना दिया। उसने अब अपना रास्ता जान लिया और अब जीवन के प्रति उसका रुख निश्चित हो गया। पावेल नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है जो सरकार तथा पूँजीवाद के विरुद्ध चेतन रूप में खड़ा हो सका। रीबिन के रूप में क्रांति की ओर बढ़नेवाले किसानों की विशेषताएँ प्रकट की गयी हैं। क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों का मजदूर वर्ग के साथ जो संबंध था वह क्रांतिकारी आन्दोलन का महत्वपूर्ण पक्ष था और

उसका चित्रण साशा, नताशा, सोफ़िया आदि पात्रों के कार्यकलाप द्वारा किया गया है।

इस प्रकार यह उपन्यास मज़दूर आन्दोलन तथा क्रांतिकारी युद्ध के विभिन्न पक्षों को अंकित कर रहा है। इसमें आर्थिक संघर्ष, मज़दूरों की मण्डलियों के संगठन, प्रदर्शन, सेना से मुठभेड़, न्यायालय तथा गाँवों में क्रान्तिकारी प्रचार, संक्षेप में क्रान्तिकारी कार्य-कलाप के सभी पक्षों की विशिष्टताओं का चित्रण हुआ है।

माँ का अंकन

इस उपन्यास में माँ के चरित्र का विशेष महत्व है। इसका नाम भी 'माँ' है और यह मुख्यतया माँ के चरित्र के विकास का इतिहास है। इसके द्वारा उस मार्ग का अंकन हुआ है जिस पर चलकर लोग क्रांतिकारी बने। पावेल की माँ के चरित्र का यही महत्व है।

आरम्भ में पावेल की माँ पेलागेया नीलोव्ना व्लासोवा बड़ी दबी हुई डरी हुई और मौन अंकित की गयी है। वह अपने बारे में स्वयं कहती है कि "मैं क्यों जीवित रही—अपना-काम — पति के अतिरिक्त और कुछ भी न देखा, भय के सिवा और कुछ न जाना, मुझमें सब कुछ पिस गया, आत्मा मार डाली गयी, अन्धी हो गयी—कुछ नहीं सुनती।" भय का उसके जीवन पर शासन है। हर चीज का उत्तर वह आँसुओं से देती है और वह हर चीज को सहती रही। उपन्यास के आरम्भ में वह ऐसी ही अंकित की गयी है। किन्तु उसके साथ ही अलक्षित रूप से उसके अन्दर जीवन के प्रति असन्तोष धीरे-धीरे बढ़ता रहा, यद्यपि इसे वह अभी स्वयं नहीं समझ सकती। बाद में मज़दूर नवयुवक तथा क्रांतिकारी विचारों के सम्पर्क में आकर वह अपने को तथा अपनी स्थिति को समझ सकी और उसने उस असन्तोष को पहचाना जो कि अलक्षित रूप से उसके भीतर ही भीतर उमड़ रहा था।

धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन होता है। अचेतन से चेतन की ओर विकसित होनेवाले इस व्यापार या चरित्र-विकास को उपन्यास के बीच गोर्की बड़ी सूक्ष्मता से धीरे धीरे प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि

वह किस प्रकार इन नवयुवकों की बातचीत को समझने लगती है इस ज्ञान ने कर्म को जन्म दिया और अब वह क्रांतिकारी कार्य में अपने लड़के का हाथ बटाना शुरू करती है। इसलिए नहीं कि वह उसका बेटा है, वरन् इसलिए कि वह उस लक्ष्य को समझ रही है जिसके प्रति उसका लड़का प्रयत्नशील है और उसे अपने बेटे के इस कार्य से सहानुभूति है।

उपन्यास के अन्त में उसका रूप बिल्कुल दूसरा हो जाता है। अब वह सर्वथा निर्भीक है और बड़े धैर्य से आखिम कामों को पूरा करती है। भय पर—जिसका कि उसके जीवन पर पूरा आधिपत्य था—उसने अब सदा के लिए पूरी विजय पा ली और अब उसमें साहस का आगमन हुआ साहस जो कि युद्ध और विजय का आधार है। इसी से यद्यपि बाह्य रूप में क्रान्तिकारियों की पराजय के साथ उपन्यास की समाप्ति होती है, फिर भी पाठकों का उनकी आनेवाली विजय में पूर्ण विश्वास है क्योंकि ये क्रान्तिकारी निर्भीक है और आन्तरिक शक्ति तथा साहस से परिपूर्ण हैं। वे भय से आत्म-समर्पण नहीं कर देते। मां के चरित्र का यह परिवर्तन क्रान्तिकारी आन्दोलन की प्रगति तथा विकास की महत्वपूर्ण मंजिल का द्योतक है।

पावेल का चित्रांकन

पावेल के चरित्र का उपन्यास में अत्यधिक महत्व है। स्वाधीनता प्रेमी नायक की चरित्र-सृष्टि द्वारा गोर्की ने एक ओर तो साहित्य की क्लासिकल डिमोक्रेटिक या जनवादी परम्परा को आगे बढ़ाया और दूसरी ओर उसने नया वस्तु-तथ्य प्रदान किया जिससे कि पावेल का चरित्र सोवियत् साहित्य के नये पाठकों का पूर्वज या प्रवर्तक बना। पावेल के चरित्र का कलात्मक महत्व इस बात में है कि उसके अंकन में गोर्की ने बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के मजदूर क्रांतिकारी की सभी अच्छी विशिष्टताओं को प्रतिष्ठित किया और इसके साथ ही पावेल के अथक परिश्रम तथा दृढ़ इच्छा शक्ति को प्रदर्शित कर उसके व्यक्ति मार्ग के उदाहरण द्वारा अपनी यह भावना भी प्रकट की कि मजदूर क्रांतिकारी को कैसा होना चाहिए। पावेल में गोर्की के पूर्वांकित नायकों के चरित्रों

उसका चित्रण साशा, नताशा, सोफ़िया आदि पात्रों के कार्यकलाप द्वारा किया गया है।

इस प्रकार यह उपन्यास मज़दूर आन्दोलन तथा क्रांतिकारी युद्ध के विभिन्न पक्षों को अंकित कर रहा है। इसमें आर्थिक संघर्ष, मज़दूरों की गोष्ठियों के संगठन, प्रदर्शन, सेना से मुठभेड़, न्यायालय तथा गाँवों में क्रान्तिकारी प्रचार, संक्षेप में क्रान्तिकारी कार्य कलाप के सभी पक्षों की विशिष्टताओं का चित्रण हुआ है।

माँ का अंकन

इस उपन्यास में माँ के चरित्र का विशेष महत्त्व है। इसका नाम भी 'माँ' है और यह मुख्यतया माँ के चरित्र के विकास का इतिहास है। इसके द्वारा उस मार्ग का अंकन हुआ है जिस पर चलकर लोग क्रांतिकारी बने। पावेल की माँ के चरित्र का यही महत्त्व है।

आरम्भ में पावेल की माँ पेलागेया नीलोव्ना व्लासोवा बड़ी दबी हुई डरी हुई और मौन अंकित की गयी है। वह अपने बारे में स्वयं कहती है कि "मैं क्यों जीवित रही—झगड़ा—काम — पति के अतिरिक्त और कुछ भी न देखा, भय के सिवा और कुछ न जाना, मुझमें सब कुछ पिस गया, आत्मा मार डाली गयी, अंधी हो गई—कुछ नहीं सूझती।" भय का उसके जीवन पर शासन है। हर चीज़ का उत्तर वह आँसुओं से देती है और वह हर चीज़ को सहती रही। उपन्यास के आरम्भ में वह ऐसी ही अंकित की गयी है। किंतु उसके साथ ही अलक्षित रूप से उसके अन्दर जीवन के प्रति असंतोष धीरे-धीरे बढ़ता रहा, यद्यपि इसे वह अभी स्वयं नहीं समझ सकती। बाद में मज़दूर नवयुवक तथा क्रांतिकारी विचारों के सम्पर्क में आकर वह अपने को तथा अपनी स्थिति को समझ सकी और उसने उस असंतोष को पहचाना जो कि अलक्षित रूप से उसके भीतर ही भीतर उमड़ रहा था।

धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन होता है। अचेतन से चेतन की ओर विकसित होनेवाले इस व्यापार या चरित्र-विकास को उपन्यास के बीच गोर्की बड़ी सूक्ष्मता से पगे पगे प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि

वह किस प्रकार इन नवयुवकों की बातचीत को समझने लगती है, इस ज्ञान ने कर्म को जन्म दिया और अब वह क्रांतिकारी कार्य में अपने लड़के का हाथ बटाना शुरू करती है। इसलिए नहीं कि वह उसका बेटा है वरन् इसलिए कि वह उस लक्ष्य को समझ रही है जिसके प्रति उसका लड़का प्रयत्नशील है और उसे अपने बेटे के इस कार्य से सहानुभूति है।

उपन्यास के अन्त में उसका रूप बिलकुल दूसरा हो जाता है। अब वह सर्वथा निर्भीक है और बड़े धैर्य से जोखिम कार्यों को पूरा करती है। भय पर—जिसका कि उसके जीवन पर पूरा आधिपत्य था—उसने अब सदा के लिए पूरी विजय पा ली और अब उसमें साहस का आगमन हुआ साहस जो कि युद्ध और विजय का आधार है। इसी से यद्यपि बाह्य रूप से क्रान्तिकारियों की पराजय के साथ उपन्यास की समाप्ति होती है, फिर भी पाठकों का उनकी आगवाली विजय में पूर्ण विश्वास है क्योंकि ये क्रान्तिकारी निर्भीक हैं और आन्तरिक शक्ति तथा साहस से परिपूर्ण हैं। ये भय से आत्म-समर्पण नहीं कर देते। माँ के चरित्र का यह परिवर्तन क्रान्तिकारी आन्दोलन की प्रगति तथा विकास की महत्त्वपूर्ण मंज़िल का द्योतक है।

पावेल का चित्रांकन

पावेल के चरित्र का उपन्यास में अत्यधिक महत्त्व है। स्वाधीनता प्रेमी नायक की चरित्र-सृष्टि द्वारा गोर्की ने एक ओर तो साहित्य की क्लासिकल डिमोक्रेटिक या जनवादी परम्परा को आगे बढ़ाया और दूसरी ओर उसने नया वस्तु-तथ्य प्रदान किया जिससे कि पावेल का चरित्र सोवियत् साहित्य के नये नायकों का पूर्वज या प्रवर्तक बना। पावेल के चरित्र का कलात्मक महत्त्व इस बात में है कि उसके अंकन में गोर्की ने बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के मजदूर क्रांतिकारी की सभी अच्छी विशिष्टताओं को प्रतिष्ठित किया और इसके साथ ही पावेल के अथक परिश्रम तथा दृढ़ इच्छा शक्ति को प्रदर्शित कर उसके अस्ति मार्ग के उदाहरण द्वारा अपनी यह भावना भी प्रकट की कि मजदूर क्रांतिकारी को कैसा होना चाहिए। पावेल में गोर्की के पूर्वांकित नायकों के चरित्रों

का सम्मिश्रण है। यदि रोमांटिक कृतियों में गोर्की ने साहसी स्वतंत्रता प्रेमी नायकों (दांको सोकल) की सृष्टि की और यथार्थवादी कृतियों में प्रतिवाद तथा अत्याचार के विरुद्ध युद्ध-तत्परता की विशिष्टताओं (कलवालोव मटवाट बालक) को प्रदर्शित किया तो पावेल के रूप में उसने संघर्ष तथा युद्ध के उद्देश्यों का चेतन अंकन किया है। वह जानता-बूझता हुआ इस संघर्ष के महत्त्व तथा उद्देश्य को समझता हुआ इसमें प्रविष्ट होता है, और पूँजीवाद तथा अत्याचार के विरुद्ध लड़ता है। पावेल का चरित्र मुख्यतः निर्माणशील बोल्शेविक का चरित्र है। वह नवीन पीढ़ी का प्रतिनिधि है और उन वर्षों में बड़ा होता है जब कि रूस में मार्क्सवाद का क्रांतिकारी सिद्धान्त निर्मित हो चुका था और व्यापक मजदूर आन्दोलन शुरू हो गया था। इसी से उसका प्रतिवाद चेतन प्रतिवाद है। वह क्रांतिकारी संगठन का सदस्य है। स्वतंत्रता के युद्ध के बीच उसका ज्ञान विकसित होता है और दृढ़ होता है। अनेक घटनाओं के बीच गोर्की इसी उमड़ते हुए आत्मसम्मान की गतिविधि को प्रदर्शित करता है जिसकी परिणति प्रदर्शन तथा पुलिस से मुठभेड़ में होती है।

उपन्यास के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते पावेल अनुभवी क्रान्तिकारी नेता बन जाता है। उसमें इच्छा शक्ति है, दृढ़ता है और योग्यता है तथा उसमें मजदूर वर्ग की स्वाधीनता के महत्त्व की पूरी अभिव्यक्ति होती है। जनता और पार्टी के हितों की सेवा उसके चरित्र की मुख्य विशेषताएँ हैं और इन्हीं से उसका जीवन संचालित होता है। पावेल के रूप में गोर्की ने विश्व-साहित्य में पहली बार नया चरित्र अंकित किया : मजदूर-क्रान्तिकारी का चरित्र जिसमें मजदूर वर्ग की स्वाधीनता और युद्ध के आधार पर गुम्फित नव मनुष्य का नया सामाजिक आदर्श प्रतिष्ठित किया गया।

गोर्की ने इस उपन्यास पर कई वर्षों तक परिश्रम किया। अन्तिम रूप में प्रकाशित होने के पहले गोर्की ने उसका पाँच बार संशोधन किया। संभवतः उसने उन त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न किया जिसका निर्देश लंदन में लेनिन ने किया था।

गोर्की ने विशेष रूप से भाषा की ओर बहुत ध्यान दिया। मनुष्यों और घटनाओं का चुनाव करता हुआ गोर्की जीवन के समान ही उनका यथार्थ अंकन करता है और उन विशिष्टताओं से उनको अधिक चटकीला बनाता है जिनको वह महत्त्वपूर्ण समझता है और जिनके साथ उसकी सहानुभूति है। और इस प्रकार इन युक्तियों के द्वारा वह पाठकों की सहानुभूति को विशिष्ट पक्ष की ओर प्रेरित करता है। व्यक्ति की अपनी खास विशिष्टताओं का मार्मिक चुनाव गोर्की को व्यक्ति के सजीव अंकन में बड़ी सहायता देता है और पात्र के प्रति पाठक के भाव को निश्चित करता है। प्रत्येक पात्र की वाणी से उसके चरित्र स्थिति मानसिक विकास का पता चलता है। भाषा की सहायता से गोर्की पात्रों के आन्तरिक मानसिक विकास का सूक्ष्म संकेत देता है जिससे कि उनकी विभिन्न विशिष्टताओं का पता चलता है। भाषा का परिवर्तन इस उपन्यास में कृत्रिम नहीं प्रतीत होता। उपन्यास की घटनाओं के विकास के अनुरूप पात्रों के चरित्रांकन की विशिष्टताएँ बदलती जाती हैं और उनके साथ ही गोर्की इन चित्रों या पात्रों के भाषागत वैशिष्ट्य को बराबर बदलता रहता है जिससे कि चित्रण अपने को समृद्ध करता हुआ नयी-नयी विशेषताएँ प्राप्त करता रहता है और जीवन पर अपने विकास की छाप छोड़ता है। नीलोव्ना तथा पावेल के अंकन में गोर्की का भाषा-कौशल विशेष रूप से लक्षित होता है।

जारशाही सेंसर और उपन्यास

ऐसा उपन्यास जारशाही की नजरों से नहीं बच सकता था। सेंसर ने इसे अत्यधिक खतरनाक ठहराया और कहा कि यह समाजवादी विचारों के प्रति खुले रूप में सहानुभूति प्रकट करता है। वह संग्रह जिसमें कि यह उपन्यास छप रहा था उसकी सब प्रतियाँ जब्त कर ली गयीं टाइप तोड़-फोड़ डाले गये और स्वयं गोर्की को आठ वर्ष की कड़ी सजा देने का निर्णय हुआ यदि वह रूस में हो और यदि वह विदेश न चला गया हो। इस प्रकार यह पुस्तक अत्यन्त खंडित रूप में छप सकी। इसका पूरा प्रकाशन केवल अक्तूबर क्रांति के बाद ही हो सका।

समाजवादी यथार्थवाद

केवल सेंसर की ही इस पर कुदृष्टि नहीं थी वरन् इसकी उस समय के बुर्जुआ पक्ष के आलोचकों ने भी कटु आलोचना की। वास्तव में वे आलोचक इस उपन्यास के क्रान्तिकारी प्रचार की शक्ति से भयभीत हो गये थे।

यह उपन्यास सन् १९०७ में छपा था। यह समय १९०५ की क्रान्ति की पराजय के बाद का समय था जब प्रतिक्रियावादी शक्ति बहुत तीव्र हो गयी थी। सामाजिक जीवन और साहित्य में निराशावाद, पराजय और ह्रास की भावना थी। क्रान्ति की पराजय से लोग भयभीत हो गये थे। ऐसे निराशा के समय में उपन्यास का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण घटना थी जिसने कि लोगों में क्रान्ति की शक्ति भर दी। स्वयं गोर्की ने अपने उपन्यास का लक्ष्य बताते हुए कहा कि 'हमारा ध्येय जीवन की अनिष्टकारी शक्ति तथा अन्धकार का विरोध करने वाली आत्मा को सहारा देना है, गिरने से बचाना है'। इस कार्य को गोर्की ने पूरी तरह से सम्पन्न किया।

गोर्की की महत्ता इस बात में है कि उसने नये युग की समस्याओं को समझा और उनका पूरा-पूरा अभिव्यंजन किया। इस प्रकार उसने साहित्य में नये नायकों का समावेश किया और उनमें समाजवादी आदर्शों का प्रदर्शन किया। समाजवाद की भावना और मेहनतकशों के साथ सहानुभूति की अभिव्यक्ति ने गोर्की तथा इस उपन्यास को समाजवादी यथार्थवाद का अग्रदूत बना दिया। देश का उद्धार करनेवाला जनता का सेवक, समाजवाद के लिए लड़नेवाला, साहस, सहनशीलता और बलिदान की भावना से युक्त इस उपन्यास का नायक समाजवादी यथार्थवाद की विशेषता को ही प्रकट कर रहा है। इसके साथ ही अपने क्रान्तिकारी विकास के बीच जीवन का पूर्ण अभिव्यंजन समाजवादी यथार्थवाद की अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो इस उपन्यास में पूरी-पूरी प्रतिबिम्बित हो रही है। इसी कारण गोर्की सोवियत साहित्य और उसकी शैली या उपादान-समाजवादी यथार्थवाद-का संस्थापक कहलाया। अपनी शैली

लोक-दृष्टि के कारण वह अपने समकालीनों की अपेक्षा समकालीन घटनाओं से ऊपर उठ सका और उनकी अपेक्षा अधिक व्यापकता तथा गम्भीरता से उनका सामाजिक महत्व समझ सका। जीवन के नए विचारों की साहित्य से जो नई माँगें थीं उनको वह समझ सका और उनका सफल अभिव्यजन कर सका।

अपनी सर्जना में गोर्की के कैरियर की इस दूसरी अवस्था का बड़ा महत्व है। इस युग में उसकी महत्वपूर्ण कृतियाँ ('माँ' 'नितल तले पर' तथा अन्य) सामने आईं। युग के महत्वपूर्ण प्रश्नों को गोर्की की कृतियों में अभिव्यक्ति मिली और उसने रूसी समाज के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित किया—प्रोलितारियत् विभिन्न वर्गों में विभाजित बुद्धि जीवी रूसी बुर्जुआ की विभिन्न पीढ़ियाँ रूसी गाँव 'नितल तले पर', 'पहुँच हुए 'समाज के स्तंभ' 'आवारा' आदि।

प्रतिक्रिया के वर्षों में और प्रथम महायुद्ध के बीच गोर्की की सर्जना

सन् १९०५ की क्रान्ति की पराजय के बाद प्रतिक्रियावादी प्रबल हो गये और दमन बड़े वेग से चलने लगा। क्रांतिकारियों को कठोर दंड दिया गया। जेल भर गये और हजारों को फाँसी मिली। कम जमीन वाले किसानों की हालत और भी बिगड़ गयी और मजदूरों का काम करने का दिन दस या बारह घंटे का कर दिया गया। हड़ताल में भाग लेने वाले किसानों को 'काली फ़ेहरिस्त' में दर्ज कर दिया गया और उनको कहीं काम नहीं मिलता था।

बुद्धिजीवियों पर इसका यह प्रभाव पड़ा कि उनमें पराजय तथा ह्रास की प्रवृत्ति का जन्म हुआ और उनमें से बहुत से क्रान्ति से विमुख हो गये मार्क्सवाद की आलोचना फ़ैशन बन गया। बहुत से लेखक क्रान्ति की आलोचना करने लगे और उसकी हँसी उड़ाने लगे। यौन सबंधी आकर्षक चित्रण या शैली का चलन हुआ। दर्शन के क्षेत्र में मार्क्सवाद में संशोधन का जोर बढ़ा तथा सभी प्रकार की धार्मिक धाराएँ 'वैज्ञानिक' तर्क का जामा धारण किये हुये बहने लगीं। इन सब का उद्देश्य जनता को क्रान्ति के मार्ग से हटाना था।

दमन की चरम परिणति ४ अप्रैल १९१२ के गोलीकांड में हुई जिसमें पाँच सौ से अधिक व्यक्ति मारे गये या घायल हुये और जब इसका विरोध किया गया तो गृहमंत्री मकारोव ने कहा कि 'ऐसा ही हुआ और ऐसा ही होगा।"

किन्तु दमन का विरोध करनेवाले ऐसे लोग भी थे जो इस बात पर दृढ़ थे कि ऐसा न होने पायेगा। इस गोलीकांड के विरोध में पीतरबुर्ग में एक लाख व्यक्तियों से अधिक ने हड़ताल की। प्राग में (१९१२) का अखिल रूसी पार्टी सम्मेलन हुआ उसमें बोल्शेविकों और मेन्शेविकों के बीच एकता पैदा की और सारे देश में बोल्शेविकों के संगठनों को एक बोल्शेविक पार्टी में दृढ़ कर दिया।

मार्क्सवाद की आलोचनाओं के उत्तर के रूप में लेनिन की 'मार्क्सवाद तथा एम्पीरियो क्रिटिसिज़म' पुस्तक प्रकाशित हुई।

साहित्य में प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध मार्क्सवादी आलोचना

साहित्य में प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध लड़ाई छिड़ गयी। साहित्य में ह्रासवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध मार्क्सवादी आलोचकों ने जिहाद छेड़ दिया। रूस में मार्क्सवादी आलोचना की नींव प्लेखानोव द्वारा डाली गई। इसने साहित्य के विश्लेषण में मार्क्सवादी सिद्धान्तों के लागू करने का महत्त्वपूर्ण काम किया। प्लेखानोव की सबसे बड़ी देन इस बात में है कि उसने सामाजिक जीवन के साथ कला का जो घनिष्ठ संबंध है उसका पूरा-पूरा उद्घाटन और अधिष्ठापन कर दिया ('कला और सामाजिक जीवन')। इसके बाद वरोव्स्की (१८७२-१९०३) तथा अन्य लेखक आये। अपने लेखों में ('लड़ाई के बाद रात में' तथा अन्य) वरोव्स्की ने ह्रासवादी साहित्य के विरुद्ध युद्ध किया। इसमें उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। साहित्य संबंधी प्रश्नों पर लेनिन के प्रचालन द्वारा 'ज़्वेज़्दा' तथा 'प्राव्दा' पत्रों ने भी इस युद्ध में महत्त्वपूर्ण योग दिया।

मार्क्सवादी आलोचना के विकास में लेनिन के लेखों का मौलिक स्थान है। इन लेखों के द्वारा लेनिन ने साहित्य का मार्क्सवादी विश्लेषण

का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा सामाजिक जीवन के प्रतिबिम्ब रूप में साहित्य का जो वैज्ञानिक महत्व है उसका निरूपण किया। साहित्य का ऐतिहासिक वातावरण से जो संबंध है, लेखक के मूल्यांकन में जन-हित की दृष्टि या दृष्टिकोण की अनिवार्य आवश्यकता आदि के प्रश्नों पर भी लेनिन ने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये और सामान्य साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन के सिद्धान्तों को निर्धारित किया। अपने लेख 'पार्टी संगठन तथा पार्टी साहित्य' में लेनिन ने समाजवादी साहित्य के मूलभूत सिद्धान्तों की मौलिक स्थापना की और साहित्य में प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों के विरुद्ध युद्ध किया। यह लेख प्रतीकवादियों तथा अन्य प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध था।

प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध गोर्की

प्रतिक्रियावाद के इन वर्षों में गोर्की ने बोल्शेविक प्रेस का बड़ा साथ दिया और वह 'ज्वेज़्दा' तथा 'प्रस्वेश्चेनिए' पत्रों में बराबर लिखता रहा। सन् १९१२ में 'ज्वेज़्दा' में उसकी 'इटली की कथाएँ' प्रकाशित हुईं। १९०८ में अपने लेख 'व्यक्तित्व का नाश' में उसने उन लेखकों पर आक्षेप किया जिनमें प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियाँ लक्षित हो रही थीं। इस लेख में उसने बड़े ज़ोर के साथ देश-भक्ति का महत्व कला के मूलभूत आधार के रूप में प्रतिपादन किया और उसे क्लासिकल रूसी साहित्य की महत्वपूर्ण परम्परा बताया। प्रतिक्रियावादी लेखकों के संबंध में उसने कहा कि 'उनका साहित्य देश-भक्ति की भावना से शून्य है। सामाजिक समस्याएँ इनकी सर्जना को नहीं उद्बुद्ध करतीं। वह ऊँचाई से फिसल कर दैनिक जीवन की घटनाओं में फँस जाता है। वह संसार का दर्पण नहीं रह जाता वरन् सड़क की धूल में पड़ा हुआ काँच का छोटा सा टुकड़ा बन जाता है। अपने इस टूटे टुकड़े से वह संसार के विशाल जीवन को नहीं प्रतिबिम्बित कर पाता वरन् टूटी हुई आत्माओं के टुकड़ों को प्रतिबिम्बित करता है।[1]

---

[1] रस्कया सवेत्स्कया लितरातूरा ल० इ० तिमोफेयेव पृ० २०१।

वह कहता है कि "रूस में प्रत्येक लेखक एक दूसरे से बिल्कुल अलग था फिर भी उन सबको एक लक्ष्य और प्रयत्न ने एक बना दिया था और वह था देश का भविष्य जनता का भाग्य और संसार में जन्म-भूमि के स्थान को सोचने-समझने तथा अनुभव करने का अथक प्रयत्न।[1] वह यह कहते कभी नहीं थकता कि "कलाकार देश की सर्वोत्तम संतान भी और है।—देश के दुर्भाग्य के समय में देश की साहस से भरी आत्मा को अवश्य ही जगाना चाहिए।

अपनी इस समय की रचनाओं में गोर्की ने अपने इसी मूलभूत विचार की अभिव्यक्ति की है। १९०९ में गोर्की ने 'ग्रीष्म' कहानी लिखी। यह क्रान्तिकारी गाँव की कहानी है। गाँव का विषय इस समय बहुत प्रचलित था। बहुत से रूसी लेखकों ने गाँव की दरिद्रता दयनीयता आदि का चित्र खींचा है। किन्तु गोर्की की यह कहानी इनसे भिन्न है। इसमें केवल वही नहीं चित्रित किया गया है जो कि गाँव में था वरन् उस शक्ति की भी कल्पना की गयी है जो कि स्वतंत्रता प्राप्ति पर विकसित होगी। इसके विकास में पूँजीवाद और शासन बाधा स्वरूप हैं। अपनी रचना में गोर्की ने जनता की इन छिपी हुई किन्तु वास्तविक शक्तियों को उभारा है। रूसी गाँव के बारे में लिखी हुई रचनाओं में से केवल गोर्की की रचना 'ग्रीष्म' ऐसी रचना के रूप में सामने आई जिसमें लेखक क्रान्ति के पूर्व के गाँव की जीवन्त शक्ति की चर्चा करता है। कहानी का अन्त इन शब्दों से होता है 'महान रूसी जनता! तुम्हें शीघ्र ही आनेवाले वसन्त की बधाई।' इसकी नायिका मार्या रूसी नारी का चित्र है। रूसी गाँव में नया जीवन बनानेवाली स्पष्ट दृढ़ हँसमुख मार्या में रूसी नारी की परम्परा से प्राप्त अच्छी सभी विशेषताएँ हैं।

अकुरोव

सन् १९०९–१० में गोर्की की जनता में घनिष्ठता से सम्बन्धित दो रचनाएँ लिखी—'छोटा शहर अकुरोव' और 'मतवेय कोज्याकिन

---

1 रुस्कया सवेत्स्कया लितेरातूरा स० द० तिमोफ़ेयेव, पृ० १०१।

का जीवन'। इनमें गोर्की ने रूसी जीवन का दूसरा पक्ष दिखाया जिसमें संस्कृति से दूर, पिछड़े हुए, छोटे शहरों का जीवन चित्रित किया गया है। इसमें उन लोगों का आत्म-संतुष्ट जीवन चित्रित किया गया है जो संवेदनशील व्यक्तियों के हर प्रकार की सुन्दरता तथा सत्य के लिए किये गए प्रयत्न को दबा देते हैं। अकुरोव शहर का कवि सीमा देवुश्किन कहता है कि 'हमारे पीछे जंगल है, आगे दलदल श्रीमन्! हम पर कृपा करो हमारी जीने की इच्छा नहीं। इस शहर के लोग तड़पते हैं उनकी प्रतिभा और शक्ति के अभिव्यंजन के लिए कोई मार्ग नहीं है। अधिकार लिप्सा स्वार्थ प्रेम घृणा कठोरता की भावना से विषाक्त वातावरण के बीच गोर्की ऐसी वस्तु की खोज कर रहा है और ऐसी चीज पाता है जो कि ऐसे जीवन को बदल सकती है। उसका रूसी व्यक्ति में विश्वास है जो अपने मार्ग की सारी बाधाओं को दूर हटाने की शक्ति रखता है और वह जीवन के उस परिवर्तन को देख रहा है जो कि समीपवर्ती क्रान्ति को अकुरोव में भी ला रहा है। अकुरोव के नीरस जीवन का चित्र खींचते हुए गोर्की रूस के विकास का क्रम भी देख रहा है और उसके प्रकाश में उन शक्तियों को दिखा रहा है जो अकुरोव में प्रौढ़ हो रही हैं। इनमें सबसे प्रथम देश प्रेम है। अकुरोव में नये जीवन का संचार होता है, क्रान्तिकारी प्रकट होते हैं और जवानों की गोष्ठियाँ बनाई जाती हैं। 'माँ' उपन्यास तथा 'ग्रीष्म' कहानी के समान इसका वस्तु-विषय देश में नवजीवन का चित्रण ही है।

रूसी व्यक्तियों के संस्मरण

इन्हीं वर्षों में गोर्की उन महान रूसी व्यक्तियों का साहित्यिक चित्र प्रस्तुत करता है जिनसे कि वह अपने जीवन में मिला। इनमें करोलेंको, एंद्रेनिन चेखव ब्लाक, लियो तोल्स्ताय आदि लेखकों का मुख्य स्थान है। इन संस्मरणों को गोर्की ने कई वर्षों में लिखा और इनमें गोर्की की विचारात्मक कलापटुता प्रकट होती है। इन संस्मरणों में गोर्की ने विशेष रूप से यह दिखाने का प्रयत्न किया कि रूसी जातीय चरित्र की विशेषताएँ किस प्रकार उसके महान प्रतिनिधियों में प्रस्फुटित हुईं उनमें कितना

गहरा देश प्रेम था और उन्हें अपने देश तथा जाति पर कितना गर्व था।

प्रथम महायुद्ध और गोर्की

प्रथम महायुद्ध के पूर्व गोर्की रूस लौट आया। उसने 'लेतोपिस' पत्र की स्थापना की जो कि शासन-विरोधी पत्र था।

युद्ध छिड़ने पर प्रगतिशील पार्टी ने साम्राज्यवादी युद्ध की निंदा की और लोगों को विद्रोह करने तथा जारशाही को अपदस्थ करने को उत्तेजित किया। बोल्शेविक पार्टी ने क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीयता का पक्ष लिया और साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया।

इस समय क्रान्तिकारी छिप कर काम कर रहे थे मजदूरों का प्रेस बंद था तथा कानूनी रूप से युद्ध विरोधी प्रचार करना सम्भव न था। केवल 'लेतोपिस' कानूनी था जिसने कि साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया। प्रथम महायुद्ध के बीच गोर्की का प्रगतिशील रूप इसी से स्पष्ट हो जाता है। वह सदा अन्तर्राष्ट्रीयता तथा प्रजातन्त्रवाद का पक्षपाती रहा। साहित्यिक मोर्चे पर गोर्की युद्ध के वर्षों के बीच प्रगतिशील प्रोलितारियत् शक्ति का समर्थक बना रहा और उसकी आवाज सारे संसार के मेहनतकशों की आवाज बन गयी।

कलात्मक सर्जना के क्षेत्र में उसकी रचना 'लोगों के बीच' (१९१६) प्रकाशित हुई। यह उसकी आत्मकथा की दूसरी पुस्तक है।

रूस में अक्तूबर की महान क्रांति निकट आ रही थी। गोर्की की सर्जना का नया और अन्तिम युग शुरू हुआ।

गोर्की और बीसवीं शती के आरम्भ का साहित्यिक द्वन्द्व

अक्तूबर क्रान्ति के बाद की गोर्की की सर्जना के सम्बन्ध में कुछ कहने से पहले उस वातावरण का सिंहावलोकन अत्यावश्यक है जिसमें कि अक्तूबर क्रांति तक उसकी सर्जना विकसित हुई। इस युग के कठोर वर्ग संघर्ष ने साहित्य के क्षेत्र में सैद्धान्तिक संघर्ष को जन्म दिया। इस संघर्ष में गोर्की ने समाजवादी यथार्थवाद का पक्ष लिया जो अनेक विरोधी विचार धाराओं के बीच निर्मित हुआ।

बीसवीं शती के आरम्भ के बहुत से लेखकों ने गोर्की से प्रेरणा प्राप्त

थी क्योंकि गोर्की की रचनाओं में उनका युग द्वारा साहित्य के समक्ष प्रस्तावित समस्याओं का समाधान करनेवाले सर्जनात्मक सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति मिली। इसी से गोर्की उस समय के साहित्यिक जीवन का केन्द्र बन गया और उसके मित्र और शत्रु दोनों का ध्यान उसकी ओर गया और बहुत से लेखक उससे प्रभावित हुए। इसके साथ ही स्वतः जीवन ने भी ऐसी समस्याएँ लेखकों के सामने प्रस्तुत की थीं जैसी कि गोर्की ने रखी थीं और जीवन ने उनको उसी निष्कर्ष पर पहुँचाया जिस पर कि गोर्की पहुँचा था।

इसके साथ ही दूसरे लेखक भी थे जिनको प्रतिक्रियावादी कहा गया और यह कहा गया कि उनकी रचनाएँ जीवन का यथातथ्य अंकन नहीं करतीं और सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव डालती हैं। इन लेखकों के विरुद्ध गोर्की का साहित्यिक द्वन्द्व बराबर चलता रहा।

जिस प्रकार अन्य क्षत्रों में उसी प्रकार साहित्य के क्षत्र में भी अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व तीक्ष्ण सैद्धान्तिक युद्ध या संघर्ष चलता रहा।

क्रान्ति के आन्दोलन तथा राजनीतिक चेतना की व्यापकता ने मजदूर वर्ग के नौजवानों को कलात्मक क्षत्र में भी सर्जन-उत्पादन के लिए प्रेरित किया यद्यपि यह सर्जन परिपक्व न था। सन् अस्सी में मजदूर कवि निचाएव (१८५१-१९२५) अपनी रचनाएँ छपाने लगा। थोड़े समय बाद फे० स्कूल्योव (१८६८-१९३०) सामने आया। इसका गीत है "हम लुहार हैं और हमारी आत्मा जवान है।" कई पत्र भी निकले—जैसे प्रस्वेश्चेनिए (प्रकाशन) (१९११-१७) 'हमारा रास्ता' (१९१३) जिनमें मजदूर लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित हुईं। इन्हीं वर्षों में अ० माशिरोव—समोबीत फे० श्कुलोव एम० ल्यास्काव ने अपना साहित्यिक कार्य शुरू किया। १९१४ में गोर्की के सम्पादन में प्रोलितारियत लेखकों का संग्रह निकला जिसकी भूमिका में उसने लिखा कि 'जीवन की परिस्थितियों के अत्यन्त विषम होते हुए भी रूसी मेहनतकश अपने बुद्धिजीवी वर्ग का स्वतः निर्माण कर रहा है, अपनी शारीरिक शक्ति को मानसिक तथा आत्मिक शक्ति में विकसित कर रहा है—

मेरा विश्वास है कि प्रोलितारियत् स्वतः अपना कलात्मक साहित्य निर्मित कर सकता है।[1]

युवक श्रमिक लेखकों के विकास मे बोल्शेविक पत्र 'ज्वेज्दा' तथा 'प्राव्दा' का महत्त्वपूर्ण योग रहा है। ४०० से अधिक लेखकों ने इसमें लिखा। दो वर्षो मे (१९१२–१४) 'प्राव्दा' में हजार कलात्मक रचनाएँ और साहित्यिक टिप्पणियाँ छपीं।

इन युवक लेखकों ने साहित्य म नया जीवन्त सामग्री का समावेश किया। 'प्राव्दा' में छपी कविताओं के केवल शीर्षकों स यह स्पष्ट हो जायगा कि यद्यपि यह आरम्भ ही था फिर भी इस साहित्य ने जीवन के उस क्षत्र को प्रकाशित किया जो कि अभी तक साहित्य में अस्पष्ट था। इनके शीर्षक थे 'खान' 'छापाखाना' 'रात की बस्ती' 'खान में काम करनेवाले की मृत्यु' आदि। 'प्राव्दा' के हजारों पाठक थे। इसम इस पत्र में छपी कलात्मक रचनाओं का सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से बड़ा महत्त्व था।

---

[1] रुस्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा ल० इ० तिमोफयेव, पृ० १०८।

ए० एस० सिराफिमोविच

सिराफिमोविच का जीवन भी गोर्की के समान बड़ा कठिन था। उसका पिता जल्दी ही मर गया और परिवार दीन-हीन हो गया। परिवार की सहायता के लिए उसे तीसरे दर्जे से ही काम करना पड़ा। जिमनेजियम का स्कूल समाप्त करने के बाद वह पीतरबुर्ग यूनिवर्सिटी में पढ़ने आया। यहाँ उसकी लेनिन के बड़े भाई अलेक्सान्दर ईल्यिच उल्यानोव से भेंट हुई जिसे ज़ार अलेक्सान्दर तृतीय की हत्या के प्रयत्न के संबंध में फाँसी का दण्ड मिला। सिराफिमोविच ने क्रांतिकारी घोषणा पत्र लिखा जिसमें उसने इस हत्या प्रयत्न की व्याख्या की थी। घोषणा पत्र लिखने के कारण वह गिरफ्तार किया गया और तीन वर्ष के लिए दूर श्वेत समुद्र के तट पर मेजेन भेज दिया गया। वहाँ उसने लिखना शुरू किया और १८८८ में उसकी पहली कहानी छपी। १९०१ में उसका पहला संग्रह निकला। उस समय के प्रसिद्ध लेखकों ने इस पुस्तक की बड़ी प्रशंसा की। १९ ८ में मास्को आकर वह गोर्की के संग्रह 'ज्नानिये' के प्रकाशन में सहयोग देने लगा।

सिराफिमोविच ने अपनी रचनाओं में उस व्यक्ति का चित्र खींचा है जो कि जीवन की कठोर परिस्थितियों के नीचे दब जाता है और उसकी साँस घुट जाती है। 'स्विचमैन' कहानी में चालक रेल की पटरी पर दब कर मर जाता है और उसके परिवार को मुआवज़े के रूप में तीन रूबल दिये जाते हैं। 'सरगामी' कहानी में मज़दूर अपनी मरणासन्न पत्नी से मिलने के लिए बिना टिकट स्टीमर पर चढ़ जाता है। वह पकड़ लिया जाता है और अधिकारी दण्ड सज़ा के रूप में नियत स्थान पर नहीं उतरने देते और आगे ले जाते हैं। मज़दूर पानी में कूद पड़ता है और डूब जाता है।

सिराफिमोविच की इस प्रकार की बहुत सी कहानियाँ हैं जो किसानों

तथा मजदूरों की परिस्थिति का चित्रण करती है जिसमें उनकी निर्धनता निराशा तथा बेबसी के करुण चित्र खींचे गये हैं।

गोर्की के समान सिराफिमोविच भी इस बेचैनी और तड़पन का कारण ढूंढता है और इसका स्रोत उसे वही मिलता है जहाँ कि गोर्की को। इस सारी विषमता का मूल अधिक से अधिक धन इकट्ठा करने की इच्छा और प्रयत्न में है जिसने लोगों में जहर भर दिया और उनके मानवीय स्वभाव के विकास में बाधा डाली है। 'समुद्र' कहानी में समुद्र में दो मछुआ परिवारों का संघर्ष दिया गया है। दो भाइयों ने दूसरे परिवार के जाल से मछलियाँ चुराईं। दूसरे परिवार ने उनका पीछा किया। समुद्र में नावें डूब गईं। दो (प्रत्येक परिवार में से एक-एक) उलटी हुई नाव तक तैर कर आ जाते हैं। उनमें मानवीय भावना जगती है और वे एक दूसरे की मदद करते हैं। बातचीत के बीच एक दूसरे से पूछता है कि भाई के साथ उसने कितनी की मछलियाँ चुराईं? दूसरे ने जवाब दिया कि करीब छः सौ की। यह सुनकर वह उस पर झपटता है और दोनों डूब जाते हैं।

लड़की कहानी में माँ अपनी बेटी को कष्टमय जीवन से बचाने के लिए पन्द्रह हजार का अपना बीमा कराती है और मर जाती है। लड़की रुपया पाती है, शादी करती है और आराम से रहती है। लड़की के पति को यह शिकायत है कि माँ ने तीस हजार का बीमा क्यों नहीं कराया? माँ के बलिदान का यह परिणाम!

'पनचक्की' कहानी अपूर्व है। पनचक्की का बूढ़ा मालिक एक जवान काम करने वाली से अपने साथ शादी कर लेने को कहता है। वह शीघ्र ही मर जाएगा और पनचक्की उस औरत को मिल जायगी। वह राजी हो जाती है किन्तु बूढ़ा मरता नहीं। वह स्वयं बूढ़ी हो रही है। अन्त में वह बूढ़े को जहर दे देती है। अब वह एक जवान काम करने वाले से अपने साथ रहने को कहती है और पनचक्की की वसीयत उसके नाम करने का वायदा करती है। वह आदमी साल भर उसके साथ रहता है, फिर ऊब जाता है और कुल्हाड़ी लेकर उस पर झपटता है। वह

यह कहती हुई चिल्लाती है कि उसमें मसीयत कोई आती है। वह कुल्हाड़ी फेंक देता है। इसके बाद वह दोनों अच्छी तरह रहने लगते हैं।

अपनी कहानियों में सिराफिमोविच उस शक्ति की चर्चा करता है जो कि लोगों को इस तड़पन से बचा सकती है और आत्मा को कलुषित करनेवाली धन-संग्रह की भावना से मुक्त करती है। वह शक्ति क्रान्ति है। १९०५ की क्रान्ति से संबंधित कहानियों में लेखक इसी ('क्रान्ति') का उल्लेख करता है ('रात के बीच बम')।

१९०५ की क्रान्ति की पराजय के बाद के वर्षों में लिखे गये 'स्तेप का शहर' उपन्यास का बहुत बड़ा सामाजिक और राजनीतिक महत्त्व था। इसमें लेखक ने यह कहा कि मजदूर वर्ग खत्म नहीं हो गया और उसका दूसरा अभियान दूर नहीं है।

क्रान्ति के बाद सिराफिमोविच की सर्जना का विकास हुआ। १९२४ में उसकी कहानी 'लौह धार' प्रकाशित हुई जो सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण या क्लासिकल रचना बन गयी।

कृषक लेखक

किसानों में उत्तेजना था कि बीसवीं सदी के आरम्भ में सारे देश में भी मजदूर वर्ग का क्रान्तिकारी प्रभाव इन सबने किसानों की राजनीतिक चेतना में योग दिया और साहित्य में कृषक स्वर व उसका का आविर्भाव हुआ।

गाँव की सामाजिक विषमता उत्पीड़न गरीबी असंस्कृति नशाखोरी इन सबने किसान लेखकों पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि उन्होंने सत्य पर पर्दा नहीं डाला वरन् जीवन की उस व्यथा और तड़पन का चित्रण किया जिसे किसान सह रहे हैं। उनकी सर्जना प्राकृतिक रूप से यथार्थ और क्रान्तिकारी थी—किसी गम्भीर चिन्तन का परिणाम न थी। उनके लिए यही पर्याप्त था कि वह अपने जीवन के बारे में कह सकें कि पाठक यह समझने लगे कि आगे इस तरह जीना असम्भव है—और ऐसे जीवन को खत्म करना है। कभी-कभी इनके चित्र व्यापक नहीं

होते थे। इनके यथार्थवाद में गहराई नहीं होती थी और यह अपनी सामग्री में परमावश्यक का चयन नहीं कर पाते थे और उनमें अभिव्यंजकता कम थी फिर भी उनका कृतित्व प्रकृतिवाद (नेचुरलिज्म) से हटकर यथार्थवाद की ओर उन्मुख था। अपने मूल रूप में यह सर्जना युग के आधारभूत प्रश्नों की ओर संकेत कर रही थी जीवन के सत्य से रंजित थी और उन्हीं क्रांतिकारी निष्कर्षों की ओर आ रही थी जहाँ कि गोर्की पहुँच चुका था।

इन किसान लेखकों में एम० पवियायेव (१८६६–१९३४) का अच्छा स्थान है। उसकी रचनाएं (मजदूरों के बीच' 'मास्को के मजदूर के घर में मजमर) क्रांति के पूर्व के गाँवों के जीवन का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती हैं। वे यथार्थ जीवन से लिखित हैं। झोपड़ी में उसने कैसे अपनी पुस्तक 'मजदूरों के बीच' लिखी इस बारे में उसने स्वयं लिखा है— मेरे पीछे बछड़ा जम गया और मेरी कमीज चबाने लगा। चूल्हे पर लेटा हुआ मैं छोटे से लैम्प के प्रकाश में लिखता था और कभी रोता था। क्रांति के बाद भी यह लेखक लिखता रहा। उसकी आत्मकथा 'मेरा जीवन' कलात्मक रचना के रूप में प्रकट हुई जिसमें उसने अपनी जीवन गतिविधि के बारे में विस्तार के साथ लिखा है।

म एम० नेवेरोवा की गाँवों की कहानियाँ (१८८६–१९२३) पवियायेव और वस्लाव की कथावस्तु के समान हैं (अवदोतिन का जीवन 'बाबा इवान')। किन्तु इस लेखिका के पास अपनी विषय-वस्तु भी है— गाँव के बुद्धिजीवी विशेषतया शिक्षक आदि का जीवन। उसमें क्रांति के पूर्व के गाँवों के अनिश्चित जीवन की कथा है। इसकी रचनाओं का अधिकांश क्रांति के बाद के समय में संकलित है और गाँव में 'गृह युद्ध' का चित्रण करता (अथवा हम 'मार्वोबोलमाचिका' 'ताशकंद') है। नेवेरोवा ने इनमें यह चित्रित किया है कि गाँव किस प्रकार अपने नये जीवन का निर्माण शुरू करते हैं।

वे० वेरेसायेव

वे वेरेसायेव (१८६७–१९४५) दूसरे रास्ते से यथार्थवाद की ओर

पहुँचा। उसकी पहली कृति का नाम ही अत्यन्त सांकेतिक है—'बिना रास्ते के'। इसमें उसने सन् नब्बे के रूसी बुद्धिजीवियों के विचार संघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया है। सन् १८९६ की पीतरबुर्ग के बुनकरों की हड़ताल ने उस पर बड़ा प्रभाव डाला और वह क्रांति की ओर उन्मुख हुआ। इस समय से वह क्रांति की ओर बढ़ते हुए बुद्धिजीवियों के विचार और उनकी हिचकिचाहट का लेखक बन गया।

क्रान्ति के बाद वेरेसायेव ने पुश्किन पर पुस्तक लिखी और वह प्राचीन कवियों का अनुवादक बना।

प्रगीत मुक्तक में यथार्थवाद

प्रबंध-काव्य या कथा-काव्य में गीत—मुक्तक की अपेक्षा यथार्थ का अंकन सरल है क्योंकि उसकी कथावस्तु पात्रों का व्यापक चित्रण करती है और उसमें यथार्थ वास्तविकता के अभिव्यंजन की पूरी-पूरी सम्भावना है। प्रगीत मुक्तकों की स्थिति जटिल और सूक्ष्म है क्योंकि न उसमें कोई कथावस्तु होती है और न उसमें व्यापकता से चित्रित चरित्र चित्रण। फिर प्रगीत—मुक्तक का लेखक यथार्थ जीवन का चित्र कैसे प्रस्तुत करे।

प्रगीत-मुक्तकों में जीवन का अंकन सीधा-सीधा नहीं होता वरन् अनुभूतियों के माध्यम से होता है और इन अनुभूतियों के द्वारा हम उस व्यक्ति की कल्पना करते हैं या उस व्यक्ति का चित्र सामने आता है जो कि इनका अनुभव कर रहा है। फलतः प्रगीत मुक्तक हममें एक निश्चित प्रकार के व्यक्ति की कल्पना उद्बुद्ध करते हैं जिसकी अनुभूतियाँ जीवन के निश्चित वातावरण द्वारा प्रभावित और अभिव्यक्त हुई हैं। इस प्रकार हमारे सामने एक निश्चित प्रकार का भाव—मुक्तक काव्य का नायक-आता है या विशिष्ट ऐतिहासिक युग में स्थित कवि की भावना और ऐतिहासिक वातावरण की अभिव्यक्ति है। और चूँकि ये कवि भिन्न-भिन्न कवियों द्वारा निर्मित होते हैं और उन भिन्न-भिन्न युगों का अंकन करते हैं इसलिए उनकी विशेषताएँ भी भिन्न होती हैं एक भी नहीं होती।

यथार्थवाद का निर्धारण करते हुए एंगल्स ने कहा है कि यह सामान्य वातावरण या परिस्थिति में सामान्य पात्र या मनोवृत्ति का चित्रण है। इसलिए कहा जा सकता है कि यथार्थवादी प्रगीत मुक्तक जीवन द्वारा उद्बुद्ध और आकृत मानवीय अनुभूतियों के माध्यम से उसकी (जीवन की) सामान्य विशिष्टताओं के बीच जीवन का सच्चा प्रतिबिम्ब

प्रस्तुत करता है। इस प्रकार सामान्य परिस्थितियों के बीच सामान्य अनुभूतियों का चित्रण करते हुए प्रगीत मुक्तक जीवन का वास्तविक प्रतिबिम्ब प्रस्तुत कर सकता है। इन्हीं अनुभूतियों के अनुरूप हम निश्चित ऐतिहासिक वातावरण या परिस्थिति के बीच व्यक्ति या पात्र की कल्पना करते हैं। जितनी ही गहराई और व्यापकता से इनका चित्रण होती है उतनी ही महत्त्वपूर्ण उसकी रचना होती है।

प्रत्येक कवि की रचना अपने युग से घनिष्ठता से संबंधित है। इसी प्रकार सोवियत संघ में नयी ऐतिहासिक परिस्थितियों के बीच प्रगीत मुक्तक ने नया रूप प्राप्त कर लिया। उसमें ऐसी अनुभूतियों का चित्रण होता है जिसमें बड़े आवेग के साथ सोवियत नागरिक का अपने देश के साथ ऐक्य प्रस्तुत किया जाता है। इसमें समाजवादी देश में रहनेवाले समाजवादी व्यक्ति की अनुभूतियों का यथार्थवादी अंकन हुआ है। इसे समाजवादी मुक्तक काव्य कहा जा सकता है।

समाजवादी मुक्तक काव्य की रचना में मायाकोव्स्की अक्तूबर क्रांति के पहले से ही प्रवृत्त था।

मायाकोव्स्की पर गोर्की का प्रभाव

गद्य के क्षेत्र में गोर्की सर्वथा के नये सिद्धान्त और रूप पहले ही स्थिर कर चुका था। उसने नये व्यक्तियों या पात्रों का साहित्य में समावेश किया और क्रान्ति का रूप प्रस्तुत किया जिसकी पृष्ठभूमि में बीसवीं शती के आरम्भ की सामाजिक विकास की गतिविधि स्पष्ट हो गयी। उसने पुरानी व्यवस्था की बुराइयों का चित्रण किया और क्रान्ति द्वारा उसके हटाने की अनिवार्यता बताई और देश प्रेमी वीर, साहसी तथा शक्तिशाली नायक की सृष्टि की। काव्य के क्षेत्र में इस नये आदर्श की स्थापना की आवश्यकता अभी तक बनी हुई थी। काव्य के क्षेत्र में यह काम मायाकोव्स्की द्वारा हुआ।

बीसवीं शती के आरम्भ में रूसी काव्य में प्रतीकवाद का प्राबल्य था। यह धारा यथार्थवाद की विरोधिनी थी और व्यक्तिवादिता को

बढ़ावा देती थी। संसार की वास्तविकता से हटाकर यह कवियों को स्वप्न के संसार की ओर ले जाती थी जिसका वास्तविकता से कोई संबंध न था। इस धारा के बहुत से लोगों ने गोर्की की कटु आलोचना की।

रूसी प्रतीकवादी धारा के श्रेष्ठ कवि—ब्लाक तथा ब्रूसोव—प्राचीन व्यवस्था का निराकरण करते हुए और आनेवाली क्रांति की चर्चा करते हुए भी क्रांतिकारी आरम्भ के प्रवर्तक उन नये लोगों के विशिष्ट तथ्यों को ठीक-ठीक हृदयंगम न कर सके जिनके बिना युग का वास्तविक यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करना असम्भव था। यह काम मायाकोव्स्की ने किया। नवीन समाजवादी प्रगीति मुक्तक की सृष्टि मायाकोव्स्की द्वारा हुई जिसने कि काव्य के क्षेत्र में सर्जना के नये सिद्धान्त स्थापित किए।

व्लादीमिर मायाकोव्स्की तीन बार (१९०८ १ १०) जेल गया और जेल में बैठ कर उसने इस बात का अनुभव किया कि नवीन विषय वस्तु की अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन साहित्यिक रूपों को हटाना आवश्यक है। उसने कहा कि आनेवाली क्रान्ति की भावना दृढ़ करेगा। वह इसलिए वस्तु विषय के संबंध में क्रांति के संबंध में विचार कर रहा है, प्रश्न प्रस्तुत कर रहा है?

गोर्की युवक मायकोव्स्की का प्रिय लेखक था। क्रांतिकारी आन्दोलन तथा बोल्शेविक पार्टी के संबंध से मायाकोव्स्की क्रान्ति की निकटता का अनुभव कर सका और गोर्की के विचारों तथा भावों को ग्रहण कर सका।

गोर्की का मायाकोव्स्की की ओर उन्मुख होना आकस्मिक न था। मायाकोव्स्की के साहित्यिक आरम्भ से ही वह उसकी ओर बड़ा ध्यान देता रहा। सन् १९१५ में जब मायाकोव्स्की पर बुर्जुआ आलोचना ने आक्रमण करना शुरू किया तो गोर्की मायाकोव्स्की की रक्षा के लिए आगे बढ़ा। १९१५ में मायाकोव्स्की गोर्की से मिला और उसे अपनी रचना

('पतलून में बादल') सुनाई। गोर्की ने मायाकोव्स्की को अपने पत्र 'लैटोपिस' में सहयोगी के रूप में रख लिया। १९१६ में गोर्की की सहायता से मायाकोव्स्की की कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ और १९१८ में उसकी बड़ी कविता 'युद्ध और शांति' छपी।

गोर्की मायाकोव्स्की की ओर इसलिए आकृष्ट हुआ क्योंकि उसकी पैनी दृष्टि ने मायाकोव्स्की की प्रतिभा को पहचान लिया था और उसे मायाकोव्स्की में उस डिमाक्रेटिक रोमांटिक कवि का रूप मिला जिसकी वह प्रतीक्षा में था। गोर्की ने कहा था कि 'रूस को महान् कवि की आवश्यकता है। पुश्किन की तरह महान कवि चाहिए। डिमोक्रेटिक रोमांटिक कवि आवश्यक है। इसी से जब अपनी सर्जना के पहले युग में मायाकोव्स्की फ्यूचरिस्ट[1] (भविष्यवादी) कहे जाने वाले कलाकारों और कवियों (बुरल्यक भाई, रव्लेबनिकाव आदि) की रूपवादी या फ़ार्मलिस्ट भावनाओं और रूपों की ओर आकृष्ट हुआ और उसका क्रांतिकारी

---

[1]भविष्यवाद—'फ़्यूचरिज़्म'—वह काव्य धारा थी जिसने प्रथम महायुद्ध के पूर्व कुछ वर्ष योरोप और रूस में बड़ी व्यापकता प्राप्त की। फ़्यूचरिस्ट काव्य में नये मूल्य बनाना चाहते थे और सर्जना के नये रूप प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे। नाम एक होते हुए भी पाश्चात्य योरोप (विशेष रूप से इटली में व्यापक) और रूस के फ़्यूचरिज़्म में बड़ा भेद था। पश्चिम में फ़्यूचरिज़्म ने बुर्जुआ नवयुवकों की उग्र साम्राज्यवादी भावना को प्रकट किया। इसने युद्ध की सराहना की, मशीनवाद की घोषणा की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के प्रति घृणा प्रकट की और कला के रूपवादी सिद्धान्त को आगे बढ़ाया, इसके मूल में उग्र बुर्जुआ व्यक्तिवादिता थी। १९०९ में पेरिस में प्रकाशित अपने मैनिफ़ेस्टो में इतालीय फ़्यूचरिस्टों के नेता मैरिनेती ने लिखा "हम युद्ध का सम्मान करना चाहते हैं—जो कि संसार की सफ़ाई है—और महिलाओं के प्रति घृणा की प्रशंसा करना चाहते हैं। पुस्तकालयों को जला दो। पानी की धार को नहरों से इधर मोड़ दो जिससे कि संग्रहालयों के भवन पानी में डूब

बाजार कुछ धूमिल पड़ गया उस समय भी गोर्की आश्वस्त बना रहा क्योंकि जीवन के प्रति मायाकोव्स्की का जो क्रांतिकारी रुख था उससे वह भली भांति परिचित था। इसी से उसने लिखा कि ठीक बात तो यह है कि कोई 'फ्यूचरिज्म' (भविष्यवाद) नहीं है। है केवल कवि व्लादीमिर मायाकोव्स्की—बड़ा कवि।"

मायाकोव्स्की के आरम्भिक विचार

मायाकोव्स्की का साहित्यिक कार्यकलाप १९०७ में शुरू हुआ। उसका कहना है कि जेल में बैठे हुए उसने कविता की पूरी कापी लिख डाली किंतु वह कापी उससे छीन ली गयी और खो गयी।

उसकी पहली कविताएं 'फ्यूचरिस्टों के समूह' (सामाजिक रुचि को थप्पड़) में छपीं। १९१२ से १९१७ तक क्रांति के पहले उसकी कई महत्वपूर्ण कृतियां सामने आईं—'पतलून में बादल' (१९१५) 'आदमी या मनुष्य' (१९१६) 'युद्ध और शान्ति' (१९१६)।

और प्रसिद्ध नगरों को मिट्टी में मिला दी।" यह एक प्रकार से धमकाते हुए फ़ासिज्म की ही घोषणा थी, स्वयं इसका नेता मैरिनेती प्रधान फ़ासिस्ट कार्यकर्ता बन गया था और स्तालिनग्राद घेरने वाले इतालवी सैनिकों के बीच वह १९४२ में स्वयं मौजूद था।

अपनी आरम्भिक कविताओं में मायाकोव्स्की यद्यपि 'फ्यूचरिज्म' की ओर झुका फिर भी वह आरम्भ से ही अपनी रचना में जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाता है और उसकी कृतियों में मानवतावादी विषय-वस्तु मनुष्य की तड़पन की गूंज-सुनाई देती है। मायाकोव्स्की मानता है कि मनुष्य की इस तड़पन का सारा अपराध इस 'पीले कीड़े कबेल या सिक्के पर है। मायाकोव्स्की की उत्पीड़क और उत्पीड़ित की इस भावना में गोर्की का स्वर स्पष्ट है।

गोर्की के समान ही मायाकोव्स्की की आरम्भिक रचनाओं में सामाजिक विषमताओं से विभाजित संसार का यथार्थवादी चित्र उसके विरुद्ध किए गए क्रांतिकारी रोमांटिक विरोध और प्रतिवाद के साथ घुल मिल जाता है। इससे गोर्की के साथ मायाकोव्स्की का आन्तरिक विकास निर्धारित हुआ है इसका अर्थ मायाकोव्स्की की मौलिकता का निराकरण

के प्रति असंतोष था किन्तु उसकी ठीक-ठीक अभिव्यक्ति उनकी शक्ति के बाहर की चीज थी और वे वास्तविकता के विरुद्ध युद्ध करने में असमर्थ थे। इसी से जीवन के प्रति विद्रोह उन्होंने व्यंग्य और समकालीन संस्कृति के निराकरण के रूप में प्रकट किया।

जीवन की अपूर्णता या अपर्याप्तता के विरुद्ध जो प्रतिवाद इन फ्यूचरिस्टों ने किया वह बुर्जुआ व्यक्तिवादिता के रूप में था। इसी से यद्यपि वह बाहरी रूप में बुर्जुआ स्तर के विरुद्ध आक्रमण था फिर भी मूलतः वे इसी के प्रतिनिधि बने रहे।

इन फ्यूचरिस्टों ने जो कुछ लिखा वह 'फार्मलिज़्म', रूपवाद ही था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि फ्यूचरिज्म में ज़ारशाही रूस के विरुद्ध प्रतिवाद ध्वनित हो रहा था, किन्तु यह प्रतिवाद केवल नकारात्मक था और उनके पास कोई ऐसी योजना न थी जिसे कि उस व्यवस्था का स्थानापन्न बना सकते जिसका कि वे मज़ाक उड़ाते थे। इस प्रकार रूसी फ्यूचरिज्म केवल बुद्धिजीवी कलाकारों के एक हिस्से का विद्रोह था जो प्रधान सामाजिक आन्दोलन की धारा से अलग था।

अव्याप्ति नहीं है। मायाकोव्स्की की रचनाओं में मनुष्य की बचपन का करुण विषय विशेष रूप से विकसित हुआ और सामान्य रोमांटिक रंगों या व्याख्या के बीच क्रान्ति का विषय प्रस्तुत किया गया। किन्तु उनमें क्रांति का वह ठोस रूप नहीं है जो कि गोर्की की खास विशेषता है। यह केवल व्यक्तिगत विभिन्नता है और इससे उस सामान्य निष्कर्ष में कोई अन्तर नहीं पड़ता कि उस व्यापक साहित्यिक आन्दोलन में जिसका अगुआ गोर्की था मायाकोव्स्की का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

बीसवीं शताब्दी का आलोचनात्मक यथार्थवाद

बीसवीं शती के आरम्भ में साहित्यिक विकास का चित्र प्रस्तुत करने के लिए, आलोचनात्मक यथार्थवाद की परंपरा से सबद्ध लेखकों के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय अत्यावश्यक है।

आपस में मतों न होते हुए भी यथार्थवादी लेखक जो गोर्की के निकट थे उन्होंने अपनी कृतियों में जीवन के मूलभूत प्रश्नों को उठाया और युग की मूलभूत विषमताओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। इसी में उनके यथार्थवाद की नयी क्रान्तिकारी विशेषता थी।

बीसवीं शती में जब स्वतः जीवन ने नये क्रान्तिकारी योद्धा नायक के सृष्टि-चित्र की उपयुक्त सामग्री प्रस्तुत की। ऐसे सृष्टि-चित्र के बिना भी जीवन के आलोचनात्मक चित्रण का महत्त्व बना ही रहता किन्तु तब वह जीवन की मुख्य समस्याओं को न छू सकता और न उनको प्रस्तुत ही कर सकता। वह अप्रधान प्रश्नों तथा असम्बद्ध एकांगी चित्रण से सीमित हो जाता। वह निस्सन्देह सच्चा चित्रण प्रस्तुत करता किन्तु लेखक के दृष्टिकोण की संकीर्णता या अनुदारता चित्रण में व्यापकता न आने देती। यथार्थवाद अब पूर्ण को न ग्रहण कर बीच ही में रास्ते में रुक गया था और विवरण तथा व्यक्तिगत चित्रण की कला में परिवर्तित हो गया था। इस प्रकार आलोचनात्मक यथार्थवाद व्यापकता खोकर अत्यन्त संकुचित हो गया था। यह एक प्रकार से संकुचित यथार्थवाद था जो बाहर से तो उन्नीसवीं शती के आलोचनात्मक यथार्थवाद के निकट था किन्तु वास्तव में उससे दूर हट गया था क्योंकि नयी परिस्थितियों में उसकी पुनरावृत्ति ने उसे हीन और संकुचित बना दिया।

ई० बूनिन अ० कुप्रिन एल० अन्द्रेयेव इस संकुचित आलोचनात्मक यथार्थवाद के प्रसिद्ध प्रतिनिधि हैं। अपनी प्रतिभा तथा भाषागत कौशल के कारण इन लेखकों का बीसवीं शती के आरम्भ के साहित्य में महत्त्वपूर्ण

स्थान था। गोर्की बूनिन की प्रतिभा पर मुग्ध था। एक समय इन लेखकों ने गोर्की के साथ सहयोग किया किन्तु उनका साहित्य में जो कार्यकलाप था उसके कारण मार्क्सवादी आलोचक उनको महत्वपूर्ण स्थान नहीं देते। सोवियत आलोचकों का कहना है कि सर्जना में सबसे प्रधान है जीवन की महत्वपूर्ण बात की चर्चा करना और यह चीज़ इन लेखकों में बहुत कम है। ये लेखक बहुत अच्छा चित्रण करते हैं किन्तु गौण बातों का। गोर्की ने अपने कार्यकलाप के आरम्भ में लिखा था कि हमारे चारों ओर जीवन उफन रहा है। नयी चेतना जग रही है नयी समस्याएं सामने आ रही हैं नया व्यक्ति उठ रहा है। यह नया व्यक्ति पाठक है जो हमसे जीवन के मूलभूत प्रश्नों का उत्तर माँग रहा है। यह जानना चाहता है कि सत्य कहाँ है। न्याय कहाँ है कहाँ दोस्तों को ढूंढना चाहिए और कौन दुश्मन है। आलोचनात्मक यथार्थवाद के प्रतिनिधियों ने इन प्रश्नों के बारे में पाठकों से कुछ न कहा। वे क्रान्ति को न समझ सके और न उन नये लोगों को समझ सके जिनको जीवन प्रस्तुत कर रहा था। वे अपनी ही विषय-वस्तुओं में व्यस्त हैं जो कि उनसे अच्छे परिचित हैं। उनकी कृतियों में युग का अंकन नहीं मिलता। उनकी सर्जना पूर्ण विकास न प्राप्त कर सकी क्योंकि उनकी मान्यताएं उनके व्यक्तिवाद और प्रतिक्रियावादी लोक दृष्टि से संबद्ध हैं तथा क्रान्तिकारी आंदोलन और बीसवीं सदी के संघर्षपूर्ण रूसी जीवन से उनके विच्छिन्न रहने के कारण हैं। गोर्की ने इन आलोचनात्मक यथार्थवादी लेखकों की कटु आलोचना की और उस आलोचना का अभिप्राय यही था कि देश के भाग्य और भविष्य से इन लेखकों को कोई दिलचस्पी नहीं है।

ई० ए० बूनिन

बूनिन (जन्म सन् १८७०) आलोचनात्मक यथार्थवाद का सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधि है। अक्तूबर क्रान्ति के बाद बूनिन रूस छोड़कर विदेश चला गया। विदेश में रहते हुए उसने कुछ महत्वपूर्ण न लिखा और यह इस बात का सबूत है कि देश से नाता टूट जाने पर लेखक की सर्जना का किस प्रकार ह्रास होता है। उसका दृष्टिकोण उसके विचारों तथा

सामाजिक स्थिति में बहुत संकुचित हो गया था। यह जमींदारी या सामन्तवादी संस्कृति से घनिष्ट रूप से संबंधित था और इसी से उस संक्रान्ति का ठीक से न समझ सका जिसके भार से जमींदार दबे जा रहे थे।

अपनी कहानी 'अन्तोनोव्का सेब' में वह जमींदारों के फार्म को उस संसार के समान बताता है जो निर्जन हो गया है जो खत्म चुका है और यह रूप नष्ट हो रहा है जिसके बारे में आज से पचास वर्ष बाद केवल हमारी कहानियों से ही जाना जा सकेगा। दूसरी कहानी 'सूखी घाटी' में वह इसके बारे में बड़े आवेश के साथ कहता है— पचास साल में जमीन के ऊपर से ऊँचे वर्ग का निशान मिट गया।[1]

जमींदारी या सामन्तवादी जीवन के नाश के चित्र ने बूनिन की दृष्टि में उसको बोझिल कर दिया जो कि वास्तव में खत्म हो रहा था और छिन्न-भिन्न हो रहा था। इसी से उसकी रचना में उदासी का रंग है और निराशा तथा अकेलेपन का भाव है। उसके प्रगीत मुक्तकों का नायक भी निराशा और दुःख से भरा हुआ है। वह लिखता है "मैं एकाकी सदा रहता।" यह एकाकीपन का भाव उसके प्रगीत मुक्तकों का मुख्य भाव है।

बूनिन अपनी तड़पन और व्यथा का बड़ा स्पष्ट और जोरदार चित्र खींचता है किन्तु उसमें बड़ी बात यह है कि बूनिन नये जीवन की इस समृद्धि को नहीं समझ पाता जो कि उसके चारों ओर उमड़ रही है। नये संसार की बेचैनी उसके संघर्ष उसके विचार और उसके जोश और खुशी का अभिव्यंजन उसके प्रगीत मुक्तक का नायक न कर सका। यही उसकी सबसे बड़ी कमी है।

अ० ई० कुप्रिन

अपनी सार्वजनिक विशेषताओं में कुप्रिन (१८७०–१९३७) बूनिन के निकट है। अपनी कहानियों में कुप्रिन ने अपने चारों ओर की यथार्थता का अंकन किया। बादशाही फौज का जीवन (द्वन्द्व युद्ध उप-

१ रुस्स्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा स० इ० तिमोफ़ेयेव पृ० १२२।

थे उनमें अ० तोल्स्तोय, एस० सर्गेयेवत्सेंस्की एम० प्रीशविन आदि हैं। अपने देश के साथ आगे बढ़ते हुए क्रान्ति के बाद इन लेखकों ने महत्वपूर्ण रचनाएं प्रस्तुत कीं जिनकी विषय-वस्तु यथार्थवाद से ओत प्रोत थी।

साहित्य में ह्रास की प्रवृत्तियाँ

उन्नीसवीं शती के अन्त में पनपनेवाली सामाजिक विषमताओं की तीव्रता ने जीवन में भी तीव्र सैद्धान्तिक युद्ध छेड़ दिया। एक ही प्रकार की सामाजिक प्रवृत्तियों की व्याख्या लेखकों की अपनी सामाजिक तथा सैद्धान्तिक स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की हुई। बढ़ती हुई क्रांति ने डिमाक्रेटिक या जनवादी लेखकों को क्रान्ति की ही विषय-वस्तु से संयुक्त नये यथार्थवाद को अपनाने में सहायता की। इसके साथ ही यह भी हुआ कि कुछ लेखक जो यथार्थवादी तो थे किन्तु जो समय की नयी मांगों को अपनी सर्जना में स्थान न दे सके वे जीवन से दूर चले गये और गौण तथा अप्रधान पक्षों की व्यंजना में लग गये। किन्तु ऐसे लेखक भी थे जो बढ़ते गए सामाजिक संघर्ष से भयभीत हो गये। वे केवल जीवन के यथार्थ चित्रण से विरत ही न हुए वरन् उन्होंने यथार्थवाद की कटु आलोचना की और कलात्मक रचना के लिए दूसरे रास्तों की खोज की मांग की।

१९०५ की क्रान्ति के बाद बुर्जुआ सामन्ती रूस की कला और साहित्य में विषमता की अवस्था प्रकट हुई जो सन् १९१७ तक बनी रही। इस साहित्य ने जिसमें कि बुर्जुआ वर्ग का ऐतिहासिक अन्त प्रकट रहा था यथार्थवादी परम्पराओं को ठुकरा दिया और उन्हें स्वीकार नहीं किया। इस नवीनधारा का नाम 'डिकाडेन्टवाद' या ह्रासवाद (फ्रान्सीसी शब्द 'डिकाडेन्टइज्म) या 'माडर्निज्म' (माडर्न-नवीन) नवीनतावाद पड़ा। 'डिकाडेन्ट' शब्द (या ह्रासवाद) अत्यन्त प्रचलित था क्योंकि इस धारा के प्रतिनिधियों ने जिन विचारों को आगे बढ़ाया वे सामान्य साहित्य की दृष्टि से इतने दूर या अलग थे कि वे संस्कृति के ह्रास की साक्षी रूप गर्जना के परिणाम प्रतीत होते थे। बाद में इस कारण कि यह धारा

कलात्मक सर्जना में प्रतीकों के महत्त्व और उपयोग पर बड़ा जोर दिया था इसे प्रतीकवाद कहा जाने लगा।

इसके सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति के मूल में बुर्जुआ सामन्तवादी ह्रासमयी विचारधारा थी। प्रतीकवाद की एक विशेषता यूरोप के लेखकों और सब प्रकार के पश्चिमी मतवादों के सामने सिर झुकाना था। इसमें पक्षपाती कला के क्षेत्र में 'कास्मोपालिटनिज़्म' के नाम पर देश भक्ति-विरोधी और पश्चिम की गुलामी का भाव भर रहे थे। रूसी साहित्य की स्वस्थ आशावादी परम्पराओं से अलग हट जाने के कारण ही प्रतीकवादियों में देशप्रेम के भाव का ह्रास हुआ।

प्रतीकवाद की मुख्य विशेषताएं थीं चरम कोटि की व्यक्तिवादिता सामाजिक जीवन से संबंध विच्छेद जो 'कला कला के लिए' सिद्धान्त में प्रकट हुआ सामान्य रूप से वास्तविकता का अस्वीकार तथा यथार्थता के विरुद्ध लेखक के अपने स्वप्न या कल्पना के संसार की प्रस्थापना। ये स्वप्न ऐसे नहीं थे जो जीवन की उस नयी शक्ति को देख लेते हों कि जीवन का पुनर्निर्माण करती है वरन् किसी दूसरे अलौकिक संसार के विचार या स्वप्न थे जो इस संसार के दुख-दर्द से असंपृक्त थे। प्रतीकवाद के मूल में एक प्रकार का द्वैत है—दो प्रकार के संसार की कल्पना लौकिक संसार और दैवी संसार। लौकिक संसार इस दैवी संसार का प्रवेश द्वार है। इस रहस्यवादी धार्मिक आधार ने प्रतीकवादियों के रोमांटिक रूप-रंग को निश्चित किया। यह रोमांटिसिज़्म प्रतिक्रियावादी था जिसने साहित्य को महत्त्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं से दूर हटा दिया और अलौकिक रूप में यह कहा कि महत्त्वपूर्ण बात जीवन को बदलने के लिए संघर्ष करना नहीं है वरन् उस दैवी नश्वर संसार की आशा लगाए बैठे रहना है जिसका स्पर्श ही मधुर है और तब तक चाहे इस पृथ्वी पर जीवन कितना ही गर्हित क्यों न रहे।

प्रतीकवादियों के दृष्टिकोण से कला का कार्य भौतिक संसार की अभिव्यक्ति के बीच रहस्यवादी दैवी संसार की झलक देखना है और इस झलक को पाठक के सामने प्रस्तुत करना है। उन्होंने प्रतीक को 'अनन्त

का द्वारोद्घाटन' और अज्ञात की सामयिकता में प्रकाश' बताया अर्थात् जीवन का ऐसा अभिव्यंजन जिसमें लेखक द्वारा प्रस्तुत भौतिक संसार का अभिव्यंजन जीवन में छिपे हुए और दैवी आरम्भ के बारे में सोचने को बाध्य करता है।

रूसी प्रतीकवाद के विकास में पश्चिमी योरोपीय प्रभाव के अतिरिक्त रूसी दार्शनिक रहस्यवादी और कवि व्लादीमिर सलोव्येव (१८५३–१९००) का भी बहुत बड़ा हाथ था। उसकी कविताओं में संसार की दोहरी–द्वैतपूर्ण–प्रकृति की विषय-वस्तु अंकित थी जिसे कि प्रतीकवादियों ने ग्रहण कर लिया। वास्तविकता की अभिव्यक्ति स्वयं अपने में प्रतीकवादियों के लिए दिलचस्प या रुचिकर न थी वरन् वह इसलिए थी कि वह इनको उसके पीछे छिपी हुई रहस्यपूर्ण झलक को देखने का अवसर देती थी जिसे कि केवल कवि ही देख सकता था या समझ सकता था।

प्रतीकवादियों ने यथार्थवादी गोर्की-साहित्य की कटु आलोचना की। उनके पत्र 'तराजू' में लेनिन के लेख 'पार्टी संगठन और पार्टी साहित्य' की भी बड़ी तीव्र आलोचना हुई। इससे उनका क्रान्ति विरोधी पक्ष स्पष्ट हो गया।

बीसवीं शती के दूसरे दशक के आरम्भ में एक और प्रतिक्रियावादी धारा भी प्रकट हुई—'अक्मेइज्म' (गुमिल्योव, अख्मातोवा आदि)। प्रतीकवादियों के समान इस धारा के कवि भी रूसी साहित्य की देश-भक्ति की परंपरा से दूर हटे हुए थे और उन्होंने व्यक्ति पर जोर दिया। कला को उन्होंने 'आनन्दपूर्ण दस्तकारी' बताया और अप्रिय वास्तविकता से बचने के लिए अपनी तुच्छ नगण्य व्यक्तिगत अनुभूति में शरण का भी प्रयत्न किया।

प्रतीकवाद के विरुद्ध

मार्क्सवादी आलोचना और विशेष रूप से गोर्की ने प्रतीकवाद के विरुद्ध जमकर संघर्ष किया। गोर्की को प्रतीकवाद में हानिकारक असामाजिक प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ी जिनके विरुद्ध लड़ना अनिवार्य था। उसने उस समय के रूसी बुर्जुआ साहित्य का वर्णन इन शब्दों में किया है—

सन् १९०७–१९१७ तक का समय उत्तरदायित्वहीन विचारों की पूर्ण स्वेच्छाचारिता का समय था और साहित्यकारों की सर्जना की स्वतन्त्रता से परिपूर्ण था। इस स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति सामान्यतया सभी प्रकार के पश्चिमी प्रतिक्रियावादी बुर्जुआई विचारों के प्रचार में प्रकट हुयी। सामान्यतया १९०७–१९१७ का दशक रूसी बुद्धिजीवियों के इतिहास का अत्यन्त लज्जाजनक दशक है। १

इस प्रकार बीसवीं शती की अक्तूबर क्रान्ति के पहले तक के साहित्य पर गार्की की छाप और छाया है। वह समाजवादी साहित्य के नवीन कलात्मक साधन—समाजवादी यथार्थवाद—का आधार निर्मित कर रहा है और वह उन सबके विरुद्ध संघर्ष कर रहा है जो इस साहित्य के विरुद्ध हैं और जीवन के सत्य को विकृत कर रहे हैं। उससे प्रेरणा पाकर बहुत से लेखक इस संघर्ष के सत्य और साधन—'क्रान्ति' के निकट आए। इस सामाजिक यथार्थवाद का जन्म और विकास प्रतिक्रियावादी धाराओं के विरुद्ध संघर्ष लेखकों का क्रान्तिकारी नवनिर्माण—इन सबका सोवियत साहित्य के विकास में बड़ा महत्व रहा है और इन सब में गार्की का बड़ा योग रहा है।

इन वर्षों में साहित्य के सामने सर्वथा नयी समस्याएं थीं। नायक अब ऐसे मनुष्य को होना चाहिए जो कि युद्धशील हो जो मनुष्य के सुख के लिए उन सबके विरुद्ध युद्ध का आह्वान कर सके जो अत्याचारी हैं और उसी प्रकार देश प्रेम का क्रान्तिकारी देश प्रम होना चाहिए जो सोवियतारि यत को हार तथा पूँजीवाद से मुक्ति दिलानेवाले स्वाधीनता-युद्ध का सम्मारम्भ कर सके। इसी प्रकार वह यथार्थवाद का अनुपालन उसकी गत्यात्मकता के बीच करे, उसका दिग्दर्शन क्रान्ति के प्रकाश में हो।

इस प्रकार समाजवादी यथार्थवाद का विकास और इसका उन सबसे संघर्ष जो कि समाजवादी आदर्श के विकास में बाधा डाल रहे हैं— यह उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं शती के आरम्भ के साहित्यिक

१—यू० एस० एस० आर० लिटरेचर, एल० ई० टिमोफेयेव, पृ० १२७।

जीवन का मूलभूत स्वरूप है। इसी में उस युग के साहित्यिक विकास का मूल विचार अभिव्यक्त हुआ यद्यपि बाद में रूस में अन्य विचारधाराएं बहुत थीं और उनके प्रचारक भी संख्या में बहुत थे।

इस प्रकार बीसवीं सदी के आरम्भ में सोवियत समाजवादी साहित्य की नींव डालनेवाले लेखक सामने आते हैं। जिनका नेता और संचालक मैक्सिम गोर्की है।

गोर्की की रचना सोवियत साहित्य के विकास के मूलभूत प्रश्नों को समझाने की कुंजी है।

अक्तूबर क्रान्ति के बाद गोर्की की सर्जना

अक्तूबर क्रान्ति के बाद समाजवादी कला के विकास में गोर्की का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उसके अनुभव, कलात्मक प्रगल्भ शक्ति तथा उसके सर्जनात्मक कार्यकलाप ने सोवियत लेखकों को बहुत प्रभावित किया और उन्हें बड़ी प्रेरणा दी। उसकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि १९१८ से १९५१ के बीच उसकी कृतियों के १८२५ संस्करण निकले और सोवियत संघ (तथा विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में) की प्राय ७१ भाषाओं में अनुवाद हुआ तथा बहुत से शहरों, संस्थाओं आदि के नाम गोर्की के नाम पर रखे गये।

क्रान्ति के बाद गोर्की की सर्जना ने विशेष रूप प्राप्त किया। उसमें एक प्रकार का समन्वय हुआ। वह एक बार फिर अपनी मूलभूत विषय वस्तुओं और विषयों की ओर जाता है जिससे कि वह उनको पूर्ण तथा समन्वित रूप में अंकित कर सके। इस प्रकार वह ऐसी कृति प्रस्तुत करता है जिसमें वह पूर्णता के साथ पूंजीवाद की विषय-वस्तु का उद्घाटन करता है (आरतामोनोवों का व्यापार या काम)। 'क्लिम समगिन का जीवन' में रूसी बुद्धिजीवियों का भाग्य, क्रान्ति के पूर्व के चालीस वर्षों का कलात्मक इतिहास और मजदूर वर्ग के नेता का चित्र है। 'मेरे विश्वविद्यालय' या यूनिवर्सिटियों के रूप में उसने आत्मकथा की अपनी त्रयी पूर्ण की।

१९२४ में उसने लेनिन के संबंध में अपना संस्मरण प्रकाशित किया। साहित्यिक संस्मरणों के बीच इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। लेनिन का

अंकन गोर्की ने बड़ी सूक्ष्मता और गहराई से किया और कई वर्षों के बीच इसकी रचना की। संस्मरणात्मक साहित्य में इसका विशेष स्थान है और सोवियत साहित्य की यह एक अनुपम कृति मानी जाती है। इसमें क्रान्ति के नेता लेनिन का व्यक्ति तथा राष्ट्रीय नायक के रूप में उसकी विशिष्टताओं का बड़ा वास्तविक तथा सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

'आरतमोनोवों का व्यापार या काम'

१९२५ में गोर्की का नया उपन्यास 'आरतमोनोवों का व्यापार या काम' प्रकाशित हुआ। जिसमें एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों का इतिहास प्रस्तुत किया गया और इस रूप में रूसी बुर्जुआ के पूर्ण ह्रास की संक्षिप्त कथा प्रस्तुत की गयी। गोर्की ने एक ही परिवार के सौ वर्षों की कथा लिखने की अपनी इच्छा लेनिन के सामने प्रकट की थी। इसी प्रकार तोल्स्तोय से भी उसने कहा था कि वह एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों को जानता है जहाँ ह्रास या अध:पतन के नियम ने बड़ी बेदर्दी से अपना काम किया है। इन दोनों ने गोर्की का समर्थन किया और उससे ऐसा उपन्यास लिखने को कहा। यह उपन्यास गोर्की के इसी विचार और इच्छा का परिणाम है।

इस उपन्यास में गोर्की ने पूँजीवाद की समस्या को उसकी पूर्णता के साथ प्रस्तुत किया और उसकी मानवतावादी आलोचना की। पूँजीवादी समाज में मानवीय व्यक्तित्व कैसे विकसित हो सकता है? यह प्रश्न गोर्की की कृतियों में कई बार उठाया जा चुका है। किन्तु इस उपन्यास में वह इस प्रश्न पर विचार केवल मानवीय जीवन की एक घटना के आधार पर (जैसे कि 'ओक्लरूत में') नहीं करता था या एक व्यक्ति के जीवन का निरीक्षण करते हुए (जैसे फ़ोमा गोर्देयेव में) नहीं करता वरन् कई पीढ़ियों के विकास के बीच इसका दिग्दर्शन कराता है कि परिवार के संस्थापक बाबा से लेकर पोते तक के पूँजीवादी समाज के बीच व्यक्तित्व का कैसा विकास होता है। इसमें गोर्की उत्पीड़ितों के बारे में इतना नहीं कहता क्योंकि वह तो स्पष्ट ही है वरन् यह दिखाता है कि दूसरों के उत्पीड़क स्वयं किस प्रकार अध:पतन या ह्रास के शिकार हो रहे हैं। किस प्रकार

उसके व्यक्तित्व का अधःपतन हो रहा है और अब वे सच्चे अर्थ में मनुष्य नहीं रह गये हैं। उनका 'काम' या पूँजीवादी 'व्यापार' अब उनका मालिक बन गया है। वास्तव में वे व्यापार का संचालन नहीं कर रहे हैं वरन् व्यापार अब उन पर हावी है और उन्हें मनुष्यता से दूर अधःपतन की ओर ढकेले लिये जा रहा है। इसमें गार्की प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार मनुष्य अपनी महानता खो बैठता है और धीरे धीरे दूसरों की मेहनत पर जीवित रहने के कारण परिश्रम और प्रयत्न की आदत छूट जाने के कारण विकास की अपनी शक्ति खो बैठता है। स्वयं परिश्रम न कर सकने के कारण उसका विकास रुक जाता है क्योंकि विकास परिश्रम में ही परिश्रम के माध्यम से ही होता है।

परिश्रम की भावना

गार्की की दृष्टि में परिश्रम ही सब कुछ है। जीवन में जो कुछ मूल्यवान है, जो कुछ सुन्दर है जो कुछ महान् है उस सब का निर्माता परिश्रम ही है। मनुष्य को उदात्त बनाने वाला और संसार को बदल देनेवाला यह परिश्रम ही मूल रूप में उसकी भावना में पुष्पित है। ऐसे परिश्रम से विरत होने पर मनुष्य खोखला हो जाता है जीवन की यथार्थ भावना खो बैठता है और उसका ह्रास हो जाता है। यही इस उपन्यास का मुख्य स्वर है। और इससे अनिवार्य रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि क्रान्ति मनुष्य तथा परिश्रम को मुक्त करती है और तब परिश्रम वर्ग गुलामी की निशानी न होकर सर्जना का रूप धारण करता है पृथ्वी की सजावट तथा मनुष्य के उपयुक्त जीवन के संगठन का कारण बनता है।

परिश्रम की यह मौलिक भावना इस उपन्यास के वस्तु विन्यास के उद्घाटन की कुंजी है। वंश के संस्थापक ईल्या का जीवन कठोर परिश्रम का है। उसमें सर्जनात्मक शक्ति है और दृढ़ इच्छा है। इतनी उम्र तक वह परिश्रम से विरत न हुआ। इस परिश्रम ने उसके चरित्र को कई मूल्यवान् विशिष्टताएँ दीं और उसने अपने परिश्रम से जीवन में अपना स्थान बना लिया। किन्तु पूँजीवादी समाज का ऐसा संगठन है कि एक की बढ़ती या उन्नति का मतलब है दूसरों का उत्पीड़न दूसरों को

अपने आधीन बनाना, दूसरों को गुलाम बनाना। उसकी जो विशिष्टताएं हैं उनका उपयोग वह अपने स्वार्थ तथा जनता के उत्पीड़न के लिए करता है। वह इसलिए जनता के लिए अभिशाप बन जाता है क्योंकि उसकी योग्यता का प्रयोग जनता के विरुद्ध होता है।

धीरे-धीरे उसका धंधा बढ़ता है और वह दूसरों को नौकर रखता है किन्तु उसके जीवन के सर्जनात्मक आधार—परिश्रम से संबंध टूट जाता है और उसकी आत्मा इस धंधे की गुलाम बन जाती है, वह पराये परिश्रम पर जीवित रहता है और उसकी इन्सानियत नष्ट हो जाती है।

दूसरी पीढ़ी

फिर भी उसमें थोड़ी इन्सानियत बची रहती है। लेकिन उसके बच्चों पर उसके धंधे या कारबार का कुप्रभाव पड़ता है और उनकी आत्मा खोखली हो जाती है। आरम्भ में इन लड़कों में थोड़ी बहुत मानवता है क्योंकि आरम्भ में उनका भी कठोर जीवन बीता और जनता से उनका संबंध बना रहा। किन्तु धंधा बढ़ने के साथ-साथ ये गुण शिथिल और दुर्बल हो जाते हैं। उपन्यास के आरम्भ में ये कोमल और सरल व्यक्ति हैं किन्तु बाद में इनका चरित्र गिरने लगता है। पीतर का चरित्र धूमिल होने लगता है। उसकी पत्नी नतालया का भी यही हाल होता है। जब वह हाथ में काम लेती है तो उसका कोमल चेहरा कठोर हो जाता है और उसके ओंठ भिंच जाते हैं। इसी प्रकार पीतर ऊबता है, शराब पीने लगता है और खोखला हो जाता है। यही हाल अलेक्सेई और निकीता का भी है। उनकी मानवीयता समाप्त हो जाती है और धंधे को छोड़ कर वे और कुछ नहीं सोच पाते। उपन्यास के आरम्भ में यही लोग बड़े सरल और कोमल थे। इस प्रकार अपने जीवन के अन्त तक आरतमोनोवों के परिवार की दूसरी पीढ़ी का ह्रास हो जाता है।

तीसरी पीढ़ी

तीसरी पीढ़ी का तो आरम्भ ही ह्रास के बीच होता है। पीतर और नतालया के जीवन के आरम्भ में तो कम से कम कुछ था किन्तु इनके बच्चे तो आरम्भ से ही खोखले हैं। इल्या, तातियाना, याकोव आदि में कुछ

नहीं है। अरतमोनोवों का वंश समाप्त हो गया। तीन पीढ़ियों के धंधे ने इन लोगों की सहज प्रतिभा मानवीयता को चूस लिया जो कि उनको जनता के बीच रहने से प्राप्त हुई थी। आरम्भ में वे जनता के ही व्यक्ति थे और जनता के सभी गुण उनमें थे। बाद में धनी होने पर उनका यह संपर्क टूट गया और धीरे-धीरे उनकी गुण-विशेषताएं नष्ट हो गयीं और यह परिवार किसी के लिए आवश्यक न रह गया और नष्ट हो गया। उपन्यास इसी का वर्णन है और यही इस उपन्यास का मुख्य भाव है। इसका यह भी मुख्य संदेश और भाव है कि पूंजीवाद का नाश अनिवार्य है क्योंकि यह मनुष्य को मनुष्यता से गिरा देता है।

इससे यह न समझना चाहिए कि मनुष्य का ह्रास अवश्यम्भावी और अनिवार्य है। वह अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा इस धंधेबाज वातावरण के विरुद्ध क्रान्ति कर, क्रान्ति की शक्ति द्वारा इस घेरे से निकल सकता है। अपने प्रयत्नों द्वारा इस धंधे पर विजय प्राप्त की जा सकती है किन्तु इसके लिए इससे अपने को अलग करना आवश्यक है। पीटर, नतालया आदि दुर्बल व्यक्ति थे इसलिए वे इसकी धारा में बह गये और उन्होंने अपनी मानवीयता का धंधा किया।

किन्तु नन्हा ईल्या इस घेरे को तोड़ डालता है। जनता से जा मिलता है और स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेता है। इस प्रकार नन्हा ईल्या के रूप में गोर्की यह प्रदर्शित करना चाहता है कि बुर्जुआ वातावरण में पला हुआ व्यक्ति भी अपने को विकसित कर सकता है। किन्तु इसके लिए उसमें त्याग और दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिए। उसे अपने घेरे को त्याग कर बाहर आना पड़ेगा। पीटर का दूसरा लड़का ईल्या गोर्की के इसी विचार को प्रकट करता है कि बुर्जुआ वर्ग के श्रेष्ठ लोग असमर्थता-हीनता के कारण अपने वर्ग का नाश अनिवार्य समझकर इससे बाहर चले आते हैं और पूर्ण मानव बनने का अवसर पाते हैं। ईल्या ने वह किया जो कभी तरीमेव न कर सका और यह उसकी व्यक्तिगत विशिष्टता और दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रमाण है क्योंकि वह परिवार, परिस्थिति व्यक्तिगत संबंध संस्कार आदि के विरुद्ध होते हुए भी जनता से मिल जाता है।

तीखन व्याखोव

तीखन के माध्यम से गोर्की ने धंधे के प्रति जनता के संशय को प्रकट किया है। वह किसान है और हर परिस्थिति में किसान बना रहता है और इस धंधे का कभी समर्थन नहीं करता वह जनता की आत्मा के रूप में प्रकट हुआ है। वह सदा इस परिवार के साथ रहता है और इसके कार्य कलापों का मूल्यांकन करता रहता है। वह प्रत्येक महत्त्वपूर्ण घटना के समय प्रकट हो जाता है और उपन्यास में जो भी घटनाएं घटती हैं उनकी मीमांसा करता है।

पूरा उपन्यास पूँजीवादी व्यवस्था की आलोचना है। विषय-वस्तु में इस उपन्यास से मूल रूप में साथ साम्य रखनेवाले गोर्की के दो नाटक 'ईगर बुलिच्याव' तथा 'दस्तिगायव' और दूसरे' हैं जिन्हें गोर्की ने १९३२–३३ में लिखा।

क्लिमसमगिन

१९२० में गोर्की ने अपनी सबसे बड़ी कृति 'क्लिमसमगिन का जीवन' (चालीस वर्ष) प्रकाशित करना शुरू किया। उसने इसे कथा (पोवेस्त) कहा किन्तु इसके चार भाग हैं और गोर्की इसे पूर्ण न कर सका। इसमें बहुत से वर्षों की कथा है और समकालीन आलोचना इसको 'एपाम' कहती है और इस महाकाव्य का गद्यात्मक साहित्यिक रूप मानती है।

गोर्की ने रूस के सामाजिक विकास के चालीस वर्षों का जीवन (१८७० के अन्त से १९१७ तक) चित्रित करना चाहा और उसको उसकी पूर्णता तथा विविधता के साथ अंकित करना चाहा। इसे रूसी जीवन की एनसाइक्लोपीडिया कहा जा सकता है। इसमें देश की महत्त्व-पूर्ण मंजिलें और घटनाएं प्रदर्शित की गयी हैं। १९०५ की क्रान्ति प्रथम महायुद्ध लेनिन का १९१७ में पेत्रोग्राद में आगमन इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं शती के आरम्भ के विचारों का संघर्ष प्रदर्शित किया गया है। यह कथा 'क्रानिकिल' के रूप में है और पात्रों तथा घटनाओं का सिलस का विकास एकता प्रदान करता है।

गोर्की एक समय अपनी इस कथा को 'खोखली आत्मा का इतिहास' कहना चाहता था और वास्तव में क्लिम का चित्रण बुर्जुआई खोखली आत्मा का इतिहास है, जिसे केवल अपने से ही प्रेम है। यह उसी ह्रास का परिणाम है कि जिसे गोर्की 'अरतमोनोवों के काम में' प्रदर्शित म प्रदर्शित कर चुका है। भेद इतना ही है कि अरतमोनोव मिल्कियत वाले आदमी हैं और क्लिम सम्गिन बुद्धिजीवियों का प्रतिनिधि है, वकील है और शासक वर्ग की सेवा करता हुआ खोखला हो जाता है। उसका जीवन में अपना कोई उद्देश्य नहीं है। वह क्रान्तिकारियों से संबंधित है फिर भी उनसे घृणा करता है। वह लेनिन से भी घृणा करता है। लेनिन के आगमन के साथ उसकी मृत्यु हो जाती है। लेनिन के स्वागत में उमड़ती हुई भीड़ में वह मर जाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि क्रान्ति ने वह सब नष्ट कर दिया जो मनुष्य को ह्रास की ओर ले जा रहा था, जो उसके रास्ते में बाधास्वरूप था और जो जर्जर प्राचीन को बनाए रखना चाहता था। क्लिम के चित्रण के मूल में वह संघर्ष है जो कि मनुष्य के विकास को रोकता है।

गोर्की केवल ह्रासात्मक चित्रण से ही संतुष्ट नहीं होता वरन् उस शक्ति का चित्रण भी करता है जो मनुष्य का उद्धार करने वाली है और वह है उमड़ती हुई क्रान्ति की शक्ति। इसमें उन पात्रों का भी चित्रण हुआ है, जो नयी क्रान्ति के नायक हैं और जो नयी शक्ति और वैशिष्ट्य के प्रतीक हैं। कुतुज़ोव ऐसा ही पात्र और प्रतीक है। उसके व्यक्तित्व का विकास क्रान्ति के पथ में होता है और उसी से उसकी प्रतिभा प्रस्फुटित होती है और पूर्ण विकास प्राप्त करती है। वह क्रान्ति का अनुभवी नेता है और क्रान्ति की ओर दृढ़ विश्वास के साथ बिना किसी हिचकिचाहट के अग्रसर होता है।

निकट आती हुई क्रान्ति की भावना इस कथा का मूल आधार है जो इस पूरी रचना और उसकी सर्वथा विभिन्न घटनाओं और पात्रों को एकता प्रदान करती है।

'क्लिम सम्गिन का जीवन' यह वृहत् सामाजिक ऐतिहासिक गद्य

महाकाव्य है, 'एपोस' है जिसमें उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं के आरम्भ के रूसी जीवन के विकास की विभिन्न मंज़िलें—विचार संघर्ष, घटनाएँ आदि—बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत की गयी हैं। इसी से इस रचना का रूसी साहित्य में महत्त्व है।

पत्रकार और प्रचारक गोर्की

गोर्की के कार्यों की विविधता तथा अनेकरूपता ने उसको केवल साहित्यिक लेखक ही न बना रहने दिया। सामाजिक जीवन तथा क्रांतिकारी क्रियाकलापों से घनिष्ठ रूप में संबद्ध रहने के कारण उसे अनेक विषयों पर क़लम चलानी पड़ी। इसी से गोर्की कलाकार होने के साथ-साथ पत्रकार और प्रचारक भी है और इस रूप में उसका महत्त्व कम नहीं है। देश के जीवन में समय-समय पर होनेवाली सामाजिक राजनीतिक घटनाओं पर उसकी लेखनी महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट करती रही और लोगों में प्रेरणा तथा स्फूर्ति भरती रही। उसकी चार सौ से अधिक कलात्मक कृतियाँ हैं। दस हज़ार पत्र हैं और चौदह सौ के क़रीब उसके लेख हैं। पत्रकारिता का यह काम उसके साहित्यिक कार्य के साथ-साथ चलता रहा।

निज़नी नोवोगोरद से करोलेन्को के सुझाव पर वह समारा आया और वहाँ के स्थानीय पत्र में वह रेखाचित्र लिखने लगा। इसी पत्र में उसकी कलात्मक कृतियाँ भी छपीं। इन लेखों में उसने सब पिसे अधिकार हीन लोगों—दफ्तर में काम करनेवाले दूकान पर सामान बेचनेवालों का पक्ष लिया।

१९०५–१९०६ में उसने बहुत से राजनीतिक लेख लिखे और विदेशों द्वारा ज़ार को क़र्ज़ दिए जाने की निंदा की। अमेरिका की यात्रा के बाद उसने बहुत से लेख लिखे और वहाँ के बुर्जुआ समाज के दुर्गुणों का उद्घाटन किया। प्रतिक्रियावाद के वर्षों में उसने 'व्यक्तित्व का नाश' लेख लिखा जिसमें रूसी लेखकों को जनसेवा तथा देश भक्ति के लिए उद्बोधित किया। अक्तूबर क्रान्ति के बाद उसकी पत्रकारिता का और भी महत्त्व बढ़ा। गहरा देश-प्रेम समाजवाद का स्वागत, बुर्जुआ समाज की रूढ़ियों

का उद्घाटन, शांति का समर्थन और लड़ाई छेड़नेवालों के प्रयत्नों की निंदा, नव-जीवन के निर्माताओं के परिश्रम की प्रशंसा ये उसके लेख के मूलभूत विषय हैं।

सोवियत संघ की क्रांति के बाद उसने पूरे देश की यात्रा की। इस यात्रा के बाद उसने 'सोवियत संघ निर्माण की ओर' तथा 'हमारी संप्राप्तियाँ' पत्र निकाले जिनका उद्देश्य समाजवादी निर्माण की सफलता का चित्र प्रस्तुत करना था।

समाजवाद की प्रतिष्ठा में योग देने के साथ-साथ उसने फ़ासिज्म पर निर्मम आक्रमण किया क्योंकि वह जानता था कि फ़ासिज्म की बर्बरता शताब्दियों की संस्कृति तथा मानवीय सम्प्राप्तियों को नष्ट कर देगी। जीवन भर वह फ़ासिज्म के विरुद्ध आन्दोलन का संचालन करता रहा।

इस प्रकार उसकी पत्रकारिता भी विविधता से विभूषित है। वह सदा सावधान रहा और हर प्रकार के सामयिक और सामाजिक प्रश्नों का उत्तर देता रहा।

गोर्की युग का महान् शिल्पी, जीवन का सूक्ष्म ज्ञाता, मानव में अडिग विश्वास रखनेवाला था। उसकी सर्जना ने रूसी जीवन का पूरा-पूरा अभिव्यंजन किया और नवीन आदर्श तथा नवजीवन की प्रतिष्ठा और निर्माण में पूर्ण योग दिया। गोर्की देश भक्त था, सच्ची मानवता का योद्धा और मानवता का प्रेमी था।

२ गृह-युद्ध के समय का साहित्य तथा अर्थ आर्थिक व्यवस्था का नव-निर्माण

[१९१८–१९२५]

अक्तूबर १९१७ से लेकर फरवरी १९१८ के बीच सोवियत शासन बड़े वेग से सारे देश में फैल गया। फिर भी उसे शांति के साथ विकसित होने का अवसर न मिला क्योंकि जितनी ही सोवियत नव-व्यवस्था जनता के बीच व्यापक हुई उतना ही अधिक अपदस्थ शोषक वर्ग ने उसका जी जान से विरोध किया। साम्राज्यवादी राष्ट्रों की सेनाओं ने देश पर आक्रमण कर दिया और श्वेत गार्डों का विद्रोह भी शुरू हो गया। विदेशी हस्तक्षेपकर्ताओं का समर्थन पाकर प्रतिक्रियावादी क्रान्ति के विरुद्ध अपनी सेनाओं का संगठन करने लगे। गृह-युद्ध शुरू हो गया।

इस प्रकार विदेशी हस्तक्षेप और गृहयुद्ध की अत्यन्त विषम और भयानक परिस्थिति के बीच सोवियत राष्ट्र का जन्म हुआ और जन्म लेने के साथ ही उसे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगाकर लड़ना पड़ा। परिस्थितियों के कारण शांतिपूर्ण वातावरण के बीच देश का निर्माण असंभव था। फलतः राष्ट्र 'युद्धकालीन साम्यवाद' की नीति चलाने को बाध्य हुआ। इस समय का नारा था—'सब कुछ क्रान्ति की विजय के लिए'। सारे देश का जीवन क्रान्ति की विजय के लिए संचालित युद्ध के अधीन कर दिया गया। सारा देश फौजी कैम्प में परिवर्तित हो गया और अनेक कठिनाइयों के बीच—भूख, ठंड, नष्ट आर्थिक जीवन और युद्ध तथा प्रतिक्रियावादियों की तोड़-फोड़ की नीति के बीच—सोवियत शासन को विजय मिली। विदेशी हस्तक्षेपकर्ता देश के बाहर निकाल फेंक दिए गये और श्वेत गार्डों का विद्रोह कुचल दिया गया। अब समाजवादी क्रान्ति का अपना महत्त्वपूर्ण कार्य—देश के पुनरुत्थान तथा नव-निर्माण

का कार्य—शुरू हुआ। जनता समाजवादी संस्कृति के निर्माण में लगी। अतीत की सांस्कृतिक सम्प्राप्तियाँ पूरे समाज की संपत्ति बन गयीं और सारी जनता को सुलभ हो गयीं। जारशाही से मुक्त की गई जनता को सोवियत शासन तथा कम्युनिस्ट पार्टी समाजवादी संस्कृति तथा शांतिमय निर्माणकारी कार्य की ओर ले चली।

अक्तूबर क्रान्ति ने साहित्य के सामने नयी समस्याएँ प्रस्तुत कीं। अब यह आवश्यक था कि सोवियत लेखक जन-समूह के क्रियाकलाप को प्रतिबिम्बित करें उसके समाजवादी निर्माण के आदर्शों को अभिव्यक्त करें और नव-जीवन निर्माण के मार्ग को अपनी भावनाओं से प्रकाशित करें।

फिर भी सोवियत साहित्य के निर्माण का काम शून्य से नहीं शुरू हुआ। इसके पहले रूसी क्लासिक साहित्य मानवतावादी साहित्य की परंपरा आरम्भ कर चुका था। इन्हीं सर्जनात्मक सिद्धान्तों के सोवियत युग ने प्रोलितारियन साहित्य का माध्यम बनाकर क्रान्तिकारी वस्तु-तत्व से मिश्रित कर दिया। सोवियत साहित्य के विकास तथा गतिविधि को संचालित तथा निश्चित करनेवाले थे—मार्क्सवाद लेनिनवाद की शिक्षा साहित्य की पार्टीजनिता के विषय में लेनिन की शिक्षा तथा कम्युनिस्ट पार्टी के क्रियाकलापों का अनुभव। इसी प्रकार गोर्की की रचनाओं में धीरे-धीरे कम्युनिस्ट का चित्र उभरा और मायाकोव्स्की ने अपनी प्रतिभा कम्युनिज्म और सोवियत काव्य की रक्षा में अर्पित कर दी।

गृह-युद्ध के मोर्चे पर तमाम सोवियत लेखक अपने देश की रक्षा के लिए और अपने नवीन आदर्शों की प्रतिष्ठा के लिए लड़े। गृह-युद्ध के अन्त पर इन संघर्षों के अनुभव साहित्य में अभिव्यक्त हुए। इन लेखकों में मुख्य हैं—शोलोखोव ग्लादकोव ओस्त्रोव्स्की फुरमानोव फदेयेव सिमोनोव सेराफिमोविच तथा अन्य। । इन लेखकों की कृतियों में सोवियत कला के सर्जनात्मक सिद्धान्तों का विकास हुआ।

इस प्रकार अक्तूबर क्रान्ति के बाद सोवियत साहित्य या नये साहित्य का नया रूप प्रस्तुत हुआ। गृह-युद्ध और समाजवादी नव-निर्माण इस

साहित्य की मुख्य विषय-वस्तु के रूप में प्रकट हुए और देश में रहनेवाली सभी जातियों की मित्रता पर आधारित देश प्रेम की भावना का नया रूप सामने आया और उसे नया महत्त्व प्राप्त हुआ।

अक्तूबर क्रान्ति ने लेखकों के सामने पहले यह प्रश्न पूछा कि वे वर्ग के जीवन के इस महत्त्वपूर्ण क्षण में किस ओर हैं, किसके साथ हैं? मायाकोव्स्की ने लिखा कि "क्रान्ति में हिस्सा लूँ या न लूँ, मेरे लिए प्रश्न ही नहीं उठता। क्रान्ति मेरी है।" इसी प्रकार गोर्की के अपने बारे में कुछ न कहने पर भी उनका पक्ष स्पष्ट ही है। इसी प्रकार क्रान्ति के प्रति अन्य लेखकों का रुख, सिराफिमोविच, त्रिफोनोव, दागिस्तान, अमयव, एसेनिन आदि बाद में अ० टॉल्स्टॉय भी स्थिर था। यह सब क्रान्ति के तरफदार थे।

किन्तु कुछ लेखक क्रान्ति से त्रस्त और भयभीत थे। अपना देश छोड़ कर विदेश चले जाने वाले प्रवासी रूसी लेखक इन्हीं में थे। इनमें से कुछ अपने जीवन के अन्त में स्वदेश लौट आए (कूप्रिन, स्किटालेत्स, अलेक्सी टाल्स्टॉय)। बूनिन, बालमोन्त, अन्द्रयेव प्रवासी लेखक ही बने रहे। देश में रह जानेवाले लेखकों में भी बहुत ऐसे थे जो कि सहसा क्रान्ति को न समझ सके। बाद में उनके विचारों में धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ और फिर वह क्रान्ति को समझ सके और उसके पक्ष में हो गए। फिर भी उनकी भावना क्रान्ति के सामाजिक आधार तथा समस्याओं के सम्बन्ध में स्पष्ट न थी। ऐसे लेखकों को रूसी में 'सहचारी पथगामी' कहा गया।

इस प्रकार क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों की साहित्यिक परिस्थिति विविधता और विषमता से पूर्ण थी। अपने को प्रगतिशील कहनेवाले साहित्यिक संगठनों में कुछ ऐसे थे जो नवीन समाजवादी कला के रूप और संगठन को ठीक-ठीक नहीं समझ पा रहे थे। 'फ्यूचरिस्ट' (या भविष्यवादी) ऐसे ही थे। अतीत की संस्कृति के प्रति उनके विचार संहारकारी थे। इसी प्रकार 'प्रोलेत्कुल्त' (सर्वहारा संस्कृति के समर्थक) वाले अतीत की संस्कृति का तिरस्कार कर रहे थे। पार्टी नियमन संगठन में न बँधकर और उससे मुक्त हो अपना स्वतन्त्र अस्तित्व चाहते थे और यह चाहते थे कि शासन उनके कार्यकलाप में हस्तक्षेप न करे। 'कूज़्नित्सा'

साहित्यिक संगठन के विचार भी प्रोलेत्कुल्त के निकट थे। इस प्रोलेत्कुल्त का उपदल प्रान्तों में भी था और नवयुवकों पर उसका बड़ा व्यापक प्रभाव था। सोवियत शासन तथा कम्यूनिस्ट पार्टी ने साहित्य तथा जनता पर उसके प्रभाव को घातक माना और उससे उसका संघर्ष हुआ। लेनिन ने प्रोलेत्कुल्त पर आक्षेप किया। उसके प्रतिक्रियावादी रूप की आलोचना की और स्वतन्त्र नहीं वरन् कम्यूनिस्ट पार्टीवादी साहित्य की रचना को आवश्यक और अच्छा बताया।

इस प्रकार सोवियत साहित्य का विकास आरम्भ से [illegible] कई प्रकार की विचारधाराओं से युद्ध और विरोध के बीच हुआ। इनमें से राजनीति से तटस्थता, बुर्जुआई व्यक्तिवादिता तथा अतीत के सांस्कृतिक उत्तराधिकार के निराकरण का सिद्धान्त सोवियत रचनात्मक लक्ष्य के सर्वथा प्रतिकूल थे। सोवियत कला तथा साहित्य ने इनके उन्मूलन का पूरा पूरा प्रयत्न किया।

गृह-युद्ध की विषमता और गम्भीरता के बीच स्वाभाविक ही था कि सोवियत साहित्य प्राचीन शोषक व्यवस्था का विरोध और नवीन समाजवादी व्यवस्था की स्थापना और समर्थन करता। इस विरोध और समर्थन से ही सोवियत साहित्य का मूल स्वरूप निर्धारित होता है। जीवन और साहित्य में इस नवीन व्यवस्था की स्थापना जनता के युद्ध और आत्म बलिदान द्वारा सम्भव हुई। साहित्य जनता की चेतना से पूँजीवादी संस्कारों के उन्मूलन और समाजवादी भावना के बीज-वपन का महान् प्रयत्न करता रहा। फलतः सोवियत साहित्य प्राचीन पूँजीवादी व्यवस्था की सभी प्रकार की प्रच्छन्न और प्रकट विचारधाराओं का विरोध करता रहा जो समाजवादी संस्कृति और कला के निर्माण में बाधा डाल रहे थे। पतनावाद, रूपवाद (फार्मेलिज़्म), फ्यूचरिज़्म (भविष्यवाद), साहित्य प्रतीकवाद, सौन्दर्यवाद, प्रोलेत्कुल्त आदि का जो विरोध हम सोवियत साहित्य के प्रत्येक चरण में देखते हैं उसके मूल में यही भावना है कि ये विचार-धाराएँ पूँजीवाद का प्रच्छन्न रूप हैं और समाजवादी विकास के लिए अत्यन्त घातक हैं। इन धाराओं का विरोध कर सोवियत साहित्य ने

समाजवादी कला और समाजवादी संस्कृति के विकास का पथ प्रशस्त किया।

इस प्रकार राजनैतिक और विचारात्मक संघर्ष के बीच सोवियत साहित्य की मुख्य विशिष्टताएँ निर्मित और दृढ़ हुईं। यथार्थता का उसके क्रान्तिकारी पर्यायत्मकता के बीच अभिव्यंजन, क्रान्ति के समर्थक, सिपाही और पत्रकार के रूप में सोवियत व्यक्ति का चित्रण, क्रान्ति का मानवता के इतिहास की महत्त्वपूर्ण मंजिल के रूप में चित्रण, क्रान्ति-विरोधियों के विचारों और कारनामों का पर्दाफ़ाश करना और उनको दयाग्राही जनहित घातक बता कर उनकी आलोचना।

क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों की कविता

कविता इस समय के मुख्य साहित्यिक रूप या प्रकार के रूप में प्रकट हुई। फिर भी इसका रूप पूरा-पूरा सुव्यवस्थित नहीं था क्योंकि जो नवीनताएँ अभी-अभी जीवन में प्रकट हुई थीं और उनके संबंध में जो संस्कार बन रहे थे वे अभी तक पूरे-पूरे हृदयंगम नहीं किये जा सके थे, अपनाए नहीं जा सके थे। लेखकों ने इन भावों को मोर्चे पर या तत्संबंधी कार्यों के बीच प्राप्त किया था। अभी यह अनुभव भी प्रौढ़ नहीं हो सका था जिससे कि नवीन जनता और उसके आपस के नवीन संबंधों को व्यापक, विशद रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता। स्वतः इन वर्षों का अधसामान्य रोमांटिक रूप काव्य की ओर प्रेरित कर रहा था और जीवन को कुछ-कुछ भावपरक भावात्मक रंगों से रँग रहा था। आन्दोलन की व्यापकता ने—जिसने कि जीवन में गहरा परिवर्तन उपस्थित कर दिया—काव्य तथा साहित्य को रोमांटिक भावना से रँग दिया। स्वतः 'प्रोलेत्कुल्त' और 'कूज़्नित्स' के बहुत से कवि क्रान्ति का उसकी स्थूल विशेषताओं से हीन भावात्मक तथा सूक्ष्म चित्रण करते रहे थे।

इन वर्षों में सोवियत काव्य जगत में ये कवि थे—ए० बेज़िमेन्स्की, एम० गलादनी, वे० काज़िन, वे० अलेक्सान्द्रोव्स्की तथा अन्य। इन सब में सोवियत साहित्य के विकास की दृष्टि से तथा नवीन व्यक्ति के चित्रण की दृष्टि से मायाकोव्स्की की सर्जना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अपने मार्कों

कविताओं तथा प्रचारपत्रों में 'क्रान्ति' रूसी शक्ति और उसके सामाजिक सार तत्व को उसने अभिव्यक्ति दी। उसकी इस समय की कविताओं में उसका गहरा रोमांटिक रंग स्पष्ट है।

देम्यान बेदनी

इन वर्षों में देम्यान बेदनी का क्रियाकलाप व्यापक रूप में विकसित हुआ। उसका प्रचारात्मक महत्व है। उसकी सर्जना क्रान्तिकारी विचारों से परिपूर्ण थी। लेनिन और स्तालिन ने उसकी कविताओं को बड़ा ऊँचा स्थान प्रदान किया। लेनिन ने उसकी सर्जना के संबंध में कहा "उसकी सर्जना वस्तुतः प्रोलितारियत् की है। वह श्रमिक वर्ग के अत्यन्त निकट है और उसे अच्छी तरह समझ लेता। गृहयुद्ध के वर्षों में उसने कविता की तीन पुस्तकें लिखीं जिनका बड़ा व्यापक प्रचार हुआ। उसके गीतों तथा कविताओं के द्वारा जन-समाज में विशेषतया किसानों के बीच क्रान्तिकारी विचार बड़े सजीव रूप से फैले और इसी में उसका महत्व है। १९२३ में वह लाल झंडे के आर्डर से पुरस्कृत हुआ।

देम्यान बेदनी ने अपनी सारी शक्ति सोवियत जनता के शान्तिमय निर्माणकारी परिश्रम के चित्रण में लगाई। वह छोटे से छोटे तथ्य को भी समाजवादी समाज के निर्माण की दृष्टि से जाँचता है और उसे महत्व देता है। इसी से वह नवीन का सार बड़े ध्यान से उत्सुक होता है। उसकी कविता में व्यंग्य भी प्रचुर है।

अपनी रचनाओं में उसने सभी प्रकार की समकालीन घटनाओं पर अपनी लेखनी चलाई। साहित्यिक रूपों की विविधता, विषय-वस्तु की समृद्धि, जीवन की यथार्थता का अंकन, व्यंग्य की प्रतिभा, रूसी भाषा का अच्छा ज्ञान यह सब उसकी लोकप्रियता के मूल में है और इन सबने उसे बड़ा लोकप्रिय बना दिया। एक समय स्तालिन ने उसकी आलोचना भी की थी क्योंकि स्तालिन के अनुसार वह रूस की अतीत की सम्पत्ति को ठीक तरह से न समझ सका था। द्वितीय महायुद्ध के समय भी उसकी वाणी बराबर सुनाई देती रही। उसने 'सेनाम [illegible] रोशनी' प्रबन्ध काव्य भी लिखा। इसी प्रकार उसके काव्य 'मुख्य मुद्दा' की भी बड़ी चर्चा

रही। इसमें उस असभ्य प्रोलितारियत का वर्णन है जो 'मुख्य सड़क' पर विश्व-इतिहास के प्रांगण में जय मार्च कर रहा है, जिसके साथ क्रान्ति चल रही है और जिसके पैर की धमक से क्रान्ति के शत्रु हताश हो रहे हैं।

याकोवलविच ब्रूसोव

प्रतीकवादियों के समुदाय से क्रान्ति की ओर अपने मन से आनेवाले कवियों में ब्रूसोव और ब्लाक बड़े प्रसिद्ध हैं। ब्रूसोव के सम्बन्ध में गोर्की ने लिखा था कि वह रूस में सबसे सुसंस्कृत लेखक है। ब्रूसोव कवि, गद्य लेखक, अनुवादक, विद्वान अनेक रूपों में हमारे सामने आता है। वह सारे जीवन रूसी संस्कृति की सेवा में लगा रहा और सोवियत शासन ने उसका आदर सम्मान भी बहुत किया।

आरम्भ में ब्रूसोव के काव्य में व्यक्तिवादिता, रहस्यवाद तथा अन्य संसारों की खोज के नाम में यथार्थता से विरक्ति बड़े जोर के साथ अभिव्यक्त हुई। इसके काव्य में प्रतीकवाद की सभी विशेषताएँ थीं किन्तु उसकी ऐतिहासिक तथा सामाजिक दृष्टि की व्यापकता ने देश की वस्तु स्थिति उसे समझा दी और वह क्रान्ति का पक्षपाती बन गया। वह उन लोगों का प्रतिनिधि था जो कि शासक वर्ग में थे, किन्तु जिनमें जनता से मिल जाने की शक्ति और हिम्मत थी।

सामाजिक कार्यकलाप के साथ उसका सर्जनात्मक कार्य भी चलता रहा। उसके कई कविता संग्रह निकले। क्रान्ति के बाद उसकी सर्जना की मुख्य विषय-वस्तु रूस ही रही और वह अपने देश की महानता और भव्य भविष्य के विषय में लिखता रहा। वह क्रान्ति के महत्व को ठीक तरह समझ गया था और उसका विश्वास था कि क्रान्ति वह घटना है जो देश को महानता की ओर ले जायेगी। उसकी कविताओं में सोवियत देश भक्ति की मूलभूत विशिष्टताएँ बड़ी सुन्दरता के साथ अभिव्यक्त हुई हैं। देश भक्ति की भावना, प्राचीन संस्कृति से गहरी सहानुभूति, प्राचीन पर नवीन व्यवस्था की विजय का अडिग विश्वास ब्रूसोव की इस समय की कविताओं की मुख्य विशिष्टताएँ हैं। ब्रूसोव उच्च साहित्य

कला इंस्टिट्यूट का रेक्टर था और १९१९ से कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य भी।

अलेक्सान्द्र अलेक्सान्द्रोविच ब्लॉक (१८८०–१९२१)

जब ब्लॉक की मृत्यु हुई तो मायाकोव्स्की ने उसके बारे में यह लिखा "ब्लॉक की काव्यात्मक सर्जना से पूर्ण यह युग है। ब्लॉक का समकालीन काव्य पर बहुत बड़ा प्रभाव है। क्रान्ति के पूर्व के महान् कवि के विषय में कहे गए क्रान्ति के महान कवि के ये शब्द सर्वथा उचित हैं। वास्तविक काव्यात्मक संवेदना उच्च काव्य कौशल सत्यानुभूति देश-भक्ति इन सब ने उसकी रचना को रूसी काव्य के इतिहास में अभूतपूर्व बना दिया और आज भी उनके कारण उसके काव्य का महत्त्व बना हुआ है।

रूसी संस्कृति के महान् व्यक्तियों के समान ब्लॉक ने संपूर्ण हृदय से क्रान्ति का स्वागत किया और उसका गायक बना। उसकी 'बारह' कविता ऐसी ही है। उसने कहा कि "सारे शरीर व पूर्ण हृदय से सारी चेतना के साथ क्रान्ति को सुनो।

उसकी रचनाओं में 'बारह' का अत्यधिक महत्त्व है। क्रान्ति के वेग तथा उन दिनों की प्रचण्ड गति और प्राचीन के अनिवार्य नाश भविष्य के पूर्ण विश्वास का पूरा-पूरा आभास इस कविता से मिल जाता है। बारह अध्यायों की यह कविता जीवन के विभिन्न पक्षों के चित्रों से संयुक्त है और फिर भी इसमें उद्देश्य की एकता है। इसमें ईसा मसीह का बारह व्यक्तियों के आगे-आगे चलना क्रान्ति की पवित्रता में ब्लॉक के अडिग विश्वास को प्रकट करता है। इस कविता में यथार्थवाद से विषय-वस्तु के माध्यम से कवि की क्रान्ति की भावना प्रकट हुई है। इसी भावना को उसने अपने लेख 'बुद्धिजीवी और क्रान्ति' में प्रकट किया है। उसने कहा कि "क्रान्ति बर्फीले तूफान की तरह है जो अपने साथ नवीन और अप्रत्याशित को लाती है। वह बहुतों को धोखा देती है। यह अपने भँवर में बहुतों को पंगु बना देती है और अयोग्य को पूरे तट पर पहुँचा देती है। किन्तु उसमें उसकी धारा की दिशा नहीं बदलती और न वह भयंकर शोर जो इससे पैदा होता है। यह शोर हर हालत में सदा महान् के बारे में होता है।"

सोवियत आलोचकों ने इस कविता की आलोचना यह कह कर की कि जीवन का केवल रोमांटिक दृष्टिकोण से ग्रहण सच्चाई तथा ईमानदारी से युक्त होते हुए भी अपने में पूर्ण पर्याप्त नहीं है और ईसा के चित्र के कारण क्रान्ति के उद्देश्य की वह यथार्थता नहीं मिल पाती है जो कि जनता के सामने स्पष्ट थी। उसकी रचना क्रान्ति का यथार्थवादी अंकन नहीं कर सकी और इससे एकांगी है। फिर भी क्रान्तिकारी रोमांटिसिज़्म का सत्य और शक्ति ने उसे जीवन के सत्य से परिचित करा दिया और उसने इसका अंकन इतना ईमानदारी से किया कि उसका सारे रूसी काव्य में बड़ा महत्त्व है।

एस० एसेनिन (१८९५-१९२५)

एसेनिन जटिलताओं और विषमताओं से युक्त कवि है। गोर्की ने उसके बारे में लिखा कि "सिरगेई एसेनिन आदमी नहीं वरन् प्रकृति द्वारा केवल काव्य के लिए गढ़ा गया माध्यम है—संसार के सभी प्राणियों के प्रति प्रेम के प्रदर्शन के लिए। उसे अपने देश और अपने देश की प्रकृति से वैसा ही प्रेम था जैसे बच्चे को अपनी माँ से होता है। उसकी प्रगीतात्मक प्रतिभा की पूर्ण अभिव्यक्ति रूसी प्रकृति के चित्रण और प्रेम-गीतों की सूक्ष्मता में हुई। उसने मानवीय भावनाओं के संसार की बड़ी गहरी सरल और सूक्ष्म अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। आनन्द उल्लास देश के प्रति प्रेम, प्रेम और शोक तथा देश की प्रकृति का सटीक अंकन एसेनिन की अपनी विशेषता है। फिर भी जीवन तथा परिस्थिति की विषमताओं का उसके ऊपर का प्रभाव भी पड़ा। वह पुरानी दुनिया का पूरा-पूरा परित्याग नहीं कर सका और सामाजिक जीवन के प्रति उसका रोमांटिक दृष्टिकोण बना रहा। यद्यपि वह देश के उफनते हुए नये जीवन में हिस्सा लेना चाहता है फिर भी वह जीवन को ठीक-ठीक हृदयंगम न कर सका और उसमें ह्रासकारी प्रवृत्ति का उदय हुआ। अत्यधिक रसिक जीवन और काव्य में रसिकता का मादक समर्थन इन सबने मिल-जुलकर एसेनिन के नाम को रसिकता का पर्याय बना दिया। मदिरा की जलना और मदिरालय के कोलाहल की विषय-वस्तु ने इसके काव्य को कुछ पंकिल कर दिया।

मास्को से यह इसी राग-रंग में डूब गया।

फिर भी रूसी प्रकृति तथा स्वच्छ और आत्मत्यागपूर्ण प्रेम के उसके उत्तम प्रगीत सदा जीवित रहेंगे। इन वर्षों में नाट्य साहित्य का भी विकास हुआ। रंगमंच पर अधिकतर (रोमान्टिक तथा क्रान्तिकारी रंग लिए हुए) शास्त्रीय नाट्यकृतियाँ बड़ी लोकप्रिय रहीं। किन्तु इनके साथ ही यथार्थता का अंकन करनेवाली नाट्यकृतियों का भी विकास हुआ। इन्हीं वर्षों में त्रिनेव्स्की का नाटक-रचना के क्षेत्र में प्रवेश हुआ। इन्हीं वर्षों में लूनाचार्स्की, बिल्ल-बेलोत्सेर्कोव्स्की, फ़ाइको, नेवेरोव आदि के नाटक सामने आये।

गृह-युद्ध की विविधता और पारस्परिक विरोधी परिस्थिति के बीच ही सोवियत काव्य की विशेषताएँ प्रस्फुटित होने लगीं। इन्हीं वर्षों में मूलभूत विषय-वस्तु, समस्याएँ तथा बिम्ब कल्पित और प्रस्तुत किये जाने लगे जिनको कि सोवियत साहित्य के बाद आनेवाले युगों में विकसित किया गया। गृह-युद्ध के वर्षों के साहित्य ही में नये नायक या जनता के उद्धारक क्रान्ति के योद्धा का चित्र उभरने लगा था और सर्जनात्मक परिश्रम उसका विषय-वस्तु बन गया। परिश्रम के विषय-वस्तु के साथ ही शान्ति के विषय-वस्तु भी साहित्य में प्रविष्ट हुई। सोवियत शासन का आरम्भ ही 'शान्ति की घोषणा' से हुआ था। परिश्रम और शान्ति की विषय-वस्तुएँ अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण हैं और आपस में इतनी घनिष्ठता से सम्बन्धित हैं कि एक दूसरे से अलग नहीं की जा सकतीं। क्रान्ति के पहले यह विषय-वस्तुएँ गोर्की, मायाकोव्स्की, सिराफ़िमोविच आदि की सर्जना में निहित हैं और क्रान्ति के बाद जनता के स्वतन्त्र हो जाने पर इनको नया ही महत्त्व प्राप्त हुआ और यह मुक्त जनता के नवीन लक्ष्यों के प्रति अथक प्रयत्न का द्योतक बन गयीं।

प्राचीन और नवीन का युद्ध तथा लाल सेना की विजय—इन सबका अंकन और अभिव्यंजन गृह-युद्ध के युग के साहित्य में मिलता है। सर्वहारा की मानसी और सामाजिक संघर्षों की जटिलता में—जिनके बीच लेखकों ने रचना की—(नयी विषय-वस्तु से संयुक्त) सोवियत

साहित्य के रूप-गठन का प्रभावित होना स्वाभाविक ही था।

इसके साथ ही अब साहित्य में समाजवाद का विचार, नये नायक का अंकन—समाजवाद के योद्धा तथा जीवन को उसके क्रान्तिकारी विकास के बीच प्रतिबिम्बित करने का प्रयत्न प्रबल होने लगा यद्यपि यह अंकन और प्रतिबिम्ब अभी अपनी आरम्भिक अवस्था ही में था। गृह-युद्ध के इन्हीं वर्षों में समाजवादी यथार्थवाद के विकास की परिस्थितियाँ भी निर्मित होने लगीं।

इसके साथ ही साहित्यिक जीवन को संगठित करने का कार्य भी चलने लगा। इस क्रम में गोर्की का काम बड़ा महत्त्वपूर्ण है। उसने लेखकों को एकत्रित किया और नयी प्रतिभाओं के विकास में बड़ी सहायता दी। बहुत से सावियत-लेखकों को उससे प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है। गोर्की ने १९१८ में अखिल विश्व-साहित्य प्रकाशन संगठित किया जिसने कि विदेशी लेखकों की सर्वोत्तम कृतियों का अनुवाद किया। इन्हीं वर्षों में मायास्की भी विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में काम करता दिखाई पड़ता है और उसकी कृतियाँ (नाटक लेख आदि) सामने आती हैं। इस प्रकार गृह-युद्ध के वर्षों में ही सावियत साहित्य के चारों ओर ऐसी प्रतिमाएँ एकत्रित हो गई जिन्होंने आगे चलकर शक्तिशाली सांस्कृतिक आन्दोलन को आगे बढ़ाया जिससे कि देश का सामाजिक साहित्यिक जीवन पुष्ट हुआ।

अर्थ-आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण तथा पुनर्स्थापन की ओर

गृह-युद्ध समाप्त हुआ और देश में पुनर्निर्माण का काम शुरू हुआ। 'सब कुछ क्रान्ति के लिए' का नारा 'सब कुछ राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के लिए' के नारे में बदल गया। मोर्चे से सोवियत-लेखक लौटे और वे लड़ाई के अपने अनुभव तथा साहसपूर्ण कार्यों की कथा कहना चाहते थे। इन्हीं वर्षों में समाजवादी व्यक्ति की नयी विशिष्टताएँ प्रस्फुटित और विकसित हुईं। गृह-युद्ध की करुणा और रोमांटिसिज्म की जगह पुनर्निर्माण के ठोस कार्य ने ले ली।

इन सबसे साहित्य में नयी प्रवृत्तियों और नये लेखकों का उदय हुआ।

साहित्य के विकास का नया युग शुरू हुआ। सोवियत साहित्य समाजवादी निर्माण के प्रधान शस्त्र के रूप में प्रकट हुआ और वह देश के जीवन के नये युग को अभिव्यक्त करने लगा और स्वतः परिवर्तित होने लगा। अब कविता के साथ गद्य के प्रकार—कहानी तथा उपन्यास भी प्रस्तुत किये गये। पत्र भी निकलने लगे (पुस्तक और क्रान्ति—१९२० प्रेस और क्रान्ति १९२१) और इससे प्रकाशन-कार्य और भी बढ़ा। साहित्यिक जीवन नये रास्ते पर चलने लगा।

इन वर्षों के साहित्य में जो विषय-वस्तु प्रमुख है। गृह-युद्ध की विषय वस्तु (सन् १९२ से) और विनाश के बाद देश के पुनर्निर्माण में शांतिपूर्ण परिश्रम या मजदूरों की विषय-वस्तु (ग्लादकोव का उपन्यास 'सीमेंट' तथा अन्य लेखकों की कृतियाँ)। इस नयी सजीव अनेक कथात्मक सामग्री का उपयोग करते हुए सोवियत-साहित्य ने नये सोवियत-व्यक्ति के निर्माण और उसके विकास का चित्र प्रस्तुत किया और उसके नये आदर्श तथा श्रम और परिश्रम के प्रति उसके नये दृष्टिकोण का अंकन किया। साथ ही सोवियत नागरिक के महान देश प्रेम को भी इस साहित्य ने नये रूप में अभिव्यक्त किया। सन् १९१ के वर्षों के साहित्य में मायाकोव्स्की का कृतित्व इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। उनके मुक्तक प्रगीतों में नये नायक का स्पष्ट चित्र उतरा है और उनमें विकास के मार्ग की बाधाओं को दृढ़ता से कुचल देने के प्रयत्न का स्पष्ट अंकन है।

कथात्मक साहित्य के क्षेत्र में पार्टी की राजनीति

नवीन राजनीतिक आर्थिक व्यवस्था की ओर संक्रमण के समय जब कि पूँजीवादी और कुलक वर्ग की विचारधारा का पूरा-पूरा अन्त नहीं हुआ था कम्युनिस्ट पार्टी का दूसरी विचारधारा के प्रति सतर्क रहना स्वाभाविक ही था। यह और भी अनिवार्य था क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टी नवयुवकों के ऊपर इसके प्रभाव का खतरा काफ़ी समझती थी। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी और उसके नेताओं ने प्राचीन और नवीन विचारधारा के साहित्यिक संघर्ष में खुल कर हिस्सा लिया। पूरे शासन का अधिकार

सब उन्हीं के हाथ में था इसलिए उन्होंने साहित्य को पूरा-पूरा पार्टीवादी बना दिया। प्रेस प्रकाशन तथा साहित्य-संबंधी प्रश्नों पर पार्टी के ग्यारहवें बारहवें और तेरहवें सम्मेलन में बड़ी बहस हुई और प्रतिक्रियावादी साहित्य के विरुद्ध संघर्ष तथा समाजवादी साहित्य की रचना का निश्चय हुआ। पार्टी के ग्यारहवें सम्मेलन (१९२२) के प्रस्ताव में कहा गया कि सम्मेलन प्रतिक्रियावादी साहित्य के प्रभाव को रोकना और नवयुवकों की कम्यूनिस्ट शिक्षा को आवश्यक समझता है। पार्टी के बारहवें सम्मेलन (१९२३) में यह कहा कि सोवियत रूस में कलात्मक साहित्य की सामाजिक शक्ति इतनी बढ़ गई है कि पार्टी के लिए अब साहित्य के संचालन और निर्देशन के प्रश्न पर विचार करना ही होगा और उसे अपने हाथ में लेने का संकेत किया।

साहित्य के विकास के संबंध में कलात्मक साहित्य के क्षेत्र में पार्टी की नीति प्रस्ताव में (१८ जून १९२५) बहुत कुछ कहा गया। उसमें यह कहा गया कि जैसे वर्गीय समाज में वर्गीय संघर्ष नहीं रुकता उसी प्रकार साहित्यिक मोर्चे पर भी यह संघर्ष बराबर चलता रहता है। वर्गीय समाज में तटस्थ कला न होती है और न हो सकती है, यद्यपि कलात्मक साहित्य का या कला का वर्गीय रूप राजनीति की अपेक्षा अत्यधिक अनेक रूपात्मक होता है। सोवियत-साहित्य के विकास के मार्ग का निर्धारित करते हुए प्रस्ताव में कहा गया कि उसे धीरे-धीरे लेखकों को प्रोलितारियन् विचार धारा के रास्ते पर ले जाना है और लोगों को सावधानी के साथ धीरे-धीरे कम्यूनिस्ट विचारधारा की ओर अग्रसर करना है। प्रस्ताव ने अनेक साहित्यिक विचारधाराओं के बीच स्वतन्त्र प्रतियोगिता की बात कही और यह कहा कि सोवियत-साहित्य को ऐसा कलात्मक रूप प्राप्त करना चाहिए कि वह लाखों-करोड़ों की समझ में आ सके। कम्यूनिस्ट पार्टी के इस प्रस्ताव का सोवियत साहित्य के विकास पर बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा और इसने उसके संगठनात्मक रूप का निर्धारित किया।

साहित्य में वर्ग-संघर्ष

सांस्कृतिक क्रान्ति के रूप में प्रकट होनेवाले इस सोवियत-साहित्य

का आदर्शवादी विचारधारा से विरोध और संघर्ष अवश्यम्भावी था और हुआ। क्रान्ति के पहले मोर्चों पर इस विचारधारा ने जो आक्रमण किया था उसकी चर्चा की जा चुकी है। क्रान्ति के बाद भी यह क्रम चलता रहा किन्तु अब परिस्थिति बदल गयी थी। अब वे सोवियत-व्यवस्था पर सीधा आक्षेप नहीं कर सकते थे। बुर्जुआ प्रश्न बन्द कर दिये गये थे। अब कई साहित्यिक गोष्ठियाँ प्रकट हुईं जिसमें साहित्य सम्बन्धी अनेक वाद प्रचारित किये गये जिनमें कुछ सोवियत साहित्य के दृष्टिकोण के प्रतिकूल थे। इस प्रकार 'सेरापियोनोव भाई' का ग्रुप या समुदाय १९२१ में सामने आया जिसने साहित्य और सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध को आवश्यक नहीं ठहराया और साहित्य को राजनीति से मुक्त कहा। यह मतवाद स्पष्ट ही लेनिन की 'साहित्य की पार्टीगामिता' के विरुद्ध था और कम्यूनिस्ट पार्टी और प्रेस दोनों में इसकी कटु आलोचना की गयी।

इसी समय अन्य साहित्यिक समुदाय और संगठन भी प्रकट हुए। इनमें से कुछ ने लेखकों को क्रान्ति के प्रति अपने संबंध को निश्चित करने में और यथार्थता के निकट आने में मदद दी। इनका संगठन कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रस्ताव के आधार पर हुआ था और इनमें बड़े-बड़े लेखक थे। 'लेफ' (कला में वाम पक्ष) समुदाय के साथ मायाकोव्स्की संबंधित था। 'केलित्स' (रचनाकारों का साहित्यिक केन्द्र) के साथ ई० सेल्वीन्स्की व० इनबर थे। 'पेरिवाल' ग्रुप में प्रीशविन, अगेयेव इत्यादि थे किन्तु सबसे बड़ा साहित्यिक संगठन 'राप' (प्रोलितारियन् लेखकों का रूसी एसोसियेशन) था। इसके सदस्य फादेयेव, सिराफिमोविच इत्यादि थे। इन संगठनों में सोवियत-लेखकों का एकत्रीकरण हुआ, किन्तु वर्गीय संघर्ष की परिस्थितियों में यह संगठन विचारात्मक संघर्ष के अखाड़े बन गये। 'पेरिवाल' ग्रुप ने यह कहा कि सामान्यतया श्रमिक-वर्ग के हितों की रक्षा करने वाला प्रोलितारियन् साहित्य नहीं हो सकता और यह शिक्षा दी कि लेखक को राजनीति से अलग रहना चाहिए। पेरिवाल ग्रुप ने व्यक्तिवाद की समाज से स्वतन्त्रता की माँग की, कला में चैतन्यवाद का निराकरण किया और कला के क्षेत्र में प्रातिभज्ञान (इन्ट्यूशन)

तथा अतीन्द्रियता (इरॅशनलिज़्म) की दुहाई दी। 'लेफ़' समुदाय के लोगों ने 'तथ्य का साहित्य' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि लेखक को झूठ या मन-गढ़न्त से बचना चाहिए और जीवन में विद्यमान तथ्यों का उपयोग करना चाहिए। जिस लेखक की रचना में मिथ्यात्व का समावेश रहता है उसकी सर्जना का सामाजिक महत्त्व शिथिल पड़ जाता है। 'कला कला के लिए' प्रतिक्रियावादी सिद्धान्त भी प्रस्तुत किया गया जिसके द्वारा कृति के रूप पर ज़ोर दिया गया और उसके वस्तु-तत्त्व (विचार, समाज आदि) की उपेक्षा की गयी। संक्षेप में इन सब सिद्धान्तों का विरोध या संघर्ष सोवियत की पार्टीवादिता से था या सोवियत-साहित्य के इस मूल दृष्टिकोण या सिद्धान्त से था कि वर्ग-युक्त समाज में तटस्थ या वर्गशून्य साहित्य न होता है और न हो सकता है तथा लेखक की सर्जना जनहित के लिए होनी चाहिए और जो कुछ वह जनता को देता है उसकी पूरी-पूरी सामाजिक तथा राजनीतिक जिम्मेदारी उस लेखक पर है।

किन्तु अब शासन और अधिकार कम्यूनिस्ट पार्टी के हाथ में था और उसने अपने दृष्टिकोण के अनुरूप साहित्य का संचालन नये मार्ग पर किया। इस विचारात्मक संघर्ष से सोवियत-साहित्य और पुष्ट होकर निकला। उसने सोवियत-लेखकों की सर्जनात्मक प्रतिभा के आधार-रूप समाजवादी यथार्थवाद की दिशा या सिद्धान्त को विकसित किया और जनता को समाजवाद और साम्यवाद की भावना से सिक्त करने का अपना लक्ष्य स्थिर किया। उसने स्व-आलोचना को भी बढ़ावा दिया जिसने लोगों की ग़लतियों को प्रदर्शित कर उनकी प्रतिभा के विकास में सहायता दी।

इस प्रकार कम्यूनिस्ट पार्टी ने सोवियत-साहित्य के आरम्भ से ही उसका संचालन किया जिससे कि एक ओर उसका संगठनात्मक रूप स्थिर हुआ और दूसरी ओर उसे निश्चित विचारात्मक दिशा मिली। गृह-युद्ध के युग से आरम्भ कर पार्टी-नेतृत्व सोवियत-साहित्य के प्रत्येक युग के विकास के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक तथा संगठनात्मक मार्ग प्रदर्शित करता रहा।

गृह-युद्ध का चित्रण

गृह-युद्ध सारे देश में फैल गया और जनता की समस्त साहस तथा बलिदान से बड़े परिश्रम से विजय प्राप्त की। इससे स्वाभाविक ही था कि गृह-युद्ध का विषय-वस्तु साहित्य में व्यापकता प्राप्त करती। फलतः हमें सोवियत साहित्य के प्रत्येक युग में गृह-युद्ध को अंकित करने वाली कृतियाँ मिलती हैं। कविता और गद्य-साहित्य के सभी रूपों में इसकी चर्चा लेखकों ने की है। काव्य — मायाकोव्स्की, बग्रीत्स्की, तीखोनोव आदि; गद्य — सिराफ़िमोविच, इवानोव, फ़ोर्मानोव; नाटक — विश्नेव्स्की। गृह-युद्ध के चित्रण की अवधारणा के बीच कुछ एकता भी है। यह सबसे पहले जनता के सामूहिक चेतन आंदोलन या प्रगति के रूप में है फिर युद्ध के बीच निर्मित होनेवाले जननायक की समस्या है और अंत में क्रान्ति तथा गृह-युद्ध का संचालन और नेतृत्व करनेवाली पार्टी की समस्या है। वस्तुतः यह समस्याएँ सब एक दूसरे से घुली मिली हैं। केवल लेखक का किसी एक ओर विशेष झुकाव इनमें से किसी को विशेष महत्व दे देता है।

अ० एस० सिराफ़िमोविच की सर्जना

अक्तूबर क्रान्ति के आरम्भ से ही सिराफ़िमोविच बोल्शेविक प्रेस (इज़्वेस्तिया) के काम में लगा रहा। मोर्चे पर युद्ध-समाचारदाता के रूप में (प्राव्दा) यह काम करता रहा और उसका कृतित्व भी चलता रहा। लेनिन ने उसके कार्य की बड़ी प्रशंसा की। ७० वर्ष की आयु में वह लेनिन के पुरस्कार से विभूषित हुआ (सन् १९३३)। और सन् १९४३ में प्रसिद्ध लाल तारे के पुरस्कार से। सोवियत-शासन के बीच उसकी कई कृतियाँ ('अथाह फ़ौज' १९४१, 'दो मौतें' १९२१, चमत्कार १९२३, 'लेनिन के यहाँ मेहमान' १९४६) आदि प्रकाशित हुईं।

लौहधार (१९२४)

किन्तु क्रान्ति के बाद की उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति 'लौहधार' है जो सोवियत-साहित्य की क्लासिक बन गई। इसमें क्रान्ति का जन रूप प्रदर्शित किया गया है और यह दिखाया गया है कि किस प्रकार

पार्टी के नेतृत्व में क्रान्ति जन-आन्दोलन बन गयी और जिस प्रकार जनता की शक्ति ने अपने मार्ग की सभी बाधाओं को कुचल दिया और सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की। संक्षेप में यही इसकी कथा-वस्तु है।

जन-समूह को यह शक्ति सहसा नहीं प्राप्त हो जाती। लेखक प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार अनवरत युद्ध के बीच उसका संगठन क्रम-क्रम शुरू होता है और वह भीड़ जनशक्ति बन जाती है और इसका नेता वही है जो जनता से आया है और उसके रास्ते पर चलता है।

यह जनसमूह ही इसका नेता है। उसके व्यक्तित्व का विशद चित्रण नहीं मिलता। कजूख का चित्रण वास्तव में बहुत ही संक्षिप्त हुआ है। इसी प्रकार अपने सामान्य अर्थ में इसका कोई कथानक नहीं है। नायक स्वतः जनसमूह है और उसकी गतिविधि पर कथानक या वस्तु विधान निर्मित होता है फिर भी लेखक सारे उपन्यास में घटनाओं या परिस्थितियों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि उनसे पात्रों का स्पष्ट चित्र सामने आ जाता है। कजूख और आनका के बीच का दृश्य ऐसा ही है।

ऐसी ही इसकी भाषा है। इसमें पात्रों की व्यक्तिगत भाषा नहीं है जिससे कि उनके स्वभाव का आभास मिल सके। इसमें जनसमूह की ही भाषा मिलती है, उसी का समवेत गान है और उसी की भाषा के अनेक स्वर मिलते हैं और उसी की प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति मिलती है। लेखक की भाषा वह यथार्थवादी ढंग से जीवन की घटनाओं का चित्रण करती है और उसमें रोमांटिक वाणी का रंग भी मिल जाता है। वाणी की संक्षिप्तता की कमी वर्ण्य-वस्तु के प्रति रोमांटिक संबंध की शक्ति से पूरी हो जाती है। उपन्यास यथार्थ सामग्री पर आधारित है। सन् १९१८ में तमान की फौज (जो श्वेत गार्ड और विद्रोही कज़ाक कुलक से घिरी हुई थी) के आक्रमण की घटना—फिर भी उसमें व्यापक सामग्री का उपयोग हुआ है जिससे क्रान्तिकारी युद्ध की व्यापकता का आभास मिलता है। यह 'लौहधार' समाजवादी यथार्थवाद पर आधारित सर्जना की अभिव्यक्ति का उदाहरण है। इसमें जीवन का चित्रण उसके क्रान्ति

कारी विकास के बीच हुआ है और कम्युनिस्ट नायक का—ठोस नायक का–चित्र प्रस्तुत किया गया है।

फुरमानोव का चपायेव (१९२३)

द० फुरमानोव (१८९१–१९२६) की रचना 'चपायेव' सिराफिमोविच की रचना की अपेक्षा गृह-युद्ध के अन्य प्रसंगों से संबंधित है। इस रचना का लक्ष्य जन-नायक का चित्र प्रस्तुत करना है जो कि क्रान्ति के वर्षों में समाजवाद के योद्धा और प्रस्थापक के रूप में हमारे सामने आया।

उपन्यास 'लौहधार' की अपेक्षा यह बड़ा भी है और सच्ची यथार्थ सामग्री पर आधारित है। फुरमानोव कामसना के (पलकोवनिक) कमांडर कुंजे के अत्यन्त निकट था। १९१९ में उसे कल्चाक के विरुद्ध युद्ध में मोर्चे पर भेजा गया जहाँ वह डिवीजन का कमिसार (कमिश्नर) बनाया गया इसका कमांडर 'चपायेव' था। फुरमानोव ने इसमें चपायेव के जीवन और मृत्यु की कथा प्रस्तुत की है। वह स्वयं क्लीचकोव के नाम से इसमें भाग लेता है।

चपायेव के रूप में फुरमानोव ने जन-नायक की बहुत सी विशिष्टताओं का सजीव अंकन प्रस्तुत किया है और यह प्रदर्शित किया है कि क्रान्ति ने किस प्रकार इसको मुग्ध बनाया। लेखक ने चपायेव का वैसा ही चित्र अंकित किया है जैसा कि वह जीवन में था। इस चित्र का महत्व केवल इस बात में नहीं है कि यह जन-नायक का चित्र है वरन् उसमें नयी परिस्थितियों के बीच इस नायक का विकास क्रम भी प्रदर्शित है चूँकि वह सेना की सेवा में लगा हुआ है इसलिए उसकी विशिष्टताओं का महत्व और भी बढ़ जाता है। उसकी विशिष्टताएँ—दृढ़ता सहनशीलता साहस आदि—युद्ध के बीच और भी विकसित होती हैं और वह और भी ऊँचा उठता है।

चपायेव क्रान्ति के पहले ही से अच्छा सिपाही था किन्तु ज़ार की सेना में ऐसे आदमी का कोई मूल्य न था जो प्रमुखवर्ग का न हो (और पार में कसूर के साथ भी यही हुआ) और उस समय उसके सामने कोई

ऊंचा लक्ष्य भी न था। अक्तूबर-क्रान्ति ने यह सब बदल दिया और लोगों के समक्ष उच्च लक्ष्य और आदर्श प्रस्तुत किया देश तथा जनता का मार्ग—इस लक्ष्य ने अपनी उत्कृष्ट विशिष्टताओं को विकसित करने का पूरा-पूरा अवसर दिया। चपायेव का भी विकास हुआ। चपायेव के रूप में हमारे सामने धीरे-धीरे एक प्रतिभाशाली कुशल सेना-संचालक का उदय होता है। युद्ध में वह शांत और अविचल रहता है और सिपाहियों को जोश से भर देता है। उसमें अद्भुत आकर्षण है। सिपाही उसकी बात सुनकर मुग्ध हो जाते हैं। नाचने और गाने की भी उसमें अच्छी प्रतिभा है। इन सब मानवीय गुणों के आधार पर उसका सैनिक प्रभाव आधारित है। इसके साथ ही उसका संबन्ध उसकी सारी दुर्बलताओं और अपूर्णताओं के साथ किया गया है। उपन्यासकार ने इस पर पर्दा नहीं डाला है वरन् यह दिखाया है कि चपायेव किस प्रकार क्लीचकोव के प्रभाव में इनको धीरे-धीरे दूर करता है।

सन् १९२० के आरम्भ के साहित्य में प्राप्त कम्यूनिस्टों के उत्तम चित्रों में से क्लीचकोव का चित्र एक है। इसमें क्रान्ति के बीच पार्टी के नेतृत्व और सैनिक महत्त्व को प्रदर्शित किया गया है। क्लीचकोव के प्रभाव में चपायेव का विकास इसी महत्त्व का प्रतीक है। सारा उपन्यास पार्टी के संचालन से प्रेरित है और यह नेतृत्व ऐसी सुविधाएं प्रस्तुत करता है जिसमें चपायेव के समान देशभक्त निर्मित होते हैं और अपनी मानवीय शक्ति को विकसित करते हैं।

चपायेव का यह चित्र लोकप्रिय जन-नेता का चित्र बन गया। इसने द्वितीय महायुद्ध में लोगों को देश रक्षा के लिए सब कुछ करने को तय्यार, तत्पर बना दिया और उनमें अपूर्व आत्मिक शक्ति भर दी। इसी में इस रचना का व्यापक महत्त्व है।

चपायेव के निकट और समान ही फुर्मानोव की दूसरी कृति 'विद्रोह मितेज' (१९२५) है। इसमें यह बताया गया है कि मध्य एशिया के एक शहर में कम्यूनिस्टों का एक छोटा सा समुदाय किस प्रकार श्वेत गार्ड द्वारा भड़काए हुए एक सैनिक विद्रोह को रोकता है। इस विद्रोह के

समय में स्वयं फुरमानोव ने हिस्सा लिया था। पार्टी द्वारा शिक्षित यह समुदाय शांत और दृढ़ है और प्रतिक्षण जीवन की बलि देने को तैयार है। कम्यूनिस्ट भड़काये दल से उन्हीं की सामान्य भाषा में बातचीत करते हैं और उनको समझा लेते हैं। विद्रोह शांत हो जाता है और शत्रुओं की चाल व्यर्थ हो जाती है।

यद्यपि यह कथा यथार्थ घटना पर आधारित है फिर भी इसका रूप सर्वथा कलात्मक है और उसके माध्यम से फुरमानोव ने कम्यूनिस्टों का चरित्र अंकित किया है। यह चरित्र विशेष रूप से उस समय उभरता है जब कि लेखक को विद्रोहियों की सभा में भाषण देना है जहाँ कि उसकी मृत्यु निश्चित है। वह सोचता है कि "यदि अन्त निश्चित है तो ऐसी मृत्यु चुनो जिससे बढ़कर दूसरी न हो"। ऐसे मरो कि तुम्हारी मृत्यु से भी लाभ हो। कुत्ते की तरह घिघियाते हुए, काँपते हुए मरना अच्छा नहीं। अच्छी तरह मरो। इसमें ऐसे कम्यूनिस्ट का चित्र है जो अन्तिम साँस तक जनता की सेवा करता है। यहाँ तक कि मौत को भी अपने ध्येय की सेवा करने को विवश करता है। इसमें फुरमानोव की रचना की पार्टीवादिता भी प्रकट होती है।

फुरमानोव की शीघ्र मृत्यु ने उनकी रचना को पूरा-पूरा विकसित होने का अवसर न दिया। सोवियत-साहित्य के बीच उनका अपना विशिष्ट स्थान है और चपायेव का चित्र सोवियत-साहित्य के विशिष्ट चित्रों में से एक है।

इन्हीं वर्षों में साइबेरिया में छापामारों के युद्ध की विषय-वस्तु इवानोव की कहानी ब्रान पोएज्द १४–६९ (ब्रान रेलगाड़ी १४–६९) के मूल में है। यह कहानी इवानोव की छापामार कहानियों में सर्वश्रेष्ठ है। इसमें छापामारों को जनशक्ति से समन्वित और शक्तिशाली चित्रित किया गया है जो कि जनता के श्रेष्ठ गुण साहस और अथक परिश्रम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लिबेदिन्स्की की कहानी 'सप्ताह' में उन प्रथम कम्यूनिस्टों का चित्र है जो सोवियत शासन के पक्ष में उस समय लड़ रहे थे जब कि कतिपय

यत्नों में क्रान्ति विरोधी 'श्वेत पक्ष' का आधिपत्य था। इस कहानी में उस समय का पूरा चित्र है। यह कहानी उस समय अत्यन्त लोकप्रिय हुई।

ल्यूबोव यरोवाया क० त्रेन्योव

गृह युद्ध के विषय से सम्बन्धित कृतियों में त्रेन्योव का 'ल्यूबोव यरोवाया' और अ० फदेयेव का 'नाश' महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। दोनों कृतियों में दो मार्गों का प्रदर्शन किया गया है। एक मार्ग जनता की ओर जाता है और क्रान्ति का अनुसरण करता है जिसमें व्यक्ति को अपने चरित्र की साहस पूर्ण विशिष्टताओं को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है (लेविन्सन मरोज़का बकलानोव ल्यूबोव यरोवाया) और दूसरा रास्ता व्यक्तिगत संकीर्ण स्वार्थ की ओर जनता से दूर ले जाकर और नाश की ओर ले जाता है (मिखाइल यरोवोय मेचिक)।

यह नाटक तो सोवियत-उपन्यासकार और नाटककार (१८७८-१९४५) त्रेन्योवकी सर्वोत्तम कृति है। उसकी पहली कहानी १८९८ में छपी। उसकी सृजनात्मक प्रतिभा के विकास में गोर्की का बड़ा हाथ है। क्रान्ति के पूर्व उसने कई महत्त्वपूर्ण कृतियाँ प्रस्तुत कीं किन्तु क्रान्ति के बाद उसकी चेतना सामाजिक दल से संयुक्त हुई और उसने उस गृह-युद्ध के नायक की नयी विशेषताएँ चित्रित करने का अवसर प्रदान किया। अक्तूबर क्रान्ति के बाद उसने कई नाटक 'पहली अनुभव सेवा' के रूप पर आदि लिखे। क्रान्ति के युग में जनता के साथ उभरनेवाले सामाजिक संघर्ष तथा इसमें विकसित होने वाली चारित्रिक शक्ति और गम्भीरता की भावना ने उसे नाटक लिखने की प्रेरणा दी।

किन्तु उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति नाटक 'ल्यूबोव यरोवाया' है। सन १९२६ में यह सब से पहले मास्को थियेटर के रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया और उस समय से अभी तक बड़ा लोकप्रिय है। इस नाटक में देश में व्याप्त वर्ग-संघर्ष की तीक्ष्णता प्रस्तुत की गयी है। ऐसी तीक्ष्णता जो परिवार को नष्ट कर देती है और प्रियतम एक दूसरे के विरोधी बन जाते हैं। इसके साथ ही इसमें यह शक्ति भी है कि क्रान्ति के पक्ष में ही

और जनता के साथ ही व्यक्तित्व का विकास होता है और जनता के विपक्ष में होने से उसका ह्रास होता है।

नाटक पति-पत्नी के जीवन और क्रांति से संबंधित है। क्रान्ति के पूर्व दोनों का जीवन बड़ा प्रेमपूर्ण था किन्तु क्रान्ति में अलग-अलग रास्ता अपनाने के कारण वे अलग हो जाते हैं और उनके बीच विचारों की बहुत बड़ी खाई आ जाती है।

पति क्रान्तिकारियों का विरोधी बनता है और पत्नी ल्यूबोव यारोवाया क्रान्ति का पक्ष ग्रहण करती है। पत्नी के हृदय में पति के लिए प्रेम है किन्तु कर्तव्य की भावना उससे भी अधिक दृढ़ है। अन्त में वह सदा के लिए पति से अलग हो जाती है। अन्त में परिस्थिति ऐसी आती है जिसमें उसे अपने पूर्व पति के विरुद्ध खुले रूप में लड़ना है और उसे पकड़कर न्याय के सुपुर्द करना है। इस प्रकार गृह-युद्ध के विराट् नाटक के बीच दो हृदयों का व्यक्तिगत संघर्ष और नाटक भी चल रहा है जिसमें पत्नी प्रेम को ठुकराकर कर्तव्य का अपने देश का और जनता का साथ देती है। दो वर्ष तक वह पति को मृत समझती रही। किन्तु जब दोनों की भेंट होती है और उसे पता चलता है कि वह श्वेतगार्डों के साथ है तो वह क्षुब्ध हो जाती है। अभी उसमें पति के प्रति प्रेम है और वह उसे बचाना चाहती है किन्तु जब वह जान जाती है कि पति सर्वथा सोवियत-शासन के विरुद्ध है तो वह उसे न्याय के हाथ में सौंप देती है—ऐसे समय सौंप देती है जब कि उसे बचाया जा सकता था।

यह नाटक यह प्रदर्शित करता है कि महान लक्ष्य की प्राप्ति में देश की स्वाधीनता के लिए युद्ध में तथा जनता का साथ देने ही में पूर्ण मानवीय चरित्र का विकास होता है।

यह नाटक सोवियत नाट्य साहित्य की महान् सफलता है। विचारों की गम्भीरता और चरित्र की स्पष्टता की दृष्टि से यह सोवियत नाट्य साहित्य की अत्यन्त सफल कृति मानी जाती है। इसकी महत्ता इस बात में भी है कि उसमें गृह-युद्ध में भाग लेनेवाली रूसी नारी का चित्र प्रस्तुत

किया गया है। इसमें अपने युग के सभी जटिल सामाजिक संबंधों तथा व्यक्तिगत संबंधों के साथ गृह युद्ध का आरम्भिक युग चित्रित किया गया है और देश विरोधी श्वेतगार्डों की व्यंग्य पूर्ण आलोचना की गयी है।

गृहयुद्ध के युग में गाँवों में जो तीक्ष्ण वर्ग-संघर्ष चला उसने बहुत से सोवियत-लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया। इनमें नेवेरोव (बत्तख हंस) सइफूल्लिना (विरीनेया) विमोनोव (बरगुजी) और कोलोसोव मुख्य हैं। इनकी कृतियों के मूल में किसान और कुलकों का संघर्ष है।

इसका सबसे अच्छा अभिव्यंजन नेवेरोव के अपूर्ण उपन्यास 'बत्तख हंस' में हुआ है। इसका मूल विचार यह है कि किसानों के बीच 'हंस' हैं जो नये जीवन की ओर उड़ना चाहते हैं किन्तु उनके बीच बत्तखें भी हैं जो जमीन की ओर खींचती हैं और जो हंस की स्वाधीन उड़ान को नहीं समझतीं या नहीं समझ पातीं। उपन्यास में किसान और कुलकों की शक्ति को दो सामाजिक शक्तियों के रूप में एक दूसरे के विरोध में प्रस्तुत किया गया है।

नेवेरोव की कहानी 'ताशकंद रोटी वाला शहर' भी बड़ी लोकप्रिय है। इसमें एक लड़के का चित्रण है जो अनेक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर परिवार को खिलाने के लिए रोटी ले आता है।

सेइफूल्लिना ने अपनी कृतियों में किसानों में जागरण लाने वाली और किसानों की चेतना और रहन-सहन में शताब्दियों से पैठी हुई प्राचीन व्यवस्था और अन्धविश्वास को तोड़नेवाली क्रान्ति की क्रान्तिकारी शक्ति का चित्रण किया है। 'विरीनेया' में किसान और विरीनेया का व्यक्तित्व के दमन के खिलाफ विरोध प्रदर्शित किया गया है। बाद में लेखिका ने इसे नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किया।

ग्राम जीवन पर इस क्रान्ति का जो गंभीर प्रभाव पड़ा है उसका अंकन विमोनोव के उपन्यास 'बरगुजी' में हुआ है। इसमें पुरानी दुनिया का गाँवों के कुलकों और युक्स्पेट (चेट्रियार्कल) व्यवस्था का—नाश और नूतन तथा संगठित क्रान्ति की विजय का आरम्भ प्रदर्शित किया गया है। उपन्यास का मूलभूत संघर्ष दो भाइयों की मुठभेड़ में प्रदर्शित किया गया

है। एक भाई क्षिम्योन क्रान्ति विरोधियों के पक्ष में है और दूसरा भाई पाद्रिक बोल्शेविकों के साथ है।

इन्हीं वर्षों में लोगों का ध्यान शोलोखोव के कहानी-संग्रह 'डान की कहानियाँ' की ओर गया जिसमें डान-प्रदेश के गाँवों के जीवन में क्रान्ति का प्रवेश चित्रित किया गया है। इनमें उस समय का संघर्ष और उस क्षेत्र के रहन-सहन तथा स्थानीय रंग का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है। इनमें कज़्ज़ाकों का पाशविक रूप और उसके विरोध में किसानों के बीच बढ़ती हुई प्रगतिशील शक्ति दोनों का उद्घाटन हुआ है।

इन लेखकों के साथ-साथ ज़माइत्स्की कराएवा गरबूनाव तथा अन्य लेखकों ने भी अक्तूबर क्रान्ति गृह-युद्ध और प्रारम्भिक निर्माण के प्रथम वर्षों के युग के देहातों के विषम वर्ग-संघर्ष का चित्रण किया है।

पुनर्निर्माण का युग

सन् बीस के वर्षों के उत्तरार्द्ध में जब कम्यूनिस्ट पार्टी ने देश के समाजवादी औद्योगीकरण का आरम्भ किया तो साहित्य के सामने नयी समस्याएँ आईं। देश के पुनर्निर्माण का पथ शुरू हुआ। श्रमिक वर्ग के लाखों और करोड़ों लोगों के उत्साहपूर्ण परिश्रम ने सारे देश के पुनर्निर्माण में अपूर्व प्रगति पैदा कर दी। देश समाजवाद की प्रतिष्ठा की ओर बढ़ा। देश के औद्योगीकरण के लिए नये लोगों की उद्योग के नये निर्माताओं और विशेषज्ञों की टोलियाँ तय्यार करने की अनिवार्य आवश्यकता थी। स्तालिन ने कहा कि "अब हमें बोल्शेविकों की आवश्यकता है—धातु कपड़ा ईंधन अर्थ-व्यवस्था के विशेषज्ञों की आवश्यकता है। अब हमें बोल्शेविकों में से हजारों तथा लाखों नये विशेषज्ञों के समुदाय की आवश्यकता है। इसके बिना अपने देश के तीव्र समाजवादी निर्माण की बात ही व्यर्थ है—कोई भी कार्य और विशेषतया अपने देश का औद्योगीकरण जैसा विशाल कार्य बिना योग्य आदमियों के बिना नये आदमियों के बिना नये निर्माताओं के समुदाय के पूरा नहीं किया जा सकता।"[1] स्तालिन के

[1] रूस्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा ल०इ० तिमोफ़ेयेव पृ० १८९।

इन विचारों को ध्यान में रखने पर देश के औद्योगीकरण के लिए नये विशेषज्ञों के समुदायों के निर्माण का लक्ष्य ग्लादकोव के उपन्यास 'सीमेंट' का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है जो कि सन् बीस के वर्षों के साहित्य की प्रथम रचना है। इसमें कलात्मक रूप में औद्योगीकरण के मोर्चे पर बोल्शेविकों के कार्य का आरम्भ प्रदर्शित किया गया है।

पुनर्निर्माण की कथावस्तु फे० ग्लादकोव का 'सीमेंट' (१९२५)

ग्लादकोव का उपन्यास 'सीमेंट' पुनर्निर्माण के युग के आरम्भ में प्रकाशित हुआ। ग्लादकोव का साहित्यिक कार्यकलाप अक्तूबर क्रान्ति के पहले ही शुरू हो गया था। सन् १८८३ में एक निर्धन कृषक परिवार में उसका जन्म हुआ था। ९ वर्ष की अवस्था से ही उसे मछली पकड़ने टीमप्राप्ती आदि में काम करना पड़ा था। उसने बड़ी मुश्किल से स्कूल समाप्त किया और इसके पहले ही उसने अपनी पहली कहानी ('प्रकाश की ओर') छपाई। इसके बाद से वह नियमित रूप से लिखने लगा। १९०१ में उसका गोर्की से परिचय हुआ जिसने उसे एकदम बदल दिया। क्रान्ति में योग दिलाया निर्वासन साइबीरिया का जीवन इन सबने उसे विभिन्न व्यक्तियों का अद्भुत निरीक्षण और विशाल अनुभव दिया। अक्तूबर क्रान्ति के बाद उसने गृह-युद्ध में भाग लिया और गृहयुद्ध के बाद वह साहित्यिक कार्य में लग गया।

'सीमेंट' ने उसे सोवियत लेखकों की प्रथम श्रेणी में प्रतिष्ठित कर दिया। इस उपन्यास की ओर बहुतों का ध्यान गया। ग्लादकोव ने देश के जीवन की नयी विशेषताओं का और निर्माता—बोल्शेविकों का चित्र अंकित किया। इसके संबंध में गोर्की की टिप्पणी बड़ी महत्त्वपूर्ण है—"इसमें पहली बार क्रान्ति के बीच समकालीनता की सबसे महत्त्वपूर्ण विषय-वस्तु परिश्रम दृढ़ता और स्पष्टता के साथ अंकित किया गया है।"

इसका कथानक साधारण है। गृह-युद्ध के बाद कारखाने में बढ़ई ग्लेब चुमालोव वापस लौटता है। कारखाने की बड़ी बिरी दशा है। मशीनें खराब हो गयी हैं और मजदूर अपने कारखाने का काम अच्छी तरह न कर

अपने व्यक्तिगत काम में लगे हुए हैं। ग्लेब बड़े जोश के साथ उन सबका विरोध करता है जो कारखाने की उन्नति में बाधक हैं। पुनर्निर्माण का अनवरत परिश्रमशील कार्य उपन्यास की घटनाओं का मूल आधार है। कारखाने का पुनर्निर्माण जिससे कि यह देश के समाजवादी जीवन में भाग ले सके यह लोगों का पुनर्निर्माण भी है। ग्लेब धीरे धीरे श्रमिक वर्ग का संगठनकर्ता और नेता बन जाता है। आरम्भ में कारखाने का इंजीनियर उससे सतर्क और सावधान रहता है किन्तु बाद में अपने कारखाने के पुनर्निर्माण में लगे मजदूरों के परिश्रम और जोश को देखकर उसके हृदय में भी उच्च मानवीय भावनाओं का उदय होता है और वह उनके कार्य में उनका पूर्ण सहयोगी बन जाता है।

परिश्रम ही इस उपन्यास की विषय-वस्तु है। इस परिश्रम के विषय में उपन्यास के नायक का यह कहना है कि 'स्वच्छन्द और प्रिय परिश्रम ही जीवन का आधार होगा। स्वतन्त्र व्यक्ति का निर्माणकारी परिश्रम उसे सर्वशक्तिमान बना देता है, उसका परिश्रम प्रकृति पर विजय दिलाता है, जीवन को संगठित करता है और संसार को सजाता है।' इसी विचार का उपन्यास में विकास हुआ है। उसकी पत्नी दाशा का चित्र सोवियत साहित्य के उन चित्रों में से है जिनमें नयी प्रकार की स्त्री दिखाई गई है जो आदमी के साथ समानाधिकार के साथ नये जीवन के निर्माण में क्रियाशील है।

ग्लाडकोव का योगदान इस बात में है कि उसने सोवियत साहित्य में पहले पहल व्यापक प्रबन्धात्मक उपन्यास के रूप में मजदूर क्रान्ति की परिस्थिति के बीच श्रमिक-वर्ग के निर्माणकारी परिश्रम का चित्रण किया है।

'सीमेंट' के बाद बहुत सी रचनाएँ सामने आईं जिनमें इसी विषय-वस्तु पर ... दिया गया है ... समाजवादी व्यक्ति की नयी विशेषताएँ ... किया ... या पुनर्निर्माण में लगा है। ... चित्र ... साहित्य में प्राप्त समाजवाद ... के ... यद्यपि इस ... -वस्तु का

आरम्भ गोर्की से ही माना है। बाद के संस्करणों में उपन्यासकार ने इसकी भाषा में बड़ा सुधार किया।

'सीमेंट' के बाद श्रमिक-वर्ग और पुनर्निर्माण के इस युग की जनता के निर्माणकारी कार्य से संबंधित और बहुत सी कृतियाँ भी सामने आईं। इसके साथ ही अलेक्सेई तौल्स्तोय, दमित्र्यान शियकाम स्ताम्स्की विसी के उपन्यासों ने तथा अलेक्सेइपूव की कहानियों ने ('एक रात') और ल्यादकों की कथा (मदठी) ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। ये कृतियाँ बड़ी लोकप्रिय हुईं।

गद्य-क्षेत्र की अन्य विधाओं के समान इस युग का रंगमंच भी वैज्ञानिक समाज से ओतप्रोत है। कम्युनिस्ट पार्टी ने नये सोवियत रंगमंच के लिए बड़ा प्रयत्न किया और इस बात का भी प्रयत्न किया कि रंगमंच जनता के निकट आ जाय और रंगमंच के अभिनेता और कार्यकर्ता रूसी रंगमंच और नाट्य कला की प्रगतिशील परंपराओं को अपना लें। अतीत की रंगमंचीय संस्कृति की सर्वश्रेष्ठ परंपराओं को विकसित करते हुए और नयी सोवियत-कला का सर्वांग समर्थन करते हुए सोवियत-रंगमंच पार्टी की प्रेरणा पाकर फार्मलिज़्म, राजनीति से तटस्थता आदि के विरुद्ध आन्दोलन करता रहा। सोवियत-नाटककारों ने एक ओर तो अतीत में रूसी जनता द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गये युद्धों का चित्र प्रस्तुत किया और दूसरी ओर गृहयुद्ध तथा सोवियत युग की यथार्थताओं का अंकन किया। त्रेन्योव के नाटक पुगाचोवश्चिना में किसान विद्रोह के नेता पुगाचोव का चित्र अंकित किया गया है। इसी प्रकार बिल-बेलोत्सेरकोव्स्की के नाटक 'तूफ़ान' में एक छोटे से शहर में बोल्शेविकों का क्रान्ति-विरोधियों से युद्ध चित्रित किया गया है। इसी युग में रमाशोव का व्यंग नाटक 'हवाई पुलिया' प्रकाशित हुआ जिसमें व्यापारी-वर्ग और अधिकारी-वर्ग का मज़ाक उड़ाया गया है। इसमें उन लोगों की भावना प्रवृत्ति का बड़ा मार्मिक अंकन हुआ है।

काव्य के क्षेत्र में इस युग में मायाकोव्स्की तथा देम्यान बेदनी के साथ बग्रित्स्की, खारोव स्वेतलोव तथा ईसकोव जैसे अनाम कवियों

अपने व्यक्तिगत काम में लगे हुए हैं। ग्लेब बड़े जोश के साथ उन सबका विरोध करता है जो कारखाने की उन्नति में बाधक हैं। पुनर्निर्माण का अनवरत परिश्रमशील कार्य उपन्यास की घटनाओं का मूल आधार है। कारखाने का पुनर्निर्माण जिससे कि वह देश के समाजवादी जीवन में योग दे सके यह लाखों का पुनर्निर्माण भी है। ग्लेब धीरे धीरे श्रमिक वर्ग का संगठनकर्ता और नेता बन जाता है। आरम्भ में कारखाने का इंजीनियर उसमें सतर्क और सावधान रहता है किन्तु बाद में अपने कारखाने के पुनर्निर्माण में लगे मजदूरों के परिश्रम और जोश को देखकर उसके हृदय में भी उच्च मानवीय भावनाओं का उदय होता है और वह उनके कार्य में उनका पूर्ण सहयोगी बन जाता है।

परिश्रम ही इस उपन्यास की विषय-वस्तु है। इस परिश्रम के विषय में उपन्यास के नायक का यह कहना है कि स्वच्छन्द और प्रिय परिश्रम ही जीवन का आधार होगा। स्वतन्त्र व्यक्ति का निर्माणकारी परिश्रम उसे सर्वशक्तिमय बना देता है उसका परिश्रम प्रकृति पर विजय दिलाता है, जीवन को सुगठित करता है और संसार को सजाता है। इसी विचार का उपन्यास में विकास हुआ है। उसकी पत्नी दाशा का चित्र सोवियत साहित्य के उन चित्रों में से है जिनमें नयी प्रकार की स्त्री दिखाई गई है जो आदमी के साथ समानाधिकार के साथ नये जीवन के निर्माण में कार्यशील है।

ग्लादकोव का योगदान इस बात में है कि उसने सोवियत साहित्य में पहले पहल व्यापक प्रभावात्मक उपन्यास के रूप में अक्तूबर क्रान्ति की परिस्थिति के बीच श्रमिक-वर्ग के निर्माणकारी परिश्रम का चित्रण किया है।

सीमेंट के बाद बहुत सी कृतियाँ सामने आईं जिनमें इसी विषय-वस्तु का विकास किया गया और जिनमें समाजवादी व्यक्ति की नयी विशेषताएं दिखाने का प्रयत्न किया गया जो पुनर्निर्माण या नवनिर्माण में लगा है। ग्लेब तथा दाशा के चित्र बाद में सोवियत साहित्य में प्राप्त समाजवाद के निर्माताओं के चित्रों के आरम्भिक रूप हैं यद्यपि इस विषय-वस्तु का

प्रारंभ मोर्चों से हो जाता है। बाद के संस्करणों में उपन्यासकार ने इसकी भाषा में बड़ा सुधार किया।

'सीमेंट' के बाद श्रमिक-वर्ग और पुनर्निर्माण के इस युग का अनगिनत निर्माणकारी कार्य से संबंधित और बहुत सी कृतियाँ भी सामने आईं। इसके साथ ही अलेक्सेई तोल्स्तोय, वसिम्यान शिशकोव स्लाम्स्की जिगी के लेखों ने तथा मर्सोलिएव की कहानियों ने ('एक रात') और ल्याशको की कथा (भट्ठी) ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। ये कृतियाँ बड़ी लोकप्रिय हुईं।

गद्य-क्षेत्र की अन्य विधाओं के समान इस युग का रंगमंच भी सैद्धान्तिक संघर्ष से ओतप्रोत है। कम्यूनिस्ट पार्टी ने नये सोवियत रंगमंच के लिए बड़ा प्रयत्न किया और इस बात का भी प्रयत्न किया कि रंगमंच जनता के निकट आ जाय और रंगमंच के अभिनेता और कार्यकर्ता रूसी रंगमंच और नाट्य कला की प्रगतिशील परंपराओं को अपना लें। अतीत की रंगमंचीय संस्कृति की प्रगतिशील परंपराओं को विकसित करते हुए और नयी सोवियत-कला का प्रदर्शन समर्थन करते हुए सोवियत-रंगमंच पार्टी की प्रेरणा पाकर फार्मलिज्म राजनीति से तटस्थता आदि के विरुद्ध आन्दोलन करता रहा। सोवियत-नाटककारों ने एक ओर तो अतीत में रूसी जनता द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गये युद्धों का चित्र प्रस्तुत किया और दूसरी ओर गृहयुद्ध तथा सोवियत युग की यथार्थताओं का अंकन किया। त्रेन्योव के नाटक पुगाचोव रचना में किसान विद्रोह के नेता पुगाचोव का चित्र अंकित किया गया है। इसी प्रकार बिल्ल-बेलोत्सेरकोव्स्की के नाटक 'तूफान' में एक छोटे से शहर में बोल्शेविकों का क्रान्ति-विरोधियों से युद्ध चित्रित किया गया है। इसी युग में रमाशोव का व्यंग नाटक 'हवाई पुलिया' प्रकाशित हुआ जिसमें व्यापारी-वर्ग और अधिकारी-वर्ग का मजाक उड़ाया गया है। इसमें उन लोगों की लालची प्रवृत्ति का बड़ा सजीव अंकन हुआ है।

काव्य के क्षेत्र में इस युग में मायाकोव्स्की तथा देम्यान बेदनी के साथ बेजिमेन्स्की जारोव स्वेतलोव तथा उत्किन जैसे जवान कवियों

के नाम भी सुनाई देते हैं। तीखनोव का नाम भी इस समय बड़ा लोकप्रिय हुआ। इन 'कमसोमोल' कवियों की प्रतिभा के साथ-साथ सोवियत-काव्य यथार्थता की ओर भी उन्मुख हुआ। यद्यपि अभी इन युवक कवियों की प्रतिभा प्रौढ़ नहीं हुई थी फिर भी उनमें क्रान्ति का पूरा वेग और साम्यवाद की विजय का अडिग विश्वास था।

बेजिमेंस्की के काव्य-संग्रह 'जीवन कैसे महक रहा है' में कवि यथार्थ जीवन की ओर उन्मुख है और देश के नवीन रूप रंग का चित्रण कर रहा है। यथार्थ जीवन की छोटी-छोटी बातों में और प्रतिदिन के निर्माणकार्य में कवि को विश्व क्रान्ति के महान् विचारों की झलक दिखाई पड़ती है। इसी प्रकार 'कमसोमोल' काव्य में प्रोलितारियत् साहित्य के राजनीतिक सिद्धान्तों की झलक है। यह काव्य उत्साही 'कमसोमोल' समुदाय या समूह का चित्रण करता है जो लक्ष्य की एकता से संगठित है और जो साम्यवाद की विजय के लिए हर प्रकार की कठिनाई झेलने को तय्यार है।

बेजिमेंस्की, ममोश्की, स्वेतलोव, देम्यान बेदनी के गीत सोवियत जनता के जीवन में पैठ गये और उनके सामूहिक जन-गीतों के विकास का आरम्भ हुआ। ये गीत सन् तीस के जमाने में बड़े व्यापक हुए। इन गीतों के नायक देश के रक्षक नाविक वीर, सोवियत-सैनिक हैं।

इन्हीं वर्षों में निकोलाई तीखनोव के गीत (बैलेड) बड़े लोकप्रिय हुए। इन गीतों में क्रान्ति के साहसी सैनिक का बड़ा सजीव चित्र उभरा है। अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों को समझने वाला और सच्चे साहस से युक्त यह समकालीन सैनिक ही तीखनोव के गीतों का नायक है।

इस युग के सोवियत-काव्य में असेयेव का प्रमुख स्थान है। इसकी कविता क्रान्तिकारी भावना से ओतप्रोत और सोवियत जीवन, समाजवादी देश तथा निर्माण से सम्बन्धित है। उनके काव्य 'छब्बीस' में बाकू के उन साहसी कोम्मीसारों का वर्णन है जिनका नेता स्तेपान शाउम्यान

था और जो १९१८ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की गोली का शिकार बना।

क्रान्ति द्वारा गाँवों के रंग ढंग में जो परिवर्तन हो गया है और उसका जो निर्माणकारी कार्य चल रहा है उसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति ईसाकोव्स्की के काव्य में हुई है। अपनी संगीतात्मकता संक्षिप्तता और कथात्मकता में ये रचनाएं गीतों के अधिक निकट हैं जिनका ईसाकोव्स्की आगे चलकर कुशल आचार्य और रचनाकार बन गया। इन रचनाओं का मूल भाव समाजवादी युग में गाँव और शहरों के बीच की प्रतिक्रिया से प्रतिष्ठित खाई को नष्ट करना है। कवि गाँवों के जीवन में नवीन–रेडियो बिजली ट्रैक्टर आदि के प्रवेश से प्रसन्न है। ईसाकोव्स्की जनता का एक में मिलाने वाले सामूहिक परिश्रम का गुणगान कर रहा है जो कि गोर्की के शब्दों में पृथ्वी पर चमत्कार की सृष्टि करता है।

संक्षेप में इस युग के समाजवादी काव्य की विशेषताएं हैं——परिश्रम की काव्यात्मक अभिव्यक्ति कला का जीवन के निकट आना प्रगीतों के नायक का गंभीर अंकन जो सोवियत-नैतिक और मानसिक की सामान्य विशेषताओं से समन्वित है तथा रोमांटिक प्रेम से युक्त यथार्थवादी ठोस तथ्य की ओर प्रवृत्ति।

सोवियत-साहित्य के इतिहास में गृह-युद्ध और जातीय आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण के वर्ष बड़े महत्वपूर्ण और सर्जना से परिपूर्ण वर्ष माने जाते हैं। इन्हीं वर्षों में रचनात्मक साहित्यिक आन्दोलन को व्यापकता प्राप्त होती जाती है। १९१७–१८ में फुरमानोव और वेशिके-स्की साहित्य में आये १९२० में तीखनोव तथा कवेरिन १९२१ में सेइफूलिना बारोव मलाश्किन १९२२ में लियोनोव १९२३ में पोलोन्नोव फदेयेव, १९२४ में पउस्तोवस्की और १९२५ में फिम्मानोव साहित्य में आये।

इन्हीं वर्षों में गोर्की की क्रान्ति के बाद की प्रतिभा प्रौढ़ होती है और उसकी रचनाएं मौलिक विचार, चित्र तथा विषय-वस्तु प्रस्तुत करती हैं।

इन्हीं वर्षों में मायाकोव्स्की की महत्वपूर्ण रचनाएं सामने आती हैं जिनमें सोवियत देश-भक्ति की भावना और नये समाजवादी व्यक्ति का चित्र पूर्ण अभिव्यंजन प्राप्त करता है। इन्हीं वर्षों में गृह-युद्ध के

अनुभव भी साहित्यिक कृतियों में अभिव्यक्ति पाते हैं और उस समाजवादी
सोवियत-देशभक्ति का भी चित्र अंकित होता है जिसने युद्ध समाप्त कर
नष्टप्राय देश के पुनर्निर्माण की व्यवस्था शुरू की।

इन्हीं वर्षों में ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत हुईं जिनको सोवियत-साहित्य
में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। देश के नये समाजवादी जीवन के
अनुभवों में स्थित समाजवादी यथार्थवाद भी साहित्यिक क्षेत्र में कलात्मक
माध्यम के रूप में विकसित हुआ।

३ व्लदीमिर व्लदीमिरोविच मायाकोव्स्की

[१८९३–१९३०]

मायाकोव्स्की सोवियत-युग का महान् कवि है और अपन काव्य में मानवतावादी परंपरा अपनाने के कारण पुश्किन लेरमन्तोव नेक्रासोव जैसे बड़े कवियों की श्रेणी में लिया जाता है। इसके साथ ही वह सोवियत युग का कवि है और उसकी रचना सोवियत-व्यक्ति की अच्छी-अच्छी विशिष्टताओं (मानव स्वदेश-प्रेम सामूहिकता की भावना परिश्रम के प्रति उत्साह) का अभिव्यंजन करती है। इसी से उसकी लोकप्रियता बड़ी व्यापक है। उसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा ने प्रगीत मुक्तक प्रबन्ध-काव्य नाटक व्यंग्य आदि सभी की रचना की।

मायाकोव्स्की को उत्तेजक या प्रचारक कवि कहा जाता है और वह इसलिए कि उसने प्रगीत मुक्तकों के साथ क्रान्तिकारी राजनीतिक सांस्कृतिक जीवन से संबंधित रचनाएं प्रस्तुत की जिन्होंने जनता का उद्बोधन किया और जो जनता के बीच बड़ी प्रचलित हुए। उसकी कुछ पंक्तियाँ वस्तुतः लोकगीतों के रूप में क्रान्ति के समय बहुत सुनाई पड़ती थीं। उसके बहुत से प्रगीत-मुक्तक ऐसे हैं जिनकी विषय-वस्तु राजनीतिक है तथा जिनकी अनुभूतियाँ पाठकों में सामाजिक भावना जगाती हैं।

मानवतावाद, स्वदेश-प्रेम समाजवादिता जातिवादिता के भाव तथा अभिव्यंजना में नवीन उपादानों की खोज प्रचारात्मकता प्रगीतात्मकता आदि ने मायाकोव्स्की को सोवियत-साहित्य में अनुपम स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।

जीवन

मायाकोव्स्की का जन्म १८९३ में जार्जिया के एक गाँव (बगदादी)

में हुआ था। उसका पिता जंगल में नौकर था। सन् १९०५ से ही स्कूल में पढ़ते हुए मायाकोव्स्की राजनीतिक कारवाइयों में प्रदर्शन सभा आदि में भाग लेने लगा था।

१९०६ में उसके पिता की अचानक मृत्यु हो गई और परिवार को मास्को आना पड़ा। परिवार को अपनी आवश्यकता-पूर्ति के लिए कमरे किराए पर उठाने पड़े और लोगों का खाना बनाना पड़ा। क्रांतिकारी विद्यार्थियों ने कमरे ले लिये और यहीं वे अपना काम करने लगे। बालक मायाकोव्स्की इस प्रकार क्रान्तिकारी-साहित्य और कार्यकलाप से परिचित हुआ। इस बीच उसने दर्शन और कला का पर्याप्त अध्ययन किया। अध्ययन की पुस्तकों में मार्क्स के 'कैपिटल की भूमिका' ने उसे बहुत प्रभावित किया।

१५ वर्ष की उम्र में मायाकोव्स्की रूसी सोशल डिमोक्रेटिक पार्टी में शामिल हुआ। इस समय वह कला-स्कूल में पढ़ता भी था। इन्हीं वर्षों में वह तीन बार गिरफ्तार किया गया किन्तु उम्र कम होने के कारण उसे छोड़ दिया गया। फिर भी कई महीने (सात महीने) उसे जेल में रहना पड़ा और उसने इस समय का आत्म-शिक्षण के लिए पूर्ण सदुपयोग किया।

जेल से छूटने पर उसने कला-स्कूल में पढ़ना शुरू किया। वहाँ उसका बुर्ल्युक से परिचय हुआ जो कि एक कला के प्रसिद्ध स्कूल—फ्यूचरिज्म 'भविष्यवाद' का प्रतिनिधि था। इस प्रकार वह फ्यूचरिज्म के प्रभाव में आया।

१९१२ में एक संग्रह 'सामाजिक रुचि को तमाचा' निकला जिसमें फ्यूचरिस्टों का सामूहिक मैनिफेस्टो प्रकाशित हुआ था और जिसमें मायाकोव्स्की का भी हस्ताक्षर था। इसमें मायाकोव्स्की की दो कविताएं थीं—'रात' और 'सुबह'। इसी वर्ष उसकी कविताओं का पहला संग्रह भी निकला।

१९१४ में वह क्रान्ति के पूर्व की अपनी उत्तम कविता 'पतलून में बादल' की रचना में लगा। फ्यूचरिस्टों के साथ सभाओं में कविता पढ़ने

के कारण उसे स्कूल से निकाल दिया गया। १९१५ में पहली बार उसका गोर्की से परिचय हुआ। उसने अपनी कविता 'पतलून में बादल' का कुछ अंश उसे सुनाया। गोर्की ने उसे अपनी पुस्तक 'बचपन' भेंट की।

१९१५ से वह अपनी रचनाएं नये व्यंग्य पत्र में छपाने लगा। बाद में व्यंग्य-कविताओं से युक्त उसके व्यंग्य-चित्र बहुत लोकप्रिय हुए।

१९१६ में मायाकोव्स्की अपने दो प्रबन्ध काव्य 'युद्ध और शांति' तथा 'मनुष्य' की रचना में लगा। १९१७ में उसने अपनी कविता 'मनुष्य' समाप्त की। फरवरी की बुर्जुआ डिमोक्रेटिक क्रान्ति को उसने 'श्रमिक आन्दोलन या मजदूर की बाढ़ का प्रथम दिन' कहा। मायाकोव्स्की यह दिन क्रान्ति के नगर पेत्रोग्राद की सड़कों पर बिताता है।

जब 'अवरोरा' जहाज की तोपों के साथ क्रान्ति के नये युग की गूँज सुनाई पड़ी उस समय मायाकोव्स्की क्रान्ति के केन्द्र स्मोलनी में ही था। इस प्रकार क्रांति के वातावरण के बीच मायाकोव्स्की की रचना का विकास शुरू हुआ।

मायाकोव्स्की की सर्जना का आरम्भ फ्यूचरिस्टों के बीच होता है। उसने पत्रिका में उनकी ओर से रचनाएं पढ़ीं और उनके मैनिफ़ेस्टो पर हस्ताक्षर किया। रचना के आरम्भिक वर्षों में उसके ऊपर फ्यूचरिस्टों का प्रभाव था। उसने लिखा कि "विचार शब्द को जन्म नहीं देता वरन् शब्द विचार को जन्म देता है—विचार या कथात्मक भाव की कोई चीज नहीं है।"

किन्तु आगे चलकर क्रान्तिकारी आन्दोलन के अनुभव मार्क्सवादी विचारों से परिचय तथा गोर्की के प्रभाव ने उसको धीरे-धीरे फ्यूचरिस्टों से अलग कर दिया और उसके दृष्टिकोण को बदल दिया। कला को सामाजिक अभिव्यंजना के रूप में ग्रहण करने के कारण मायाकोव्स्की ने काव्य से सामाजिक जीवन के युद्ध में योग देने की मांग की। मायाकोव्स्की ने लिखा कि 'आज की कविता युद्ध की कविता है। उसने यह भी कहा कि 'नयी कविता नयी मांगें पेश कर रही है। उसके लिए अभिव्यंजना के नये

साधन चाहिए, नये शब्द चाहिए। उसने लिखा कि नये काव्य को पुराने ढंग से नहीं लिखा जा सकता।

'पतलून में बादल'

इस प्रकार मायाकोव्स्की फ्यूचरिज्म को छोड़कर साहित्य-क्षेत्र में क्रान्तिकारी कवि और नवीनता के उन्नायक के रूप में प्रकट हुआ। किन्तु उसका नाम उस समय के महत्वपूर्ण कवि के रूप में तब चमका जब उसकी कविता 'पतलून में बादल' (१९१५) प्रकाशित हुई। इस कविता के चार अध्याय हैं। इसकी रचना के साथ कवि की सामाजिक हलचल पैदा करने वाली क्रान्ति की भावना और चेतना संबंधित है। वह स्वयं लिखता है 'पतलून में बादल' लिख रहा हूँ जिसके फलस्वरूप क्रांति की चेतना दृढ़ हुई। इसके साथ ही कवि में अपनी कलात्मक तथा विचारात्मक प्रौढ़ता की भावना भी दृढ़ हुई। वह लिखता है कि प्रौढ़ता का अनुभव कर रहा हूँ। विषय-वस्तु पर अधिकार प्राप्त कर सकता हूँ। उस कलात्मक कार्य का। विषय-वस्तु का प्रश्न प्रस्तुत कर रहा हूँ—क्रांति के बारे में 'पतलून में बादल' के बारे में सोच रहा हूँ।

जब सेंसर ने इसके पहले के शीर्षक (तीस मैना) का व्यंग्यात्मक पढ़कर उसकी स्वीकृति नहीं दी तो आमुख में कही गयी तुलना का उसने प्रयोग किया। यदि चाहते हैं तो विनम्र रहूँगा। आदमी न नहीं, पतलून में बादल। उसने इस कविता के बारे में भूमिका में कहा कि— 'पतलून में बादल' को मैं आज की कला की आलोचना समझता हूँ। तुम्हारे प्रेम का पतन हो, तुम्हारी कला का पतन हो, तुम्हारे धर्म का पतन हो, तुम्हारे समाज का पतन हो।"

इन शब्दों में इस कविता के मूल भाव अभिव्यक्त हो गये हैं। कवि कृत्रिम प्रेम की भर्त्सना करता है। मानवीय अनुभूतियाँ सत्यानुभूति झूठे सामाजिक सम्बन्धों के कारण ठुकरा दी जाती है। इसमें इन सम्बन्धों का नाश हो और उस समाज या संगठन या स्तर का नाश हो जो मानवीय अनुभूतियों की सरसता में बाधा पहुँचाता है। इसी तरह उस झूठे प्रेम का नाश हो जो उस समाज में सामान्य रूप से फैला है। इस कविता में व्यक्ति-

गत पीड़ा व्यापक सार्वजनिक रूप धारण कर लेती है। कवि की व्यक्तिगत ट्रैजेडी उसके साथ ही हजारों दूसरे बेजुबान लोगों की भी ट्रैजडी है जिनकी वाणी कवि मायाकोव्स्की बनना चाहता है। वह समकालीन जनता की व्यथा इच्छा और आन्दोलन को प्रकट करना चाहता है।

मायाकोव्स्की ने जिस प्रकार झूठे प्रेम पर प्रहार किया उसी प्रकार झूठे धर्म पर भी। उसने सामाजिक असामञ्जस्य को समझा और उसका अनुभव किया। व्यक्ति तथा कवि दोनों रूपों में मायाकोव्स्की ने यह निश्चय कर लिया कि अब आप इसी तरह सोया नहीं रह सकता और यह कि पुरानी दुनियाँ आखिरी साँस ले रही है। कवि अपने को अपनी आती हुई क्रान्ति का एक हिस्सा समझता है। अपने को वह क्रान्ति का अग्रदूत समझता है। वह क्रान्ति की सेवा में रत है। क्रान्ति के लिए वह सब कुछ करने को तैयार है। "तुमको (क्रान्ति) मैं अपना हृदय निकाल कर दे दूँगा। खून में रंगे हुए हृदय को तुम्हें झंडे की तरह दे दूँगा।

इस कविता में मायाकोव्स्की की मौलिकता प्रकट होती है यद्यपि काव्य-युक्तियाँ काव्य-विषय से सम्बन्धित हैं। पूरी कविता एक आदमी के स्वगत कथन के रूप में है जो सब पीड़ा के बारे में कहना चाहता है और विशेष कर से यह कहना चाहता है कि जीवन में आमूल परिवर्तन आवश्यक है। नायक का व्यक्तिगत मनोभाव पूरे काव्य को एकता प्रदान करता है और इस प्रकार एक विषय से दूसरा विषयान्तरण इसी भाव से प्रेरित प्रतीत होता है। उसकी काव्य-युक्तियाँ भी कवि के क्रान्तिकारी अनुभव और संस्कारों से पुष्पित हैं।

इस कविता की भाषा भी मौलिक है। कवि ने एक बार तो इस प्रगीत-काव्य में ऐसे शब्दों का समावेश किया जो इस प्रकार के काव्य के लिए 'निम्न' समझे जाते थे और दूसरी ओर नये शब्द भी गढ़े। किन्तु ये नये शब्द मायाकोव्स्की ने रूसी भाषा की प्रकृति और व्याकरण के सर्वथा अनुकूल गढ़े हैं उसकी प्रकृति के विरुद्ध नहीं। यह सब शब्द एक ही भाव के सूक्ष्म अन्तर और रंगों को प्रकट करते हैं। इसी प्रकार कविता की झंकार और भावावेश से उसका पद विन्यास भी अत्यधिक प्रभावित है।

मायाकोव्स्की का क्रान्ति के पूर्व का व्यंग्य

मायाकोव्स्की में व्यंग्य की प्रतिभा थी। प्रथम महायुद्ध के समय की परिस्थितियों ने इसे और भी उद्बुद्ध किया जब उसने देखा कि बुर्जुआ और सौदागर देश बेच देने को तैयार हैं और जनता का खून बह रहा है। इसीलिए उसकी सामाजिक अनुभूति व्यंग्यात्मक पर्दाफ़ाश करनेवाली रचनाओं में प्रकट हुई। हीरोइक काव्य लिखने की उसकी इच्छा व्यंग्य रचना के रूप में प्रकट हुई। उसकी क्रोध और व्यंग्य से भरी मज़ाक उड़ानेवाली रचनाएं 'नए व्यंग्य' पत्र में प्रकाशित हुई। 'रिश्वत का गीत' 'खाने का गीत' रचनाओं में कवि ने ज़ारशाही के शासन और कार्यकर्ताओं पर कटाक्ष किया जो गबन किया करते थे और दफ़्तरी कागज़ों में डूबे रहते थे। उन पर मार्मिक व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष किए। उसने मोटे पूंजीपतियों पर ('खाने का गीत') भी कटु व्यंग्य किया। पूंजीपति का पेट पनामा में है। यदि मनुष्य का पेट पनामा में बदल जाता है तो वह मर्केंटाइलिज्म और हैजे से पीड़ित होने के अतिरिक्त और क्या है? अपने व्यंग्य में मायाकोव्स्की अत्युक्ति का ऐसा प्रयोग करता है कि वस्तु का व्यंग्यपूर्ण विकृत चित्र प्रस्तुत हो जाता है। फिर भी उसका यथार्थवादी आधार बना रहता है और यथार्थ तथा अतिशयोक्ति एक में मिल जाते हैं और वह तीक्ष्ण बन जाते हैं। यह विकृत अंकन यथार्थ में विद्यमान सामाजिक बुराई का उद्घाटन करता है। अतिशयोक्ति के कारण व्यंग्य कभी-कभी केवल हास्यप्रद ही नहीं रहते वरन् भयप्रद भी बन जाते हैं।

सन् १९१५-१६ की मायाकोव्स्की की व्यंग्यात्मक कविताएं प्रथम क्रान्ति के पूर्व की यथार्थ स्थिति का बखान ही नहीं है वरन् पूंजीवादी स्तर की मानवता विरोधी स्थिति का पर्दाफ़ाश भी करती है।

युद्ध और शान्ति, मनुष्य

इन व्यंग्यपूर्ण कविताओं के साथ-साथ मायाकोव्स्की ने तीन कविताएं लिखीं। 'पतलून-धारी बादल' (१९१५) 'युद्ध और शांति' (१९१६) और 'मनुष्य' (१९१७)। इनके मूल में भी वही समस्या है जो व्यंग्य के मूल

न है—पूँजीवाद के मानवता विरोधी अस्तित्व की समस्या। किन्तु इसका उद्‌घाटन सर्वथा दूसरी प्रकार हुआ है। उसकी पहली कविता में कवि से उसकी प्रेयसी को वह व्यक्ति छीन लेता है जिसके पास बहुत पैसा है अर्थात् धन प्रेम को खरीद लेता है। 'युद्ध और शान्ति' में कवि साम्राज्यवादी (प्रथम) महायुद्ध का विरोध करता है जिसे कि प्रभु-वर्ग ने अपने स्वार्थ के लिए छेड़ा है। इसके केन्द्र में 'मनुष्य' है जिसकी अभिव्यक्ति प्रगीता त्मकता के माध्यम से कवि ने उत्तम पुरुष 'मैं' में हुई है। यह मनुष्य मायाकोव्स्की की कविता का नायक है। उसका भाग्य उसका सुख धन की शक्ति के विरुद्ध प्रस्तुत किया गया है। पूँजीवाद के विरुद्ध मानवता की यह प्रतिस्थापना बड़ी शक्ति (और गहराई) के साथ मायाकोव्स्की की क्रान्ति के पूर्व की रचना में और उसकी कविता 'मनुष्य' में अभिव्यक्त हुई है। बाइबिल के समान इसके अध्यायों का नामकरण किया गया था। बाइबिल की इस युक्ति का मजाक बनाया गया है। मायाकोव्स्की का जन्म मायाकोव्स्की का जीवन फिर भी सब मजाक नहीं है और मायाकोव्स्की इस कविता के द्वारा यह कहना चाहता है कि मनुष्य इस पृथ्वी पर सबसे बढ़कर है। उस मनुष्य का एक प्रतिद्वन्द्वी है जिसे कवि ने 'पचा' कहा है। यह सबका मालिक है और यह पूँजीवाद का प्रतीक है। मनुष्य उससे इस बात में बढ़कर है कि उसके पास हृदय है। यह मनुष्य की सबसे मूल्यवान वस्तु है। यह हृदय मानवता के सुख के लिए अपनी बलि देने को तैयार है। इसी से मायाकोव्स्की इसे मनुष्य की अमूल्य वस्तु मानता है।

स्वतन्त्र मनुष्य की यह मानवतावादी भावना मायाकोव्स्की के मन में आने वाली समाजवादी क्रान्ति से बँधी हुई है। क्रान्ति से पहले तक स्वतन्त्र मनुष्य का यह चित्र मायाकोव्स्की के लिए केवल भविष्य की कल्पना है। उसकी मानवता की उपलब्धि उस अक्तूबर की रूसी समाजवादी क्रान्ति में हुई।

१९१७–१८ के वर्षों में मायाकोव्स्की

१९१७ की क्रान्ति के बाद से मायाकोव्स्की का कार्यकलाप और

मोर्चों से गया। वह कला-संघ के कार्यकर्ताओं की सभाओं में भाषण देता है। 'मासिर्म' (समाजवादी कला मासिएसन) 'इमो' (मजदूरों की कला) जैसे प्रकाशनों का संगठन वामपक्षीय लेखकों की कृतियों के छपाने के लिए करता है और मजदूरों, सिपाहियों और नौ-सैनिकों के सामने कविताएं पढ़ता है। इसके अतिरिक्त वह तीन फ़िल्मों में सिनेमा-अभिनेता के रूप में काम करता है जिसकी तैयारियाँ (फ़िल्म कथा) उसने प्रस्तुत की थी।

अक्तूबर क्रान्ति के वार्षिकोत्सव के पूर्व उसने अपना नाटक 'मिस्त्रिया बूफ़' तैयार कर लिया जो वार्षिकोत्सव के दिन बड़ी सफलता के साथ खेला गया। यह 'अपने युग का महाकाव्यात्मक तथा व्यंग्यात्मक चित्रण' है। लूनाचार्स्की ने कहा कि "इस कृति की विषय-वस्तु समकालीनता की सारी व्यापकता और विराटता के साथ दी गयी है। क्रान्ति के चित्रण में मायाकोव्स्की बड़े साहस, शक्ति और 'मिस्त्रिया' के साथ उपहास (बूफ़) का सम्मिश्रण कर रहा है। क्रान्ति के पराजित शत्रुओं की हँसी होती है। नरक तथा स्वर्ग के चित्रण में भी तीव्र उपहास है।

१७ दिसम्बर १९१८ में मायाकोव्स्की को नौ-सैनिकों के सामने कविता पढ़ने को आमन्त्रित किया गया। इसकी तैयारी करते हुए उसने 'बाएं से मार्च' (फ़ौजी कूच) लिखा।

क्रांति के विषय में कविता

क्रांति के बाद मायाकोव्स्की ने बहुत सी कविताएं लिखीं जिनमें से कई बहुत प्रसिद्ध हुईं और विदेशी भाषाओं में अनूदित की गईं। यह क्रान्ति के विषय में या क्रान्ति में जनता के स्थान के विषय में है। क्रान्ति की भावना ने उसकी प्रतिभा को और भी उद्बुद्ध किया और नये युग तथा मानवता के विराट ऐतिहासिक मोड़ की अनुभूति ने उसकी कविता में बड़ी शक्ति दी। वह क्रान्तिकारी जनता का कवि बनना भी चाहता था। क्रान्ति के बाद उसकी कविता का स्वर बदल जाता है और उसमें स्वतन्त्र मनुष्य

उन्मुक्त प्रतिभा के अपार हर्ष शक्ति और उत्साह के स्वर में सुनाई पड़ते हैं।

कला और क्रांति

क्रान्ति ने उसमें जिम्मेवारी की भावना-देश तथा जनता के प्रति उत्तरदायित्व-को और भी दृढ़ किया। उसका विश्वास है कि क्रान्ति के युग में कला जनता के लिए और भी आवश्यक है क्योंकि जनता को प्रभावित करती हुई वह बहुत बड़ी शक्ति बन सकती है। इसी से वह चाहता है कि कला महलों संग्रहालयों से निकल कर सड़क पर आ जाय जनता के पास पहुँच जाय और इतिहास की महान् घटना क्रान्ति के उत्सव के हर्ष को प्रकट करे। मायाकोव्स्की की कला की सेना को हुक्म नामक कविता हर्ष उत्साह, क्रान्तिकारी आग और जवानी के जोश से भरी हुई है। कवि नये जीवन-कार्य की ओर सबको प्रेरित कर रहा है। सबका आह्वान कर रहा है। वास्तव में कवि अपने को ही संबोधित कर रहा था।

रोस्ता और मायाकोव्स्की

१९१९ में मायाकोव्स्की ने 'रोस्ता' (रूसी तार एजेंट) कला विभाग का संगठन किया जिसमें 'रोस्ता की व्यंग्य की खिड़कियाँ' या 'रोस्ता की खिड़कियाँ' निकालनी शुरू कीं। यह विशेष प्रकार के पोस्टर थे जिन पर सामयिक विविध विषयों या घटनाओं पर हाथ से रंगीन चित्र बने रहते थे और प्रायः उनके नीचे कविताएं भी लिखी रहती थीं जो दूकानों में लटका दी जाती थीं। मायाकोव्स्की का कला-स्कूल का ज्ञान यहाँ काम आया। इस प्रकार उसने सभी कलाओं को जनता की चेतना उद्बुद्ध करने में और जनहित में लगाया। उसकी व्यंग्यात्मक कविताओं ने कशाघात का काम किया। १६०० पोस्टरों में से लगभग आधे मायाकोव्स्की की पंक्तियों (गद्य तथा पद्य) पर आधारित हैं और एक तिहाई स्वयं कवि के द्वारा चित्रित हैं। 'रोस्ता' का काम गृह-युद्ध के कठिन समय में शुरू हुआ। यह क्रांतिकारी युद्ध के तीन वर्षों के चित्र हैं। गृह-युद्ध से लेकर अनेक प्रकार की घटनाओं का व्यंग्यपूर्ण अंकन इनकी विषय-वस्तु है। अपनी इन कविताओं

के संवाद को मायाकोव्स्की ने भयंकर हास कहा—हास जिसने सैनिकों में उत्साह भरा और शत्रुओं के हृदयों में भय। इस प्रकार उसने कविता और कला दोनों के द्वारा प्रचार का कार्य किया, जनता की सेवा की।

कविता '१५ करोड़'

रोस्ता में काम करते हुए भी मायाकोव्स्की ने १९१९–२० के बीच 'मिस्तेरिया बूफ' का संशोधन किया और बड़ी कविता १५० ००० ००० लिखी।

इस कविता की विषय-वस्तु इवान का विल्सन से युद्ध है। इवान क्रांतिकारी रूस है और विल्सन पूंजीवाद का रूप है। इन दोनों प्रतीकों के माध्यम से मायाकोव्स्की ने पूरे ऐतिहासिक युग का वस्तु-तथ्य दुनिया का समाजवाद और पूंजीवाद के खेमों में विभाजन प्रस्तुत कर दिया है। ये दोनों दो विचारों के संघर्ष के प्रतिनिधि हैं। मायाकोव्स्की ने इस कविता को बिलीना (लोक प्रबन्ध-काव्य) भी कहा है। लोक काव्य के समान इसमें भी शत्रु का व्यंग्यपूर्ण अतिरंजित चित्र प्रस्तुत किया गया है, जिससे उसे पढ़ते समय लोक-प्रबन्ध काव्य का ध्यान आ जाता है।

नया स्वर

यह काव्य मायाकोव्स्की की बदली हुई मनोवृत्ति को भी प्रदर्शित करता है जो कि क्रान्ति के बाद की अन्य कृतियों में भी मिलती है। क्रान्ति के पूर्व की रचनाओं में मायाकोव्स्की में गहरी करुणा मिलती है जिसके मूल में मानवतावादी पूंजीवाद की मानवता विरोधी स्वर की विषमता है, किन्तु क्रान्ति के बाद की रचनाओं में हर्ष और युद्ध विजय का स्वर है। इस नई प्रगीतात्मक मनोवृत्ति ने उनके काव्य को संपन्न बनाया और उसे नया स्वर, नया लहजा दिया। हर्ष का यह नया स्वर १५० ००० ००० 'मिस्तेरिया बूफ' तथा 'रोस्ता की खिड़कियों' में मिलता है। विशेष रूप से व्लादीमिर मायाकोव्स्की के साथ गर्मी में असाधारण घटना कविता में यह उत्साह व्यंग्य के बीच छिपा मिलता है। इस कविता में सूर्य कवि के यहाँ मेहमान बन कर आता है और दोनों में बड़ी बातें होती हैं। दोनों

में सदैव भी है, कवि और सूर्य दोनों का काम एक है और बड़ा महत्त्व-पूर्ण है। कवि जीवन में वही करता है जो सूर्य करता है—सब जीवधारियों के विकास में मदद करना और जीवन में से अन्धकार को दूर करना। कविताओं का वैसा ही प्रभाव पड़ना चाहिए जैसा सूर्य की किरणों का। कवि अपने लक्ष्य से उसी प्रकार नहीं विरत हो सकता जैसे कि सूर्य अपने मार्ग से। इसलिए मायाकोव्स्की के लिए काव्य और कला दोनों प्रकाश के प्रतीक हैं।

कवि इसी के साथ अपनी जिम्मेदारी को भी नहीं भूलता और वह सब काम करता है, जो जरूरी है। जब सोवियत व्यापार संस्था के पोस्टरों के लिए उसने हल्की व्यंग मिश्रित कविताएं लिखनी शुरू कीं तो उसकी आलोचना हुई कि मायाकोव्स्की जैसा बड़ा कवि ऐसी हल्की चीजें लिखे। मायाकोव्स्की ने जवाब दिया कि मैं इसके बारे में लिखना चाहता हूँ क्योंकि यह जरूरी है। यह मायाकोव्स्की की विशेषता है। जो कुछ सोवियत शासन के लिए आवश्यक था वही मायाकोव्स्की की व्यक्तिगत इच्छा बन गयी। देश के व्यापक हित में ही उसने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को मिला दिया। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि प्रचार पोस्टरों की मायाकोव्स्की की रचना न गंभीरता में और न महत्त्व में 'रोस्ता' को पाती है। समाचार-पत्रों तथा व्यंग्यपत्रों में छपी हुई उसकी कविताएं 'रोस्ता' का ही विकसित रूप हैं। उसके इस समय के कार्य की दूसरी दिशा प्रगीतात्मक (प्रबन्ध) काव्य की है।

आगे चलकर सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याएं भी मायाकोव्स्की के व्यंग्य की वस्तु विषय बन गयीं। सोवियत व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की नकारात्मक प्रवृत्तियाँ श्रमिक वर्ग पर—बुर्जुआ प्रभाव के विरुद्ध युद्ध ब्यूरोक्रेटिज्म की आलोचना आदि ने सोवियत व्यंग्य रचना की मांग की थी कि स्वआलोचना का साधन बन गई। मायाकोव्स्की ने इसे अपना लक्ष्य बनाया। १९२२ में मायाकोव्स्की ने बराबर सभा और बहस करनेवालों पर व्यंगपूर्ण कविता 'समाचार' लिखी जिसका अनुमोदन लेनिन ने भी किया। मायाकोव्स्की का व्यंग्य बिल्कुल ठीक था।

के संग्रह को मायाकोव्स्की ने भयंकर हास कहा—हास जिसने सैनिकों में उत्साह भरा और शत्रुओं के हृदयों में भय। इस प्रकार उसने कविता और कला दोनों के द्वारा प्रचार का कार्य किया जनता की सेवा की।

कविता '१५ करोड़'

रोस्ता में काम करते हुए भी मायाकोव्स्की ने १९१९–२० के बीच 'मिस्तेरिया बुफ' का संशोधन किया और बड़ी कविता '१५० ००० ०००' लिखी।

इस कविता की विषय-वस्तु इवान का विल्सन से युद्ध है। इवान क्रान्तिकारी जन है और विल्सन पूँजीवाद का रूप है। इन दोनों प्रतीकों के माध्यम से मायाकोव्स्की ने पूरे ऐतिहासिक युग का वस्तु-तथ्य दुनिया का समाजवाद और पूँजीवाद के खेमों में विभाजन प्रस्तुत कर दिया है। ये दोनों दो विचारों के संघर्ष के प्रतिनिधि हैं। मायाकोव्स्की ने इस कविता को 'बिलीना' (लोक-प्रबन्ध-काव्य) भी कहा है। लोक काव्य के समान इसमें भी वस्तु का व्यंग्यपूर्ण अतिरंजित चित्र प्रस्तुत किया गया है, जिससे उसे पढ़ते समय लोक-प्रबन्ध-काव्यों का ध्यान आ जाता है।

नया स्वर

यह काव्य मायाकोव्स्की की बदली हुई मनोवृत्ति को भी प्रदर्शित करता है जो कि क्रान्ति के बाद की अन्य कृतियों में भी मिलती है। क्रान्ति के पूर्व की रचनाओं में मायाकोव्स्की में गहरी करुणा मिलती है जिसके मूल में मानवताकारी पूँजीवाद की मानवता विरोधी स्वर की विषमता है, किन्तु क्रान्ति के बाद की रचनाओं में हर्ष और दृढ़ विश्वास का स्वर है। इस नई प्रगीतात्मक समादृष्टि ने उनके काव्य को संपन्न बनाया और उसे नया स्वर, नया लहजा दिया। हर्ष का यह नया स्वर '१५० ००० ०००' 'मिस्तेरिया बुफ' तथा 'रोस्ता की खिड़कियों' में मिलता है। विशेष रूप से 'व्लादीमिर मायाकोव्स्की के साथ गर्मी में असाधारण घटना' कविता में यह उत्साह व्यंग्य के बीच छिपा मिलता है। इस कविता में सूर्य कवि के यहाँ मेहमान बन कर आता है और दोनों में बड़ी बातें होती हैं। दोनों

में मतैक्य भी है, कवि और सूर्य दोनों का काम एक है और बड़ा महत्त्व-पूर्ण है। कवि जीवन में वही करता है जो सूर्य करता है—सब जीवधारियों के विकास में मदद करना और जीवन में से अंधकार को दूर करना। कविताओं का वैसा ही प्रभाव पड़ना चाहिए जैसा सूर्य की किरणों का। कवि अपने लक्ष्य से उसी प्रकार नहीं विरत हो सकता जैसे कि सूर्य अपने मार्ग से। इसलिए मायाकोव्स्की के लिए काव्य और कला दोनों प्रकाश के प्रतीक हैं।

कवि इसी के साथ अपनी जिम्मेदारी को भी नहीं भूलता और वह सब काम करता है, जो जरूरी है। 'जब सोवियत व्यापार सस्ता' के पोस्टरों के लिए उसने हल्की व्यंग मिश्रित कविताएं लिखनी शुरू कीं तो उसकी आलोचना हुई कि मायाकोव्स्की जैसा बड़ा कवि ऐसी हल्की चीज लिखे। मायाकोव्स्की ने जवाब दिया कि 'मैं इसके बारे में लिखना चाहता हूँ क्योंकि यह जरूरी है। यह मायाकोव्स्की की विशेषता है। जो कुछ सोवियत शासन के लिए आवश्यक था वही मायाकोव्स्की की व्यक्तिगत इच्छा बन गयी। देश के व्यापक हित में ही उसने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को मिला दिया। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि प्रचार पोस्टरों की मायाकोव्स्की की रचना न गंभीरता में और न महत्त्व में 'रोस्ता' को पाती है। समाचार-पत्रों तथा व्यंग्यपत्रों में छपी हुई उसकी कविताएं 'रोस्ता' का ही विकसित रूप हैं। उसके इस समय के कार्य की दूसरी दिशा प्रतीकात्मक (प्रबन्ध) काव्य की है।

आगे चलकर सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याएं भी मायाकोव्स्की के व्यंग्य की वस्तु विषय बन गयीं। सोवियत व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की नकारात्मक प्रवृत्तियों अशिक्षित वर्ग पर—बुर्जुआ प्रभाव के विरुद्ध युद्ध ब्यूरोक्रेटिज्म की आलोचना आदि ने सोवियत व्यंग्य रचना की मांग की जो कि स्वआलोचना का साधन बन गई। मायाकोव्स्की ने इसे अपना लक्ष्य बनाया। १९२२ में मायाकोव्स्की ने बराबर सभा और बहस करनेवालों पर व्यंगपूर्ण कविता 'समावास' लिखी जिसका अनुमोदन लेनिन ने भी किया। मायाकोव्स्की का व्यंग्य बिल्कुल ठीक था।

इजवेस्तिया' की इस कविता के बाद उसकी कविताएं 'मास्को मजदूर', और 'घड़ियाल' में छपी जिनमें बहुत सी व्यंग्यपूर्ण थी जो राजनीतिक नेताओं और पूँजीवादी शासन तथा ब्यूरोक्राटिज्म पर थी।

कविता व्लादीमिर ईलियच लेनिन

लेनिन के जीवनकाल ही में सन् १९२१ में मायाकोव्स्की ने अपने प्रिय नेता लेनिन के विषय में लिखने की सोची थी। किन्तु यह कार्य लेनिन की मृत्यु के बाद ही संपन्न हो सका। सन् १९२४ में यह कविता पूर्ण हुई। १९२५ में यह कविता प्रकाशित हुई। इसे कवि ने रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी को समर्पित किया। मायाकोव्स्की की यह कविता कई जगह बड़ी सफलता के साथ पढ़ी गयी। लेनिन की छठी वार्षिकी पर कवि ने व्लादीमिर ईलियच लेनिन कविता का तीसरा भाग बल्शोय थियेटर में पढ़ा। पार्टी ने उसका स्वागत किया और स्तालिन ने उसकी प्रशंसा की। वर्तमान समय में इस कविता की ख्याति सोवियत संघ के बाहर भी बहुत है और संसार की कई भाषाओं में इसका अनुवाद भी हो गया है।

'व्लादीमिर ईलियच लेनिन' कविता मायाकोव्स्की के मानव-अंकन का विकसित रूप प्रस्तुत करती है। इस कविता में मायाकोव्स्की का मानवतावादी आदर्श कवि के अपने प्रतीकात्मक उद्गारों के माध्यम से नहीं (जैसे कि 'पतलून में बादल' में) और न जनता के प्रतीकात्मक रूप के माध्यम से (जैसा कि १५ ●● ●● कविता में) व्यक्त हुआ है वरन् यथार्थ व्यक्ति लेनिन के माध्यम से।

मायाकोव्स्की के लिए लेनिन सच्ची मानवता का साकार रूप है। वह सबसे बड़ा 'मानवीय मानव' है। वह भविष्य का कम्यूनिज्म का मनुष्य है। उसकी आँखों ने वह सब देख लिया था कि समय के गर्भ में छिपा था जिस पर समय का पर्दा पड़ा था। लेनिन व्यक्ति और युग के प्रतीक के रूप में नेता लेनिन इन बातों को मायाकोव्स्की की प्रतिभा ने यथार्थ सजीव चित्र में चित्रित कर दिया। इस चित्र की प्रत्येक रेखा यथार्थ पर आधारित है और इसकी कलात्मकता इस बात में है कि नायक

की बाहरी रूपरेखा के साथ उसके चरित्र का (अनुभूति और विचार धारा) भी पूरा पूरा अभिव्यंजन हुआ है।

इस कविता की प्रबन्ध रचना में प्रबन्ध काव्यात्मक या ऐतिहासिक और प्रगीतात्मक या वैयक्तिक दोनों तत्वों का बड़ी कलात्मकता के साथ समाहार हुआ है। लेनिन के कार्यकलाप के विश्व ऐतिहासिक महत्त्व को प्रकट करने के लिए कवि को इस कविता में पूँजीवाद के इतिहास के और दो तीन सौ वर्ष के क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख तत्वों का समावेश करना पड़ा तथा उसके जीवन की घटनाओं कम्यूनिस्ट पार्टी की मुख्य मंजिलों १९०५ की क्रान्ति आदि का भी उपयोग करना पड़ा। मायाकोव्स्की इस कठिन कवि कर्म में सफल हुआ और ऐतिहासिक (या घटनात्मक) तथा प्रगीतात्मक (या अनुभूतिपरक) के सम्यक संमिश्रण से व्यक्ति और नेता (या इतिहास निर्माता) लेनिन का एक पूर्ण समन्वित चित्र प्रस्तुत कर सका।

इस कविता में मायाकोव्स्की ने पूँजीवाद की उन तीन मुख्य विषमताओं का उद्घाटन किया है और जो कि साम्राज्यवादिता के युग में पूर्ण उत्कर्ष पर होती हैं और जिनसे छुटकारा सिर्फ प्रोलितारियत् क्रान्ति के द्वारा ही मिल सकता है। ये विषमताएं हैं-परिश्रम और पूँजी की विषमता साम्राज्यवादी देशों में आपस में दूसरे देश पर अधिकार पाने की विषमता तथा अल्पसंख्यक प्रभुवर्ग और बहुसंख्यक उपनिवेशों की जनता के बीच की विषमता। इनमें से प्रत्येक का स्वतन्त्र रूप से वर्णन हुआ है। किन्तु फिर भी जनता की अपने नेता-उद्धारक के रूप पर विश्वास की भावना इनमें एकान्विति प्रस्तुत करती है और इनको एक में बांध देती है।

मायाकोव्स्की पूँजीवाद के पूरे विकास और उसकी भयंकरता का चित्र प्रस्तुत करता है और कहता है कि इससे बचकर या कतराकर निकल जाना असम्भव है। सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है इसका उन्मूलन।

इसके आगे कवि पूँजीवाद के भीतर ही से पैदा होनेवाली और विकसित होनेवाली शक्ति की चर्चा करता है जिसने पूँजीवाद का भाग्य निश्चित कर दिया। जिसने नये प्रकार के नेता समाजवादी क्रान्ति के

नेता लेनिन के प्रादुर्भाव को संभव किया। इन सबके बीच पैदा हुआ सामान्य बालक लेनिन की शिक्षा और क्रान्तिकारी तैयारी के साथ प्रथम अध्याय समाप्त होता है।

दूसरे अध्याय में मायाकोव्स्की लेनिन का अंकन रूस के इतिहास के संबंध से करता है जहाँ पर लेनिन का कार्य-व्यापार बढ़ा और जहाँ उसके विचार कार्यक्रम में परिणत हुए और अन्त में जिसके नेतृत्व में रूस में शक्तिशाली समाजवादी राष्ट्र निर्मित हुआ जिसे साम्राज्यवादियों से भी मान्यता प्राप्त हुई। संसार का पाँचवा भाग नम्रता से अपनी टोपी और हाथ उठाकर ईलियच के जनतन्त्र को प्रणाम कर रहा है।

मायाकोव्स्की ने इस प्रकार लेनिन के रूप में न केवल समाजवादी मनुष्य का ही चित्र अंकित किया है वरन् एक देश और पार्टी के नेता के रूप में उसका ऐतिहासिक महत्त्व भी प्रदर्शित किया है।

जिस प्रकार काव्य में प्रबन्धात्मक या कथात्मक अंश का महत्त्व है उसी प्रकार प्रगीतात्मक अंश भी इस काव्य के प्रभाववर्धन में योग देता है। प्रथम भाग के आरम्भ में तीन प्रगीतात्मक उद्‌गार हैं जिनमें से प्रत्येक की अपनी विषय-वस्तु है। प्रथम में मायाकोव्स्की यह बताता है कि वह इसकी रचना क्या कर रहा है? इसकी क्या सामाजिक आवश्यकता है। द्वितीय प्रगीतात्मक उद्‌गार लेनिन के व्यक्तिगत चित्र की ओर ध्यान आकर्षित करता है। लेनिन मूर्त है। कवि लेनिन को आदर्श मानकर उससे अपने व्यवहार, अपने विचार और शब्दों को जाँचता है, तौलता है। आगे यह कहता है कि लेनिन के अभिव्यंजन में शब्द असमर्थ हैं। तीसरे प्रगीतात्मक उद्‌गार की विषय-वस्तु लेनिन है और उसके काव्यात्मक अंकन में दुरूहता है। इनमें लेनिन का चित्र प्रगीतात्मक नायक के रूप में उभरता है और कवि का व्यक्तित्व लेनिन के संबंध से प्रकट होता है। इस प्रकार प्रगीतात्मक उद्‌गार काव्य की प्रबन्धात्मक और ऐतिहासिक सामग्री को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं और उसे अपने रंग में रंग देते हैं। प्रगीतात्मकता इन बिखरे अंशों को एक में बाँध देती है।

लेनिन की मृत्यु पर रूसी जनता ने उसे जो शांति और मूक विदा दी उससे प्रभावित होकर मायाकोव्स्की ने प्रथम इस काव्य में पूछा कि 'यह कौन है, उसने क्या किया, वह कहाँ से आया था जिसको जनता आज की इस ठिठुरन के बीच इतनी सम्मान और विदाई दे रही है?' इन प्रश्नों का उत्तर प्रथम दो अध्यायों में दिया गया। घटना और कथा की दृष्टि से रचना पूरी हो जाती है किन्तु फिर भी कविता पूरी नहीं हुई। अभी भावात्मकता और प्रतीकात्मकता की माँग बाकी है। इसकी पूर्ति के लिए तीसरे अध्याय की रचना प्रतीकात्मक स्तर पर हुई है जिसमें कवि का भावावेश पूरे काव्य का उत्कर्ष बिन्दु बन जाता है। काव्य की समाप्ति लेनिन के व्यक्तित्व और उनके विचारों की महत्ता तथा शक्ति की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति और अभिनंदन के साथ होती है।

इस कविता की भाषा में जीवन की भाषा और साहित्यिक भाषा में कोई भेद नहीं है बल्कि दोनों एक दूसरे में घुलमिल गई हैं। मायाकोव्स्की इस प्रकार की दीवार या कोई कृत्रिम भेद नहीं पसंद करता। नये शब्द गढ़ने के लिए मायाकोव्स्की प्रसिद्ध है किन्तु यह शब्द रूसी भाषा की प्रकृति और व्याकरण के अनुकूल ही बनाये गये हैं। इसमें राजनीतिक शब्द और सभा सोसायटी के तथा समाजवादी शब्द बहुत अधिक हैं।

मायाकोव्स्की की कविता 'व्लादीमिर इल्यिच लेनिन' पाठकों में देश भक्ति की भावना भर रही है और देश-सेवा की प्रेरणा देती है।

पश्चिम के विषय में मायाकोव्स्की के विचार

मायाकोव्स्की की कृतियों के कोष 'विदेश विषय-सम्बन्धी' पर लिखी गई कविताओं का विशिष्ट स्थान है। इनमें विषय-वस्तु की विविधता और अनेकरूपता है। १९२२–१९२९ के बीच मायाकोव्स्की ने कई बार विदेशों की यात्रा की। उसने फ्रांस अमेरिका मैक्सिको स्पेन, जर्मनी आदि कई देशों की यात्रा की और इस प्रकार पश्चिमी जीवन और समाज

से परिचित हुआ। विशद पर्यवेक्षण की उसकी अनुभूतियाँ 'ईफेल टावर से बात' 'पेरिस' 'अमेरिका से संबंधित रचनाएं, 'सोवियत पासपोर्ट के विषय में कविता' जैसी प्रसिद्ध कृतियों में अभिव्यक्त हुईं।

मायाकोव्स्की ने अपने इस पर्यटन पर्यवेक्षण म जो अच्छी चीजें देखीं उनकी तारीफ भी की और जो बातें उसे अच्छी नहीं प्रतीत हुईं उनकी आलोचना भी की। 'ईफेल टावर' और 'न्यूयार्क का ब्रुकलिन पुल' जैसी कविताएं इस बात का प्रमाण हैं। मायाकोव्स्की अमेरिकन उद्योग-कौशल तथा फ्रेंच संस्कृति को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है और उसका ऊँचा मूल्यांकन करता है फिर भी वह पूँजीवादी पश्चिम की समकालीन संस्कृति की आलोचना करता है। अमरीका से संबंधित कविताएं और लेख अपनी विचारात्मक गहराई और कलात्मक पक्षता मे बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। अमेरिका का प्रगतिशील उद्योग-कौशल 'डालर के देश' के पिछड़े हुए या प्रतिक्रियावादी सामाजिक संबंधों को मायाकोव्स्की की नज़रों से न छिपा सका। सोवियत नागरिक और निवासी की दृष्टि स पश्चिम के पूँजीवादी जीवन को देखकर उसके हृदय में अपने देश के प्रति उच्चता सम्मान और प्रेम की भावना और भी दृढ़ हुई और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि नैतिक और सामाजिक दृष्टि म अमेरिका आदि बहुत पीछे है। अमरिका के मूल निवासियों का नाश नीग्रो लोगों पर अत्याचार सामाजिक विषमता तथा पूँजीवादी स्तर की भीख—खून पसीना और झूठ—इन सबका अंकन मायाकोव्स्की की पर्यटन संबंधी कविताओं और लेखों (अमरिका का उद्घाटन) में बड़ विस्तार के साथ हुआ है और पश्चिम क जीवन की बड़ी ठोस यथार्थ और युक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है।

पश्चिम की यात्रा म उसका स्वागत भी हुआ। अनेक देशों म उसका नाम शक्तिशाली कवि और लेखकों के साथ जुड़ गया। धीरे धीरे इन देशों में उसकी शक्ति और महत्ता को लोगों न माना। मायाकोव्स्की पहला सोवियत कवि था जो पश्चिम में इतना विख्यात हुआ।

इस यात्रा ने मायाकोव्स्की के देश प्रेम को और भी गहरा किया और देश के प्रति उसके उत्तरदायित्व की भावना को उत्तेजित किया।

अमरिका से लौटते हुए जहाज पर कवि ने अपनी सर्वोत्तम कृतियों में से एक कविता 'घर की ओर' पर काम शुरू किया। इसमें सोवियत जनता के साथ कवि के घनिष्ट संबंध और उसकी जिम्मेदारी की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। यह कविता कवि की सर्जना के नये (और अन्तिम) युग की ओर संकेत करती है जब कि सोवियत समाज में कवि तथा कला के स्थान तथा महत्त्व के संबंध में उसके विचार परिपक्व और प्रकट हुए।

मायाकोव्स्की की सर्जना का अन्तिम युग

गृह-युद्ध के बाद राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण का जो महान् कार्य शुरू हुआ था वह १९२६ तक बहुत कुछ पूरा हो गया। देश के औद्योगीकरण की बहुत सी कठिनाइयाँ अब दूर हो गयी थीं। नयी फ़ैक्टरियों, सवखोज, कलखोज आदि का नवीन व्यापक निर्माण विकसित हुआ। सोवियत शासन के इतिहास की इस नयी मंज़िल ने मायाकोव्स्की के सामने नए विषय-वस्तु, नये लक्ष्य और नयी संभावनाएं प्रस्तुत कीं। फलतः कवि के कार्यकलाप की व्यापकता तथा विविधता और भी बढ़ी। मायाकोव्स्की पोस्टरों के लिए विज्ञापन वाक्य भी लिखता है और 'अच्छा है' कविता भी लिखता है। नन्ही उम्र के बच्चों के लिए छोटी-मोटी किताबें भी तैयार करता है और 'पूरी आवाज़ में' कविता का भी प्रणयन करता है। अमेरिका के बारे में लेख भी प्रकाशित करता है, अखबार में काम करता है और अपने दो नाटकों 'खटमल' और 'स्नानघर' के प्रदर्शन में भाग भी लेता है। १९२९–३० के बीच उसने बहुत कुछ लिखा और उसकी प्रतिभा प्रौढ़ हुई।

व्यंग्य के क्षेत्र में प्रतिभा के उत्कृष्टतम उदाहरण उसके व्यंग्य नाटक 'खटमल' और 'स्नानघर' हैं। 'खटमल' की आधारभूत समस्या स्वयं कवि के शब्दों में आज की कूपमंडूकता का पर्दाफ़ाश करना है। मायाकोव्स्की केवल क्षुद्र बुर्जुआई जीवन पद्धति पर हँसता ही नहीं वरन् श्रमिक वर्ग पर उसका जो हानिकारक प्रभाव पड़ता है उसका चित्रण भी करता है। नायक मिनीरिन के शब्दों और कार्यों में जो अन्तर है कवि उसका दिग्दर्शन

कर उस पर व्यंग्य करता है और यह बताता है कि रूस में बुर्जुआजी का नाश अनिवार्य है।

'स्नानघर' का मुख्य राजनीतिक विचार 'ब्यूरोक्रैटिज्म' से युद्ध और समाजवादी विचारधारा का समर्थन है। इसका नायक भी ब्यूरोक्रैट है जो समय यंत्र की मशीन बनानेवाले कमसोमोल नवयुवकों के काम में अड़चनें डालता है। अन्त में यह स्पष्ट हो जाता है कि नायक जैसे व्यक्ति कम्युनिज्म के लिए बेकार हैं, इनकी कोई ज़रूरत नहीं है।

काव्य के विषय में फ़िनिस्पैक्टर से बातचीत

अपनी सर्जना के इस युग में काव्य के सारतत्त्व और समाजवादी समाज में लेखक के कार्य और परिस्थिति के विषय में मायाकोव्स्की पुनर्विचार करता है। कवि के कार्य के विषय में मायाकोव्स्की लिखता है कि 'प्रधान कार्य काव्य में काव्यत्व लाना है। यही मुख्य कार्य है और लेखकों को इसी के लिए आन्दोलन करना अनिवार्य है' 'सर्गेई येसेनिन' 'सर्वहारा कवियों को सन्देश' आदि रचनाएँ विशेष रूप से कला के विषय में हैं। इनसे कवि के कला संबंधी दृष्टिकोण का पता चलता है।

मायाकोव्स्की का आधारभूत विचार यह है कि काव्य परिश्रम है, कठिन तथा अनवरत परिश्रम है किन्तु इसके साथ ही आनन्दप्रद भी है। मायाकोव्स्की यह चाहता है कि समाज में कवि के परिश्रम की इज्जत हो और साथ ही कवि अपने काम की सामाजिक जिम्मेदारी को महसूस करे। कवि शोधक है। वह जीवन और मनुष्य में जो कुछ नवीन है उसका उद्घाटन करता है। काव्य अज्ञात की ओर यात्रा है।

मायाकोव्स्की काव्य से महान् सामाजिक विचार की माँग करता है। वह काव्य के सामाजिक अस्तित्व को बड़ी गंभीरता से निर्धारित करता है। काव्य अन्य कलाओं के समान जीवन का प्रतिबिम्बन है। इस कारण कागज़ी पन्ने या परिधि में समाविष्ट शताब्दी के बीच से एक पंक्ति उठा लो और समय वापस आ जायगा। एक पंक्ति समय को वापस ले आती है। इसके साथ ही सामाजिक युद्ध में काव्य शक्तिशाली शस्त्र

है और नाम कवि का अनुप्रास दुलार है और उसका नारा है संगीत और कोड़ा

मायाकोव्स्की कवि कर्म पर बड़ा ज़ोर देता है। उसका कहना है कि अपने कवि नाम को सार्थक करने के लिए यह आवश्यक है कि कवि प्रस्तुत विषय-वस्तु के उपयुक्त लय अनुप्रास उपमा आदि खोज सके। अनवरत परिश्रम कविता के काव्यत्व को उत्कर्ष प्रदान करता है और पाठकों पर उसके प्रभाव को बढ़ाता है।

मायाकोव्स्की स्वतः अपनी रचनाओं पर बड़े धैर्य के साथ परिश्रम करता था और उनको बहुत मांजता था। कवि के लिए काम का दिन आठ घंटे का नहीं वरन् अठारह घंटे का होता है।" ऐसा उसने लिखा था। मायाकोव्स्की में प्रत्येक परिस्थिति में काव्य रचना की प्रतिभा और शक्ति थी। वह सड़क पर, रेस्त्रां में बिलियर्ड खेलते हुए और बातचीत करते हुए काव्य रचना कर सकता था। फिर भी उसका कहना है कि दिन भर में मेरे काम का औसत है आठ या दस पंक्तियां' और यह इसलिए क्योंकि वह एक एक पंक्ति को कई बार बदलता था। एक साहित्यिक का कहना है कि "मायाकोव्स्की ने एक पंक्ति के साठ प्रयोग बदले और फिर भी उन्हें फेंक दिया स्वीकार न किया।"

फिर भी केवल परिश्रम से ही अच्छी कविता नहीं लिखी जा सकती यदि उसमें कवि का हृदय नहीं धड़कता यदि वह खानापूरी दर्ज करने वाला केवल उदासीन क्लर्क मात्र है यदि जनता के जीवन में भाग लेने वाला और योग देने वाला नहीं है। असली कवि वह है जो देश जनता और वर्ग की पुकार पर आगे बढ़ता है जलता है और अंगार की तरह दम-कता है। कवि जनता का गायक और उसके साथ ही जन सेवक भी है। उसके गीत और कविता बम और झंडे हैं। कवि वह है जो हमारे तीक्ष्ण वर्ग संघर्ष में अपनी कलम प्रोलितारियत को सशक्त करने के लिए शस्त्रागार को दे देता है। कवि आज का वर्णन करते हुए उसको भी देख सकता है और बता सकता है जो कि अभी भविष्य के गर्भ में है।

असली कवि अस्पष्टता की चिनगारियों के बीच से अपेक्षाकृत अस्वी ज्योतिपूर्ण ज्ञान प्रकट करता है। उसका शब्द मानवीय शक्ति का सुचारक है। काव्य का लक्ष्य उनको उठाना है जो थकता है, आकृष्ट करता है जिनकी आँखें कमज़ोर हो गयी है।

मायाकोव्स्की की सोवियत युग की कविता यही कर रही है और विशेष रूप से उसकी उत्कृष्ट कविता अच्छा है।

'अच्छा है' कविता

अच्छा है' कविता १९२७ के ग्रीष्म में पूरी हुई और अक्तूबर क्रान्ति के दसवें वार्षिकोत्सव पर प्रकाशित हुई। लूना चार्स्की ने इसे 'सोवियत-साहित्य की महत्त्वपूर्ण सम्प्राप्ति' बताया और कहा कि यह अक्तूबर क्रान्ति की मानो ताँबे की ढली मूर्ति है। वस्तुतः अक्तूबर क्रान्ति और समाजवादी देश इस कविता की विषय-वस्तु है जो इतने घुले मिले हैं कि अलग नहीं किये जा सकते। देश भक्ति का भाव यों तो रूसी साहित्य में बहुत पुराना है किन्तु अक्तूबर क्रान्ति के बाद विचारों में जो परिवर्तन आया उसने इसे और गहरा तथा व्यापक बनाया और इसे सर्वथा दूसरा नया रूप दे दिया। सोवियत देशभक्ति का आधार जातीय भावना नहीं है बरन् सभी जातियों के भाईचारे और मित्रता पर आधारित सोवियत देश के प्रति जनता का विश्वास और प्रेम है। सोवियत देश भक्ति के मूल में सोवियत संघ के सभी काम करने वालों के गहरे हित की भावना है और सोवियत व्यक्ति की दृष्टि में 'सर्वसामान्य और अपने में कोई भेद नहीं है जो सबका है वही उसका अपना है।"

इसी प्रकार "प्रत्येक का परिश्रम सबके परिश्रम में मिल जाता है और देश ऊपर उठ रहा है आगे बढ़ रहा है। कवि किसान और श्रमिक उनका परिश्रम सामूहिक जन-परिश्रम की इकाई की कड़ियाँ हैं जो कि देश की शक्ति बढ़ा रही हैं। दीवारों के पीछे

जमी हुई किताबों के ढेर में मेरा नाम कवियों की श्रेणी में है। मैं प्रसन्न हूँ कि मेरा परिश्रम अपनी इस रिपब्लिक के परिश्रम में मिल रहा है लय हो रहा है।

इस कविता में अक्तूबर क्रान्ति उसके कारण उसकी आधार भूत शक्ति और उसके बीच समर्थ करनेवाला—श्रमिक वर्ग किसान सिपाही क्रान्ति विरोधी श्वेत-गार्ड आदि को चित्रित किया गया है।

मायाकोव्स्की सोवियत रिपब्लिक को परिश्रम और युद्ध के बीच जन्मी हुई कहता है। इस प्रकार परिश्रम की विषय-वस्तु अक्तूबर क्रान्ति की विषय-वस्तु को देश की विषय-वस्तु के साथ जोड़ देता है स्वेच्छा से परिश्रम, विशेष रूप से शनिवार को अतिरिक्त परिश्रम यह समाज क्रान्ति की ही उपलब्धि है यह स्वेच्छा से एकत्रित हुए लोगों का स्वच्छन्द परिश्रम है और उसके साथ ही यह युद्ध-नष्ट देश के पुनर्निर्माण की व्यवस्था और कार्य का समारम्भ है।

हम काम करेंगे
जिससे कि जीवन
दिनों के पहियों को त्वरित गति देता हुआ
लोह की पटरियों पर हमारे जिल्लों में
स्तेप के ऊपर, हमारे ठिठुरे नगरों में
दौड़ सके।

इस प्रकार मायाकोव्स्की के लिए क्रान्ति केवल नष्ट भ्रष्ट करनेवाली आँधी ही नहीं है वरन् सर्जनात्मक शक्ति है, जिसके शीर्ष पर श्रमिक वर्ग है जिसका संचालन पार्टी कर रही है और जिसका संचालन पूर्ण रूप से लेनिन ने किया। काव्य में इन सबका परिश्रम, इन सबकी कठिनाई और इन सबकी विजय चित्रित की गयी है और यह दिखाया गया है कि सोवियत व्यक्ति का भाग्य सोवियत भूमि या देश के सामान्य भाग्य से भिन्न या अलग नहीं है। उसको वही होगा जो कि उसकी मातृभूमि का होगा।

मायाकोव्स्की ने लिखा कि 'अच्छा है' कविता को मैं उस समय का

प्रोग्राम या कार्यक्रम मानता हूँ। यह कविता मायाकोव्स्की के कलात्मक आचार्यत्व के विकास का आगे बढ़ा हुआ क़दम है उसकी सभी कविताओं में यह कविता सब से अधिक बहुमुखी और संतुलित है। इस काव्य में ऐतिहासिक और सामान्य जीवन सामग्री का जो व्यापक प्रयोग हुआ है और अनुभूतियों के अभिव्यंजन में जो पूर्णता तथा विविधता मिलती है वह इस काव्य की प्रबन्धात्मक भाषा संबंधी तथा लय संबंधी अनेकरूपता के अनुरूप है। इस कविता में प्रब न्धात्मकता और प्रगीतात्मकता दोनों ऐसे गुँथे हुए हैं जैसे कि मायाकोव्स्की के लिए सर्वसामान्य और निजी या अपना।

इस कविता में बहुत सी घटनायें और बहुत से पात्र हैं। कविता अपने कथानक में जटिल है। पात्रों का अंकन अत्यन्त संक्षिप्त है फिर भी अत्यन्त सजीव और यथार्थ है। ऐतिहासिक या वास्तविक (लेनिन देरझिन्स्की मायाकोव्स्की आदि) और कल्पित (पयोत्र आइवनूर्टेट आदि) दोनों प्रकार के पात्र अपनी अपनी विशिष्टताओं के साथ अंकित किये गये हैं। इसके साथ ही इसमें सूक्ष्म हास्य है। सजीव संवादों का व्यंग्य है जीवन-वर्णन की प्रभावात्मकता है चुभते चौतवे हैं और शान्त कथा है। पात्रों तथा घटनाओं के परिवर्तन के साथ ही कथन या वर्णन के स्वर या लहजे में भी परिवर्तन आ जाता है। दोनों में एक साथ ही परिवर्तन होता है। इस प्रकार घटनाओं और पात्रों की विविधता के समान इस कविता में स्वर या लहजे की भी अनेकरूपता है।

इस काव्य का बढ़ता हुआ भावोत्कर्ष इस कविता के शीर्षक (अच्छा है) की उपयुक्तता सिद्ध करता है। विशेषतया अन्तिम अध्याय हर्ष और उत्साह से परिपूर्ण है। उन्नीसवां अध्याय यह उस व्यक्ति का उद्गार है जो कि बड़ी मुश्किल से अपने हर्ष को रोक पाता है—

मैंने इस पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर डाली
जीवन अच्छा
जीना अच्छा!

और यही कवि का भी निष्कर्ष है।

पत्रकारिता

मायाकोव्स्की ने अखबारों में भी काम किया। मायाकोव्स्की की पत्रकारिता १९२२ से 'इज्वेस्तिया' से शुरू होती है। कम्सोमाल प्राव्दा पत्र का काम उसके लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण था क्योंकि वह देश के नौजवानों का पत्र था और उसके द्वारा देश का युवक वर्ग तैयार किया जा रहा था। इस पत्र में मायाकोव्स्की सहयोगी के रूप में था। वह बराबर अपनी रचनाओं में सामयिक प्रश्नों और विषय-वस्तुओं को उठाता था और युवकों को सलाह देता था तथा प्रोत्साहित करता था। इन रचनाओं को 'फ़ेल्टन' कहते हैं।

मायाकोव्स्की की समाचारपत्रों से संबंधित कविताओं में से अधिकांश व्यंग्यात्मक हैं। मायाकोव्स्की उन सबको बुरी तरह खबर लेता है जो सोवियत शासन का अहित करते हैं चाहे वे देश के अन्दर हों और चाहे बाहर। कुलक (जमींदार) गबन करनेवाला (ब्यूरोक्राट) गैरज़िम्मेदार कलाकार आदि उसके व्यंग्य के शिकार हैं। स्वयम् कामसोमोल श्रेणी की भी बुराइयों का उसने आलोचना की। इन पत्र और 'कविताओं' की उसकी व्यंग्यात्मक रचनाएं उसके यथार्थवादी कौशल के विकास की ओर संकेत करती हैं। गोगल तथा साल्तिकाव श्चेद्रिन की परंपरा में उसकी व्यंग्यात्मक कविताओं ने अनेक सजीव चोट करनेवाले चित्र प्रस्तुत किए।

१९२७–३० की मायाकोव्स्की की पत्रकारिता तथा व्यंग्यात्मक सृष्टि देश के जीवन के साथ उसके घनिष्ट संबंध को व्यक्त करती है।

पंचवर्षीय योजना की विषय-वस्तु

प्रथम पंचवर्षीय योजना का विराट् कार्यक्रम समाजवादी औद्योगीकरण और सामूहीकरण के क्षेत्र में मायाकोव्स्की को १९२८–२९ के वर्षों में अपनी सारी शक्ति से आकृष्ट किया और उसने पंचवर्षीय योजना से संबद्ध विषय-वस्तुओं पर बहुत सी कविताएं लिखीं। इन्हीं रचनाओं के साथ सोवियत नागरिक के नये व्यक्तित्व के विकास की विषय-वस्तु भी संबद्ध है और मायाकोव्स्की के काव्य में इसके विकास की कई मंजिलें

लक्षित होती है। क्रान्ति के पूर्व मायाकोव्स्की ने कहा था कि स्वतन्त्र व्यक्ति आयेगा। उस समय यह विश्वास मात्र ही था और काव्य में इस विश्वास के साथ पूँजीवादी समाज में मनुष्य के उत्पीड़न और मनुष्य के ह्रास का ही चित्र प्रस्तुत किया गया था। क्रान्ति के प्रारम्भिक वर्षों में व्यक्ति की विषय-वस्तु जनता की विषय-वस्तु में (इवान का चित्रण) मिल गई। व्लादीमिर लेनिन का चित्र प्रथम सोवियत व्यक्ति के रूप में सामने आता है जो अत्यन्त ठोस यथार्थ और विशिष्टता से सम्पन्न है। 'साथी नेत को—जहाज और व्यक्ति को' कविता में सोवियत व्यक्तित्व और भी विकसित होता है। यह कविता उस सोवियत नायक का चित्र है जो अपने कार्य के कारण जनता की स्मृति में अमिट है।

इसी प्रकार मायाकोव्स्की ने सर्वप्रथम गीतों में सोवियत व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया। यह चित्र सोवियत पासपोर्ट के विषय में कविता तथा 'इवान कोजिरयोव की कहानी' आदि में अच्छी तरह उभरता है। इस प्रकार पंचवर्षीय योजना के युग में व्यक्ति की विषय-वस्तु मायाकोव्स्की के काव्य में स्वदेश के विषय-वस्तु से गुम्फित हो जाती है।

जीवन के अन्तिम वर्ष

मायाकोव्स्की अपने पाठकों से बराबर मिलना चाहता था और उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखना चाहता था। इस लक्ष्य से उसने कई स्थानों की यात्रा की। वह चाहता था कि अधिक से अधिक लोग उसकी रचनाओं को समझ सकें। इस उद्देश्य से वह जगह जगह सभाओं में अपनी रचनाएं सुनाता था। उनकी व्याख्या करता था और उन पर बहस करता था। जनता को अपने कार्य से परिचित कराने के लिए उसने 'मायाकोव्स्की के काम के बीस वर्ष' प्रदर्शनी भी आयोजित की। इसी प्रदर्शनी में उसने अपनी हस्तलिखित रचना 'पूरी आवाज के साथ' पढ़ी जो उसकी मृत्यु के बाद छपी थी। अनवरत परिश्रम ने उसके अपने स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाला और वह शिथिल हो गया।

उसके जीवन के अन्तिम वर्ष बड़ी विषमता के बीच बीते। एक ओर तो मायाकोव्स्की बड़ा लोकप्रिय था और दूसरी ओर उसके विरोधी उसकी सभी प्रकार की कटु आलोचना कर रहे थे कि उसकी कविता सामान्य जन समाज की समझ के बाहर है। उन्होंने उसकी प्रतिमा की हँसी उड़ाई और प्रदर्शनी का 'बायकाट' किया।

व्यक्तिगत जीवन की करुण कठोर एवं दारुण परिस्थितियाँ गले की बीमारी जिससे कि वह अब जन समूह के सामने कविता पाठ नहीं कर सकता था—इन सबने उसकी मानसिक समस्थिति को नष्ट कर दिया। ऐसे ही एक क्षण में उसने (१४ अप्रैल १९३०) को आत्महत्या कर ली।

'पूरी आवाज के साथ'

मायाकोव्स्की की मृत्यु के बाद अक्तूबर पत्र का अंक निकला जिसमें मायाकोव्स्की की अंतिम कविता 'पूरी आवाज के साथ' (प्रथम काव्यात्मक भाषण) प्रकाशित हुई। यह रचना पूरी न हो सकी अधूरी ही रह गई। पूरी कविता का विषय प्रथम पंचवर्षीय योजना होता। इस कविता के दूसरे भाषण के विषय में यह अनुमान लगाया जाता है कि वह प्रेयसी के लिये लिखे गए पद्यात्मक पत्र के रूप में होता। यह कविता मायाकोव्स्की की उत्तम रचनाओं में मानी जाती है।

मायाकोव्स्की ने इस काव्य रचना का लक्ष्य बताते हुए कहा कि 'प्राय इधर का लोग मेरे साहित्यिक अखबारी कामें से असंतुष्ट हैं व यह कहते हैं कि मैं कविता लिखना भूल गया और इसके लिए आनेवाली पीढ़ी मेरी कटु आलोचना करेगी। मैं स्वयं आनेवाली पीढ़ी से बात करना चाहता हूँ और इसकी प्रतीक्षा नहीं करना चाहता कि उनका भविष्य में आलोचक मेरे बारे में बताएँ। इसलिए मैं स्वयं अपनी कविता में जिसका नाम 'पूरी आवाज के साथ' है आनेवाली पीढ़िया के साथ सीधी बात करना चाहता हूँ। इसलिए कवि इसमें आनेवाली पीढ़ियों के साथ सीधी भंगिमापूर्ण और कभी-कभी तीखी बात करता है।

यह कविता सोवियत पाठकों की विशेषतया नवयुवकों की अत्यन्त लोकप्रिय रचनाओं में से एक है और संसार की कई भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। इस कविता में कवि भविष्य को संबोधित करता है और स्वयं अपने कार्यों का मूल्यांकन करता है। कम्यूनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जनता द्वारा आरम्भ किये गये विराट् कार्य की अभिव्यक्ति की घोषणा के साथ साथ इस कविता में मायाकाव्स्की काव्य क्षेत्र में किये गये अपने व्यक्तिगत कार्यों का भी आकलन करता है और भविष्य की पीढ़ियों तथा पाठकों की ओर उन्मुख होता है जिनके लिए आज के समकालीन नए जीवन का निर्माण कर रहे हैं।

इस कविता में वह भविष्य के पाठकों को बतलाता है कि वह कौन है और अपने लिए कहता है कि—

"मैं क्रान्ति द्वारा नियुक्त भिश्ती हूँ"

भिश्ती का चित्र स्पष्ट कर देता है कि उसने अपने ऊपर कठिन किन्तु महत्त्वपूर्ण काम—जीवन को स्वच्छ करने का गन्दगी को दूर करने का काम-लिया है। इस काम में अपना सारा जीवन लगाकर वह भविष्य की पीढ़ी की ओर उन्मुख होता है और कहता है कि—

तुम जो स्वस्थ और फुर्तीले हो
तुम्हारे लिए
कवि
कभी के थूक को
पोस्टरों की खुरदरी जबान से चाटता था।

मायाकाव्स्की के लिए परिश्रम ही सर्जना है और सर्जना परिश्रम है। पूरी आवाज के साथ कविता सोवियत व्यक्ति और कवि के साहस और शक्ति की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

मायाकोव्स्की की सर्जना का सोवियत काव्य के लिए निश्चयात्मक तथा सैद्धान्तिक महत्त्व है। उसकी सर्जना का महत्त्व केवल इस बात में ही नहीं है कि उसने नये-नये प्रयोग कर रूसी कविता की अभिव्यंजकता

को व्यापक और समृद्ध बनाया वरन् काव्य तथा कवि के प्रति उसकी उस भावना में है जिसको कि उसने अपनी रचनाओं द्वारा पुष्ट किया और जो कि उसके बाद आने वाले सोवियत कवियों की रचनाओं में भी किसी न किसी रूप में परिलक्षित हो रहा है।

इस भावना की सबसे बड़ी विशेषता मायाकोव्स्की की निजी तथा सामाजिक प्रेम तथा श्रम के एक्य की अनुभूति है। मायाकोव्स्की की सोवियत देश प्रेम में उसके मानवतावाद की समाजवादी विशिष्टता व तथा सर्जना की उच्च विचारात्मकता में यही भावना लक्षित हो रही है। उसकी कविता में नये सोवियत व्यक्ति का चित्र उभर रहा है जो देश प्रेमी और परिश्रमी है, आशावादी है, और शत्रु से समझौता करने को तय्यार नहीं है।

मायाकोव्स्की की सर्जना जनता के प्रति सदा अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करती रही है और नवीनता को अपनाकर उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रही है। पाठकों को प्रभावित करनेवाले काव्यात्मक शब्द की अभिव्यंजकता बढ़ाने में उनकी सर्जना सदैव सतर्क रही है। देश के भाग्य के साथ एक्य नये समाज के निर्माण की चाह व्याप्त निर्माणकारी परिश्रम का गुणगान क्रान्ति के शत्रुओं से घृणा—यह मायाकोव्स्की के काव्य की मुख्य विशेषताएं हैं।

ददलोव ने कहा था कि साहित्य का काम केवल जनता की माँग को पूरा करना ही नहीं है वरन् उसे जनरुचि को ऊपर उठाना चाहिए। उसे नये विचारों से समृद्ध बनाना चाहिए। जनता को आगे ले चलना चाहिए। मायाकोव्स्की की सर्जना का यही प्रगतिशील रूप रहा है। उसने बराबर यही कहा कि कवि को 'कल' के प्रकाश में 'आज' को देखना चाहिए। उस 'कल' की ओर, आगे की ओर बढ़ना चाहिए।

मायाकोव्स्की का महत्त्व इस बात में है कि उसने 'सौन्दर्य' और 'काव्य' के नवीन सोवियत मानदण्ड स्थिर किए, नवीन समाजवादी प्रगीत मुक्तक को पुष्ट किया। उसने काव्य के क्षेत्र में पार्टीवादिता को प्रतिष्ठित

किया। इसलिए सोवियत काव्य क्षेत्र में उसका बड़ा महत्व है। मायाकोव्स्की सोवियत युग का महान कवि है।

सोवियत काव्य क्षेत्र के समान विदेशों के प्रगतिशील काव्य क्षेत्र पर भी उसका बड़ा प्रभाव पड़ा है। उसकी कविताएं योरोप तथा पूर्व की तीस भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। क्रान्ति का गायक मायाकोव्स्की उन सभी देशों में बड़ा प्रिय रहा है जहाँ कि युवक वर्ग पराधीनता उत्पीड़न आदि के विरुद्ध युद्ध करता रहा है। युवक वर्ग मायाकोव्स्की की सर्जना और काव्य में नये व्यक्ति का प्रगतिशील व्यक्ति का समाजवाद के व्यक्ति का चित्र देखता है।

४ द्वितीय महायुद्ध के पूर्व की पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के विकास के युग का साहित्य

[१९२६–३६]

अप्रैल १९२९ में कोम्युनिस्ट पार्टी कान्फ्रेन्स में प्रथम पंच वर्षीय योजना को स्वीकार किया। देश में समाजवादी निर्माण का काम शुरू हुआ। औद्योगीकरण जोरों से चला और कृषि व्यवस्था को सामूहीकरण योजना कार्यान्वित हुई, और समाजवादी संस्कृति की चेतना विकसित हुई। गृह युद्ध तथा साम्राज्यवादी युद्ध में नष्ट राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का पुनर्निर्माण कर सोवियत देश समाजवादी औद्योगीकरण के रास्ते पर चला। नयी तकनीकी प्रक्रिया के आधार पर भारी उद्योगों का निर्माण कर औद्योगिक क्षेत्र में रूस के पिछड़ेपन को जल्दी से जल्दी दूर करना अनिवार्य थी।

१९३१ में स्तालिन ने कहा था कि 'हम प्रगतिशील देशों से पचास से सौ साल तक पीछे हैं। यह फासला हमें दस साल में तय करना होगा।' इससे देश की पिछड़ी हुई स्थिति का पता चलता है।

१९३४ में सत्रहवीं पार्टी कांग्रेस में स्तालिन ने जो कहा उससे पता चलता है कि देश कितनी तीव्रता से उन्नति की ओर बढ़ रहा है। उसने कहा कि 'सोवियत संघ में इस बीच मौलिक परिवर्तन हो गया। उसने अपने मध्य युगीन बाने को उतार फेंका। कृषि प्रधान देश से यह औद्योगिक देश बन गया। छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त कृषि से यह बड़े-बड़े मशीन चालित कृषि क्षेत्र में बदल गया।

इस प्रकार पंचवर्षीय योजनाओं ने देश और उस निवासियों दोनों में आमूल परिवर्तन कर दिया। सारे देश में नए निर्माण शुरू हो गए। यूक्रेन में क्रमतोर्स्की और पीरस्कीर्स्की के कारखाने उराल में मगनीतगोर्स्की

का धातु का कारखाना साइबेरिया में कुजनेत्स्की के कारखाने बने। इसके साथ ही भारी मशीन बनाने के कारखाने, मोटर के कारखाने, नेपर दैस का बिजली घर आदि तय्यार हुए। इन उद्योगों से देश का रूप-रंग ही बदलने लगा। परिस्थिति और मनोवृत्ति दोनों के परिवर्तन ने साहित्य के सामने नये प्रश्न नयी समस्याएं प्रस्तुत की। साहित्य को नया वस्तु-तत्व प्रदान किया और नयी गतिविधि दी। प्रश्न और समस्याएं समाजवादी चरित्र के निर्माण से संबंधित थीं। वस्तु-तत्व परिश्रम और शांति का था तथा नयी गतिविधि मनुष्य में नयी समाजवादी चेतना दृढ़ करने की दिशा में थी। यदि मनुष्य नये जीवन के लिये लड़ता है तो नया जीवन मनुष्य के लिए लड़ता है, उसे शिक्षा देता है और उसमें नए व्यक्तित्व का विकास करता है। सन् तीस के वर्षों के सोवियत साहित्य की बहुत सी कृतियों का यही मूल भाव है जिससे पता चलता है कि सोवियत जनता में समाजवादी चेतना का विकास किस प्रकार हो रहा था।

समाजवादी जीवन पद्धति की विजय ने लेखकों में सैद्धान्तिक ऐक्य दृढ़ किया उनके समाजवादी मतवाद को उग्र बनाया और लेखकों के सामने नयी समस्याएँ प्रस्तुत की।

साहित्यिक कलात्मक संगठनों का पुनर्निमाण

२३ अप्रैल १९३२ में केंद्रीय कमेटी ने साहित्यिक कलात्मक संगठनों के पुनर्निर्माण का निश्चय किया। इस संबंध में कहा गया कि कुछ वर्ष पहले जब कि प्रोलितारियत लेखकों की अभी दुर्बल थी और साहित्य पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ रहे थे पार्टी ने कला और साहित्य के क्षेत्र में प्रोलितारियत संगठनों के निर्माण और उनको दृढ़ करने में बड़ी मदद की। किन्तु अब सम्प्रति प्रोलितारियत कलात्मक संगठन संकीर्ण होते जा रहे हैं और गंभीर कलात्मक सर्जना की व्यापकता को रोकते हैं। केन्द्रीयकमेटी ने इसलिए प्रोलितारियत लेखकों के संगठन को समाप्त करने का निश्चय किया और सोवियत योजना या सोवियत शासन के प्लेटफ़ार्म का समर्थन करने वाले और समाजवादी निर्माण में भाग लेने वाले सभी लेखकों को

सोवियत लेखकों के एक संघ में मिलाने का निश्चय किया और उसमें (संघ में) कम्यूनिस्ट सेक्शन का संगठन किया।

फलतः 'राप' संगठन (प्रोलितारियत लेखकों का रूसी असोसिएशन) समाप्त हो गया। यह संगठन लेनिन की साहित्य में पार्टीवादिता की नीति का विरोध करता था। इसी प्रकार 'प्रोलेत्कुल्त' की विचारधारा भी साहित्य के सर्वांगीण विकास के अनुकूल न थी क्योंकि वह क्लासिकल संस्कृति के उत्तराधिकार का अस्वीकार करता था और वह प्रोलितारियतों की शक्ति द्वारा प्रोलितारियत संस्कृति का निर्माण आवश्यक और अनिवार्य बताता था। इन साहित्यिक संगठनों का दृष्टिकोण संकीर्ण हो गया था इसलिये लोगों को साहित्यिक मोर्चे पर परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव हुआ।

यह ऐतिहासिक निश्चय सोवियत साहित्य के विकास का महत्त्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। सन् १९३२ में 'सोवियत लेखक संघ' की संगठन कमेटी बनाई गयी जिसके शीर्ष पर मैक्सिम गोर्की था। इसे सोवियत लेखकों के अखिल संघीय (अखिल रूसी) सम्मेलन बुलाने का भार सौंपा गया। इसकी कार्यकारिणी में फदेयेव वीश्नेव्स्की किर्पोतिन आदि थे। बड़ी तैयारी के बाद मास्को में १९३४ में सोवियत लेखकों का प्रथम अखिल (रूसी) संघीय अधिवेशन बड़ी धूमधाम से हुआ। यह अधिवेशन देश के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना है। इसमें बहुत से लोगों के भाषण हुए जिसमें साहित्य की समस्याओं सोवियत साहित्य के रूप और विशिष्टता तथा लेखकों के योगदान के विषय में बहुत कुछ कहा गया। वास्तव में सोवियत लेखकों के सर्जनात्मक विकास में इस अधिवेशन का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस युग में फदेयेव (नाश) शोलोखोव (शान्त डान) ओस्त्रोव्स्की (लोहा कैसे तैयार किया गया) अ० तोल्सतोय (पीड़ा के बीच यात्रा) लिओनोव (स्कूतारेव्स्की) पाउस्तोव्स्की पावलेंको स्वेतलोव मलेयेव बग्रीत्स्की आदि की रचना का विकास हुआ और उनकी कृतियाँ लोकप्रिय हुईं।

इसी युग में मायाकोव्स्की की कविता 'अच्छा है' छपी और गोर्की की कृति 'क्लिम समगिन का जीवन' के दो भाग प्रकाशित हुए। इन लेखकों के अतिरिक्त इसी युग में पनफ्योरोव करायेवा गरबातोव स्ताव्स्की अफीनोगेनोव जैसे नये लेखक भी साहित्य के क्षेत्र में आए।

श्रमिक वर्ग तथा उसके निर्माणकारी परिश्रम की विषय-वस्तु इन लेखकों की कृतियों में पल्लवित हुई। अपना पुराना बाना फेंककर शताब्दियों की जर्जर रूढ़ियों और अन्धविश्वास को छोड़कर आगे बढ़ते हुए गाँवों के कलखोजीय जीवन का चित्रण कई लेखकों की कृतियों में हुआ। पनफ्योरोव का उपन्यास 'ब्रुस्की' तथा ईसाकोव्स्की की कविता में इसी परिवर्तन का चित्रण है।

बुद्धिजीवियों के मानसिक उद्भ्रम तथा विकास का प्रश्न इस समय का महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न था। इस समस्या का अंकन फदेयेव के 'नाश' लवरेन्येव के 'टूटना' त्रेन्येव के 'ल्यूबोव यरोवाया' में हुआ। बुद्धिजीवियों की अनिश्चयात्मकता और फिर क्रान्ति के पक्ष में हो जाना अलेक्सेई तोल्स्तोय की कृति 'सन् अठारह' में चित्रित है। इस समय ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की गईं जिनमें क्रान्ति के प्रति कला का सम्बन्ध व्यक्त किया गया। इनमें कुछ पर बुर्जुआ विचारधारा का प्रभाव है। पेस्तेरनाक की 'सर्जना की स्वाधीनता' और सेल्वीन्स्की की 'कवि के अधिकारों की घोषणा' ऐसी ही कृतियाँ हैं। समय के प्रवाह में यह कृतियाँ अधिक न ठहर सकीं।

ब्यूरोक्रेटिज्म तथा दफ़्तरी कारवाइयों पर व्यंग्य उन अफ़सरों तथा कर्मचारियों पर आक्षेप जो पूँजीवादी तौर-तरीका अख्तियार कर समाजवादी प्रगति को रोकते हैं इन सबका व्यंग्यात्मक चित्रण मायाकोव्स्की के व्यंग्य-प्रधान नाटकों 'खटमल' तथा 'स्नान घर' में तथा बेज़ी-मेन्स्की के नाटक 'गोली' तथा 'हमारे जीवन का दिन' काव्य में हुआ है।

महाकाव्यात्मक उपन्यासों की रचना इस युग की साहित्यिक विशेषताओं में से एक है। गोर्की का 'क्लिम समगिन का जीवन' शोलोखोव

का' शांत डान' पनफ्योरोव का 'ब्रूस्की' फदेयेव का 'उदेग से' आदि कृतियाँ इसी का संकेत दे रहे हैं। नाट्य क्षेत्र में यथार्थवादी नाटक को प्रौढ़ता प्राप्त हुई और क्लासिकल नाटकों के साथ-साथ सोवियत नाटकों का रंगमंच पर प्रदर्शन शुरू हुआ। धीरे धीरे सोवियत रंगमंच दृढ़ हो गया। साहित्य के बीच सैनिक के चित्र के साथ-साथ मजदूर नायक का अंकन और चित्र भी प्रतिष्ठित हुआ और सोवियत साहित्य वर्ग संघर्ष निर्माण-कारी परिश्रम और समाजवादी यथार्थवाद से परिपूर्ण हो गया।

औद्योगीकरण और सामूहीकरण की विषय-वस्तु

समाजवादी निर्माण का वेग विशाल औद्योगीकरण कृषि का सामूहीकरण तथा मशीनीकरण गाँवों की बस्तियों में परिवर्तन लाया जिसमें कि देश का रूप-रंग ही बिल्कुल बदलता जा रहा था—इन सबने लेखकों के सामने नयी और कठिन समस्याएं प्रस्तुत कीं। इन कलाकारों के लिए नयी परिस्थिति की नयी प्रगति-सामग्री का सम्यक ग्रहण आवश्यक था। किन्तु जीवन ऐसी क्षिप्र गति से बदल रहा था कि कलाकार उतनी जल्दी उसकी शीघ्र परिवर्तनशील विशिष्टताओं को कलात्मक रूप नहीं दे पा रहा था। जब कि परिस्थिति या जीवन को कलाकार कलात्मक परिधान पहिनाए यह परिस्थिति ही बदल जाती थी।

ऐसी परिस्थिति में साहित्यिक प्रकार के रूप में कलात्मक निबन्धों का आविर्भाव अनायास या आकस्मिक घटना नहीं है। सन् तीस के वर्षों के आरम्भ में कलात्मक निबन्ध अत्यधिक व्यापक साहित्यिक प्रकार के रूप में क्रम में बहुत प्रचलित हुए। सन् तीस में गोर्की ने निबन्ध लिखनेवालों के लिए एक विशेष पत्र 'हमारी सम्प्राप्तियाँ' की स्थापना की।

निबन्ध की सत्ता लेखक की इस मान्यता पर आधारित है कि वह जीवन में जो सर्वसामान्य और सर्वव्यापक है उसको पहचान सके और जीवन्त तथ्यों को कलात्मक रूप या महत्व देते हुए उनकी अभिव्यक्ति कर सके। 'पहाड़ ऊँचा था' ऐसी ही निबन्ध की पुस्तक है जो गोर्की के संपादन में निकली। उसमें 'बिलोकागास्की' कारखाने के नाम से काम करने वाले सौ मजदूरों के अपने विषय में संस्मरण और कहानियाँ हैं। यह सच्ची

घटनायें हैं किन्तु इनके बीच से इस कारखाने का आरम्भ से लेकर अन्त तक का इतिहास सामने आ जाता है। 'स्तालिनग्राद ट्रैक्टर के लोग' भी इसी प्रकार के निबन्धों की पुस्तक है। इसमें इस कारखाने के बनानेवाले बत्तीस व्यक्तियों की आत्मकथा है। इन आत्मकथाओं का केवल यथार्थ तथ्य की दृष्टि से ही नहीं वरन् कलात्मक दृष्टि से भी महत्व है।

गाँवों का पुनर्निर्माण बड़ी स्पष्टता के साथ स्ताव्स्की के लेखों में दिखाया गया है। उसकी पुस्तक 'दौड़' गाँवों के सामूहीकरण के आंदोलन को प्रस्तुत करती है और यह दिखाती है कि 'कुलकों' (जमींदारों) के विरोध को नष्ट कर सोवियत गाँव किस प्रकार 'कल्खोज' में परिणत हुए। यह पुस्तक भी सच्ची घटनाओं पर आधारित है।

इसी प्रकार बीबी के लेख 'श्रमिकों के विचार, चिन्ता और कार्य' और 'नये श्रमिक' तथा शगिन्यान के आरमीनिया में भ्रमण [illegible] का बड़ा महत्व रहा। सन् तीस में निबन्ध लेखकों के रूप में अगाप्योव, सफ्कोव, मिकीतोव, गालिन, गरबातोव तथा अन्य लेखक इस क्षेत्र में आये। पावलेन्को की निबन्ध पुस्तक 'आनावबीर्द' बड़ी लोकप्रिय हुई। इसमें तुर्कमीनिया के नव जीवन का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है।

निबन्ध महत्वपूर्ण होते हुए भी साहित्य द्वारा प्रस्तुत सभी प्रश्नों का अपने में समावेश न कर सके। इसी से निबन्धों के साथ-साथ कहानी उपन्यास जैसे विकसित साहित्यिक प्रकार भी सामने आए जिनमें उद्योगों तथा गाँवों के जीवन में पुनर्निर्माण के व्यापक चित्र प्रस्तुत किए गये। परिश्रम तथा निर्माण के नये रूपों को प्रदर्शित करती हुई ये कृतियाँ इस ओर भी ध्यान देती हैं कि स्वतः मनुष्य इन परिस्थितियों में किस प्रकार बदल रहा है और उसमें किस प्रकार संसार के प्रति समाजवादी संबंध दृढ़ हो रहा है। नये प्रकार के इस सोवियत व्यक्ति का व्यापक चित्रण इस समय के लेखकों की कृतियों में बहुत मिलता है। एम० शगिन्यान का उपन्यास 'हाइड्रा सेन्ट्रल' (१९३१) लियानोव का 'सोत (नदी)' ईल्या एरिनबुर्ग का 'दूसरा दिन' (जो लेखक की कुज्नेत्स्की के धातु कारखाने की यात्रा के बाद लिखा गया) और 'बिना साँस लिए' (१९३५) क्वाएव

का 'ग्राम की ओर' (१९५२) इसी की कृतियाँ हैं। या सोवियत देश में होनेवाले विशाल समाजवादी निर्माण का वर्णन करती हैं तथा जो साहस तथा समाजवादी आत्मबलिदान से युक्त परिश्रम के वेग से परिपूर्ण हैं और जो त्वरा की अनुभूति से इस भाव से कि सौ साल के समय को उन्हें दस साल में तय करना है, लिखा है।

लियोनोव का 'सोत (नदी) देश के जीवन की नव मंजिल— समाजवादी पुनर्निर्माण का युग का चित्रण करनेवाला महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है। लियोनोव ने यह उपन्यास उस स्थल की यात्रा के बाद लिखा जहाँ कि औद्योगिक कारखाने का निर्माण हो रहा था। सोत नदी का यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ प्रदेश था और वहाँ के धर्माधिकारी नवीन जीवन के विरोधी और शत्रु थे। इस प्रदेश में धीरे-धीरे विरोध के बीच समाजवादी निर्माण शुरू होता है और जनता की चेतना में परिवर्तन होता है। प्राचीन और नवीन के संघर्ष में रूढ़िग्रस्त जीवन पर नवीन समाजवादी संस्कृति की विजय होती है।

शागिन्यान के उपन्यास 'हाइड्रो सेन्ट्रल' में देश की आर्थिक व्यवस्था के समाजवादी निर्माण की विशाल भावनाओं का अभिव्यंजन हुआ है। इसमें यह बताया गया है कि यह समाजवादी भावना केवल सामान ही नहीं तय्यार करती वरन् सामान के साथ-साथ यह नया समाज भी तय्यार कर रही है जो कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। देश के जीवन का आमूल परिवर्तन और उसका समाजवादी औद्योगीकरण उपन्यास में बड़ी सजीवता के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

आगे बढ़ो उपन्यास का विषय-वस्तु समाजवादी निर्माण से संबंधित है। इसकी अलग-अलग घटनाओं में पंचवर्षीय योजना के साहसपूर्ण दिन तथा समाजवादी आर्थिक व्यवस्था का शीघ्रातिशीघ्र संपन्न करने में लगी हुई जनता के अपार परिश्रम का बड़ा मधुर अभिव्यंजन हुआ है।

ग्लदकोव का उपन्यास 'सीमेन्ट' समाजवाद के निर्माण की नयी मंजिल और इस बीच पुष्ट हुई नयी जनता से संबंधित है। इसके मूल में 'नेपर दैम' के निर्माण से संबंधित सामग्री है। इसके केन्द्र में परिश्रम और उसके

प्रति नये समाजवादी संबंधों की समस्या है। उपन्यास में जनता की संपत्ति के अपव्यय को रोकने की समस्या, पार्टी द्वारा जन शक्ति के संचालन की समस्या और नैतिकता तथा परिवार से संबंधित अनेक प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया है।

पनफ्योरोव का उपन्यास 'ब्रुस्की' क्रान्ति के बाद के ग्रामीण जीवन से संबंधित है और अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह बताता है कि गाँव का पुनर्निर्माण कैसे हो रहा है। कैसे वर्ग संघर्ष के बीच नये प्रकार के लोग जन्म ले रहे हैं और गाँवों के जीवन के नए रूप का किस प्रकार संगठन किया जा रहा है। गाँवों के जीवन से संबंधित दूसरी अत्यन्त लोकप्रिय कृति अन्ना करावायेवा का उपन्यास 'बंजर का कारखाना' है। इसमें गाँव की नयी प्रगतिशील और क्रान्तिकारी शक्ति का 'कुलकों' के साथ संघर्ष दिखाया गया है। लेखिका ने यह दिखाया है कि प्रगतिशील विचारों के प्रभाव से गाँवों में किस प्रकार नये समाजवादी संबंधों का जन्म हो रहा है। सामूहिक परिश्रम विकसित हो रहा है और किसानों की समाजवादी चेतना दृढ़ हो रही है।

शोलोखोव का उपन्यास 'अनजोती भूमि' इस क्षेत्र में सबसे अच्छा उपन्यास है। कलखोजी स्तर की विजय त्वार्दोव्स्की की कविता 'देश मुराविया' में प्रदर्शित की गई है।

ब्रुस्की के प्रथम दो भागों में सामूहीकरण की समस्या प्रस्तुत की गयी है। लेखक ने इसे व्यक्तिगत मिल्कियत की भावना के विरुद्ध युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया है। तीसरे भाग में कुलकों तथा उन पर अवलम्बित दूसरों का सामूहीकरण के प्रति विरोध दिखाया गया है। कम्युनिस्टों के अन्दर अन्तर्गत विरोधी तत्त्वों को प्रदर्शित किया गया है। किन्तु समाजवाद की शक्ति बढ़ती है और उसकी विजय होती है। चौथे भाग का मुख्य भाव समाजवादी सर्जना है।

इस युग में ऐतिहासिक उपन्यासों का भी विकास हुआ। सोवियत लेखकों का ध्यान एक ओर तो सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी के किसान विद्रोहों की ओर गया और दूसरी ओर अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी के

क्रान्तिकारियों के कार्य कलापों की ओर आकृष्ट हुआ। इस क्रम में चपीगिन का उपन्यास 'राजिन स्तेपान' पहला सोवियत उपन्यास है जिसमे किसान विद्रोह का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है। इसमे स्तेपान राजिन का विद्रोह रूसी समाज के 'उच्च' और 'निम्न' के युद्ध के रूप मे अंकित किया गया है।

रूसी बुद्धिजीवियों का रूसी क्रान्ति और रूसी संस्कृति के विकास मे जो योगदान है उसका चित्रण ओल्गा फोर्श के उपन्यास 'समकालीन' और 'पत्थरों का पहनावा' तथा तिन्यानोव के उपन्यास 'क्यूख्ल्या' में हुआ है।

नाटक

इस युग की नाट्य कृतियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें त्रेन्योव के नाटक 'ल्यूबोव यारोवाया' का अपना स्थान है। इनमें क्रान्ति के प्रति लेखक और नागरिक का संबंध स्पष्ट रूप में स्थापित किया गया है और बोल्शेविज्म तथा अक्तूबर क्रान्ति का समर्थन किया गया है।

लवरेन्योव का नाटक 'टूटना' भी सोवियत नाट्य साहित्य की महान् उपलब्धि मानी जाती है। इसके मूल में ऐतिहासिक घटनाएँ हैं क्रूजर 'अवरोरा' की घटनाएँ, जो पत्रोग्राद के युद्ध और अक्तूबर क्रान्ति से संबंधित हैं। नाटक के नायक गदून के चित्रण द्वारा बोल्शेविक मनुष्य का रूप प्रस्तुत किया गया है। जहाज का कप्तान बरसेनेव क्रान्ति के पक्ष में हो जाता है।

इवानोव की कथा पर आधारित नाटक 'ब्रोनेपोएज्द १४–६९ बख्तर से मढ़ी रेलगाड़ी १४–६९' विशेष रूप से सफल हुआ। इसका मूल विषय-वस्तु श्रमिकों का भ्रातृत्व है।

गृह-युद्ध से संबंधित नाटकों में बुल्गाकोव का नाटक 'तुरबीनों के दिन' का विशेष स्थान है। इसी प्रकार सोवियत जीवन की यथार्थताओं से संबंधित नाटकों में रमाशोव के नाटक 'क्रिवोरील्स्क का अन्त' तथा 'अग्निमय पुल' और फाइको का नाटक 'हैंडबेग वाला आदमी' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'क्रिवोरील्स्क का अन्त' में नाटककार ने प्राचीन रूसी प्रान्त के अन्तिम दिनों का और कम्सोमोल युवकों द्वारा नवीन समाज

वादी नगर निर्माण कार्य को प्रदर्शित किया है। 'अभिनय युक' की मूल विषय-वस्तु बुद्धिजीवी और क्रांति है। नायिका इरीना दुर्वासिना अपने परिवार से अलग होकर पुरानी दुनिया छोड़कर समाजवाद के पक्ष में आ जाती है।

'ब्रीफकेस वाला आदमी' में बुद्धिजीवियों का जीवन प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राचीन वैज्ञानिकों का और कम्यूनिस्ट विद्वानों का उन लोगों से संघर्ष दिखाया गया है जो सोवियत समाज और सोवियत विज्ञान को हानि पहुँचा रहे हैं।

व्यंग्य प्रधान नाटकों के क्षेत्र का इस युग में विशेष सफलता प्राप्त हुई। मायाकोव्स्की के नाटकों—'खटमल' और 'स्नानघर' का सोवियत व्यंग्य प्रधान नाटकों के विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

सन् तीस के नाट्य-साहित्य में सोवियत श्रमिक वर्ग के उत्साहपूर्ण परिश्रम और समाजवादी निर्माण की विषय वस्तु का विकास पगोदिन से संबंधित है। पगोदिन का पहला नाटक 'गति' १९२९ में प्रकाशित हुआ। उसके बाद 'कुल्हाड़ी की कविता' और 'मेरा दोस्त' नाटक प्रकाशित हुए। पगोदिन के पहले नाटक के नायक किसान मजदूर हैं जो स्तालिनग्राद ट्रैक्टर निर्माण में काम करते हुए पंचवर्षीय योजना के समर्थक बन जाते हैं और वैतन्य रूप में सक्रिय योग देते हैं। दूसरे नाटक का मुख्य प्रेरक भाव देशभक्त सोवियत जनता का सर्जनात्मक परिश्रम और कम से कम समय में समाजवादी उद्योगों का निर्माण है। कठिनाइयाँ और विरोध इन लोगों को नहीं रोक पाते क्योंकि संचालन व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं वरन् देशप्रेम तथा समाजवादी निर्माण का उत्साह कर रहा है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना से संबंधित महत्त्वपूर्ण नाट्य कृतियों में कताएव का नाटक 'आगे बढ़ो' तथा विस्नेव्स्की बलोत्सेवकोव्स्की का नाटक 'रूस की आवाज' उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार समाजवादी समारम्भ, सन् तीस के दशक के पूर्वार्द्ध के उन नाटकों के संघर्ष और समस्याओं के मूल में है जिनमें सोवियत बुद्धिजीवियों के जीवन का अभिव्यंजन हुआ

है। अफिनोगेनेव के नाटक 'अजीब आदमी' 'भय' किर्शोनोव का 'स्क्रुता-रेवस्की' रमाशान का 'योद्धा' ऐसे ही नाटक हैं।

'अजीब आदमी' नाटक का नायक बरीस गोल्गिन है जो एक छोटे से शहर में कारखाने में काम करता है। वह किसी पार्टी का सदस्य नहीं है फिर भी वह समाजवाद के निर्माण को अपनी निजी काम समझता है और इसकी विजय में उसका विश्वास है। वह बुद्धिजीवियों के उस अंश का प्रतिनिधि है जिसने क्रान्ति के बाद अपने को जनता के साथ मिला दिया और सोवियत शासन का समर्थन किया। वह उत्साही कार्यकर्ताओं का मंडल बनाता है और कारखाने की पंचवर्षीय योजना को चार वर्ष में पूरा करने की प्रेरणा देता है। नायक का ब्यूरोक्रेटिज्म के विरुद्ध जो युद्ध है वही इस नाटक के संघर्ष के मूल में है।

'भय' नाटक में विज्ञान के मोर्चे पर वर्ग-संघर्ष की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। इसमें वयोवृद्ध वैज्ञानिकों के राजनीतिक सैद्धान्तिक पुनर्शिक्षण का प्रश्न प्रस्तुत किया गया है। इसमें वैज्ञानिक क्षेत्र में पिछड़े हुए तथा हानिकारक तत्त्वों का नाश और किसानों तथा मजदूरों के बीच विज्ञानों की नयी पीढ़ी का निर्माण दिखाया गया है। नाटक का संघर्ष इंस्टिट्यूट के डाइरेक्टर बरोदिन और जवान कम्यूनिस्ट विज्ञानों के बीच होता है। बरोदिन इस प्रतिक्रियावादी सिद्धान्त से प्रेरित होता है कि मनुष्य का संचालन केवल प्रेम भूख घृणा और भय से होता है। अन्त में उसे पता चलता है कि वह जासूसों के हाथों में खेल रहा था। नाटक का अंत सोवियत विज्ञान के प्रतिनिधियों की विजय और बरोदिन की पराजय में होता है। आखिर में वह अपनी गलती स्वीकार करता है।

गृहयुद्ध से संबंधित नाटकों में विश्नेव्स्की का 'आशावादी ट्रेजेडी' महत्त्वपूर्ण है। इस नाटक में यह दिखाया गया है कि प्रोलितारियत शक्ति किस प्रकार दस्तों से सुसज्जित हुई किस प्रकार उसकी शक्ति से समृद्ध होकर पार्टी का संगठनात्मक रूप और कार्य सक्षम हुआ और किस प्रकार अराजकता के ऊपर समाजवादी अनुशासन विजयी हुआ। नाटक में

गृहयुद्ध की एक सामान्य प्रकार की घटना का चित्रण हुआ है। नौ सैनिकों की एक अराजकतावादी टुकड़ी कम्यूनिस्टों के प्रभाव से लाल सेना का नियमित सुसंगठित और अनुशासित अंग बन जाती है जो क्रीमिया में श्वेत गार्डों से विरुद्ध लड़ती है। इसकी नायिका कमिसार का चित्र अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। नाटक के अन्त में वह शत्रु द्वारा मार डाली जाती है फिर भी वह झुकती नहीं और अंतिम क्षण तक वह पार्टी और मातृभूमि के बारे में सोचती रहती है। उसका निर्भय मत क्रान्ति सोवियत जनता और कम्युनिस्ट पार्टी की अनिवार्य विजय में उसका विश्वास दृढ़ कर रहा है। इसी से 'ट्रेजेडी' होते हुए भी यह आशावादी है।

काव्य

समाजवादी परिस्थिति का सोवियत काव्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस युग म देम्यान बेदनी का अपना काव्य-सर्जन चलता रहा। देश के औद्योगीकरण के साथ उसके काव्य म सर्जनात्मक परिश्रम की विषय-वस्तु और निर्माणकारी मार्चे पर जनता क साहस और उत्साह का अंकन प्रस्तुत हुआ। प्रतिदिन के काम को अच्छी तरह पूर्ण करने वाले सामान्य सोवियत व्यक्ति को उसने नायक क रूप में प्रस्तुत किया।

सोवियत शासन के इन आरम्भिक वर्षों में पुराने कवियों के साथ कवियों की नयी पीढ़ी भी सामने आई। बेजिमेंस्की ने अपने काव्य में सोवियत नवयुवकों का मानसिक प्रस्तुत किया और उसके काव्य में उसकी व्यंग्य की प्रतिभा लक्षित हुई और उसका पार्टी प्रेम भी। उसने कहा कि "सबसे पहले मैं पार्टी का सदस्य हूँ और बाद में कवि।" हमारे जीवन के दिन म कई व्यंग्य चित्र हैं। उसका पद्य नाटक 'गोली' बड़ा लोकप्रिय हुआ।

गांव के नवयुवकों के बीच झारोव का काव्य बड़ा लोकप्रिय हुआ। 'वासन्ती दिन' 'प्रेम के गीत' आदि उसके कई संग्रह हैं। जवानी का उत्साह, मैत्रीपूर्ण परिश्रम, प्राकृतिक चित्र तथा प्रेम की विषय-वस्तु ने पाठकों का ध्यान उसकी आकृष्ट किया।

गृह-युद्ध और क्रान्ति के दिनों की संस्मृति युद्ध के बीच साहस तथा

मैत्री आदि का व्यापक चित्रण स्वेतलोव, सयानोव गलोदनी आदि की कृतियों मे मिलता है। स्वेतलोव की कविता 'ग्रनाद' (अनार) मे इसका अंकन हुआ है, जिसमें लाल सेना के सैनिक के लिए अपने देश का स्वातन्त्र्य युद्ध सारे संसार की जनता के स्वातन्त्र्य युद्ध से संबंधित है। गृहयुद्ध से संबंधित उसकी कुछ कविताएं बाद में लोकगीत के रूप में लोकप्रिय हो गई। इन्हीं वर्षों में आलीमोव का 'छापामार' बड़ा व्यापक हुआ।

इसी युग में तीखनोव की काव्य प्रतिभा उसके काव्य 'नायक की खोज' के रूप में अपना विकास मार्ग ढूंढ रही है।

एदुअर्द बग्रीत्स्की के काव्य 'अपानस के विषय में विचार' में युक्रेनीय रंग है। इसमें अपानस का चित्रण है जो क्रान्ति से विमुख होता है और बाद में शत्रु पक्ष में चला जाता है। इसमें उसके जीवन की ट्रेजडी दिखाई गयी है। कवि ने वैयक्तिक स्वामित्व की भावना की आलोचना भी की है। इसाकोव्स्की का इस समय का काव्य भी महत्त्वपूर्ण है। नये गांवों के जीवन की नई विशेषताओं का उसमें बड़ा अच्छा चित्रण हुआ है। उसका काव्य 'धूल में बिजली का तार' सोवियत काव्य के विकास का महत्त्वपूर्ण चरण माना जाता है।

इसकी कविताओं में नगर तथा गांवों को प्रतिपक्षी के रूप में न चित्रित कर किसानों तथा मजदूरों की नगर तथा गांवों की एकता का समर्थन किया गया है। इस समय की उसकी अन्य कविताओं में प्राचीन गांवों के आनन्द रहित जीवन के साथ नवीन गांवों के उत्साहपूर्ण जाग्रत जीवन की तुलना मिलती है। आगे चलकर कलखोजी गांवों की विषय-वस्तु का उसके काव्य में और भी विकास हुआ। उसने कलखोजी जीवन के बड़े सजीव चित्र प्रस्तुत किये। असेयव के राजनीतिक प्रगीतों में अब स्वतन्त्र हुई स्त्रियों के सुख सौभाग्य तथा सोवियत नवयुवकों के उत्साहपूर्ण स्वतन्त्र जीवन का अंकन हुआ है।

समाजवादी निर्माण की विषय-वस्तुओं से संबंधित सन् तीस के आरम्भिक वर्षों की कृतियों के बीच बेजिमेंस्की के काव्य 'भयंकर रात्रि'

का उल्लेख आवश्यक है। इसमें प्राचीन व्यवस्था का अनिवार्य नाश दिखाते हुए कवि ने 'नेपर गैस' (जल बिजली घर) के निर्माण को नयी समाजवादी व्यवस्था की नई शक्ति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है जो प्रकृति पर अधिकार प्राप्त करती हुई व्यक्ति को साहस तथा आत्मविश्वासपूर्ण कार्यों की प्रेरणा देती है।

नये साहसी और आत्मविश्वासी नायक का चित्र तिखोनोव की कविताओं (पद्य रचनाएँ) में उभरा है। इसमें कवि ने सामान्य सोवियत व्यक्तियों की उच्च नैतिक विशिष्टताओं को प्रदर्शित किया है और परिश्रम के प्रति उस नये संबंध को दिखाया है जो समाजवाद के लिए किये गये सामूहिक संघर्ष के बीच उत्पन्न और दृढ़ होता है 'नया तरीका' 'इंजीनियर' 'कानून'।

इन्हीं वर्षों में सेल्विन्स्की अलीगेर, स्मेल्याकोव्स्की आदि का काव्य प्रणयन आरम्भ होता है। इन्हीं वर्षों में सुरकोव के प्रथम काव्य संग्रह मूलमून (हम उम्र) प्रस्तुत हुए और उनमें गीतकार के लक्षण विकसित हुए।

सोवियत संघ के अन्य प्रजातन्त्रों में समाजवादी जीवन का जो नव निर्माण हो रहा था उसकी अभिव्यक्ति भी इस समय के काव्य में मिल रही है। तीखनोव के काव्य में 'मुर्गी' (जरथस्त्र के विषय में कविता) इसकी अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। नव जीवन के निर्माताओं की दिन-प्रति दिन की कार्य तत्परता और उत्साह का वर्णन कवि का मुख्य लक्ष्य है।

तुर्कमीनिया के प्रजातन्त्र के जीवन का चित्रण लुगोव्स्कय की कविताओं में हुआ है। बोल्शेविकों की रेगिस्तान और बसन्त की विषय वस्तु समाजवादी शिक्षा और प्राचीन रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष है।

अपने युग की आत्मा को सुरक्षित किये हुए परिश्रम के भावावेश से परिपूर्ण ये कृतियाँ देश के पुनर्निर्माण के प्रति उस नवीन मानवीय संबंध को प्रदर्शित करती है जो कि इन वर्षों में प्रस्तुत हुआ। इस प्रकार परिश्रमशील जनता की सर्जना का वर्णन करनेवाली इन कृतियों में सोवियत साहित्य की देशभक्ति की भावधारा तथा दिशा का अभिव्यंजन हुआ।

ये कृतियाँ यह भी प्रदर्शित करती हैं कि जिस प्रकार पंचवर्षीय योजनाओं की सफलता के साथ देश बढ़ा उसी प्रकार अपने देश के साथ बढ़नेवाले नये व्यक्ति की नयी विशिष्टताएँ भी विकसित हुईं। सोवियत लेखक मानवीय चरित्र की इन नवीन आगमुखी प्रगतिशील विशिष्टताओं को जिन्हें कि समाजवादी यथार्थता ने निर्मित किया के अंकन की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुए। जनता के चरित्र विकास का यह क्रमिक रूप समूह के बीच उसके चरित्र का परिवर्तन क्रान्तिकारी युद्ध में उसका योगदान इन सबकी बड़ी सुन्दर अभिव्यक्ति आस्त्रोव्स्की के उपन्यास 'लोहा कैसे तय्यार किया गया' और मकारेंको की कविता 'शिक्षात्मक कविता' में हुई।

इस प्रकार इस युग का काव्य जीवन की यथार्थताओं के अधिकाधिक निकट आता गया और उसने जीवन के प्रशिक्षण में सक्रिय भाग लिया। समाजवादी आदर्श का समर्थन और बुर्जुआ व्यक्तिगत भावनाओं के विरुद्ध संघर्ष-इस समय के काव्य की मुख्य विशेषताएँ हैं। इस समय की महत्त्वपूर्ण कृतियों के नायक मजदूर, कलखाजी किसान इंजीनियर तथा मामूली श्रमिक हैं जो समाजवादी समाज के आत्म बलिदानी निर्माता हैं और जो जीवन और परिश्रम के क्षेत्र में नये सामाजिक संबंधों को दृढ़ कर रहे हैं।

अ० मकारेंको की शिक्षात्मक कविता

व्यक्ति की समाजवादी शिक्षा (जो कि मनुष्य को परिश्रम की ओर स्वेच्छा से प्रेरित करती है) की समस्या मकारेंको की कविता 'शिक्षात्मक कविता' में बड़ी गंभीरता के साथ प्रस्तुत की गयी है। सोवियत साहित्य की अन्य कृतियों के समान यह भी यथार्थ पर आधृत है। इस कविता के मूल में मकारेंको का वह अनुभव है जो कि उसे अनाथित बालकों के संगठन और संचालन में प्राप्त हुआ था। कठिन परिस्थितियों के बीच भी मकारेंको असामाजिक बुरी आदत सीखे हुए इन बच्चों का सफल संगठन बना सका जो आगे चल कर अच्छे डाक्टर, इंजीनियर, सैनिक आदि बने।

मकारेंको ने न केवल अपने आश्रित इन बच्चों को शिक्षा दी वरन्

इस तथ्य को कलात्मक परिणाम भी दिया जिसका परिणाम यह कविता है। यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार जीवन की परिस्थितियों द्वारा भग्न इन लोगों की आत्माएं फिर से सुधरती हैं और परिश्रम तथा मनुष्य का मनुष्य में विश्वास किस प्रकार उनको समाज का सुसम्मानित सदस्य बना देता है। यह घटना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जिसमें संगठन के एक सदस्य (भूतपूर्व चोर) को बाजार से रुपया लाने को भेजा जाता है। उसके प्रति विश्वास के इस प्रदर्शन ने उसमें आमूल परिवर्तन उपस्थित कर दिया। उसमें मनुष्यता को जन्म दिया और उसमें उस शक्ति को उद्बुद्ध किया जिससे कि वह दूसरों के विश्वास के योग्य बना रह सके। अब वह भी अपने को इज्जतदार आदमी समझने लगा। समाजवादी शिक्षा ने इस प्रकार व्यक्ति के सामने नया व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उसकी उदात्त भावनाओं को प्रबुद्ध किया और उसके *आत्मिक सौन्दर्य को उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित किया।*

मकरेंको का योगदान इस बात में है कि वह इस छोटे से उदाहरण में सोवियत व्यक्ति की नयी विशिष्टताओं को और जीवन की उन शक्तियों को जिन्होंने इन विशिष्टताओं को पुष्ट किया—देख सका, समझ सका और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रदर्शित कर सका।

५ निकोलाई अलेक्सेयेविच अस्त्रोव्स्की

[१९०४–१९३६]

अस्त्रोव्स्की का जीवन अल्प किन्तु जीवन के अनुभवों एवं अनुभूतियों से परिपूर्ण है। चौदह वर्ष की वय में वह यूक्रेन में श्वेत गार्डों के विरुद्ध युद्ध में प्रवृत्त हुआ। वह यूक्रेन के कमसामोल (युवक कम्युनिस्ट लीग) संस्था के प्रथम सदस्यों में से था। वह लाल सेना में और घुड़सवारों में भी रहा।

१९२० में घायल होकर वह सेना से अलग हो गया। स्वस्थ होने पर वह देश के पुनर्निर्माण के काम में लग गया। किन्तु वह फिर बीमार हो गया और धीरे-धीरे उसके शरीर के सारे जोड़ सख्त हो गये। उसे एक प्रकार का गठिया हो गया और वह बिल्कुल अंधा हो गया।

यद्यपि उसकी शारीरिक पीड़ा अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी और वह बिल्कुल निस्सहाय हो गया था फिर भी इस योद्धा ने आत्मसमर्पण न किया। वह अपनी अन्तिम साँस तक लड़ता रहा। वह एक पत्र में अपने मित्र को लिखता है—"मैं तीन साल से अपने जीवन के लिए युद्ध कर रहा हूँ। यदि मेरे जीवन के मूल में आखिरी सम्भावना तक लड़ते रहने का सिद्धान्त न होता तो मैंने न जाने कब अपने को गोली मार दी होती।"

चरित्र की यह दृढ़ता उसे इस चीज से मिली कि उसने अपने जीवन को सर्व सामान्य की जीवन गति में मिला दिया। उसने लिखा कि वह सेवी या अहं भाव वाला व्यक्ति सबसे पहले नष्ट होता है। वह अपने में और केवल अपने लिए जीवित रहता है। यदि उसका यह अहं टूट जाता है तो फिर उसके पास जीने के लिए कुछ नहीं रह जाता। किन्तु जब व्यक्ति अपने लिए नहीं जीता वरन् सामाजिकता के बीच निर्मित और विकसित होता रहता है तो उसे मारना कठिन है—तब उसे मारने के लिए सारे वातावरण को सारे देश को सारे जीवन को नष्ट करना आवश्यक है।

यदि व्यक्ति में व्यक्तिगत या निजी हित वृहद् स्थान ले लेता है और सामाजिक हित का स्थान अल्पस्थ होता है तो व्यक्तिगत जीवन का नाश उसके लिए सर्वनाश हो जाता है। तब उसके सामने प्रश्न उठता है कि किसलिए जिया जाय ?

अस्त्रोव्स्की के सामने यह प्रश्न कभी नहीं उठा क्योंकि उसे जीवन में युद्ध करने की शक्ति व्यक्तिगत या निजी लाभ की भावना से नहीं मिली वरन् उसे यह शक्ति उसकी पार्टीभावित और देश तथा जनता की अन्तिम साँस तक सेवा करते रहने की प्रबल इच्छा देती रही।

अपनी पार्टी जनता तथा देश की सेवा करने की दृढ़ इच्छा ने ही उसमें लेखक बनने की भावना जगाई। हर प्रकार से पंगु हो जाने पर भी जब न वह देख सकता था और न किसी को दोहरा सकता था—वह लेखक बना और बोल-बोल कर दूसरों को अपने भाव विचार तथा अनुभूतियाँ लिखाता रहा जिससे कि सोवियत जनता उनसे लाभ उठा सके।

उसकी इस दृढ़ता का परिणाम है उसकी कृति 'कैसे लोहा तय्यार किया गया'। इसका प्रकाशन अस्त्रोव्स्की की विजय थी। उसके लिए जीवन के द्वार फिर से खुल गये। उसने लिखा 'जीवन के द्वार मेरे सामने पूरे खुल गये। (जीवन) युद्ध में पूरा-पूरा भाग लेने का मेरा स्वप्न पूर्ण हो गया। अब काम की ओर विकास की ओर, संप्राप्ति की ओर।'[१]

लेखक के रूप में समाजवाद का समर्थन करते हुए वह लेखक की जिम्मेदारी अच्छी तरह समझता था। उसने कहा कि "लेखक होने का मतलब सब से पहले समाजवाद का निर्माण होना। वह (लेखक) योद्धा है, शिक्षक है, न्यायात्मा है। वह कहता है कि "श्रमिक वर्ग का पार्टी का वफ़ादार पुत्र बनने से बड़ा कोई आनन्द नहीं है।" पार्टी के महत्त्व को वह पूर्ण रूप में स्वीकार करता है। मैं नदी की छोटी बूंद हूँ जिसमें पार्टी का सूर्य प्रतिबिम्बित हो रहा है। वह चाहता है कि उसकी रचना पढ़ते समय पाठक महान् पार्टी के प्रति वफ़ादारी की भावना से अभिभूत हो जाय।

१ रूस्काया सावेत्स्काया लितेरातूरा सं० र० ठिमाफेयेव, पृ० २७०।

'लोहा कैसे तय्यार किया गया'

उसे अपने इस पहले ही उपन्यास में बड़ी सफलता मिली क्योंकि इसकी सर्जना के मूल में उच्च आदर्श था । इसमें अस्त्रोव्स्की ने यथार्थ घटनाओं की सामग्री के आधार पर नवीन व्यक्ति की समस्या उसकी सहनशीलता की शक्ति के बीच प्रस्तुत की और उसका अपना जीवन स्वत वह मूलस्रोत बन गया जिसकी यथार्थ घटनाओं का चयन कर उसके उपन्यास की रचना हुई । उसका जीवन स्वतः आदर्शों से इतना अनुप्राणित और संचालित था और आन्तरिक सौन्दर्य से इतना प्रदीप्त था कि वह स्वयं इस युग की कलात्मक कृति बन गया ।

यह उपन्यास मूल रूप में उसके जीवन की ही कथा है और इसका नायक पावेल कर्चागिन अस्त्रोव्स्की की ही प्रतिमूर्ति है । दोनों का भाग्य बहुत कुछ एक सा है । समता के साथ ऐक्य लेखक और उपन्यास के नायक दोनों के विकास और सौन्दर्य के मूल में है । दोनों में दृष्टि और ध्येय की बड़ी व्यापकता है और दोनों में चरित्र की दृढ़ता है । पावेल कहता है कि "मनुष्य के लिए सबसे प्यारी चीज ज़िन्दगी है । यह मनुष्य को एक ही बार दी जाती है । इसलिए इस तरह जीना चाहिए कि बाद में यह पछतावा न हो कि इतने वर्ष उद्देश्यहीन बीत गये और मरते हुए कह सकें कि सारा जीवन और सारी शक्ति संसार में सबसे सु दर—मानवता की मुक्ति के युद्ध—के प्रति अर्पित कर दी गयी ।"

पावेल अपना जीवन इसी प्रकार बिताता है । वह गृह युद्ध के वर्षों में लाल सेना की प्रथम पंक्तियों में है और समाजवाद निर्माण के वर्षों में श्रमिकों की अगली पंक्ति में । जब वह सब प्रकार से रोगी और अंधा होकर गतिहीन होकर बिस्तर पर पड़ जाता है तो वह सोचता है कि क्या आत्मघात कर लूं । तब उसका विवेक कहता है कि क्या तुम जीवन पर विजय पाने की चेष्टा की ? क्या तुमने सब कर लिया कि अब इसे (जीवन) फेंक दें ? रिवाल्वर छिपा और अब इसकी चर्चा किसी से न करना । उस समय जीने की शक्ति रख जब जीवन असह्य हो जाय । जीवन को हितकारी बना ।

चरित्र की यह दृढ़ता जिसकी शिक्षा उसे अपनी पार्टी से मिली—उसे अपनी दुर्बलता पर विजय पाने की शक्ति देती है और वह उद्देश्य या व्यापक लक्ष्य प्रदान करती है, जिससे उसका जीवन उपयोगी बन जाता है। जब वह सब प्रकार से पंगु और बेबस हो जाता है तो वह उस साधन का उपयोग करता है जो अभी तक बचा है और वह शब्द है। वह शब्दों का प्रयोग करता है और लेखक बन जाता है। उसकी कृति से पाठकों को यह शिक्षा मिलती है कि कभी आत्मसमर्पण न करना चाहिए। कभी हिम्मत न हारनी चाहिए और अपने में सदा शक्ति खोजनी चाहिए जिससे कि युद्ध में खड़ा रहा जा सके।

इस उपन्यास में नकारात्मक नायक का नहीं वरन् गुण संपन्न दृढ़ नायक का चित्र अंकित किया गया है। इसके केन्द्र में कम्यूनिस्ट नायक है जो अपने चरित्र की विशेषताओं में पूर्णतया अनेक रूपात्मक है। अस्त्रोव्स्की का उद्देश्य ऐसे ही युवक नायक का चित्र प्रस्तुत करना था जिससे देश के नवजवान प्रेरणा पा सकें और युद्ध तथा शांति दोनों के मोर्चों पर डट कर काम कर सकें और आगे बढ़ सकें।

'तूफानों से जन्मे'

यही लक्ष्य उसने अपने दूसरे अपूर्ण उपन्यास 'तूफानों से जन्मे' के लिए रखा था। 'यह कृति सोवियत युवक वर्ग को लक्षित करके लिखी गयी है। 'जवानों में यह चेतना भरनी चाहिए कि एक योद्धा बेबसी की परिस्थिति में भी साहस द्वारा शत्रुओं को अपार हानि पहुँचा सकता है। अन्तिम संभावना तक लड़ते रहने के लिए साहस और दृढ़ता की शिक्षा देनी चाहिए। ऐसे साहस का तर्क और तर्क के विरुद्ध है कभी कभी आवश्यक है। यह प्रमाणित करता है कि बेबसी की परिस्थिति नहीं होती है साहसपूर्ण प्रतिरोध सब कुछ नष्ट कर देता है, इसी से अस्त्रोव्स्की और उसके उपन्यास का नायक सभी प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पा सके। जीने का आनन्द उनको कष्ट के बीच भी इसलिए मिल सका क्योंकि उनके सामने देश सेवा का उदार लक्ष्य था जो कि उन्हें बराबर प्रेरणा देता रहा।

यह उपन्यास सोवियत साहित्य की उन आरम्भिक कृतियों में से एक है जिसमें समाजवादी निर्माण का वेग प्रदर्शित किया गया है। युद्ध के बाद शांति की परिस्थिति में देश के पुनर्निर्माण का कार्य किस जोश के साथ किया जा रहा है, यह इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास ने युद्ध तथा निर्माण दोनों के अनुभवों के आधार पर नवयुवकों को यह शिक्षा दी कि जिन्दगी से सबसे अधिक प्यार करो किन्तु यह प्यार केवल अपने लिए न हो वरन् उदार तथा व्यापक लक्ष्य को कार्यान्वित करने के लिए हो। अपनी सर्जना और अपने जीवन के द्वारा अस्त्रोव्स्की उस दृढ़ता साहस सहनशीलता तथा निरन्तर प्रगतिशीलता की शिक्षा देता है जो कि मनुष्य को उदार लक्ष्य द्वारा प्राप्त होती है।

'लोहा कैसे तय्यार किया गया' उपन्यास सोवियत साहित्य की अत्यन्त लोकप्रिय कृतियों में से है। इसके बहुत से (१८८ से अधिक) सम्करण हो चुके हैं और बहुत सी भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ है। इस व्यापक लोकप्रियता का कारण यह है कि उसकी पुस्तक और उसका जीवन बहुतों को जीना सिखाता है और प्रेरणा तथा उत्साह देता है। युद्ध के बीच बहुतों को इससे बल मिला और उन्होंने देश की रक्षा में अप्रतिम साहस का प्रदर्शन किया।

अस्त्रोव्स्की की सर्जना का सोवियत साहित्य के भविष्य के विकास में बड़ा महत्त्व है। लेनिन की पार्टीवादिता की शिक्षा ग्रहण कर, मैक्सिम गोर्की के कलात्मक स्कूल में दीक्षित होकर अस्त्रोव्स्की ने समाजवादी यथार्थवाद को नवीन ऐतिहासिक परिस्थितियों में साहित्य के बीच प्रतिष्ठित किया। उसकी सर्जना में हमें यथार्थता के प्रति लेखक के पार्टीवादी संबंध का रूप दिखाई पड़ता है और सोवियत व्यक्ति के चरित्र की मूलभूत विशेषताओं की गहरी पकड़ मिलती है।

अस्त्रोव्स्की का प्रभाव उसके बाद के लेखकों पर भी स्पष्ट है जिन्होंने पावेल कर्चागिन से प्रभावित होकर सोवियत जनता का चित्र प्रस्तुत किया है। सीमोनोव के 'दिन और रात' का नायक सबूरोव उसकी

आदमी की कथा' का नायक मेरेसियेव आदि को पावेल कर्चागिन द्वारा प्रभावित या दीक्षित कहा जा सकता है।

सोवियत व्यक्ति की आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन करने के साथ-साथ ओस्त्रोव्स्की ने सोवियत जनता की शांति की आकांक्षा को भी व्यक्त किया है जिससे कि वह कम्यूनिज़्म का निर्माण कर सके। 'हम शांति चाहते हैं हम कम्यूनिज़्म का भवन बना रहे हैं।

६ मि० अ० शोलोखोव
[१९०५–]

मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच शोलोखोव का जन्म १९०५ में दान क्षेत्र में हुआ था। १९२३ से ही उसकी कृतियों का प्रकाशन शुरू हो गया था। १९२४ में उसकी पहली पुस्तक 'दान की कहानियाँ' प्रकाशित हुई।

यद्यपि उसकी उम्र अभी बहुत न थी—फिर भी उसे जीवन का अनुभव बहुत था। वह दान के क्षेत्र में बहुत घूमा और वहाँ काम किया। १९२२ तक वह दान के क्षेत्र में अधिकार कर लेनेवाले समुदायों के पीछे दौड़ता रहा और वे उसका पीछा करते रहे। इस प्रकार उसे विभिन्न परिस्थितियों में रहना पड़ा।

१९२३ में वह मास्को आया और उसने कई काम किये जिसमें बोझा ढोने का और ईंट जोड़ने का काम भी था। बाद में वह कमसोमोल पत्र 'यूनवस्त्या मास्वा' में सहयोगी हो गया।

साहित्यिक जीवन के आरम्भ में शोलोखोव को सिराफिमोविच से बड़ा समर्थन प्राप्त हुआ। उसने शोलोखोव की प्रथम पुस्तक की जो भूमिका लिखी थी उसमें शोलोखोव के उन्नत भविष्य की बात कही थी और कहा था कि उसका विकास बहुत बड़े लेखक के रूप में होगा।

शोलोखोव की कल्पना का विकास बड़ी तेजी के साथ हुआ। 'दान की कहानियाँ' के तीन वर्ष बाद ही उसके उपन्यास 'शांत दान' का प्रथम भाग जनता के सामने आया जिसने उसे सोवियत लेखकों की प्रथम श्रेणी में प्रतिष्ठित कर दिया। १९२९ में इस उपन्यास का दूसरा भाग १९३३ में तीसरा और १९४० में चौथा भाग प्रकाशित हुआ। १९३३ में 'कुँवारी धरती जोती गयी' उपन्यास का पहला भाग प्रकाशित हुआ। इन

कृतियों की लोकप्रियता का अन्दाज इसी से लगाया जा सकता है कि 'शांत दोन' १४९ बार और 'कुँआरी धरती जोती गयी' उपन्यास १२० बार प्रकाशित हुआ। सोवियत संघ की जनता की पचास भाषाओं में तथा अनेक विदेशी भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है।

'शांत दोन' पर शोलोख़ोव को स्तालिन पुरस्कार मिल चुका है। १९३२ से वह कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य है। १९३९ में वह विज्ञान अकादमी का सदस्य चुना गया। वह उच्च सोवियत का डिप्टी चुना गया। इससे उसकी लोकप्रियता और उसे जो सम्मान मिला है उसका आभास मिल जाता है। द्वितीय महायुद्ध में वह सोवियत सेना में फ़ासिस्टों के विरुद्ध लड़ चुका है। युद्ध समाप्त हो जाने पर अब वह शांति आन्दोलन का बहुत बड़ा समर्थक है।

इनके अतिरिक्त उसकी और भी कृतियाँ हैं। शोलोख़ोव का जीवन और उसकी सर्जना उन्हीं आदर्शों की ओर उन्मुख है जिनके लिए सारी सोवियत जनता प्रयत्नशील है—कम्युनिज़्म के निर्माण के लिए और सारे संसार में शांति के लिए। उसकी सर्जना की स्थापना तथा उसकी सर्जनात्मकता के विचारात्मक कलात्मक महत्त्व के मूल में यही विचार है।

सर्जनात्मक कार्यकलाप का आरम्भ

शोलोख़ोव की आरम्भिक कहानियों की कथावस्तु गृह-युद्ध से संबंधित है जिसने लोगों को दो विरोधी दलों में बाँट दिया। इस कठोर युद्ध के बीच शोलोख़ोव वह चीज़ें देख सका और दिखा सका था कि मनुष्य में अच्छाई है और उन्हें भी जो कि इन अच्छाइयों को मनुष्य में जगाती हैं। [illegible] 'प्रादोकमिसार' 'परिवारवाला मनुष्य' कहानियों में यह प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार कठोर तथा रक्तरंजित युद्ध के बीच नये जीवन का जन्म हुआ है। उसकी कहानियाँ मनुष्य के प्रति विश्वास से पूर्ण हैं और यह बताती हैं कि किस प्रकार कठिन परिस्थिति में मनुष्य की उदात्त भावनाएँ प्रकट होती हैं। जैसे वह अपने ध्येय प्राप्ति के लिए सब कुछ होम कर देने

के लिए तय्यार होता है और दूसरे की रक्षा के लिए अपना जीवन दे देता है। कम्युनिस्ट बधाशिन ठंड से ठिठुरे एक लड़के को उठा लेता है और अपने घोड़े पर ले चलता है। श्वेत गार्ड उसका पीछा कर रहे हैं। बचने का और कोई उपाय न देखकर वह घोड़ा उसे दे देता है और स्वयं रुक कर मृत्यु की प्रतीक्षा करता है। इस प्रकार आत्म बलि देकर उसने बच्चे की जान बचा ली।

इन आरम्भिक कहानियों ने उसके अभ्यास को बढ़ाया। उसकी प्रतिभा को पुष्ट किया और उसे मनुष्य के गहरे तथा [illegible] रूपात्मक अंकन प्रकृति के सूक्ष्म तथा पारदर्शी चित्रण और सजीव संवाद लेखन की योग्यता दी। यह सब परिपक्व रूप में उसकी महत्वपूर्ण कृति 'शान्त दोन' में प्रकट हुई। दोन की कहानियों के कथानक की बहुत सी परिस्थितियाँ पात्रों की विशेषताएं अलग-अलग घटनाएं अपना रूप बदल कर इस उपन्यास में आ गई हैं।

'शांत दोन'

यथार्थता का अनेक रूपात्मक अंकन और उसमें प्रस्तुत समस्या की गंभीरता के कारण 'शांत दोन' का सोवियत साहित्य में अत्यन्त उच्च स्थान युक्तियुक्त ही है।

यह उपन्यास के जटिल प्रकार, जिसे महाकाव्यात्मक उपन्यास कहा जा सकता है—का प्रकट करता है जिसे रूसी में 'रोमान एपोपेया' कहते हैं। हेगल के अनुसार एपोपेया ऐसे व्यक्ति को नायक चुनता है जो अविभाज्य बनता घटनाओं तथा प्रवृत्तियों से संबंधित तथा संयुक्त रहता है। सब कुछ इस नायक के चारों ओर प्रकाशित होता रहता है। 'शांत दोन' इसी प्रकार का महाकाव्यात्मक उपन्यास है।

उपन्यास के कथानक के रूप में ग्रिगोरी मेलेखोव के जीवन का भाग्य इतिहास है जो दोन अंचल के गृह युद्ध की पीठिका में प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही क्रान्ति के पूर्व और बाद का कज़ाक

जाती है। स्वयं शोलोखोव का ध्यान इस ओर गया और उसने भाषा को सुधारा और सरल बनाया। फलतः इस उपन्यास के उत्तरोत्तर भागों तथा बाद के संस्करणों में स्थानीय प्रयोग कम हो गये।

लेखक की भाषा में बहुत से प्रतीकात्मक उद्गार हैं। इसके साथ ही उपन्यास में ऐतिहासिक सामग्री का भी समावेश किया गया है तथा घटनाओं पर सूत्रात्मक ऐतिहासिक टिप्पणी भी दी गयी है। इससे उपन्यास की भाषागत विरूपता की परिधि बहुत बढ़ गयी। मुख्य पात्रों की विभिन्न बोलियों के कारण भाषागत ताने-बाने की अनेकरूपता लेखक की अपनी भाषा की अभिव्यंजना शक्ति जो कभी सरकारी कागजों की भाषा और कभी प्रतीकात्मक उद्गार के रूप में प्रकट होती है और कभी मुख्य पात्रों की भाषा में घुल जाती है। इन सबने इस उपन्यास की भाषा को वैसा ही अनेक रूपात्मक तथा समृद्ध बना दिया जैसा कि घटनाओं की व्यापकता तथा विचारों की गंभीरता के कारण स्वतः उपन्यास अत्यन्त समृद्ध है।

'कुँआरी धरती जोती गयी'

१९३२ में शोलोखोव का उपन्यास 'कुँआरी धरती जोती गयी' (प्रथम भाग) प्रकाशित हुआ। 'शांत दोन' की तरह इसमें भी कज़ाकों का जीवन चित्रित है किन्तु नई ऐतिहासिक परिस्थिति में पात्रों के सामूहीकरण के युग में इसमें। शोलोखोव का ध्यान विशेष रूप से कज़ाकों के सामाजिक वर्गीकरण के भेद के उद्घाटन की ओर केन्द्रित हुआ। 'कुँआरी धरती जोती गयी' यह उस जनता और पार्टी का गद्य महाकाव्य है जिसने कि गाँव में क्रांतिकारी परिवर्तन किया और प्राचीन व्यक्तिगत मिल्कियत की भावना को हटाकर नई कलखोजी व्यवस्था स्थापित की।

'कुँआरी धरती जोती गयी' में कज़ाकों के सामाजिक पुनर्निर्माण की बात कही गयी है और आर्थिक व्यवस्था को समाजवादी संगठन की ओर ले जाने का उल्लेख है। उपन्यास के एक मुख्य पात्र कज़ाक मायदन्निकोव

द्वारा शोलोखोव ने कज्जाकों के मध्य कृषक वर्ग (जिनके पास कृषि के अपने साधन हैं और जो दूसरों के परिश्रम का उत्पीड़न नहीं करते—समासी या मध्य काश्तकार) की विशिष्टताओं का प्रदर्शन किया है। इसमें कम्यूनिस्टों का चित्र 'शांत डान' की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और चटकीला तथा विकासशील है। सारा कार्यकलाप कलखोजीय जीवन के आन्दोलन या युद्ध के चारों ओर कल्पित है। यह उपन्यास इस प्रकार अपनी ऐतिहासिक सामग्री के अनुरूप गांवों के पुनर्निर्माण के वर्षों या युग का स्मृति ग्रंथ कहा जा सकता है जो (युग) अपनी महत्ता में अक्तूबर क्रान्ति के वर्षों से कम नहीं वरन् बराबर ही है।

शोलोखोव व्यक्ति-वैशिष्ट्य के बड़े कौशल के साथ उन सबका चित्र प्रस्तुत करता है जो कि इस उपन्यास में संघर्ष रत हैं। इसमें उन निर्धन गरीबों का चित्र है जिनको कि सोवियत शासन में अभी-अभी मुक्ति मिली है और अब वे स्वस्थ होकर सांस ले रहे हैं। गांवों के कुलकों (जमींदारों) का अंकन है जो विद्रोह तथा हत्या करने को तैयार हैं। (याकोव लुकीच अस्त्रोवनाव) ऐसे पात्रों का प्रदर्शन है और उन मध्य काश्तकारों का चित्रण है जो धीरे धीरे अपने दोहरे चरित्र पर विजय पा रहे हैं जो (दोहरा चरित्र) किसानों की विशेषता है। गांवों के नए जीवन में पार्टी संगठन आन्दोलनकारी के रूप में प्रकट होते हैं। गांव के कम्यूनिस्टों का आत्मबलिदानी कार्य जिसका अगुआ शहर से आया हुआ दवीदोव है उपन्यास के कथात्मक विकास की धुरी है।

दवीदोव का चित्र

दवीदोव का चित्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह प्रगतिशील सम कम्यूनिस्ट अपने रोज के सामान्य काम में इस लगन से प्रवृत्त होता है जिससे कि उसकी आन्तरिक शक्ति का पता चलता है। श्रमिक वर्गों के बीच कार्य के प्रति जो ममावृत्ति है उसको बदलने के लिए वह अपने को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है और इसलिए यद्यपि वह पहली बार

भूमि जोतता है फिर भी अभ्यस्त किसानों से अधिक जोतता है। 'चाहे खेत पर मर जाऊं फिर भी (पूरी) भूमि जोत डालूंगा' वह कहता है।

यह शक्ति केवल उसकी अपनी नहीं यह शक्ति उसमें देश प्रेम तथा पार्टी शिक्षा से युक्त हुई है। यह शक्ति पार्टी और जनता की शक्ति है। वह देश के साथ अपने को अभिन्न समझता है। उससे अपने को अलग नहीं करता। वह समाज के काम को अपना ही काम समझता है और उसके हित में ही अपना लाभ देखता है और उसके लिए अपनी बलि तक देने को तय्यार है। यह दृढ़ता उसके चरित्र की विशेषता है। इसी से जब शत्रुओं के प्रचार से भड़काए हुए लोग उससे बखार की चाबी माँगते हैं तो वह चाबी देने से साफ इन्कार कर देता है। लोग उसकी हत्या कर देते हैं। वह मर जाता है किन्तु अपने कर्तव्य का पालन करता है।

कम्यूनिस्टों का चित्र

दवीदोव के अतिरिक्त शोलोखोव ने कम्यूनिस्टों के गाँवों के सामूहीकरण के आरम्भ के युग के गाँवों के कम्यूनिस्टों का भी अनेकरूपात्मक चित्र प्रस्तुत किया है और उनका दैनिक जीवन तथा राजनीतिक कार्यकलाप के तनाव के बीच प्रदर्शित किया है। शोलोखोव ने उनकी त्रुटियाँ भी दिखाई हैं और क्रान्ति के प्रति उनकी जो लगन है और उनके चरित्र की जो शक्ति है उसे भी प्रदर्शित किया है। इनको दवीदोव के उदाहरण से प्रेरणा और शक्ति मिलती है और वह अपने को ठीक भी कर लेते हैं। नगुल्नोव तथा रज्म्योतनोव ऐसे ही कम्यूनिस्ट हैं।

कन्द्रात माइदानीकोव भी उपन्यास के मुख्य पात्रों में से है। इसके माध्यम से शोलोखोव ने यह प्रदर्शित किया है कि मध्यम वर्ग के गृहस्थ कास्तकारों ने किस प्रकार धीरे धीरे कल्खोज को स्वीकार कर लिया और वे किस प्रकार कल्खोज में शामिल हो गये। मध्यमवर्गीय कास्तकारों का कल्खोज में प्रवेश उस युग की बड़ी महत्वपूर्ण राजनीतिक समस्या थी जिसकी चर्चा लेनिन तथा स्तालिन ने भी की थी। अब माइदानीकोव

यह समझ सका कि उसका हित कलखोज में सम्मिलित हो जाने में है तो वह इसमें शामिल हो जाता है। उसका यह मार्ग सरल न था। निजिकयत की भावना उसे रह रह कर कोंचती है। धीरे धीरे वह इस पर विजय पाता है। शोलोखोव ने इस मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व का बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है। इसके साथ ही उस सामाजिक हित का भी बड़ा ध्यान है। धीरे-धीरे उसमें जीवन के प्रति समाजवादी संबंध दृढ़ हो रहे हैं। मायदान्निकोव के चरित्र का इस उपन्यास में महत्त्व इस बात में है कि उसके माध्यम से कज़ाक काश्तकारों के कलखोज में प्रविष्ट होने का व्यापार प्रदर्शित किया गया है जिसने कलखोजीय आन्दोलनकी विजय और सफलता निश्चित कर दी।

शत्रुओं का चित्रण

समाजवादी यथार्थवाद की विशेषता यह है कि वह केवल 'जीवन में नवीन का समर्थन' ही नहीं करता गुण संपन्न ठोस नायकों का सृजन ही नहीं करता वरन् उन सबसे युद्ध भी करता है जो नये के विकास में बाधा डालते हैं उसकी प्रगति को रोकते हैं। इस उपन्यास में भी इसी प्रकार गाँवों का समाजवादी पुनर्निर्माण दिखाते हुए तथा जीवन में नये की प्राचीन पर अवश्यम्भावी विजय प्रदर्शित करते हुए शोलोखोव ने उसके शत्रुओं (कुलक तथा ह्वेतगार्ड) का भी अनेकरूपात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। यह शत्रु कई प्रकार के हैं जो सोवियत शासन का खुले तथा छिपे कई रूप में विरोध करते हैं। तीतकरवीन खुले रूप में दवीदोव पर आक्रमण करता है। लपशिनोव का नवीन के प्रति विरोध धार्मिक ढोंग में छिपा हुआ है। सबसे खतरनाक दुश्मन ओस्त्रोवनोव है जो कलखोज के भीतर है और भीतर ही भीतर उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। उसके माध्यम से शोलोखोव ने छिपे हुए और इसी से और भी खतरनाक क्रान्ति के शत्रु को प्रदर्शित किया है। इन्हीं के बीच सोवियत शासन के शत्रुओं को समर्थन प्राप्त होते हैं। ल्यात्येव्स्की के रूप में उसका चित्रण हुआ है जो विदेशियों के हाथ बिके हुए देशद्रोही हैं और जो सोवियत शासन के

विरुद्ध सब कुछ करने को तैयार हैं। इसमें शत्रुओं का ऐसा ठीक-ठीक वर्णन हुआ है कि जब सन् तीस के वर्षों में कलखोजों में इस उपन्यास का सामूहिक पठन आरम्भ हुआ तो उसने वहाँ के शत्रुओं के उद्‌घाटन में बड़ी सहायता की।

शत्रुओं की शक्ति को दिखला कर शोलोखोव ने नवीन के विरुद्ध उनके पराजय की अनिवार्यता भी दिखाई है। गाँवों के समाजवादी जीवन की ओर ले जाने वाली पार्टी की नीति से कलखोज के विकास को रोकने वाले सभी शत्रुओं का नाश निश्चित है। उपन्यास का मुख्य भाव यही है कि नवीन की अपराजेय शक्ति सभी विरोधों पर विजय पाती है।

कलात्मक विशेषताएँ

शोलोखोव की अन्य कृतियों के समान इस उपन्यास का भी कलात्मक स्तर बड़ा ऊँचा है। इसके विचारों का महत्व अभिव्यंजन के उन अनेक कलात्मक उपादानों की समृद्धि से और भी बढ़ जाता है जिनका कि इसमें उपयोग हुआ है। पात्रों का सजीव चित्रण अत्यन्त कलात्मक संवादों के द्वारा हुआ है। हर एक पात्र का अपने बोलने का ढंग है जिससे उसके व्यक्तित्व का पता लगता है। इसके साथ ही शोलोखोव अपने पात्रों को उनके क्रिया-कलापों के बीच भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में रखता है जिससे उनके चरित्र की अनेक विशिष्टताएं उभरती हैं और जिससे प्रत्येक पात्र स्वतन्त्र व्यक्तित्व के साथ सामने आता है।

इस उपन्यास की विषय-वस्तु भी अपने ढंग की है। अधिकतर उपन्यासों के वस्तु-तत्व का गठन नायक के व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं के आधार पर गठित होता है किन्तु शोलोखोव इससे अलग कलखोज के संगठन के इतिहास पर या सामाजिक जीवन की घटनाओं पर कथानक का निर्माण करता है। इसका मुख्य भाव यह है कि व्यक्ति के चरित्र की मुख्य विशिष्टताएं सबसे पहले समाजवाद के निर्माण के प्रति उसके संबंध से उद्‌घाटित होती हैं। समाजवादी संबंध में वह जितना पूर्ण है उतना ही उसका व्यक्तित्व स्पष्टता से प्रस्फुटित होता है और

उसके चरित्र के विभिन्न पक्ष विकसित होते हैं। इसके उल्टा जितना ही वह सामाजिक कार्यों से तटस्थ या अलग रहता है उतना ही 'शांत दोन' के ग्रिगोरी की तरह उसके व्यक्तित्व का महत्व घट जाता है और उसके अच्छे गुण नष्ट हो जाते हैं। वर्ग संघर्ष के बीच सैद्धान्तिक युद्ध में परिश्रम के व्यापार में बीच व्यक्ति की चेतना दृढ़ होती है और उस का चरित्र मजबूत होता है। 'कुँआरी धरती जोती गयी' में व्यक्ति का विकास समाजवाद की ओर जाने में प्रदर्शित किया गया है जिस पर चलकर वह अपने व्यक्तित्व को अधिक से अधिक समृद्ध बनाता है। सामाजिक जीवन की घटनाओं पर ध्यान को केन्द्रित करता हुआ भी शोलोखोव इनको उन स्वाभाविक व्यक्तिगत जीवन की परिस्थितियों से अलग नहीं करता जो कि इनको घेरे हुए हैं। वह महान् और सब महत्वपूर्ण तथा हास्यप्रद मानवीय जीवन तथा प्रकृति के जीवन को एक में गूँथ देता है।

शोलोखोव ने प्रकृति के अनेक चित्रों का अपने उपन्यास में समावेश किया है। प्रकृति के सूक्ष्म पर्यवेक्षण पर आधारित प्रकृति के ये चित्र ग्रामीण जीवन को काव्यात्मक परिधान देते हैं और यह बताते हैं कि मनुष्य का जीवन कितना पूर्ण और व्यापक हो जाता है जब वह अत्याचार और निर्धनता से सर्वथा मुक्त हो जाता है। उस समय वह अपने चारों ओर के प्राकृतिक वातावरण के सौन्दर्य को ठीक तरह देखता है और उसका अनुभव करता है।

'शांत दोन' की तरह इस उपन्यास की भाषा भी अत्यन्त समृद्ध अलंकारात्मक अभिव्यंजक तथा कहीं कहीं प्रान्तीय प्रयोगों के कारण दुर्गम है। 'कुँआरी धरती जोती गयी' सोवियत साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है।

युद्ध के वर्षों में शोलोखोव का कार्यकलाप

द्वितीय महायुद्ध में शोलोखोव ने युद्ध-संवाददाता बनकर युद्ध में भाग लिया। सोवियत सेना के साहसपूर्ण कार्यों का अंकन शोलोखोव ने अपनी पुस्तक 'वे मातृभूमि के लिए लड़े' में किया है।

शत्रु की बर्बरताओं के प्रति जनता में घृणा जगाना—जिसके लिए सोवियत जनता अभी पूरी-पूरी तैयार नहीं है—युद्ध के आरम्भिक वर्षों के सोवियत साहित्य की महत्वपूर्ण समस्या थी। शोलोखोव के लेख 'घृणा का विज्ञान' ने इस लक्ष्य की पूर्ति की। फ़ासिस्टों द्वारा सोवियत कैदियों का उपहास दिखाकर इस लेखक ने जनता के हृदय में शत्रु के प्रति अत्यधिक घृणा जगाई।

युद्ध के बाद शोलोखोव ने शांति आन्दोलन में योग देने लगा। इस सम्बन्ध में उसने लेख भी लिखे और भाषण भी दिये।

उच्च सोवियत में शोलोखोव के चुनाव का प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए म० ई० कालिनिन ने कहा था कि 'शोलोखोव पूरा-पूरा जनता का सेवक है। वह जनता के बीच से आया और हमारे (जनता के) साथ उसका अभिन्न संबंध बना हुआ है। उसकी रचनाएं न केवल हमारे देश में ही अत्यन्त लोकप्रिय हैं परन्तु सारे संसार के श्रमिकों के बीच उनकी अत्यधिक लोकप्रियता है।' कालिनिन का यह कथन बिल्कुल ठीक है। उच्च सोवियत में शोलोखोव का कई बार चुना जाना इस बात का प्रमाण है कि वह कितना लोकप्रिय है और सोवियत जनता उसकी सर्जना का कितना आदर करती है।

७ अलेक्सेइ निकोलाएविच तोलस्तोय

[१८८३–१९४५]

अलेक्सेइ तोलस्तोय का जन्म अभिजात कुल में हुआ था और वह उच्च वर्ग के वातावरण में बड़ा हुआ। प्रतीकवादियों से उसका घनिष्ट संबंध आरंभ में था जिसके प्रभाव ने उसे क्रान्तिकारी विचारों से दूर रखा किन्तु रूसी साहित्य के अन्य लेखकों के समान वह क्रान्ति के पक्ष में आ गया उसके साथ अपने जीवन को मिला दिया और सोवियत देश के आदर्शों का अभिव्यंजक तथा सोवियत जनता का शिक्षक बन गया।

क्रान्ति के पूर्व तोलस्तोय केवल साहित्यकार था किन्तु सोवियत युग में वह महत्त्वपूर्ण सामाजिक कार्यकर्ता बन गया जिसकी बातें लोगों ने ध्यान से सुनीं। वह विज्ञान अकादमी का सदस्य चुना गया और सोवियत संघ के आर्डर से विभूषित हुआ। १९३७ में वह उच्च सोवियत का सदस्य चुना गया। जर्मन फ़ासिस्ट बर्बरता की जाँच के सरकारी कमीशन के सदस्य के रूप में भी उसने युद्ध के वर्षों में काम किया।

क्रान्ति के पूर्व की सर्जना

१९०७ में उसने अपनी पहली कविता की पुस्तक प्रस्तुत की। लोक कथा की पुस्तक (मरावी-आस पक्षी) की कथाएँ, कविता की पुस्तक 'नीली नदियों के पीछे' अठारहवीं शताब्दी के रूसी युग की कहानियाँ—इन सबके द्वारा उसका साहित्यिक कार्यकलाप आरम्भ हुआ। साहित्यिक क्षेत्र में उसे यश उन कहानियों से प्राप्त हुआ जो बाद में 'वोल्गा के पार' में एकत्रित कर दी गयीं। इन कहानियों तथा अन्य कृतियों में वह आलोचनात्मक यथार्थवाद का प्रतिनिधि है और अपनी सर्जना में बुनिन

के निकट है। किन्तु जहाँ बूनिन इस मरणशील सामन्ती व्यवस्था के साथ अपने को मिला देता है और उसके अन्त से व्यथित होता है और सामन्ती अतीत में डूबकर दुखी रहता है वहाँ तोलस्तोय इस व्यवस्था का अनिवार्य ऐतिहासिक अन्त देखता है समझता है और जीवन के लिए उसकी अयोग्यता को प्रदर्शित करता है। इस विषय-वस्तु से संबंधित उसकी कृतियाँ गोगल के व्यंग्य का स्मरण दिलाती हैं। उसकी आत्मकथात्मक कहानी 'निकीता का बचपन' (१९१८) उसकी श्रेष्ठ कृतियों में से है जिसमें बच्चे के मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण तथा रूसी जीवन की मुख्य विशेषताएं देता हुआ वह अपने बचपन के संस्मरण प्रस्तुत करता है।

क्रान्ति के बाद

तोलस्तोय सहसा सोवियत लेखकों की श्रेणी में शामिल नहीं हुआ। पाँच वर्ष (१९१८–२३) उसने विदेश में बिताए। इन वर्षों में उसे मातृभूमि के साथ अपने घनिष्ठ संबंध का भान और भी अधिक हुआ। वह स्वयं कहता है कि मैं बहुत धीरे धीरे प्रौढ़ हुआ। समकालीनता में बहुत धीरे-धीरे प्रविष्ट हुआ। किन्तु इसमें आकर फिर मैंने उसे सारी चेतना के साथ अपना लिया।

सन् बीस के वर्षों में उसने जो कृतियाँ प्रस्तुत कीं उनमें उन विदेश में रहनेवाले या प्रवासी रूसियों पर व्यंग्य है जो अपने देश के प्रति बदल गये हैं।

उसकी प्रतिभा का चरमोत्कर्ष उन व्यापक ऐतिहासिक कथात्मक रूपों में मिलता है जिनमें युग विशेष के मूलभूत प्रश्नों का प्रस्तुत किया गया है। 'पीतर प्रथम' 'पीड़ा के बीच यात्रा' 'रोटी' उपन्यास तथा 'इवान भयंकर' से संबंधित नाटकीय कृतियाँ ऐसी ही रचनाएं हैं।

पीतर प्रथम उपन्यास

तोलस्तोय इतिहास की ओर इसलिए उन्मुख होता है कि वह उसकी सहायता से अपने चारों ओर के जीवन को जाने तथा अतीत में

अनुभव के आधार पर वर्तमान को संचालित करने वाले नियमों को समझें। ऐतिहासिक विषय-वस्तु के कलात्मक उद्घाटन की मुख्य विशेषताएं हैं अतीत के चित्रण में जीवन-सत्य तथा वर्तमान के हित में उसकी व्याख्या। ऐतिहासिक कथाओं में तोल्स्तोय ने इनका ध्यान रखा है।

'पीतर प्रथम' का पहला भाग १९२९ में प्रकाशित हुआ। दूसरा भाग १९३४ में और तीसरा भाग अधूरा रह गया।

इस उपन्यास का महत्व उस उच्च देशभक्ति के आदर्श के प्रदर्शन में है जिसके साथ रूसी इतिहास के ये पन्ने जुड़े हैं। उपन्यास उस जातीय चरित्र को प्रस्तुत करता है जिसकी पूर्ण मूर्तिमत्ता पीतर के रूप में हुई है और उस शक्ति को प्रदर्शित करता है जिससे रूसी जनता ने अपने राष्ट्र का निर्माण किया। पीतर का युग अपूर्व सांस्कृतिक परिवर्तन का युग है जब कि जनी जनता के बीच से नये लोग आते हैं जो थोड़े ही समय में रूस को नये सांस्कृतिक पथ पर आरूढ़ कर उसे योरोपीय राष्ट्रों की प्रथम श्रेणी में प्रतिष्ठित करते हैं। इन सबों में पीतर सबल नायक है जो दूसरों की अपेक्षा अधिक दूर तक देख और समझ सकता है तथा अपने नए विचारों को कार्यान्वित करने की दृढ़ इच्छा शक्ति रखता है। यह उपन्यास पीतर के जीवन का इतिहास प्रस्तुत करता और चूंकि पीतर के जीवन को रूस के जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है इसलिए उपन्यास अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश के रूस का कलात्मक इतिहास बन जाता है।

पीतर का चित्र

पीतर के चित्रण का कलात्मक महत्व केवल इस बात में नहीं है कि उसमें एक महत्वपूर्ण रूसी व्यक्ति की असली विशिष्टताएं प्रदर्शित की गई हैं वरन् इसमें जातीय रूसी चरित्र की सामान्य विशिष्टताओं के रूप में चित्रण किया गया है। इसी से पीतर का जीवन उसके युग के जीवन का भी चित्र बन जाता है।

पीतर में जातीय गर्व अपनी पूर्णता पर है जो उसे रूसी

जीवन के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अथक परिश्रम करने की प्रेरणा देता है। उपन्यास धीमे धीमे देश तथा पीतर दोनों के विकास को प्रस्तुत करता है। और पीतर की उन विशिष्टताओं को प्रदर्शित करता है—सहनशीलता तथा दृढ़ता—जो जातीय हैं। असफलता उसको और भी दृढ़ तथा प्रयत्नशील बनाती है। कठिनाइयों में उसका चरित्र और भी प्रौढ़ होता है। अजोव पर पहला आक्रमण असफल होता है। पीतर दूसरी बार फिर तैयारी करता है और अजोव पर अधिकार कर लेता है। इसी प्रकार उसका देशप्रेम केवल देश का हित देखता है और दूसरों के उपहास की चिन्ता नहीं करता। जब उसे पता लगता है कि कार्ल की सेना नार्वे आ रही है तो वह खतरा समझ कर सेना छोड़कर चला जाता है यद्यपि उसके निकट वाले इसे कायरता समझते हैं।

तोलस्तोय पीतर के कठोर रूप पर पर्दा नहीं डालता। लेनिन ने पीतर के विषय में कहा था कि "वह बर्बरता के विरुद्ध बर्बरता के साधनों द्वारा लड़ा था।" पीतर का यह रूप इस उपन्यास में पूरा-पूरा दिखाया गया है।

इसके साथ ही पीतर बहुत बड़ा राष्ट्रीय कार्यकर्ता है जो अपने देश हित को समझता है और पूरे हृदय से उसकी सेवा करता है। वह रूसी जनता की श्रेष्ठ विशिष्टताओं का अभिव्यंजक है। उसमें बड़ा साहस है तथा दृढ़ता और सहनशीलता भी है। उसका विकास उसके चरित्र की परिपक्वता कठिनाइयों में युद्ध उपन्यास की कथा-वस्तु निर्मित करते हैं।

उपन्यास के अन्य पात्र

पीतर के अतिरिक्त इस उपन्यास में और भी बहुत से पात्र हैं जो उस युग के जीवन की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में रूसी समाज का उन पुराने 'बयारों' (अभिजात कुल या वर्ग) का प्रतिक्रियावादी स्तर भी चित्रित किया गया है जो पीतर के विरुद्ध हैं और

इसके साथ ही 'बयारों' का वह समुदाय भी चित्रित हुआ है जो पीतर के सुधारों के साथ था। नयी संस्कृति के विदेशी शिक्षा प्राप्त इंजीनियर निर्माता आदि भी चित्रित किये गये हैं जो जनता के आदमी हैं जो पीतर के साथ हैं और जो पीतर के प्रति आत्म-समर्थन या आत्म-समर्पण का रूप प्रस्तुत करते हैं। ये लोग पीतर के साथ ही बढ़ते हैं और विकसित होते हैं। इनकी जो अच्छी-अच्छी विशेषताएँ थीं पीतर ने उनका आह्वान किया और उनको बढ़ने का मौका दिया। इसके साथ ही वे विदेशी भी चित्रित किये गये हैं जिन्होंने पीतर के युग में रूसी जीवन में भाग लिया। उपन्यास में उन पात्रों का भी समुदाय है जिनके माध्यम से जनता के निम्नतम स्तर के लोगों का भाग्य प्रदर्शित किया गया है जो युद्ध की कठिनाइयों को भोग रहे हैं, जो युद्ध में मर गये या कठिन परिश्रम का कारागार-बंद पाचार नष्ट हो गये।

उपन्यास में वर्णित घटनाओं की अनेक रूपता गरीब की झोपड़ी से लेकर बादशाह के महल तक में जीवन का चित्रण पात्रों की पंक्ति यह सब उस विराट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सृजन करते हैं जिसमें उपन्यास का मुख्य कार्य पीतर का जीवन विकसित हुआ जो अनेक ऐतिहासिक घटनाओं से संयुक्त है और जातीय देश भक्ति के वेग से परिपूर्ण है।

उपन्यास की भाषा

उपन्यास के प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा है जिससे उसके चरित्र की विशेषता प्रकट होती है। उपन्यास की यह यथातथ्य तथा अभिव्यंजनपूर्ण भाषा पाठक के सामने पूरे पीतर युग का चित्र प्रस्तुत कर देती है जिसमें उसकी विशेषता तथा महानता का पूरा-पूरा आभास मिल जाता है।

इस उपन्यास में समाजवाद का आदर्श नहीं है फिर भी इसमें समाजवादी यथार्थवाद की विशेषताओं का समावेश हुआ है। लेखक युग के चित्रण में जीवन को उसके विकास-व्यापार के बीच चित्रित करता है और जनता का इतिहास स्रष्टा के रूप में प्रदर्शित करता है।

रूसी जनता के इतिहास के महत्त्वपूर्ण क्षण का युद्ध में प्राप्त उसके जय का तथा जातीय स्वतन्त्रता के लिए उसके युद्ध का जो चित्रण उपन्यास

जीवन के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अथक परिश्रम करने की प्रेरणा देता है। उपन्यास धर्म तथा देश तथा पीतर दोनों के विकास को प्रस्तुत करता है। और पीतर की उन विशिष्टताओं को प्रदर्शित करता है—सहनशीलता तथा दृढ़ता—जो जातीय हैं। असफलता उसको और भी दृढ़ तथा प्रयत्नशील बनाती है। कठिनाइयों में उसका चरित्र और भी प्रौढ़ होता है। अजोव पर पहला आक्रमण असफल होता है। पीतर दूसरी बार फिर तय्यारी करता है और अजोव पर अधिकार कर लेता है। इसी प्रकार उसका देशप्रेम केवल देश का हित देखता है और दूसरों के उपहास की चिन्ता नहीं करता। जब उसे पता लगता है कि कार्ल की सेना नार्वे आ रही है तो वह खतरा समझ कर सेना छोड़कर चला जाता है यद्यपि उसके निकट वाले इसे कायरता समझते हैं।

तोलस्तोय पीतर के कठोर रूप पर पर्दा नहीं डालता। लेनिन ने पीतर के विषय में कहा था कि "वह बर्बरता के विरुद्ध बर्बरता के साधनों द्वारा लड़ा था।" पीतर का यह रूप इस उपन्यास में पूरा-पूरा दिखाया गया है।

इसके साथ ही पीतर बहुत बड़ा राष्ट्रीय कार्यकर्ता है जो अपने देश हित को समझता है और पूरे हृदय से उसकी सेवा करता है। वह रूसी जनता की श्रेष्ठ विशिष्टताओं का अभिव्यंजक है। उसमें बड़ा साहस है तथा दृढ़ता और सहनशीलता भी है। उसका विकास उसके चरित्र की परिपक्वता कठिनाइयों से युद्ध उपन्यास की कथा-वस्तु निर्मित करते हैं।

उपन्यास के अन्य पात्र

पीतर के अतिरिक्त इस उपन्यास में और भी बहुत से पात्र हैं जो उस युग के जीवन की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास में रूसी समाज का उस पुराने बयारों (अभिजात कुल या वर्ग) का प्रतिक्रियावादी स्तर भी चित्रित किया गया है जो पीतर के विरुद्ध हैं और

इसके साथ ही 'बयारों' का वह समुदाय भी चित्रित हुआ है जो पीतर के पुजारों के साथ था। नयी संस्कृति के विदेशी शिक्षा प्राप्त इंजीनियर निर्माता आदि भी चित्रित किये गये हैं जो जनता के आदमी हैं जो पीतर के साथ हैं और जो पीतर के प्रति लोक-समर्थन या जन-समर्थन का रूप प्रस्तुत करते हैं। ये लोग पीतर के साथ ही बढ़ते हैं और विकसित होते हैं। इनकी जो अच्छी-अच्छी विशेषताएं थीं पीतर ने उनका आह्वान किया और उनको बढ़ने का मौका दिया। इसके साथ ही वे विदेशी भी चित्रित किये गये हैं जिन्होंने पीतर के युग में रूसी जीवन में भाग लिया। उपन्यास में उन पात्रों का भी समुदाय है जिनके माध्यम से जनता के निम्नतम स्तर के लोगों का भाग्य प्रदर्शित किया गया है जो युद्ध की कठिनाइयां को भोग रहे हैं, जो युद्ध में मर गये या कठिन परिश्रम का कारागार-दंड पाकर नष्ट हो गये।

उपन्यास में वर्णित घटनाओं की अनेकरूपता गरीब की झोंपड़ी से लेकर बादशाह के महल तक के जीवन का चित्रण पात्रों की पंक्ति यह सब उस विराट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सृजन करते हैं जिसमें उपन्यास का 'मुख्य कार्य' पीतर का जीवन चित्रित हुआ जो अनेक ऐतिहासिक घटनाओं से संयुक्त है और जातीय एवं भक्ति के प्रेम से परिपूर्ण है।

उपन्यास की भाषा

उपन्यास के प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा है जिससे उसके चरित्र की विशेषता प्रकट होती है। उपन्यास की यह यथातथ्य तथा अभिव्यंजनपूर्ण भाषा पाठक के सामने पूरे पीतर युग का चित्र प्रस्तुत कर देती है जिसमें उसकी विशेषता तथा महानता का पूरा-पूरा आभास मिल जाता है।

इस उपन्यास में समाजवाद का आदर्श नहीं है फिर भी इसमें समाजवादी यथार्थवाद की विशेषताओं का समावेश हुआ है। लेखक युग के चित्रण में जीवन को उसके विकास-व्यापार के बीच चित्रित करता है और जनता को इतिहास स्रष्टा के रूप में प्रदर्शित करता है।

रूसी जनता के इतिहास के महत्वपूर्ण क्षणों का युद्ध में प्राप्त उसके यश का तथा जातीय स्वतन्त्रता के लिए उसके युद्ध का जो चित्रण उपन्यास

में हुआ है उसका सोवियत जनता में देशभक्ति का भाव भरने की दृष्टि से बड़ा महत्त्व है।

पीतर-युग की रूसी जनता के साहसपूर्ण कार्यों को सोवियत सैनिकों के सामने उदाहरण रूप प्रस्तुत कर उनमें युद्ध के भाव को और उद्दीप्त करने के लिए, युद्ध समाचार-पत्र 'लाल तारा' ने द्वितीय महायुद्ध के दिनों में इस उपन्यास के अन्तिम अध्यायों के अंश छापे थे। इससे इस उपन्यास का महत्त्व स्वतः स्पष्ट है।

पीतर प्रथम समाजवादी यथार्थवाद की दृष्टि से सुदूर अतीत की कलात्मक व्याख्या का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

'इवान भयंकर' के विषय में नाटक

द्वितीय महायुद्ध के बीच तालस्तोय रूसी अतीत के एक और अत्यन्त दिलचस्प व्यक्ति 'इवान भयंकर' की ओर उन्मुख हुआ। दो भागों में संबद्ध नाटक इसी से संबंधित हैं—'बाज और बाजिन' तथा 'कठिन वर्ष'।

सोवियत लेखकों की ऐतिहासिक कलात्मक कृतियों की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें प्रायः रूसी इतिहास के उन मूल्यांकनों पर पुनर्विचार किया गया है जिन्हें कि प्राचीन इतिहास विज्ञान ने दिया था और उन्हें न स्वीकार कर अपनी दृष्टि से उनकी व्याख्या की गयी है और उन्हें नये रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तोलस्तोय के नाटक इवान को नये रूप में प्रस्तुत करते हैं जो कि परंपरा से बिल्कुल भिन्न है। इसके ये नाटक सोवियत नाट्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियों में गिने जाते हैं।

'रोटी'

सुदूर अतीत के चित्रण के साथ-साथ उसने ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की हैं जो अतीत में बहुत दूर नहीं जाती हैं और जिन्हें 'समकालीन ऐतिहासिक उपन्यास' कहा जा सकता है—जो गृह युद्ध के वर्षों से संबंधित हैं। 'रोटी' तथा 'पीड़ा के बीच यात्रा' ऐसी ही कृतियाँ हैं। 'रोटी' में १९१८

में सरीत्सिन (स्तालिनग्राद) की साहसपूर्ण रक्षा की कथा कही गयी है।

तोलस्तोय ने लिखा कि उसकी इस कथा में "उसके बारे में कहा गया है जो संसार में सबसे मुख्य है—हमारी क्रान्ति के दर्शन के विषय में क्रान्ति के महान व्यक्तियों के विषय में विजय दिलाने वाले युद्ध के संगठन के विषय में अपनी क्रान्ति के आधाधार के विषय में और इस विषय में कहा गया है कि युद्ध की आग के बीच किस प्रकार सोवियत व्यक्ति का चरित्र निर्मित हुआ।"

इस सबके चित्रण के लिए वह गृह-युद्ध की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना सरीत्सिन (अब स्तालिनग्राद) नगर के लिए युद्ध की ओर उन्मुख हुआ। इस नगर की रक्षा का कार्यभार स्तालिन पर डाला गया और इस संबंध में युद्ध का संचालन (१९१८ में) स्वयं स्तालिन ने किया। सरीत्सिन की सफल रक्षा ने विरोधियों की पराजय और गृहयुद्ध का अंत निश्चित कर दिया।

'रोटी' का महत्त्व सबसे पहले इस बात में है कि इसमें लेनिन तथा स्तालिन के कलात्मक रूपों के सर्जन की समस्या प्रस्तुत की गयी। इसमें लेखक को बड़ी सफलता भी मिली। उसने लेनिन तथा स्तालिन का बड़ा ही जोरदार चित्र प्रस्तुत किया और उनको दैनिक जीवन तथा क्रान्तिकारी कार्यकलाप के बीच दिखाया। पाठकों के सामने स्तालिन की संगठनकारी प्रतिभा पैनी दृष्टि दृढ़ता साहस क्रान्तिकारी जनता के साथ उसके घनिष्ट संबंध का बड़ा ही स्पष्ट और ठोस चित्र आता है। तोलस्तोय ने इस कठिन तथा तीक्ष्ण वातावरण का भी चित्रण किया है जिसने पार्टी के नेताओं से असामान्य शक्ति दृढ़ता तथा साहस की माँग की। विशेषतया लाल सेना के संगठन के संबंध में वोरोशिलोव का रूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

ऐतिहासिक व्यक्तियों के चित्रण के साथ-साथ इसमें बोल्शेविक का चित्र भी प्रस्तुत किया गया है जो अत्यन्त संयमित विचारशील तथा साहसी है और जो असाध्य प्रतीत होने वाले काम को भी पूरा करने की शक्ति रखता है। इवानगरा का चित्र ऐसा ही है। उसके साथ कथा का

वस्तु-तत्त्व प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है। यह क्रान्तिकारी सेना का साधारण व्यक्ति है। उसकी विजय इसलिए होती है कि उसकी सेना उसके सदृश लोगों से ही निर्मित है जो बड़े साहसी हैं। मर्यापीना के रूप में लेखक ने नारी-स्वतन्त्रता को प्रदर्शित किया है जो कि क्रान्ति के बाद रूसी नारियों को सुलभ हो गयी। इसके साथ ही इस उपन्यास में क्रान्ति के शत्रुओं षड्यन्त्रकारियों तथा देशद्रोहियों का भी चित्र प्रस्तुत किया गया है। निश्चित ऐतिहासिक घटना पर केन्द्रित होने के कारण तथा वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तियों के चित्रण के कारण इसकी प्रबन्ध शैली भी बहुत प्रभावित हुई।

प्रबन्ध कल्पना की दृष्टि से इसे ऐतिहासिक अभिलेख (वर्णानुगत घटना का क्रमिक वर्णन) कहा जा सकता है। इवानयारा तथा मर्यापीना की कथा गौण है प्रधान है जारीत्सिन की रक्षा। स्तालिन की विजय के तार के साथ उपन्यास समाप्त हो जाता है। इसलिए इसे किसी न किसी प्रकार के ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में रखा जायगा। ऐतिहासिक मसविदों तथा अन्य सम्बन्धित सामग्री के अत्यधिक समावेश के कारण इसकी कथा बहुत गठी तथा सुसम्बद्ध नहीं है।

उपन्यास की भाषा में ऐतिहासिक सामग्री की जटिलता की झलक है। कहीं-कहीं पर ऐतिहासिक मसविदों छपे हुए भाषणों तथा सरकारी कागजों के अंश पात्रों की बातचीत में उद्धृत कर दिये गये हैं। उपन्यास में कल्पना तथा इतिहास दोनों का मेल है।

पीड़ा के बीच यात्रा

तोल्स्तोय ने 'पीड़ा के बीच यात्रा' लिखने में बीस वर्ष लगाए। यह त्रयी है। इसका पहला भाग 'बहनें' १९२१ में लिखा गया दूसरा भाग 'सन् १९१८' १९२९ में और तीसरा भाग 'धुंधला सवेरा' १९४१ में लिखा गया। इस त्रयी का शीर्षक 'प्राचीन धार्मिक भाव "ईसा मसीह की माँ की पीड़ा के बीच यात्रा"' से लिया गया है। वस्तुतः इस त्रयी का विषय वस्तु रूसी बुद्धिजीवियों की क्रान्ति के युग में जनता की ओर यात्रा है।

क्रान्ति के पूर्व के रूसी जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि में दो बहिना-कात्या तथा दास्या—और उनके मतदीप बाल लागा का जीवन चित्रित किया गया है। इस बहिला का प्रथम महायुद्ध, अक्तूबर क्रान्ति, दनीविम से युद्ध आदि इन सबके बीच से गुजरना पड़ता है और इसके बाद ही वे अनन निस्ट बाला से मास्का में एक सभा में मिल पाती हैं। उपन्यास कात्या के प्रति कहे गये इन शब्दों के साथ समाप्त होता है, तुम समझती हो हमारे इन देम या शक्ति का, बहाये गये खून का सारी बिना हुई और मौन पीड़ा का क्या मतलब है? हम संसार की भलाई के लिए पुनर्निर्माण करेंगे। इस सभामंडप के सब लोग इसके लिए अपना जीवन अर्पित करने को तय्यार हैं। यह कल्पना नहीं है, यह लाग तुम्हें घाव के निशान तथा गाली के नील निशान दिखा देंगे और यह अपने देश में यह सब है।

'बधी गृह युद्ध की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ब्यौरे जनता द्वारा रास्त की बाज मुक्तियों तथा प्रक्रिया पर उसकी विजय तथा उसके स्वदेश सभा के अथक परिश्रम और प्रयत्न का पूर्णतया तथा व्यापकता के साथ प्रदर्शित करती है।

यह 'बधी' सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियों में मानी जाती है। १९४१ में इस कृति पर अलेक्सेइ तोलस्तोय का स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। तोलस्तोय ने यह रुपया वापस करते हुए स्तालिन से यह प्रार्थना की कि इस रकम से लाल सेना के लिए टैंक बनवा दिया जाय।

द्वितीय महायुद्ध के वर्षों में तोलस्तोय का कार्यकलाप

द्वितीय महायुद्ध के दिनों में अलेक्सेइ तोलस्तोय देशभक्त प्रचारक-लेखक के रूप में हमारे सामने आता है और फासिस्टों के विरुद्ध मातृभूमि की रक्षा करने वालों के लिए देशवासियों का आह्वान करता है। 'मातृभूमि' में उसके देशभक्ति से पूर्ण प्रचारात्मक लेख संगृहीत हैं। यह संग्रह कलात्मक,प्रचारात्मक लेखन का सुंदर उदाहरण है। युद्ध के दिनों में उसने बड़ी शक्ति तथा स्फूर्ति से काम किया। प्रचार लेख लिखने के साथ-साथ उसने द्वितीय महायुद्ध से संबंधित कहानियाँ 'इवान सुदरयाव की कहानियाँ' भी लिखीं।

८ युद्ध से पूर्व के वर्षों का साहित्य

[१९२७–१९४१]

१९३६ में सोवियत द्वारा सोवियत संघ का संविधान स्वीकृत हुआ जो कि इस देश के जीवन के लिए बड़ी महत्वपूर्ण घटना थी। औद्योगिक तथा कृषि व्यवस्था की अत्यधिक उन्नति ने देश के विकास की नयी परिस्थितियों को प्रस्तुत किया। समाजवादी परिश्रम का नया रूप परिश्रमशील तथा प्रगतिशील श्रमिक का स्तखानोवीय आन्दोलन सारे देश में फैल गया। सोवियत संघ की सभी जातियों के बीच मित्रता और भी दृढ़ हुई। प्रत्येक जाति के सांस्कृतिक जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को तथा उसके महान पुरुषों की जयन्तियों को उत्सव के रूप में सारे संघ में मनाया जाने लगा। देश समाजवादी समाज के निर्माण और साम्यवाद की ओर क्रमिक संक्रमण में प्रवृत्त हुआ। समाजवादी व्यवस्था राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हो गयी।

अब ऐसी पीढ़ी सामने आई जो कि सोवियत शासन के बीच ही जन्मी तथा बड़ी हुई थी जिसका क्रान्ति के पूर्व की यथार्थता से कोई भी साक्षात् परिचय न था। क्रान्ति के पूर्व की घटनाओं को उसने केवल पुस्तकों से ही जाना था। ऐसी पीढ़ी की जीवन भावना और दृष्टि तथा आदर्श सर्वथा नए थे। इस नयी पीढ़ी के साथ ही नये साहित्यिक नाम भी आए जिनकी सर्जना सोवियत युग के नवयुवक तथा नवयुवतियों के यथार्थ किन्तु महत्वपूर्ण चित्र प्रस्तुत कर रही थी।

इन लेखकों की सर्जना ने समाजवादी दुनिया का बड़ा आकर्षक और आशापूर्ण चित्र प्रस्तुत किया और साथ ही उत्साहपूर्ण परिश्रम और संघर्ष से ओतप्रोत सोवियत समाज के जीवन का उद्घाटन किया। फलतः निर्माणकारी सर्जनात्मक परिश्रम इस समय के साहित्य का मुख्य वस्तु

विषय बन गया। क्रीमोव गलदकाव मलीश्किन फ़िओदोरोव आदि की कृतियों में उत्पादन के क्षेत्र में नवीनता का संचार करने वालों का तथा देशनिर्माण और देश की प्रगति की ओर प्रयत्नों का जो चित्रण हुआ है उसमें परिश्रम की भावना का सर्जना के प्रेरक रूप में जीवनके शृंगार रूप में और व्यक्ति को मानसिक विकास देने वाले के रूप में हुई है। इसके साथ ही इन लेखकों की कृतियों में यह दिखाया गया है कि सोवियत व्यक्ति न केवल वर्तमान का वरन् भविष्य का भी निर्माता है और अब उसके सामने विकास की असीम संभावनाएँ हैं। इस युग की श्रेष्ठ कृतियों में व्यक्तित्व का उद्घाटन व्यक्ति के आन्तरिक संसार की संपूर्ण समृद्धि के बीच हुआ है। व्यक्ति की शक्ति समृद्धि और आनन्द का स्रोत 'कलेक्टिव' या समूह के साथ रहने में और जनता के साथ उसके अविच्छिन्न संबंध में है।

मलीश्किन के (प्रमुख) उपन्यास 'दूर पिछली जगह के लोग' में यह दिखाया गया है कि गाँव और सुदूर के पिछड़े शहरों के लोग बड़े-बड़े निर्माण कार्यों पर किस प्रकार काम करते हैं और इस काम के बीच इनके व्यक्तित्व का किस प्रकार विकास हो रहा है। धीरे-धीरे इन लोगों की भावना बदलती है और वे सार्वजनिक काम को अपना निजी काम समझ कर उसे उत्साह से करते हैं। मलीश्किन ने इस प्रकार व्यक्तित्व-निर्माण पर उद्देश्य की एकता के सूत्र में गूँथने वाली समाजवादी शिक्षा का व्यापक प्रभाव प्रदर्शित किया है।

अपनी कहानी 'टैंकर तथा डेरबेंट' में क्रीमोव ने नवयुवक स्तखानोवी वीरों के चित्र अंकित किए हैं। इन कहानियों में यह दिखाया गया है कि मैकेनिक बासोव के प्रभाव से टैंकर डरबेंट का आधिपत्य या अधिनायन किस प्रकार विकसित होता है। क्रीमोव के नायक अन्य सोवियत लेखकों के नायकों के समान चरित्र की वह विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं जिनमें जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण कथित होता है तथा जिनमें सोवियत युग में परिपुष्ट नये साहित्यिक तथा कलात्मक आदर्श प्रतिबिम्बित होते हैं। क्रीमोव की सर्जना की जो नवीनता है, वह उसके जीवन के साथ घनिष्ठ संपर्क तथा समाजवादी निर्माण में उसके योगदान का परिणाम है।

इस कृति में नये लोगों समाजवादी परिश्रम के नये तरीकों तथा नयी संभावनाओं का उद्‌घाटन हुआ है ।

साम्यवाद के युग में सोवियत समाज का जीवन तथा साम्यवाद की ओर उसका संचारण सिमोनाव के उपन्यास 'समुद्र पर रास्ता' में प्रतिबिम्बित हुआ है। इस उपन्यास में नये व्यापक जीवन की ओर मानवता संचरण मानो खुले समुद्र पर विस्तृत समुद्री रास्ते पर उसका संचरण है। मानवता का अग्रमाग इसी समुद्री रास्ते पर आगे बढ़ रहा है और यह अग्रमाग रूसी जनता है। यही उपन्यास का मुख्य भाव है। नये जीवन नये व्यक्ति और नयी नैतिकता का प्रदर्शन और समर्थन करने के साथ-साथ सिमोनाव बुर्जुआ और प्राचीन व्यवस्था की आलोचना भी करता है और यह दिखाता है कि अब इस व्यवस्था का कोई भविष्य नहीं है और व्यापक समुद्री रास्ता उसकी पहुँच के बाहर है।

गाँवों में नये जीवन की स्थापना का विषय-वस्तु स्मिर्नोव के उपन्यास 'लड़के' में तरासोव की कहानियों तथा दजावा में अवेचकिन की कहानियों में और कोल्तसोव तथा पानोव की कृतियां में पल्लवित हुआ है। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व के कलखोजी जीवन का बड़ा यथार्थ चित्रण अवेचकिन की कहानियां में मिलता है ।

गाँव कल्खोजी नये कारखाने नवनिर्माण आदि से संबंधित इन कृतियों में समाजवादी व्यवस्था और परिस्थिति के बीच मानवता के क्रमिक विकास और उनके व्यक्तित्व की क्रमिक प्रौढ़ता का आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस युग की सामान्य साहित्यिक प्रगति के बीच इन कृतियों का महत्त्व इस बात में है कि इनके द्वारा गाँव कल्खोजी जीवन आदि के चित्रण का नया नीजवपन हुआ जो कि आगे चलकर युद्धात्तर काल में पूर्ण तथा पुष्पित पल्लवित और विकसित हुआ ।

इस युग में भी अक्तूबर क्रान्ति और गृहयुद्ध से संबंधित कई कृतियाँ प्रस्तुत की गयीं। फदेयेव के उपन्यास 'उदेग में आखिरी' की चर्चा की जा चुकी है। अस्त्रोवस्की का (अपूर्ण) उपन्यास 'तूफान में जन्म' भी गृह युद्ध की घटनाओं से संबंधित है। बराएव की कथा अपने साथ चला रहा है

मजेरा के १९०५ की क्रान्ति के पूर्वों का वर्णन यद्यपि यह बच्चों के लिए लिखी गई थी फिर भी यह बच्चा और सभी के बीच बड़ी लोकप्रिय है। ग्रोसमान की कृति 'स्तेपान कल्पूगिन' में क्रान्ति के पूर्व के श्रमिक वर्ग का चित्रण किया गया है। इसी प्रकार इस युग में लिखित क्रान्ति तथा गृहयुद्ध से संबंधित और भी कई कृतियां हैं। फिर भी कुछ आलोचकों का यह मत है कि इनमें रूसी श्रमिक वर्ग के आन्दोलन का इतिहास और बोल्शेविक पार्टी के संघर्ष और युद्ध का इतिहास व्यापक कलात्मक रूप न प्राप्त कर सका।

नाटक

इस युग में नाटकों का भी महत्त्वपूर्ण विकास हुआ नाटकों की विषय-वस्तुओं में व्यापकता आई, जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ और सोवियत व्यक्ति का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया गया। महत्त्वपूर्ण समकालीन समस्याओं का अंकन देश में समाजवाद का निर्माण तथा नये व्यक्ति का विकास इन नाटकों में विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही नाटकों के क्षेत्र में जो बुर्जुआ प्रभाव पड़ रहा था संघर्ष-हीनता का जो सिद्धान्त प्रवेश कर रहा था और 'फार्मलिज़म' और सौन्दर्यवादिता को जो व्यापकता प्राप्त हो रही थी उनकी और उनका अंकन करनेवाले नाटकों की सोवियत प्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ने कड़ी निन्दा की।

विक्टर गूसेव का नाटक 'कीर्ति' इस युग की विशिष्ट कृति है। यह पद्यात्मक नाटक है। इसमें प्रधान पात्र हैं मतीस्कोव और मायक। मतीस्कोव साहसपूर्ण कार्यों की ओर देशभक्ति और बलिदान की भावना से प्रवृत्त होता है और इन्हीं कार्यों की ओर मायक व्यक्तिगत सम्मान तथा कीर्ति की लालसा से। नाटककार मायक की व्यक्तिवादिता की आलोचना करता है और जनता द्वारा सौंपे गये प्रत्येक कार्य करनेवाले मतीस्कोव का समर्थन करता है।

अफ़ीनोगेनेव का नाटक 'माशेंका' उठती हुई युवक पीढ़ी से संबंधित है और समाजवादी जीवन की भावना से परिपूर्ण है।

लियोनोव का नाटक 'पोलोव्चान्स्की के बगीचे' बहुत कुछ प्रतीकात्मक है। इसमें फला-फूला हुआ बगीचा न केवल बूढ़े मकारोव के जीवन का ही प्रतीक है वरन् यह अपने देश में समाजवाद के निर्माण में रत सोवियत जनता के सुख और प्रकाशपूर्ण जीवन का चित्र भी है। पूरा परिवार इस उद्यान की रक्षा को अपना कर्तव्य मानता है — मानो सारी जनता देश की रक्षा में रत है।

लियोनोव के दूसरे नाटक 'सामान्य व्यक्ति' में नये जीवन की भावना और पुराने की तीव्र आलोचना है। इसमें सामान्य सोवियत व्यक्ति का काव्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया गया है और यह बताया गया है कि जनता से अलग होने और असामान्य बनने की भावना यह संकीर्ण बुर्जुआ भावना है और यह सौन्दर्य नहीं वरन् कुरूपता है। जो सामान्य है वही सनातन है। यही भावना इस नाटक के मूल में है।

क्रोन के नाटक 'गहरी खोज' की विषय-वस्तु देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण परिश्रम है। इसी भावना से इस नाटक का कथानक, संघर्ष, पात्रों का चित्रण अनुप्राणित है। रूसी और अज़रबाइजानी तेल के खोजियों का एक छोटा सा समुदाय जलते हुए रेगिस्तान में तेल की खोज में लगा है। अनेक विरोधों के बीच कठोर परिश्रम के द्वारा इनको अपने कार्य में विजय मिलती है। तेल की कठिन खोज का देश-भक्तिपूर्ण कार्य के रूप में चित्रित किया गया है। परिश्रम की समस्या के माध्यम से सोवियत व्यक्ति के आन्तरिक विकास की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है और सुलझाया गया है।

इस नाटक में मीमरोव व मगरुमुकोनिन के रूप में सामान्य सोवियत व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया है। लकोनिन के सामान्य किन्तु साहसी चित्र में पाठकों को वही गरिमा देखने को मिलती है जो कि उसमें है।

सिमोनोव के नाटक 'ऐसा लगी भी' में उन नये मानवीय संबंधों की गहराई में पैठने की कोशिश की गयी है जो कि इस देश में समाजवाद की प्रतिष्ठा के बाद यहाँ के समाज में व्यापक हो गये हैं। इसमें नैतिक मनो

वैज्ञानिक समस्याओं पर और विशेष रूप से परिवार तथा प्रेम की समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

अरबूज़ोव के नाटक 'तान्या' में तान्यारियाबीनिना के अन्तर्परिवर्तन तथा समाजवादी व्यक्ति की प्रतिष्ठा और विकास को चित्रित किया गया है। इस नाटक में सोवियत व्यक्ति के जीवन रहन-सहन तथा विचार में समाजवादिता का समर्थन किया गया है। आरम्भ में तान्या अपने निजी सुख में सीमित और जीवन से अलग थी। बाद में आमूल अन्त परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी समझ में आता है कि असली सुख निजी को सामाजिक में मिला देने में है और जनता के लिए उपयोगी तथा उनके प्रेम और आदर का पात्र बनने में है।

१९३७ में कई महत्वपूर्ण नाटक पगोदिन का 'बंदूक से सुसज्जित व्यक्ति' कर्निचुक का 'सत्य' विश्नेव्स्की का 'नेवा के तट पर' प्रस्तुत किये गए जिनमें अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति की घटनाओं के आधार पर कम्यूनिस्ट पार्टी और सोवियत शासन के संस्थापक लेनिन का चित्र प्रस्तुत किया गया था।

पगोदिन के नाटक 'बंदूक से सुसज्जित व्यक्ति' में लेनिन को सामाजिक पृष्ठभूमि और क्रान्ति की घटनाओं के बीच जनता के साथ अभिन्न रूप में प्रदर्शित किया गया है। नाटक का मुख्य भाव श्रमिक और कृषक वर्ग के साथ अभिन्नता और पार्टी तथा श्रमिक वर्ग की एकता लेनिन और स्तालिन के पारस्परिक संबंधों के द्वारा प्रस्तुत और स्पष्ट किया गया है।

इस युग के अन्त में आने वाले द्वितीय युद्ध की भावना का आभास मिलने लगा था। द्वितीय युद्ध के आरम्भ से कुछ ही पहले सीमनोव द्वारा लिखित नाटक 'हमारे शहर का आदमी' में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। इस नाटक का उद्देश्य युवक वर्ग में देशरक्षा तथा कम्सोमोल की शानपूर्ण परंपरा का भाव भरना है और आनेवाली परीक्षा के लिए उनको तैयार करना है। सिर्गेई लुकोनिन के रूप में सोवियत युवक वर्ग की नयी पीढ़ी का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो कि देश के लिए उसी प्रकार तय्यार है जिस प्रकार कि उसके लिए पिता और बड़े भाई अपने समय में तत्पर थे।

सीमनोव ने यह प्रदर्शित किया है कि कठोर परिश्रम और संघर्ष के बीच नायक का चरित्र किस प्रकार बनता है और दृढ़ होता है।

द्वितीय युद्ध के आरम्भ के कुछ समय पहले कतिपय सैनिक—ऐतिहासिक नाटक सलव्येव का 'फील्ड मार्शल कुतुजोव बाग्रेशन' और रचूमोवस्की का 'जेनेरल सुवोरोव' आदि प्रस्तुत किए गये।

इस युग का नाट्य साहित्य बड़ा संपन्न है। फिर भी इस समय रूसी नाट्य साहित्य को ऐसी सफलताएँ न मिली जैसी कि उन्नीसवीं या बीसवीं नाट्य साहित्य को।

प्रगीत काव्य

साहित्य के अन्य क्षेत्रों के समान इस युग के काव्यक्षेत्र में भी समाजवादी समाज पर आधारित सोवियत जनता की नैतिक सर्जनात्मक एकता का भाव मुखरित हो रहा है। प्रगीतात्मक रचनाओं में समाजवादी निर्माण की प्रेरणाएँ और भी शक्ति के साथ अभिव्यक्ति हो रही हैं।

प्रगीतात्मक रचनाओं के विकास के साथ गीतात्मक सर्जना का विकास भी संबद्ध है। इस युग में सोवियत गीतों का अच्छा विकास हुआ और कई कवि ईसाकोव्स्की, सुरकोव, लेबदेव कुमाच प्रकोफियेव सूसेव सेल्विंस्की आदि इस क्षेत्र में बड़े प्रसिद्ध हुए।

स्वस्थ जीवन के बीच परिपुष्ट सोवियत व्यक्ति के स्वभाव का वैशिष्ट्य 'ताइगा' (साइबीरिया के घने जंगल) में निर्माण 'मेत्रो' (भूगर्भ रेलवे स्टेशन) निर्माण का कार्य सुदूर पूर्व में 'कम्सोमोल' आदि जीवन द्वारा साहित्य में प्रस्तुत नयी-नयी विषय-वस्तु समाविष्ट हो रही है।

प्रगीतों के साथ-साथ प्रबन्धात्मक काव्य का भी विकास हुआ। इस काव्यरूप की ओर ईसाकोव्स्की वेरा इनबर असयेव सीमनोव आदि ने ध्यान दिया। इस क्षेत्र में त्वारदोव्स्की का काव्य 'मुरावियां देश' बड़ा प्रसिद्ध हुआ।

इस युग के अन्त में जब कि क्षितिज पर युद्ध के बादल इकट्ठे होने लग देश रक्षा के प्रति तत्परता तथा तत्परता और शत्रु के प्रति घृणा का

भाव काव्य क्षेत्र में व्यापकता के साथ मुखरित हुआ। तीखनोव, ग्रेजिमेंस्की सुरकोव स्वरदोव्स्की तथा अन्य कवियों की रचनाओं ने सोवियत जनता में साम्राज्यवादियों की ओर से छेड़े जाने वाले युद्ध की संभावनाओं को सदा ध्यान में रखने को कहा और नवयुवकों में देश रक्षा के लिए सब-कुछ न्योछावर करने की तत्परता भरी।

ईसाकोव्स्की की प्रगीतात्मक रचनाएँ देशभक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। सूक्ष्मता से सोवियत गाँवों का चित्रण करते हुए ईसाकोव्स्की ने अपने गीतों और कविताओं में सामान्य सोवियत जनता के भावों और विचारों का बड़ा मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया—'चार इच्छाएँ' 'पृथ्वी' 'सेतु' 'पतझड़' आदि। इस समय उसने लोकगीतों और उनकी कला का गहरा अध्ययन किया और गीतों की रचना में प्रवृत्त हुआ। गीतों के क्षेत्र में वह अप्रतिम है और उनके गीतों की लोकप्रियता बड़ी व्यापक है। लोकगीतों के परंपरा-प्राप्त वस्तु-तत्व (विदा विरह प्रतीक्षा मिलन आदि) को अपनाकर उसने उनमें नवीन उद्भावना की और उनको नवीन रूप में प्रस्तुत किया।

ईसाकोव्स्की के प्रगीतों के निकट ही त्वरदोव्स्की की कविताएँ 'मार्ग पहाड़ के पीछे' हैं। इनमें सामान्य सोवियत श्रमिक के प्रति गंभीर प्रेम रूसी प्रकृति तथा किसानों के परिश्रम का बड़ा काव्यात्मक वर्णन हुआ है। इसकी रचना में सामान्य श्रमिक और उसके जीवन का व्यापक काव्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। कलखोजी जीवन का गहराई के साथ वर्णन करते हुए कवि ने यह प्रदर्शित किया है कि देश का समाजवादी विकास सोवियत व्यक्ति के जीवन को कैसा समृद्ध बना रहा है (कृषि फार्म नई सोच, उड़ान और बस्ती)।

त्वरदोव्स्की की कविता 'मुराविया का परिवार' में उस व्यक्ति की भावनाओं का बड़ा सुंदर अभिव्यंजन हुआ है, जिसके लिए इस देश के सभी रास्ते उन्मुक्त हैं। अपना घर छोड़ता हुआ वह अपने पूर्वजों के स्थान की एक मुट्ठी मिट्टी साथ नहीं ले जाता क्योंकि सारा देश उसका अपना है, सारी भूमि उसकी मातृभूमि है।

यह भावना कि सारी भूमि अब समस्त जनता की है और उसके स्वतन्त्र तथा आनन्दपूर्ण जीवन के लिए उन्मुक्त है सन् तीस के अन्त तथा सन् चालीस के वर्षों के आरम्भ के साहित्य में पूरी तरह व्याप्त है। फिर भी यह भावना विशेष रूप से गीतों में अभिव्यक्त हुई है। ये गीत बड़े व्यापक हैं और साहस जीवन के आनन्द आशावादिता तथा देशभक्ति से परिपूर्ण हैं।

सुरकोव की काव्य-रचना का मुख्य भाव है समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी देश की रक्षा। उसके काव्य का प्रतीकात्मक नायक वह सैनिक है जो क्रान्ति की विजय के लिए लड़ा है और जो अब देश में नये जीवन की प्रतिष्ठा कर रहा है। वह उसकी रक्षा के लिए हर समय तैयार है। सुरकोव के काव्य में योद्धा देशभक्त का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

गीतकार के रूप में वसीली लेबेदेव कुमाच भी बहुत प्रसिद्ध है। उसके गीतों में देशभक्ति उत्साह आनन्द और जीवन की पूर्णता तथा अनेक कल्पनात्मकता छलकती है (देश का गीत गीतों की पुस्तक)। इस युग में अन्य कवियों के भी कतिपय गीत बड़े प्रसिद्ध हुए। सीमनोव के गीतों में उन लोगों के साहसपूर्ण कार्यों का निर्माता उड़ाकू सैनिक आदि का वर्णन हुआ है जो धैर्य और साहस के साथ चुपचाप अपना काम करते रहते हैं। दल्-मातोवस्की के काव्य का मख्य विषय है जवान 'कमसोमोल' का कठिन उत्साहपूर्ण परिश्रम। उसके काव्य के नायक पंचवर्षीय योजनाओं को कार्यान्वित करने वाले कमसोमोल के जवान सदस्य हैं।

आते हुए युद्ध की आशंका और चिन्ता का भाव इस युग के अन्त के काव्य में मुखरित होने लगा था। इससे देशरक्षा की विषय-वस्तु कई कवियों के काव्य में विशेषतया तीखोनोव के काव्य में बड़े शक्तिशाली रूप में अभिव्यक्ति हुई। तीखोनोव के काव्य-संग्रह 'दूसरी छाया' में कवि की पश्चिम के पूँजीवादी देशों की अपनी यात्रा की अनुभूतियाँ और विचार प्रकट हुए। साथ ही इसमें आनेवाले युद्ध की आशंका और अपनी जनता की विजय का दृढ़ विश्वास भी प्रकट हुआ। पूरे काव्य में मजदूर वर्ग की अन्तर्राष्ट्रीय एकता और दृढ़ता का भाव सूत्र भी व्याप्त है।

इस युग का प्रगीतात्मक काव्य बड़ा समृद्ध है। इसमें समाजवादी युग के व्यक्ति के मानस का बड़ा गम्भीर उद्घाटन हुआ और इसने इस व्यक्ति को अपने समाजवादी देश की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहने की शिक्षा दी।

प्रबन्ध काव्य

प्रगीतात्मक काव्य के साथ-साथ इस युग में प्रबन्ध काव्य का भी विकास हुआ। इस क्षेत्र की इन वर्षों की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना त्वार-दोव्स्की का प्रबन्ध काव्य 'देश मुराविया' है। 'देश मुराविया' (अच्छी धरतीवाला देश) किसानों में नयी समाजवादी चेतना की प्रतिष्ठा और उनके अन्दर से निजी मिल्कियत या अधिकार-भावना को निकाल फेंकने की कथा है। काव्य के केन्द्र में सामान्य किसान निकीता मरगुनोक है जो सोवियत शासन में गुलामी से मुक्त हुआ है और जो अब परिश्रम द्वारा अपने को ऊपर उठाना चाहता है। वह अपनी जमीन की टुकड़ी का स्वतन्त्र मालिक बनकर रहना चाहता है और सम्मिलित कलखोजी जीवन से डरता है क्योंकि उसे यह भय है कि जो कुछ उसके पास है वह भी चला जायगा।

यह काव्य मरगुनोक के आन्तरिक विकास की कथा है और यह विकास मरगुनोक द्वारा परीकथा मुराविया की तलाश की यात्रा के रूप में दिखाया गया है। धीरे-धीरे वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि केवल निजी सुख व्यक्तिगत सुख के आधार पर अब आगे जाना असम्भव है। उसे अब व्यापक सम्मिलित सामाजिक सामूहिक जीवन चाहिए। इस प्रकार 'देश-मुराविया' (अच्छी धरतीवाला काल्पनिक देश) केवल किसानों का पूर्ण परिवर्तन ही नहीं प्रदर्शित करता वरन् देशव्यापी समाजवादी शिक्षा का रूप भी प्रस्तुत करता है। यह काव्य जनता के विकास की एक महत्त्वपूर्ण मंजिल का जीवन प्रदर्शित करता है।

शीमशाव का काव्य विवर्धी के जीवन से संबंधित है। इसमें कम्यूनिस्ट लेखक का चित्र प्रस्तुत किया गया है जिसका जीवन जनता और पार्टी को समर्पित था और जिसमें अपार साहस और मानवीयता थी। इस काव्य के अन्त में छिड़ने वाले युद्ध के खतरे की सूचना है जिसके लिए सोवियत

जनता को तैयार रहना परमावश्यक है। ऐतिहासिक विषय-वस्तु को लेकर सीमनोव ने 'बर्फीली हत्या' और 'सुवोरोव' में रूस के सम्मानित सेनापति का चित्र प्रस्तुत किया है जिसका रूसी जनता की शक्ति और विजय में अडिग विश्वास था।

वेरा इन्बर की 'सफरी डायरी' में जार्जिया की संस्कृति का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इसमें सोवियत व्यक्ति का भी चित्र है जो अपने समाजवादी देश के प्रति वफादार है और दूसरी जातियों की संस्कृति का भी आदर करता है। असयेव का 'व्लादीमिर मायाकोव्स्की' मायाकोव्स्की के जीवन से संबंधित काव्य है। इसमें मायाकोव्स्की के बहुमुखी जीवन का अत्यन्त सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

इस युग के काव्य में व्यंग्य-काव्य का अच्छा विकास न हो सका। साहित्य के कतिपय अन्य अंगों के समान काव्यक्षेत्र में भी 'फार्मलिज़्म' तथा अन्य बूर्जुआ सिद्धान्तों का विरोध हुआ। 'प्राव्दा' के विचारों तथा गोर्की के लेखों ने एक ओर इनका विरोध किया और दूसरी ओर, क्लासिकल साहित्य की समृद्ध विरासत को अपनाने की सलाह दी। सोवियत काव्य के विचारात्मक कलात्मक स्तर को ऊँचा उठाने में इनका बड़ा महत्त्व है।

इस युग में इन नवयुवक लेखकों के साथ-साथ साहित्यकारों की पुरानी पीढ़ी भी साहित्य सर्जन में लगी हुई है। इन्हीं वर्षों में अलेक्सी तालस्तोय की 'पीड़ा के बीच यात्रा' तथा शोलोखोव की 'शांत डान' जैसी सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ पूरी हुईं।

ऐतिहासिक उपन्यास का विकास

सोवियत साहित्य जिस प्रकार वर्तमान के अंकन में लीन है उसी प्रकार वह अतीत के महत्त्व को भी समझता है। इसी से सोवियत लेखक देश के अतीत जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों तथा व्यक्तियों का बराबर अंकन करते रहते हैं और उनका अपनी दृष्टि से मूल्यांकन करते हैं। साथ ही वे

यह भी प्रदर्शित करते हैं कि रूसी व्यक्ति का जातीय चरित्र ऐतिहासिक विकास के बीच किस प्रकार गठित हुआ ।

सोवियत साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों का विशिष्ट स्थान है । यथार्थवादी लेखक की तुलना में ऐतिहासिक उपन्यासकार के सामने दूसरी समस्याएं होती हैं । उसका उस अतीत युग से काम रहता है जो समय तथा उसके आदर्श दोनों की दृष्टि से उससे दूर रहता है । एक ओर तो उसे उस युग की विशिष्टताओं का सच्चा-सच्चा अंकन करना रहता है और दूसरी ओर उसे उस युग की ऐसी विशिष्टताओं को ग्रहण करना होता है जो आज के पाठक की भावनाओं को विकसित करने में उसकी सहायता कर सकें । उसे अतीत को समकालीनता के आदर्शों से संबंधित करना होता है । सोवियत ऐतिहासिक उपन्यासकार ऐसा ही कर रहे हैं । वे देश के जीवन के उन तथ्यों का चित्रण करते हैं जिनका आज के युग के आदर्श के लिए तथा समकालीन पाठक की देशभक्ति की भावना के विकास के लिए भी महत्त्व है ।

ये ऐतिहासिक कृतियां देश के उन महान् व्यक्तियों से संबंधित हैं जो कि स्वतन्त्रता के सेनानी रहे हैं । स्तालिन ने अपनी बातचीत के सिलसिले में कहा था कि 'हम बोल्शेविकों को बोलोत्निकोव, राजिन, पुगाचोव जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियों में सदा दिलचस्पी रही है । इन लोगों के कार्यकलाप में हमें पीड़ित वर्ग के आरम्भिक उद्गार की झलक मिलती है । किसान विद्रोहों के आरम्भिक प्रयत्नों के इतिहास का अध्ययन हम लोगों के लिए बड़ा रुचिकर रहा है ।' सोवियत साहित्य की कई कृतियां बोलोत्निकोव, पुगाचोव (व्याचेस्लाव शिशकोव का उपन्यास एमेल्यान पुगाचोव) तथा राजिन (चपीगिन का 'स्तेपान राजिन') से संबंधित हैं । रूसी संस्कृति का महान प्रतिनिधि लोमोनोसोव बहुत से लेखकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है ।

गृह-युद्ध की विषय-वस्तु ने बहुत से लेखकों को आकृष्ट किया । गृह-युद्ध के बाद देश की जो उन्नति हुई उसमें स्वतन्त्रता के इस युद्ध तथा इसमें भाग लेने वालों की देशभक्ति तथा बलिदान का स्वरूप स्पष्ट है ।

इवानोव की कहानी 'पारखोमेन्को' तथा अलेक्सेई तोलस्तोय की कृति 'रोटी' और 'पीड़ा के बीच यात्रा' में गृह युद्ध के नायकों का चित्रण हुआ है।

ऐतिहासिक विषय-वस्तुओं की ओर उन्मुख होते हुए ये लेखक सबसे पहले उन घटनाओं की ओर आकृष्ट हुए थे जो रूसी जनता के अपने स्वातन्त्र्य युद्ध से सम्बन्धित हैं। सोवियत लेखकों ने रूस के प्राचीन इतिहास की साहसपूर्ण घटनाओं के आधार पर रूसी जातीय चरित्र की उन विशिष्टताओं को प्रदर्शित किया जिन्होंने अपने भयंकर शत्रुओं को नष्ट करने में सहायता की और सुवोरोव, कुतुज़ोव जैसे प्रतिभाशाली सेनापतियों को प्रस्तुत किया। मोस्माकोर्व का उपन्यास 'रवीवस्येव' भी बड़ा लोकप्रिय रहा।

तातारी आक्रमण वे० यान के उपन्यास 'चंगेज़ खाँ' और 'बातू' तातारों से मुक्ति सोबरोदिन का 'दिमित्री दोन्स्कोय' 'कुलिकोव क्षेत्र पर' अलेक्सान्द्र नेव्स्की द्वारा जर्मनों का नाश (कोस्तिलेव का 'अर्नोल्डी' हत्या।) पीतर प्रथम के समय का साहस (अ० तोल्स्तोय का 'पीतर प्रथम') नेपोलियन पर विजय, सस्सोव का 'स्मोलेन्स्क क्षेत्र' मार्शल कुतुज़ोव सोविकोव प्रिबोय की लोकप्रिय कृति 'सेवास्तोपल की रक्षा' सर्गेयेव-त्सेन्स्की का सेवास्तोपोल का परिश्रम—इन सब घटनाओं को सोवियत लेखकों ने रूसी जनता की महानता, युद्ध के बीच प्रदर्शित उसके साहस तथा युद्ध में प्राप्त उसके यश के ऐतिहासिक कलात्मक चित्रों में परिणत कर दिया। और जब जर्मन फासिस्ट देश की सीमा पर युद्ध के बादल गरजे तो उनके उत्तर में इन कृतियों की देशभक्ति का स्वर सारे देश में गूँज उठा।

सन् १९४१ की २२ जून को जर्मन सेनाओं ने सोवियत संघ पर आक्रमण कर दिया। शांतिमय निर्माण का युग सहसा समाप्त हो गया और युद्ध का युग शुरू हुआ।

९. युद्धकालीन साहित्य

[१९४१-४५]

द्वितीय महायुद्ध सोवियत रूस के जीवन में महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। शांति का युग समाप्त हो गया और जर्मन फ़ासिस्ट आक्रमणकारियों से देश को मुक्त करने का युग शुरू हुआ। सारी सोवियत जनता देश की रक्षा के लिए तैयार हुई।

स्तालिन ने सन् ४५ में कहा कि "युद्ध केवल अभिशाप ही न था। वह इसके साथ शिक्षा का बहुत बड़ा स्कूल तथा जनता की सारी शक्तियों की कसौटी था। युद्ध सचमुच में सोवियत शासन तथा संस्कृति में पली हुई जनता की परीक्षा थी और जनता उस परीक्षा में सफल हुई।

फ़ासिस्टों के ऊपर सोवियत विजय ने यह प्रमाणित कर दिया कि समाजवादी संस्कृति के बीच विकसित सोवियत जनता की परिश्रम तथा संगठन की शक्ति कितनी विकसित और बढ़ी चढ़ी थी और उसका देश प्रेम कितना ऊँचा था जिसने सारी जनता को एक सूत्र में बाँधकर उसे देश के स्वातन्त्र्य के लिए सब कुछ न्योछावर करने की शक्ति दी। युद्ध व्यक्तियों की नैतिक शक्ति की कसौटी बन गया जिसमें वे खरे उतरे।

साहित्य ने रूसी जनता की उन्हीं विशिष्टताओं का चित्रण किया जिन्होंने उसे इस महायुद्ध में विजयी बनाया। सोवियत लेखकों ने युद्ध के नायकों के चित्रों में रूसी जनता की उन्हीं विशिष्टताओं—तीक्ष्ण बुद्धि चरित्र की दृढ़ता अपूर्व सहनशीलता आदि का अंकन किया। युद्ध उन सर्जनात्मक साहित्यिक सिद्धान्तों की भी परीक्षा थी जिनकी अभिव्यक्ति अभी तक सोवियत लेखकों की श्रेष्ठ कृतियाँ में हुई थी। युद्ध-क्षेत्र में वे ही विशिष्टताएं सामने आईं जिनका अंकन सोवियत लेखक अपने नायकों के चित्रों में कर रहे थे तथा जिनकी प्रेरणा और शिक्षा वे अपने पाठकों में भर रहे थे। सोवियत सैनिकों के साहसपूर्ण कार्यों ने लोगों को उनके

लोकप्रिय नायकों चपाएव, कर्चागिन तथा अन्य की ही भाँति मिली क्योंकि वे (नायक) स्वयं सोवियत लेखकों की कोरी कल्पना न थे, वरन् स्वतः जीवन से चुने गये थे। इस प्रकार चूँकि सोवियत साहित्य जीवन से अविच्छिन्न रूप से संबंधित था इसी से वह उन प्रश्नों का बड़ी व्यापकता तथा विस्तार के साथ उत्तर दे सका जिनको कि जीवन ने युद्ध के वर्षों में प्रस्तुत किया।

युद्ध ने लेखकों के सामने कई सर्जनात्मक समस्याएँ प्रस्तुत कीं। लेखकों के लिए यह आवश्यक था कि वह कलात्मक ढंग से सोवियत जनता की भावनाओं को उभार सकें और उसमें देशप्रेम के उत्कर्ष का, विजय के लिए हर प्रकार की तत्परता और सन्नद्धता को तथा अपनी विजय में उसके अडिग विश्वास को अभिव्यक्ति कर सकें। उनके लिए यह भी आवश्यक था कि वे अपनी कृतियों में उन सभी घटनाओं का चयन कर सकें जो कि युद्ध क्षेत्र में हो रही थीं और वे सोवियत जनता के साहसपूर्ण कार्यों की कथा कह सकें। अन्त में उनके लिए यह भी अत्यावश्यक था कि वे सारे संसार के सामने फ़ासिज़्म की बर्बरता का पूरा-पूरा चित्र प्रस्तुत कर सकें और 'घृणा का विज्ञान' रच सकें जिससे सोवियत जनता तथा संसार जान जाय कि फ़ासिज़्म का असली रूप कितना नृशंस तथा बर्बरता से पूर्ण है। एक हज़ार से अधिक लेखक (सोवियत लेखक संघ के एक तिहाई से अधिक) सेना में भर्ती हुए और बहुत से (यूरी क्रीमोव पेत्रोव स्ताव्स्की) वापस न लौटे और युद्ध भूमि में सदा के लिए सो गए।

गृह-युद्ध के वर्षों के समान युद्ध के इन वर्षों में भी साहित्य के वे रूप या प्रकार सामने आए जिनमें घटनाओं की प्रतिक्रिया जल्दी से जल्दी अभिव्यक्त की जा सकती थी—प्रगीत मुक्तक कविताओं के साथ पोस्टर छोटी कहानियाँ प्रचारात्मक लेख घटनाश्रित लेख आदि। मायाकोव्स्की की 'रोस्ता की खिड़की' की परंपरा फिर से जीवित हुई। मास्को तथा अन्य शहरों में 'तास की खिड़की' के पोस्टर छपने लगे। युद्ध के मोर्चे पर होने वाली घटनाओं से संबंधित जल्दी से जल्दी लिखे गए प्रचारात्मक लेख हवाई जहाज से भेजे जाते थे और तत्क्षण पत्रों में छपते थे जिनमें वीरता का आह्वान रहता था और सोवियत सेना के साहसपूर्ण कार्यों की चर्चा

रही थी। अलेक्सेइ तोल्स्तोय ने युद्ध के वर्षों के साहित्य को 'जनता की और आत्मा की आवाज' ठीक ही कहा है। इस समय प्रचारात्मक लेख बहुत ही लोक व्यापक हुए। प्रचारात्मक लेखों के साथ में अलेक्सेइ तोल्स्तोय, सिमोनोव, शोलोखोव, सीमनोव, फदेयेव, तीखनोव, रुडकोव, योशमन, नरवाटोव, स्वस्ताव्स्की जैसे प्रसिद्ध लेखकों ने काम किया१। इन लेखों में सबसे पहले सोवियत देशभक्तों के साहसपूर्ण कार्यों का अभि-व्यंजन हुआ तथा फ़ासिस्ट बर्बरों के विरुद्ध युद्ध में सोवियत जनता की जो हानि हुई, जो दुख उसे उठाना पड़ा और जो बलिदान उसने दिए, उनका वर्णन हुआ है।

युद्ध के वर्षों में सोवियत लेखकों ने कलापूर्ण प्रगीत मुक्तक गद्य नाटक आदि की सृष्टि की। इनमें से कई कृतियाँ स्तालिन पुरस्कार से पुरस्कृत हुईं।

प्रगीत मुक्तक के क्षेत्र में तीखनोव, सीमोनोव, त्वरदोव्स्की, सुरकोव, ईसाकोव्स्की तथा अन्य सोवियत कवि अपनी कृतियों में सोवियत व्यक्ति की आंतरिक अनुभूतियों की बड़ी व्यापक और गहरी अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर रहे हैं। इन वर्षों की प्रधान विषय-वस्तु है देश के प्रति प्रेम। सुरकोव को समर्पित अपनी कविता में सीमिनोव ने लिखा 'मोर्चियाँ मुझे कभी तक माफ करती जाती हैं, बचाती जाती हैं फिर भी मैं जानता हूँ कि जीवन समाप्त हो गया है। फिर भी मुझे रूसी भूमि का घमंड है, जहाँ मैं पैदा हुआ, इसका गर्व है कि इसके लिए कड़वा पैदी विरासत है।

बहुत से कवि लेनिन की ओर संकेत करते हुए जनता का आह्वान करते हैं और यह कहते हैं कि "इस महायुद्ध में हम अक्तूबर क्रान्ति की परंपराओं तथा संप्राप्तियों की ही रक्षा करते हैं। सोवियत जनता इस युद्ध में लेनिन के झंडे को ऊँचा फहरा रही है।" इसके साथ ही (स्तालिन से संबंधित तथा अन्य बहुतसी) रचनाओं में कम्युनिस्ट पार्टी तथा जनता के

१—सोवियेत दस्तावेज रूस्कोय सोवेत्स्कोया लितेरातूरी भाग दूसरा, पृ० ११४–११५।

ऐक्य का भाव प्रकट किया गया है। सोवियत संघ में रहनेवाली अनेक जातियों के ऐक्य तथा भ्रातृत्व भाव की अभिव्यंजना भी युद्धकालीन काव्य में बहुत हुई है। सोवियत संघ का गीत' अनेक जातियों को एक में गूँथने वाले रूसी समाजवादी राष्ट्र को समर्पित है। युद्धकालीन सोवियत काव्य का औचित्य और उसकी कलात्मक शक्ति इस बात से निर्धारित है कि वक्ता और उनके भावकों का स्वार्थ उनके विचार और अनुभूतियाँ तथा स्वतः उनका भाग्य एक दूसरे से अविभक्त था। १

युद्ध के वर्षों में व्यंग्यात्मक कविताओं के अनेक प्रकार बहुत प्रचलित हुए। व्यंग्यात्मक कविताओं और वस्तुचित्रों में फ़ासिस्टों के प्रति जनता का क्रोध तथा जनता की घृणा अभिव्यक्त हुई। व्यंग्यात्मक कविताएँ, बाल्या पोस्तर व्यंग्यचित्र पैम्फ्लेट एपिग्राम आदि का प्रयोग बेदेनी, मर्शाक मिखाल्कोव लेबेदेव कुमाच बसीलेव आदि ने किया।

शत्रु के प्रति घृणा का भाव भी सोवियत लेखकों की रचनाओं में बड़े ज़ोरदार शब्दों में व्यक्त हुआ है। सुरकोव ने अपनी एक कविता का शीर्षक 'मैं घृणा का गीत गाता' रखा। जनता के साथ युद्ध की कठिनाइयों को झेलता हुआ तथा देश की रक्षा करता हुआ साहस से पूर्ण सैनिक ही उसकी कविताओं का नायक है।

सीमोनोव ने यह बड़ी अच्छी तरह प्रदर्शित किया है कि अपने निकटस्थों या संबंधियों का भाव किस प्रकार सैनिक का उत्साह से भर देता है और कठिन परिस्थितियों के बीच उसे यह विचार-शक्ति देता है कि घर पर लोग उसकी विजयी के रूप में प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसी भाव को पल्लवित करती हुई उसकी कविता 'मेरी प्रतीक्षा करो' सैनिकों के बीच बड़ी लोकप्रिय हुई और सैनिकों के अनेक पत्रों में उसके उद्धरण दिये गये। इसमें कवि ने प्रेमी के प्रति प्रेम के भाव का युद्ध में विजय के विश्वास के साथ गुंथा दिया।

सिमोनोव ने उस व्यक्ति की अनुभूतियों की तीव्रता का बड़ा सुन्दर

१—ओचर्की इस्तोरिई रुस्कोय सोवेत्स्कोया लितेरातूरी भाग दूसरा पृ० १४८।

अभिव्यंजन किया है जो उस सबकी रक्षा के लिए, जो कि उसे परम प्रिय है अपना जीवन होम कर देता है और अपने निकटस्थों से उस आत्मिक या नैतिक सहायता की आशा करता है जो कि उसमें दृढ़ता और साहस भर दे। वह शब्दों तथा लय की पुनरावृत्ति द्वारा ऐसी सजीव वाणी की सर्जना करता है जिसमें अनुभूतियों का अभिव्यंजन तथा कलात्मक विश्वसनीयता रहती है।

सोवियत व्यक्ति के आंतरिक भावों तथा अनुभूतियों के अभिव्यंजन की क्षमता ईसाकोव्स्की के प्रगीत मुक्तकों की बहुत बड़ी विशेषता है। इन गीतों में वीर सैनिक तथा पार्टिजन का चित्र प्रस्तुत किया गया है और इसके साथ ही देशवासियों पर जनता के क्षोभ तथा फ़ासिस्टों के प्रति क्रोध का भाव प्रकट हुआ है। ईसाकोव्स्की के गीतों के मुख्य भाव में छिपती हुई जवानी निर्मल प्रेम प्रेमी या प्रेमिका के प्रति विश्वास और देशप्रेम है।

प्रबन्ध काव्य

जीवन के साथ घनिष्ट संबंध ने सोवियत कवियों को प्रगीत मुक्तकों के साथ-साथ ऐसे प्रबन्ध या आख्यान काव्यों के प्रणयन का भी अवसर दिया जिनमें बड़ी व्यापकता के साथ युद्ध की घटनाओं तथा लोगों के चरित्र की अभिव्यक्ति हुई। युद्ध के वर्षों में काव्य के इस प्रकार की ओर लोगों का ध्यान स्वभावतया गया जिसमें युद्ध में भाग लेनेवालों के शक्तिशाली रूप तथा आत्मिक उत्कर्ष का और सोवियत जनता की सर्वसामान्य भावनाओं का वर्णन किया गया था। १९४१ के अन्त में तीखनोव का (आख्यान) काव्य हमारे साथ कीरोव प्रकाशित हुआ (स्तालिन पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत)। यह कविता लेनिनग्राद के घेरे के विषय में है। "सड़कों पर प्रतिरोध हैं और फाटक पर खाइयाँ खुदी हैं। सेर्गेइ मिरोनोविच कीरोव रात में इस शहर में घूमता है। मानो बाल्शेविकों की न झुकनेवाली लौह इच्छा सभी जनता की अपराजेय दृढ़ता शहर का चक्कर लगा रही है। साहस तथा विजय के विश्वास से पूर्ण तीखनोव का यह काव्य युद्धकालीन महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों में से एक है।

शत्रु द्वारा घिरे हुए लेनिनग्राद के (तथा मास्को के) वीरतापूर्ण युद्ध ने बहुत-सी साहित्यिक कृतियों को जन्म दिया। तीखनोव ने रात्रि में लेनिनग्राद का रोमांटिक चित्र प्रस्तुत किया जो कि हर प्रकार की कठिनाइयों को सहने को तैयार है। दूसरे काव्य यथार्थवादी स्तर पर हैं और उन महान् कठिनाइयों का चित्रण करते हैं जिनको कि इस शहर ने झेला फिर भी आत्मसमर्पण नहीं किया। (अन्काव) वेरा 'फरवरी की डायरी' में ओ० बेरगोल्त्स गर्व के साथ उन अनुभूतियों के बारे में कहती है जो लेनिनग्राद के रक्षकों के हृदय में सर्वोपरि थीं जिनसे प्रेरित वे भाव शोक-मूलक कीचड़ के बीच स्वत्वों की रक्षा कर रहे थे जिससे कि प्रवीण उनसे ईर्ष्या करें। 'पुल्कोवस्की मेरीडियन' में वेरा इन्बार लेनिनग्राद का वर्णन उसके अत्यन्त कठिन दिनों तथा विजय के दिनों के बीच करती है और कविता अन्तर की रचना से परिपूर्ण है। इसमें अभिव्यंजित क्रोध का भाव आक्रमणकारी के प्रति सारी जनता के क्रोध के भाव का अभिव्यंजक है।

अलीगेर की कविता 'जोया कस्मोदेम्यान्स्काया' के साहसपूर्ण कार्यों से संबंधित है, सोवियत जनता की इस नायिका का बड़ा ही प्रगीतात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। कविता की रचना काव्य की नायिका से कवि की बातचीत के रूप में हुई है। इसमें कवयित्री ने इस जन नायिका के व्यक्तित्व के सौन्दर्य, उसकी नम्रता और उसकी अनुभूतियों का अभिव्यंजन किया है।

पावेल अन्तकोल्स्की ने अपनी कविता 'बेटा' मोर्चे पर मरे अपने पुत्र की स्मृति में लिखी है। इसमें युद्ध के आरम्भ करुण पक्ष—नवयुवक सिपाहियों की मृत्यु और पिता के शोक का चित्रण हुआ है।

ट्रेजेडी या करुणा की भावना मानव जीवन की आशाहीन अपराजेय विषमता से संबद्ध है जिसमें मुक्ति पाने का कोई रास्ता नहीं है। प्राचीन ट्रेजडी भाग्य के विरुद्ध नायक का युद्ध और उसका नाश चित्रित करती थी नायक का ऐसा भाग्य जो पहले से ही निश्चित है जो अपरिवर्तनीय है और जिसमें कोई हेरफेर नहीं हो सकता। अपने भाग्य के

विरुद्ध उस युद्ध में नायक का नाश होता है। नायक की निराश-आशा में ही अन्त में ट्रेजेडी का करुण भाव निहित है।

यह ट्रेजेडी तभी तक अनिवार्य तथा अत्यन्त करुण प्रतीत होती है जब तक कि हम इसे अलग-अलग व्यक्तिगत जीवन के घेरे में या व्यक्तिगत स्तर पर देखते हैं। हमें यह जानना चाहिए कि व्यक्ति में ही सब कुछ नहीं समाप्त हो जाता। व्यक्ति ही सब कुछ नहीं है। उसके पीछे उसका वर्ग है उसकी जनता है। यदि हम कुछ व्यापक लोकदृष्टि या सामाजिक दृष्टि को बनाए रहें तो देखेंगे कि व्यक्ति का अन्त कितना ही करुण क्यों न हो फिर भी सब कुछ समाप्त नहीं हो जाता। यदि मनुष्य यह समझता है कि वह किसी व्यापक लक्ष्य के लिए अपनी जान दे रहा है वह मर कर अपने प्रियजनों को बचा रहा है तो उसके अन्तिम क्षणों के इस आनन्द में मृत्यु पर उसकी विजय है। इस व्यापक लक्ष्य के कारण ही उसका व्यक्तिगत अन्त सर्वनाश या सर्वान्त नहीं है। इसीलिए उसके व्यक्तिगत अन्त के करुण अन्धकार से आशा की किरण फूटती है और ट्रेजेडी पूर्ण ट्रेजेडी नहीं रह जाती।

युद्ध के पूर्व से ही सोवियत साहित्य में प्रचलित 'आशापूर्ण ट्रेजेडी' पदावली का यही अर्थ है। ट्रेजेडी केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही ट्रेजेडी रहती है। मनुष्य अपराजेय बाधाओं से युद्ध में नष्ट हो जाता है। किन्तु यदि मरता हुआ वह यह जानता है कि वह लक्ष्य या कार्य जिसे पूरा करने के लिए वह जी-जान सब कुछ अर्पित कर रहा है सफल होगा और वह अपनी मृत्यु द्वारा उन सबको नाश से बचा रहा है जो कि उसे अत्यन्त प्रिय हैं तो यह निराशा की गहन तमिस्रा में मुक्त पूर्ण ट्रेजेडी नहीं है—ऐसे व्यक्ति के अंत पर पूर्ण निराशा या आत्मभेदी की वेदना कभी नहीं छाती और न उसका अन्त ऐसे शोक को जन्म देता है कि जिसका शमन न हो सके। अन्तोकोल्स्की के अपने काव्य में स्वजन के अन्त की ट्रेजेडी का जो शोक है उसका उपशमन इसी प्रकार होता है। इस आशा के साथ वह अपनी कविता समाप्त करता है—

'इस अनन्त युद्ध में त्रास और मैं मौन अजय में तुम्हें दफ्न मनाने

का कोई अधिकार नहीं है। बड़े महान् सत्य के नाम पर, जो कि तुमसे कहीं अधिक बड़ा है, दूसरों के प्रिय बेटे प्रिय बेटों की जगह मरने जा रहे हैं। युद्ध के अन्तिम वर्षों की कृतियाँ जीत आने वाली ,विजय के उल्लास से परिपूर्ण हैं। यदि १९४१ ४२ की कृतियों में शत्रु द्वारा ध्वस्त भूमि का चित्र है तो अब फिर से इस समय की रचनाओं में नये जीवन का चित्र उभर रहा है जो मानो उदय होनेवाले सूर्य या बसन्त के समान है (इन्बर की कविता 'बसन्त' सुवकोव की रचना 'हमारी प्रतिष्ठा की बहन—बसन्त')।

वसीली त्योर्किन

यदि तीखनोव ने कीरोव के माध्यम से लेनिनग्राद का प्रतीकात्मक रोमांटिक चित्र प्रस्तुत किया और बर्गोल्ट्स तथा अन्तोकोल्स्की ने कविता की प्रगीतात्मकता पर जोर दिया जिसके मूल में जीवन के यथार्थवादी तथ्य थे तो त्वार्दोव्स्की ने अपनी कविता 'वसीली त्योर्किन' में रूसी सैनिक का सामान्य यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। त्योर्किन सामान्य सिपाही है जिसमें रूसी सैनिक की सामान्य विशेषताएँ बड़े स्वाभाविक ढंग से प्रकट होती हैं। उसमें साहस बलिदान की भावना स्वदेश प्रेम तथा हास्य-व्यंग्य की रुचि है। युद्ध की चमत्कारमय परिस्थितियों के बीच उसका चित्रण किया गया है और उसमें वे विशेषताएँ दिखाई गयी हैं जिनके कारण सोवियत सेना अजय है। वह जानता है कि प्रत्येक सैनिक के साथ सारा देश है वह अकेला नहीं है। कविता अनेक घटनाओं से निर्मित है जिसमें त्योर्किन का युद्ध का जीवन चित्रित किया गया है। शत्रु की गोलियों की बौछार के बीच दलदल में पड़ा हुआ वह हिम्मत नहीं हारता, वह नदी तैर कर अपना काम पूरा करता है और शत्रु का हवाई जहाज गिराता है तथा अपने प्लाटून के साथ आक्रमण करता है। बुरी तरह घायल हो जाने पर भी वह अपनी जगह ड्यूटी पर लौट आता है। यही उसका जीवन है और यही सोवियत सेना का भी जीवन है। अपनी विजय में अडिग विश्वास उसे अतुलित शक्ति देता है और वह सब काम सफलता से संपन्न करता है। यदि वे त्योर्किन के माध्यम से बड़ी कलात्मकता से

साथ समकालीन नायक का चित्र प्रस्तुत किया है और त्योंकिन जैसे सामान्य सैनिक के रूप में सारी जनता के युद्ध को प्रस्तुत किया है।

कवि ने सोवियत सेना की पृष्ठ-भूमि में अपने नायक का चित्र प्रस्तुत किया है। कवि अपनी सामग्री—फ़ौज का रहन-सहन उसके मनोविज्ञान उसकी भाषा से बहुत अच्छी तरह परिचित है। भाषा हल्के व्यंग्य से उत्तम है। युद्ध के दिनों में यह कविता बड़ी लोकप्रिय हुई। नायक के चित्र की महत्ता के कारण युद्ध के अनेक पक्षों के चित्रण के कारण और प्रगीतात्मक तथा संवेदनशील भावों की गहराई के कारण युद्धकालीन काव्यों के बीच त्वारदोव्स्की का यह काव्य सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है। युद्ध के वर्षों में इससे लोगों को बड़ी प्रेरणा मिली और आज भी इसका विचारात्मक तथा कलात्मक महत्त्व है।

गद्य

युद्ध के वर्षों में सोवियत गद्यकारों ने कई दिशाओं में काम किया। इनमें युद्ध की घटनाओं का चित्रण करने वाले लेख बहुत व्यापक हुए। इन लेखों में ऐतिहासिक महत्त्व की बहुत अधिक सामग्री इन लेखकों द्वारा एकत्रित हुई। इनमें युद्ध के वे सभी युग सभी परिस्थितियाँ चित्रित हुईं जिनके बीच से यह युद्ध चला। इनमें भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरणा देनेवाली सोवियत नायकों की देशोद्धार की अभूतपूर्व साहस तथा बलिदान की गाथा सुरक्षित है। देश प्रेम को उद्बोधित करनेवाले तथा शत्रु के प्रति घृणा भड़कानेवाले इन कलात्मक प्रचारात्मक लेखों ने देश की जनता को युद्ध के लिए सन्नद्ध कर बहुत बड़ा काम किया। अलक्सेन्द्र तोलस्तोय की लेखों की पुस्तक 'स्वदेश', एरेनबुर्ग की पुस्तक 'युद्ध' तथा अन्य कृतियों का सैनिकों तथा नागरिकों सभी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। युद्धकालीन इन प्रचारात्मक लेखकों का बड़ा सामाजिक शिक्षात्मक महत्त्व था। आगे चल कर यह लेख इन लेखकों के सर्जनात्मक मार्ग में महत्त्वपूर्ण, चरण बन गये और इनके आधार पर लेखकों ने सीमनोव गरबातोव एम्मोल इस युद्ध के संबंध में बड़ी महाकाव्यात्मक कृतियाँ प्रस्तुत कीं।

युद्ध की गतिविधि के साथ लोगों का अनुभव तथा पर्यवेक्षण भी बढ़ा

और लेखों तथा छोटी कहानियों के साथ अधिक व्यापक वस्तु विधान वाली कृतियाँ—बड़ी कहानियाँ तथा उपन्यास—भी सामने आईं। वांदा वसिलव्स्कया का 'इन्द्र धनुष' गरबातोव का 'अजित' ग्रोसमन का 'अमर जनता' सीनोनोव का 'दिन और रात'। इन कृतियों ने युद्ध के अनेक पक्षों का चित्रण किया और देश की रक्षा करनेवाले सोवियत व्यक्ति की नयी-नयी विशिष्टताओं को प्रदर्शित किया। इसमें उन प्रदेशों की सोवियत जनता की देश के प्रति वफ़ादारी चित्रित की गयी है जहाँ जर्मनों का अधिकार था (अजित)। इतिहास म असम्य स्तालिनग्राद की रक्षा की दृढ़ता का चित्र है (दिन और रात) फ़ासिस्टों की बर्बरता प्रदर्शित है (इन्द्रधनुष) तथा सोवियत जनता की राजनैतिक नैतिक एकता तथा आत्मिक महानता का चित्रण है (फदेयेव का 'जवान गार्ड' या 'युवक रक्षक')। इन सभी कृतियों में महायुद्ध के युग की छाप है।

ल० सोबलेव की कहानियाँ 'समुद्री आत्मा' में प्रत्येक नायक कर्तव्य साहस तथा दृढ़ता की भावना से युक्त है। स्टीमर के तीन चालक सैनिकों के बीच घायल हो जाने पर भी अपना स्टीमर का नहीं छोड़ते और उसे चलाते रहते हैं। मधुर नाटकीयता रोमांटिक रंग तथा कथन का सारगर्भी ढंग सोबलेव की शैली की अपनी विशेषता है।

अलक्सेई तोलस्तोय की कृति 'इवान सुदरयोव की कहानियाँ' की विषय-वस्तु रूसी जातीय चरित्र है। इन कहानियों में लेखक ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है कि इस युद्ध म रूसी क्या विजयी हुए।

१९४८ में वसीली ग्रोसमन की कृति 'अमर जनता' प्रकाशित हुई। इसमें जनता को एतिहासिक शक्ति की प्रगति के रूप में चित्रित किया गया है और सोवियत सेना का जन रक्षक रूप प्रदर्शित किया गया है। साथ ही जनता और कम्यूनिस्ट पार्टी का एक्य दिखाया गया है जो कि फ़ासिज्म पर उसकी विजय का मूल कारण है।

वांदा वसीलव्स्काया के उपन्यास 'इन्द्रधनुष' में जनता द्वारा विरोध की शक्ति का प्रदर्शित किया गया है और उस रोष की रूसी जनता

का जीवन और युद्ध चित्रित किया गया है जहाँ पर फ़ासिस्टों का अधिकार था। यह पुस्तक यह प्रदर्शित करती है कि किस प्रकार रूसी जनता माताएँ और यहाँ तक कि बच्चे फासिज्म के अत्याचार के बीच देश की स्वतन्त्रता के सेनानी बन गये। इसका शीर्षक स्वयं जनता की आने वाली विजय का प्रतीक है। सोवियत जनता की अपराजेयता और शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्र म उसके युद्ध सहन तथा युद्ध की विषय-वस्तु का उद्घाटन गारबाटोव की कृति 'अजित' म हुआ है। इसका मुख्य भाव यह है कि जो शत्रु का आत्म-समर्पण नही करते जिनकी आत्मा अजित है, विजय उन्ही की है।

'रात और दिन' मे युद्ध के बीच स्तालिनग्राद के दिनों और रातों का वातावरण प्रस्तुत किया गया है जब कि केवल सड़क के लिए ही नही वरन् प्रत्येक मंजिल और मजिल की प्रत्येक सीढ़ी के लिए लड़ाई हो रही थी। 'रात और दिन' म सीमानोव ने स्तालिनग्राद के युद्ध म सोवियत सैनिकों के साहस और दृढ़ता का चित्र प्रस्तुत किया है। युद्ध के सामान्य सैनिक के रूप में कथा के केन्द्र म कप्तान सबूरोव है जो बटालियन का कमांडर है। उसके युद्ध के कार्य-कलाप द्वारा पाठकों के सामने स्तालिनग्राद का चित्र प्रस्तुत होता है। कथा म वर्णित घटनाएँ सबूरोव के सैनिकों द्वारा अधिकृत एक टूटे-फूटे मकान के चारों ओर केन्द्रित है जिसकी सोवियत सैनिक रक्षा कर रहे है और जिसे जर्मन सैनिक अपने अधिकार मे चाहते है। जर्मन फ़ासिस्टों से इस मकान की रक्षा उन कार्य-कलापों का आधार है जो कि इस कथा म विकसित होती है। इसकी मकान की रक्षा म सबूरोव और सोवियत सैनिक अपूर्व दृढ़ता साहस तथा आन्तरिक शक्ति प्रदर्शित करते हैं। डिवीजन कमांडर प्रोत्सेंको कप्तान सबूरोव उसकी प्रियतमा उसके युद्ध के साथी यह सभी लोग एसे हैं जिनका सारा आचरण, कार्य-कलाप इस तथ्य और लक्ष्य से प्रेरित है कि उन्होंने अपने को पूर्णतया स्वदेश रक्षा के लिए समर्पित कर दिया है और प्रत्येक क्षण अपना जीवन होम करने को तय्यार हैं। जब भी एक क्षण का विश्राम संभव प्रतीत होता है उस समय कप्तान सबूरोव आक्रमण का प्रस्ताव रखता है और अपनी

बटालियन के साथ जर्मनों पर आक्रमण कर देता है। इसमें सोवियत जनता की अपराजेयता और असीम देश प्रेम का निदर्शन है जो कि उसे व्यक्तिगत स्वार्थों और सभी प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पाने की शक्ति देता है।

सीमनोव की इस कथा का महत्व इस बात में है कि उसने युद्ध के संघर्ष तथा असीम कठिनाइयों का पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया और उन सोवियत देशभक्तों को चित्रित किया जिन्होंने इन बाधाओं के होते हुए भी स्वाभिमान की रक्षा की और विजय प्राप्त की। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों के बीच प्रदर्शित सोवियत देशप्रेम के स्वरूप और स्वभाव का गंभीर उद्‌घाटन सीमनोव की इस कथा का विशेष गुण है।

क्रिमोनोव की कृति 'बेलोकोव्सक पर अधिकार' की घटनाएँ नीपर नदी के पश्चिम सोवियत सेना के आक्रमणों से संबंधित है। कथा के नायक टैंक चालक हैं। उनके माध्यम से सोवियत सेना की उच्च कर्तव्य भावना और साहस का चित्रण किया गया है जो उसकी अपराजेयता का मूल स्रोत है। इसके साथ ही नायक इस भावना से ओत प्रोत हैं कि वे युद्ध द्वारा संसार का भविष्य निर्मित कर रहे हैं और उनकी दृढ़ता तथा उनके साहस पर जनता तथा मानवता का उद्धार निर्भर है।

पोलोस्कोव की कृति 'वे मातृभूमि के लिए लड़े' में दान के स्तेपों में युद्ध का वर्णन है। इसके नायकों के साहसपूर्ण कार्यों का उद्‌घाटन सोवियत व्यक्ति की मूलभूत देश प्रेम की चेतना की अभिव्यंजना के रूप में हुआ है। शालोखोव के नायक शांति प्रेमी परिश्रमी व्यक्ति के रूप में चित्रित हुए हैं जो कि शांतिमय समय को फिर से वापस लाने के लिए युद्ध कर रहे हैं। शत्रु के प्रति उनके हृदय में घृणा है क्योंकि उसने उनके शांतिमय निर्माण का काम रोक दिया। देश के प्रति अगाध प्रेम साहस एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व की भावना—यह इन नायकों की विशेषताएँ हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि यद्यपि १९४१–४५ के साहित्य में युद्ध के बीच जनता के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन हुआ है फिर भी मोर्चे के पीछे जनता के युद्ध को जारी रखने का जो कार्य और प्रयत्न है उसका

विषय बड़ा दुर्बल है। बेलोत्सकोव्स्कोयेसोवे (बलोत्सकोव्स्कोये सवक) वासिल्यान का 'नक्षा मे उदास' पनफुयोरोव का 'शान्ति के लिए युद्ध' ग्रेवेन्स्तेव की 'परीक्षा' करवाएवा की 'अग्नि' गलद्कोव की 'प्रतिज्ञा' आदि कृतियाँ इसी विषय-वस्तु को लेकर लिखी गई हैं फिर भी आलोचकों के विचार से इन कृतियों को ऐसा कलात्मक रूप नहीं प्राप्त हो सका है जैसा कि होना चाहिए। युद्ध के अंतिम वर्षों की कृति 'मोर्चे से मकान में' सैनिकों की भावनाओं का चित्रण हुआ है जो शत्रु पर विजय प्राप्त कर भविष्य के शांतिमय निर्माणकारी कार्यों के विषय में सोचने लगे हैं जिससे कि सोवियत जनता का जीवन युद्ध के पूर्व की अपेक्षा और भी अच्छा हो जाय। फिर भी शांतिमय निर्माणकारी परिश्रम की विषय-वस्तु युद्धोत्तर काल में पूर्णतया अंकित हो सकी।

नाटक

युद्ध के वर्षों में नाटकों का बड़ा विकास हुआ। सोवियत देश भक्तों के आचरण और अनुभूतियों की महत्ता को प्रदर्शित करने के लिए सभी नाट्य लेखक युद्ध के दिनों में साहित्य के इस रूप की ओर उन्मुख हुए।

रूसी जनता

युद्ध के दिनों में जनता को उद्बुद्ध तथा सचेत करने में तथा उसमें स्फूर्ति भरने में सोवियत रंगमंच का बड़ा महत्त्वपूर्ण योग है। युद्ध के वर्षों में कलाकारों के बहुत से मंडल (११८५) युद्ध के मोर्चे पर गये और वहाँ कलात्मक प्रदर्शन प्रस्तुत किये।

युद्धकालीन नाटकों के सामान्य भाव का द्योतक लेखक विश्नेव्स्की का यह लेख है जिसे उसने फासिस्टों के आक्रमण के चार दिन बाद 'प्राव्दा' के लिए लिखा था। इसमें उसने कहा कि आज के सोवियत साहित्य का लक्ष्य है अपनी सारी प्रतिभा और प्रेरणा का इस बात के लिए प्रयोग कि जनता की अनुभूतियाँ उसके क्रोध देश के प्रति उनके उद्दीप्त प्रेम तथा साहस की व्यंजना हो सके और न केवल इनका अभिव्यंजन हो वरन् युद्ध में उसे विजय की प्रेरणा तथा भावना से भरे।"

फ़ासिस्टों के विरुद्ध सोवियत जनता के 'पार्टिज़न' (छापामार) युद्ध की विषय-वस्तु युद्धकालीन नाटकों में प्रधान रहा है। इसकी अभिव्यक्ति लियोनोव के नाटकों 'आक्रमण' तथा 'ल्योमुश्का' कर्निचुक के 'यूक्रेन के स्तेपों में छापामार' अन्धकार से मिलन' 'मार्लीगर के सत्य के बारे में कथा' आदि नाटकों में हुआ है। इसके साथ ही रमाशोव के 'प्रसिद्ध वंश' क्रोन के 'प्योत्र क्रिमोव' स्तनीम्स्की के 'उत्तरवासी' नाटकों में सोवियत श्रमिकों और कमसोमोलियों के उन साहसपूर्ण कार्यों का प्रदर्शन हुआ है जिनके सहारे यह देश इतना बड़ा युद्ध इतने समय तक चला सका।

युद्धकालीन नाट्य साहित्य की सबसे बड़ी सफलता १९४२-४३ में हुई जब एक के बाद एक उच्च कोटि के नाटक जनता के सामने आये। इनमें सीमनोव के 'रूसी जनता' लियोनोव के 'आक्रमण' कर्निचुक के 'मोर्चे' अलक्सेई तोल्स्तोय के 'भयंकर तूफ़ान' सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृति के रूप में माने जाते हैं।

जब सीमोनोव का नाटक 'रूसी जनता' प्रकाशित हुआ तो तार द्वारा वह पूरा नाटक अमेरिका भेजा गया। उस समय फ़ासिस्टों के विरुद्ध रूसी जनता के साहस की कथा कहनेवाली कृतियों का विदेश में इतनी बेताबी से इन्तज़ार हो रहा था।

इस नाटक के नायक सामान्य रूसी स्त्री-पुरुष हैं जिन्हें हर जगह देखा जा सकता है। भूतपूर्व मोटर चलानेवाला शोफ़र और अब सोवियत सेना का अफ़सर सफ़ोनोव, उसकी प्रेयसी शोफ़र वाल्या, बूढ़ा रूसी अफ़सर वासिन जो अपनी अवशिष्ट शक्ति से शत्रु से लड़ने के लिए सोवियत सेना में दाखिल हुआ है तथा ग्लोबा ये सामान्य सोवियत जनता से भिन्न नहीं हैं। इनमें वही मूलभूत गुण हैं जिनसे कि सामान्य जनता निर्मित है। कर्तव्य की भावना, दृढ़ता, देश के लिए सब कुछ सहन की तत्परता—इनके चरित्र की मुख्य विशेषताएँ हैं।

कमाण्डर सफ़ोनोव की टुकड़ी एक छोटे से शहर में जर्मनों द्वारा घिरी है। कमाण्डर से लेकर सामान्य सैनिक तक यह जानता है कि मृत्यु निश्चित

है फिर भी कोई आत्म-समर्पण नहीं करता और न अपनी जगह छोड़ता है। सफोनोव बिना संकोच अपनी प्रेयसी वाल्या को खतरनाक कार्य जाँच-खबर लाने के लिए भेजता है और वाल्या बिना हिचकिचाहट के इस काम पर जाती है और अपनी बलि देने को तैयार है।

ग्लोबा और उसकी टुकड़ी का साहस उस समय विशेष रूप से प्रकट होता है जब उसकी रक्षा के लिए आती हुई सोवियत सेना से मृत्यु का संकट दूर हो जाता है किन्तु फिर से प्राप्त जीवन के अवसर और अपनी सुरक्षा को ठुकराकर वह युद्ध की भयानक स्थिति में काम करता है जिसमें यदि सब नहीं तो बहुत से तो जरूर ही नष्ट हो जाएँगे। निश्चित मृत्यु, फिर जीवन प्राप्ति का आनन्द और फिर तत्पर मृत्यु की ओर बिना संकोच के बढ़ना—इसी परिस्थिति का चित्रण इस नाटक में किया गया है। वसिन शक्तिशाली शत्रु से उन्हें पुल छीनता है और अपने अधिकार में रखता है जो सेना के यातायात के लिए अत्यावश्यक है।

सफोनोव बिना किसी प्रकार के संकोच के अपनी टुकड़ी को युद्ध में ले जाता है और अपने जीवन की चिन्ता नहीं करता। वह मानता है कि देश के प्रति कर्तव्य मनुष्य के व्यक्तिगत स्वार्थ से कहीं ऊँचा है।

सीमनोव का यह नाटक 'प्राव्दा' में छपा था और जल्दी जनता में धूम मचा। यह नाटक युद्धकालीन महत्त्वपूर्ण कृतियों में से एक है। इसमें रूसी जनता के देशप्रेम का बड़ी स्पष्टता से चित्रण किया था कि इसमें उच्च भावनाओं का प्रभाव है, शारीरिक दुर्बलता जाती है और कठिनाइयों को सहन की अपूर्व शक्ति देता है। सबसे बड़ी बात यह कि ये विशिष्टताएँ विशेष प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों में नहीं वरन् सामान्य साधारण जनता के जीवन के उदाहरण द्वारा प्रस्तुत की गयी हैं। इसमें सोवियत सेना की दृढ़ता तथा साहस का प्रदर्शन युद्ध के प्रतिदिन के जीवन की कठिनाइयों के बीच हुआ है।

इस नाटक का नायक सोवियत युग की रूसी जनता है। इसी में (रूसी जनता) सब कुछ कह दिया गया है इसी में सब कुछ छिपा है।

फ्रंट या मोर्चा

रूसी जनता के समान कोर्नेइचुक का नाटक 'मोर्चा' भी प्राव्दा में छपा था। कोर्नेइचुक एक यूक्रेनीय लेखक है किन्तु उसके नाटक ने ऐसे प्रश्न को उठाया जिसका कि सारे देश से सम्बन्ध था। इसलिए वह केवल यूक्रेनियों की ही चीज नहीं वरन् सोवियत साहित्य की कृति बन गयी।

यह नाटक १९४२ की ग्रीष्म के संकटापन्न दिनों में प्रकाशित हुआ जब कि जर्मन फ़ासिस्ट स्तेपी को पार कर गये थे। काकेशस खतरे में था और जर्मन स्तालिनग्राद तक पहुँच गये थे।

देश के ऐसे संकटापन्न दिनों में कोर्नेइचुक ने बड़े साहस के साथ उन सेनाधिपतियों का चित्र खींचा जो आत्म-सन्तुष्ट थे और जो अपने प्राचीन अनुभवों पर निश्चिन्त बैठ युद्ध की नवीन वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से बेख़बर थे। आज का युद्ध-विज्ञान कमाण्डरों के सामने नयी माँगें प्रस्तुत कर रहा है। इनको न समझने का अर्थ है पराजय तथा नाश। जनरल गोर्लोव एक ऐसा ही सेनाधिपति है जो गृह-युद्ध के समय ऊपर उठा और जिसका बड़ा प्रभाव है। किन्तु वह नये युद्ध-विज्ञान की आवश्यकताओं को न समझता है और न उनके लिए तय्यार है। चापलूसियों से घिरा हुआ वह स्पष्ट स्वतन्त्र सम्मतियों को दबा देता है। इसका परिणाम होता है युद्ध में असफलता और देश की मूल्यवान निधि सोवियत जनता का नाश। गोर्लोव का चरित्र यह प्रकट करता है कि युद्ध में विफलता शत्रु की बड़ी बड़ी शक्ति के कारण नहीं होती वरन् इसलिए होती है कि जिन लोगों को देश की रक्षा का भार सौंपा गया है वे युद्ध के नवीन विज्ञान से परिचित नहीं हैं। गोर्लोव के विपरीत कोर्नेइचुक जेनरल ओग्नेव का चित्रण करता है जो युद्ध के अनुभवों से पुष्ट है और शत्रु से भी सीखने को तैयार है और फिर उसे सबक सिखाने को तय्यार है।

इस नाटक ने इस प्रकार कमाण्डरों को आत्मालोचना के लिए विवश किया और उनको हर क्षण युद्ध की नयी बातें सीखने और तत्पर रहने को प्रेरित किया जिससे कि उनमें जेनरल गोर्लोव के संस्कार न आ जायें। इसके साथ ही इस नाटक ने देश के विजय में उस आत्म-विश्वास को भी

प्रकट किया जिससे कि वह सामयिक असफलताओं के बावजूद युद्ध का संचालन कर रहा था। इस नाटक में त्रुटि स्वीकार और आत्म-भक्ति दोनों का प्रदर्शन किया गया है। कर्निचूक के इस नाटक का महत्त्व इस बात में है कि इसमें साहित्य के नकारात्मक नायक के चित्रण का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। साहित्य का एक लक्ष्य जीवन में अद्यापि अविजित त्रुटियों का प्रदर्शन तथा लोगों की बुराइयों की आलोचना भी है। 'मोर्चा' नाटक इसी नव्य जीवन के विकास में बाधा डालने वाली सभी त्रुटियों की पुष्टि युद्ध करता है।

आक्रमण

सीमनोव ने सामान्य सैनिकों का देश प्रेम प्रदर्शित किया। कर्निचूक ने उनके सेनापतियों का और लियोनोव ने देश प्रेम की शक्ति का और यह दिखाया कि देश-प्रेम किस प्रकार व्यक्ति को अपनी तुच्छ भावनाओं स्वार्थपरता तथा अन्य व्यक्तियों से अपनी भिन्नता की भावना पर विजय प्राप्त करने में सहायता देता है। लियोनोव के नाटक का नायक फ्योदोर ऐसे समय अपने शहर में वापस लौटता है जब कि जर्मन उसमें प्रवेश करने वाले हैं। वह न उनके साथ सहमत है जो कि शहर छोड़ कर जाना चाहते हैं और न उनके साथ जो छापेमार रूप से जर्मनों से लड़ना चाहते हैं। वह अभी-अभी कई वर्ष जेल में बिता कर लौटा है। वह स्वयं लोगों से अलग रहा है। इसलिए लोग उसका ऐसे महत्त्वपूर्ण क्षण में विश्वास नहीं कर पाते। एकाकी, अन्दर ही अन्दर उसमें बड़ा मानसिक संघर्ष होता है।

लियोनोव यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार फ्योदोर में देश भक्ति का भाव पुष्ट होता है और बाधाओं के होते हुए भी अपमान शोक और अपने अहं पर विजय प्राप्त करता है। फ्योदोर म अच्छी भावनाओं का पुनर्जन्म होता है। वह इस युद्ध में भाग लेता है और देस्तापों या वूक्रिया के आदमी को मार डालता है। जर्मन वूक्रिया को धोखे में डाल कर वह अपने को पार्टिजन या छापामारों का कमांडर बताता है। इस प्रकार वह असली कमांडर को बचा लेता है और वीर की तरह मरता है।

इस नाटक का मुख्य भाव यह है कि देशप्रेम का भाव सभी रूसियों को एक धागे में पिरो देता है उनकी तुच्छ स्वार्थ भावनाओं को नष्ट कर देता है और उन्हें देश के युद्ध में सच्चा बलिदानी योद्धा बना देता है। इस नाटक में सोवियत सेना की अपराजेयता तथा शत्रु की तुलना में उसकी कहीं अधिक नैतिक श्रेष्ठता की भावना को व्यंग्य से समन्वित सामाजिक मनोवैज्ञानिक नाटक के रूप में अभिव्यक्ति मिली।

रूसी जनता' 'आक्रमण' और 'मार्चा' का समस्त युद्धकालीन नाट्य साहित्य पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। सीमोनोव कोर्नियूक तथा लिओनोव ये नाटक स्तालिन पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत हुए।

युद्ध के अन्तिम वर्षों में ऐसी नाट्य कृतियाँ सामने आईं जिनमें विजय की ओर बढ़ती हुई सोवियत जनता के फ़ासिज्म के विरुद्ध साहसपूर्ण कृत्यों को अमर बनाने का प्रयत्न लक्षित होता है। विश्नेव्स्की का नाटक लेनिनग्राद की दीवालों के पास लेनिनग्राद की रक्षा व सबधित नाटक है। चेपूरिन का नाटक स्तालिनग्राद वाले' स्तालिनग्राद की रक्षा के साहसपूर्ण कृत्यों का चित्रण करता है। सेवस्तोपोल के नाविकों का साहसपूर्ण चित्र लवरेनेव के नाटक 'काला सागर का गीत' में सुरक्षित है। इन नाटकों के रचयिताओं ने इतिहास ध्वंसक का घटनाओं की विशालता और उनके ऐतिहासिक महत्त्व को प्रस्तुत किया है। कान के 'जहाजी बेड़ा का अफ़सर नाटक में सोवियत नौसेना के आदर्श अफसर का चित्र है।

इस प्रकार युद्धकालीन नाटकों ने सन् २०-३० के नाटकों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उसे नवीन ऐतिहासिक विषय-वस्तु प्रदान किया और इस परंपरा को समृद्ध बनाते हुए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

ऐतिहासिक उपन्यास

युद्ध के वर्षों में ऐतिहासिक कथावस्तु का सोवियत साहित्य के बीच महत्त्वपूर्ण उद्भावन हुआ। जनता अपने उन महान् पूर्वजों का अलेक्सान्द्र नेव्स्की दिमित्री दोन्स्कोय अलेक्सान्द्र सुवोरोव मिखाईल कुतुज़ोव आदि का बराबर स्मरण करती रही जो कि रूस के सम्मान और उसकी

स्वाधीनता के लिए लड़े। सुवोरोव कुतुज़ोव उषाकोव नख़ीमोव आदि के चित्र सैनिकों को युद्ध में बराबर प्रेरणा और स्फूर्ति देते रहे।

युद्धकालीन ऐतिहासिक कृतियों की कथावस्तु मुख्यतया उन युगों से संबंधित है जब कि रूसी राष्ट्र की एकता और जातीय स्वतन्त्रता के लिए प्रबल प्रयत्न हुए। इवान भयंकर के युग ने बहुत से लेखकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया क्योंकि यह रूसी राष्ट्र के केन्द्रीकरण के इतिहास का महत्त्वपूर्ण समय माना जाता है।

युद्ध के वर्षों में इवान भयंकर से संबंधित कई कृतियाँ सामने आईं — अलेक्सेई तोलस्तोय के नाटक, सेल्वीन्स्की तथा सोलोव्येव के नाटक 'लिवोनियाई युद्ध' और 'महान् शासक' और कस्तिल्योव का उपन्यास 'इवान भयंकर'। कस्तिल्योव के उपन्यास 'इवान भयंकर' में इवान के शासन संबंधी कार्यों को इस मुख्य विचार से प्रेरित किया गया है कि इवान रूस की एकता और राष्ट्र का केन्द्रीकरण चाहता है और रूस की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति मज़बूत बनाना चाहता है। लेखक सोलहवीं शताब्दी के रूसी समाज तथा जनता के जीवन का चित्र प्रस्तुत कर रहा है जिसमें सभी स्तर और सभी वर्ग बयार, सौदागर, किसान आदि चित्रित किये गये हैं। आलोचकों का कहना है कि लेखक ने इसमें इवान की वैदेशिक नीति पर अधिक ध्यान दिया है और उसकी गृहनीति पर, सोलहवीं शती के रूस के सामाजिक संघर्ष और जन-जीवन पर कम। उनकी दृष्टि में यह इस उपन्यास की त्रुटि है।

भिन्योव का नाटक 'सेनानायक' और गोलुबव की कथा 'बग्रातिओन' इतिहास के दूसरे युग से संबंधित हैं। इनमें सन् १८१२ में नेपोलियन के विरुद्ध जनता का देशप्रेम, नेपोलियन की सेना का नाश तथा पार्टिज़नों का छापामार युद्ध दिखाया गया है। गोलुबव की इस कथा की कमी यह मानी जाती है कि 'बग्रातिओन' के चित्रण में लेखक ने केवल उसके सेनानायक के रूप को उभारा है। फलतः उसके जीवन और चरित्र के अन्य पक्ष धूमिल पड़ गये और उसका चित्र अच्छी तरह से निखर न सका।

स्तेपानोव के उपन्यास 'पोर्ट आर्थर' का मुख्य विषय है जनता का साहस, युद्ध कला की समस्या और युद्ध का मनोविज्ञान। यह उपन्यास बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसमें (१९०४–१९०५) के रूसी-जापानी युद्ध में इस किले की रक्षा तथा उसके पतन का इतिहास चित्रित है। फिर भी इसमें १९०५ की क्रान्ति के निकट देश की जो सामान्य स्थिति थी और देश का जैसा वातावरण था उससे युद्ध की घटनाओं का जो राजनीतिक तथा सामाजिक संबंध था उसका पूरा-पूरा उद्घाटन नहीं हो सका।

सोवियत आलोचकों की दृष्टि से युद्धकालीन कई ऐतिहासिक कथा-वस्तु वाली साहित्यिक कृतियों में देश के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के चित्रण में कुछ सैद्धान्तिक राजनीतिक गलतियाँ रह गयी थीं। कतिपय कृतियों जैसे सर्गेयेव के 'बिसाती' यरतुश्तोवा के 'जहाज समुद्र में जा रहे हैं' में अतीत का आदर्शीकरण हुआ है। प्रभु वर्ग के कई लोगों को बड़ा आकर्षक चित्रित किया गया है और रूसी राष्ट्र के वर्ग प्रधान रूप को भुला दिया गया है। इसी प्रकार प्रथम महायुद्ध से संबंधित कुछ कृतियों में रूसी सैनिक का साहस तो चित्रित किया गया है किन्तु यह नहीं बताया गया है कि कम्यूनिस्ट पार्टी इस युद्ध में ज़ार की पराजय चाहती थी और ज़ारशाही को नष्ट करने के लिए इस युद्ध को गृह-युद्ध में परिवर्तित करना चाहती थी। उनके मतानुसार ऐतिहासिक घटनाओं के बुर्जुआ लिबरल विकृतीकरण ने इन कृतियों के कलात्मक स्तर को नीचा कर दिया।

१० अलेक्सान्द्र अलेक्सेन्द्रोविच फ़देयेव

[१९०१–]

अलेक्सान्द्रोविच फ़देयेव उन सोवियत लेखकों में है जो अपने कार्यकलाप के आरम्भ से ही सोवियत जन के निर्माण में भाग लेते रहे हैं और जिनकी रचना को इस निर्माण के प्रत्यक्ष अनुभव से सामग्री मिलती रही है। फ़देयेव का जन्म २४ दिसम्बर १९०१ में हुआ था। सन् १९१८ में वह बोल्शेविक पार्टी में दाखिल हो गया। गृहयुद्ध के वर्षों में उसने सोवियत शत्रुओं के विरुद्ध सक्रिय युद्ध में भाग लिया। १९१९–१९२१ में वह 'पार्टिज़न' बना और बाद में लाल सेना में वह कुमिसार तथा जापानियों के विरुद्ध लड़ा। वह एक विद्रोह के दबाने में बुरी तरह घायल भी हुआ। गृहयुद्ध के बाद वह पार्टी के काम में लग गया।

उसकी रचनाओं के मूल में गृहयुद्ध के संस्कार हैं। १९२१ से उसने लिखना शुरू किया। १९२३ में उसने अपनी कथा 'बाढ़' समाप्त की। 'बाढ़' की विरुद्ध-कथा की कथा-वस्तु गृहयुद्ध से संबंधित है। १९२७ के उपन्यास के प्रकाशन से उसकी ख्याति बहुत बढ़ी। उसने 'राप' (रूसी प्रोलितारियत लेखक आर्गेनिज़ेशन) में बहुत काम किया और बाद में सोवियत लेखक संघ का सेक्रेटरी हो गया। 'उदेगे के आखिरी' तथा 'युवक रक्षक' उपन्यासों से उसका नाम और भी बढ़ा। वह लेनिन के आर्डर द्वारा पुरस्कृत हुआ और उच्च सोवियत का डिप्टी चुना गया। वह लेखक संघ का संचालक है और कम्युनिस्ट पार्टी की सेंट्रल कमेटी के सदस्य के रूप में पार्टी का काम भी करता है।

मात

फ़देयेव का उपन्यास 'मात' सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है जो गृह-युद्ध से संबंधित है। इस उपन्यास के लिखने में उसने बड़ी मेहनत की। उसके कथनानुसार इसमें ऐसे अध्याय भी हैं

था बीस बार लिखे गये और चार पाँच बार से कम लिखा गया उसमें कोई अध्याय नहीं है। युद्ध के बीच मानवीय चरित्र का विकास और परिवर्तन तथा क्रान्तिकारी युद्ध का चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। गृहयुद्ध के बीच मनुष्य की परीक्षा होती है उसका चुनाव होता है।

उपन्यास के केन्द्र में बोल्शेविक लविसोन है जिसमें क्रान्ति के बीच पार्टी का रूप उद्घाटित होता है। क्रान्ति के बीच वह संगठन की अपूर्व क्षमता प्रदर्शित करता है। लविसोन का चित्र सोवियत साहित्य के अत्यन्त सफल बोल्शेविकों के चित्रों में से एक है। मेचिक के रूप में उन बुद्धिजीवियों का भाग्य प्रदर्शित किया गया है जो बहुधा व्यक्तिवाद के शिकार हैं और जनता से असंबद्ध होने के कारण कायर हैं। वह केवल अपने लिए है इसलिए वह अपने लिए उच्च जीवन में महत्वपूर्ण स्थान नहीं प्राप्त कर पाता। वह अकेला रह जाता है और परीक्षा के क्षण में इस टुकड़ी का पता शत्रु को दे देता है।

फदेयेव एक छोटे से पार्टिजन (छापामार) समुदाय के माध्यम से उन मूलभूत शक्तियों को प्रदर्शित करता है जिन्होंने गृहयुद्ध में भाग लिया। बोल्शेविकों का संगठनकारी कार्य क्रान्तिकारी आंदोलन में मजदूरों या श्रमिकों का महत्त्व बुद्धिजीवियों और किसानों के भिन्न भिन्न स्तरों सामाजिक जीवन के विश्लेषण की गहराई—यह फदेयेव की मुख्य विशेषता है जो उसकी कृतियों को महत्त्व प्रदान करती है।

गोर्की के उपन्यास 'माँ' से 'मार' उपन्यास का मूल भाव बहुत कुछ मिलता जुलता है जैसे 'माँ' उपन्यास में बाह्य रूप से नायक की पराजय है फिर भी उपन्यास जनता की भविष्य की विजय के विश्वास से पूर्ण है उसी प्रकार 'मार' उपन्यास में यद्यपि लेविसोन की टुकड़ी नष्ट हो गयी और उसमें केवल १९ आदमी बचे हैं फिर भी यह स्पष्ट है कि क्रान्ति नष्ट नहीं हुई उसका पीछा चलता है। साधिगान के साथियों का वीरता पूर्ण अन्त यह बता रहा है कि जनता अपने में फिर से कोई नयी शक्ति का अनुभव करेगी और फिर से युद्ध छेड़ेगी ?

उपन्यास की रचना पात्रों के चित्रण का सिद्धान्त जीवन में जो

कुछ है केवल यही नहीं वरन् यह भी कि उसमें प्रौढ़ हो रहा है उसके चित्रण की क्षमता यथार्थता का क्रान्तिकारी विकास के बीच चित्रण यह सब बताते हैं कि इस उपन्यास में समाजवादी यथार्थवाद का पूरा-पूरा समावेश हुआ है। फ़देयेव उपन्यास के पात्रों के विभिन्न पक्षों को प्रदर्शित करता है, उनकी अनुभूतियों की गहराइयों में पाठकों को ले जाता है उनके चारों ओर के वातावरण को बड़े विस्तार से चित्रित करता है जिससे कि उनके व्यक्तित्व का बड़ा ठोस और स्पष्ट चित्र उभरता है।

उपन्यास के केन्द्र में लेविन्सन है उसके माध्यम से बोल्शेविक का नेता का तथा संगठनकर्ता का चित्र प्रस्तुत किया गया है। फ़देयेव बड़े कौशल से यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार अपनी मानवीय दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त कर अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को व्यापक सामाजिक लक्ष्य के अधीन कर, वह अपनी सारी शक्ति क्रान्ति की सेवा में लगा देता है और उन लोगों का संगठन करता है जो उसका विश्वास कर मौत के मुँह में भी जाने को तैयार हैं। मानवता के आनन्द का जो स्वप्न वह देखता है वह उसे कठिन क्षणों में नवीन शक्ति देता है और जीवन में उसका विश्वास बना रहता है। वह संगठनकर्ता भी बहुत बड़ा है और अपनी टुकड़ी में अनुशासन रखता है। अनुशासन भंग करनेवालों को वह तिरस्कार से समझाता है और जानबूझ [illegible] मरोज़्का को न्याय के हवाले कर देता है। सब जानते हैं कि वह केवल आदेश ही नहीं देता वरन् उसकी स्वयं की कार्यस्थिति भी होती है। इसी से सब उसके अनुशासन में रहते हैं। बोल्शेविक विचारों की आन्तरिक शक्ति से ही वह टुकड़ी को अपने अनुशासन में रखता है।

मरोज़्का चोरी भी करता है और शराब भी पीता है फिर भी वह देशसेवा के लिए तय्यार है और वह इस काम में देश के लिए बिना हिचकिचाहट के अपनी बलि दे देता है।

इस उपन्यास के मूल में समाजवाद का विचार है। लेखक गृहयुद्ध की घटनाओं को समाजवाद की दृष्टि से देखता है। वह समाजवाद के इस युद्ध को देशभक्ति के जन-आन्दोलन के रूप में चित्रित करता है।

इसका संचालन बोल्शेविक पार्टी कर रही है जिसका प्रतिनिधि छेबिसोव है और जो स्वयं पार्टी नेतृत्व से निर्देशन प्राप्त करता है। इस प्रकार समाजवाद का विचार सारे उपन्यास का संगठन करता है। वह उस उच्च आदर्श के रूप में प्रकट होता है जो लोगों को उदात्त बनाता है उनको नैतिक उच्चता प्रदान करता है और उनको मानव की स्वतन्त्रता तथा दस सेवा के भाव की शक्ति से भर देता है। जितना ही मनुष्य इस आदर्श के निकट और इसमें विलय है उतना ही ऊँचा और महत्वपूर्ण उसका नैतिक रूप होता है और इसके उल्टा जितना ही मनुष्य इससे दूर जाता है वह अपने नैतिक गुणों को खो देता है। र्विमोव इस आदर्श का मूर्तिमान रूप है और मचिक इसका विपरीत।

उपन्यास इस प्रकार समाजवादी यथार्थवाद का उदाहरण प्रस्तुत करता है। कलात्मकता इसकी विशेषता है। समाजवादी आदर्श विशिष्ट सपन्न नायक का विकास क्रान्तिकारी विकास के बीच जीवन का चित्रण कलात्मकता—इन सबका इस उपन्यास में बड़ा गहरा और व्यापक समन्वय हुआ है।

'उदेगे से आँखिरी'

यह उपन्यास बहुत बड़ा है। इसका तीसरा भाग बहुत महत्वपूर्ण है और 'नाश' से मिलता-जुलता है। इसमें भी साइबेरिया के पार्टिजन (छापामारों) का युद्ध है और बोल्शेविकों का चित्र है। इसकी नयी घटनाओं में से एक यह है कि इवान गोरों के हाथ में अमित इम्मात साएंको (जिसको मास्का कहते हैं) पड़ जाता है। उसे बहुत सताया जाता है जिससे कि वह अपने गुप्तिया साथियों का पता दे दे। वह सब प्रकार की यातना सहता है और मर जाता है लेकिन भेद नहीं देता।

इस उपन्यास का सर्वप्रथम उद्देश्य गतकालीन समाज का पूँजीवादी व्यवस्था से निकलकर प्रोलितारियत् क्रान्ति के माध्यम से समाजवाद में विकास प्रदर्शित करना है। गृहयुद्ध के युग का वर्णन करते हुए लेखक प्रायः पूँजीवादी संसार का चित्रण करता है और यह संकेत करता है कि यद्यपि यह पूँजीवादी व्यवस्था अब अतीत की वस्तु हो गयी, फिर भी इसके

समर्थक अभी जीवित हैं और क्रान्ति के विरुद्ध लड़ रहे हैं। उनका यह युद्ध केवल उनका पागलपन है। सामाजिक ऐतिहासिक घटनाओं के वैज्ञानिक संचालन के विचार की इस उपन्यास में बड़ी स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

द्वितीय युद्ध के पहले के फ़ादेयेव के उपन्यासों ने सोवियत साहित्य के विकास में बड़ा योग दिया। युद्धोत्तर की विषय-वस्तु के चित्रण में उसके उपन्यासों ने नवीनता का समावेश किया।

जवान गार्ड या युवक प्रहरी

द्वितीय महायुद्ध की घटनाओं के आधार पर फ़ादेयेव ने 'जवान गार्ड' या 'युवक प्रहरी' उपन्यास की रचना की। इस उपन्यास में सोवियत जनता का गंभीर चित्रण हुआ और युद्ध के दिनों में प्रकट होने वाली उसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को बड़ी स्पष्टता से प्रस्तुत किया गया।

उपन्यास का घटनात्मक आधार

यह उपन्यास युद्ध की यथार्थ घटनाओं पर आधारित है। २० जुलाई १९४२ में जर्मनों ने दनबास के एक शहर 'क्रास्नोदोन' पर अधिकार कर लिया। जनता पर उनका अत्याचार शुरू हुआ। शहर के जो नवयुवक बाहर न जा सके थे उनके लिए यह अत्याचार सहन-सीमा से बाहर हो गया। सोलह वर्ष के अनेक नवयुवकों ने सितम्बर में 'युवक प्रहरी' के रूप में अपना गुप्त संगठन किया। अक्टूबर तक उसमें १०३ युवक आ गये और कोशेवोय इस गुप्त संगठन का कमिसार बना। युवक प्रहरी संगठन ने चार महीने काम किया। जर्मन सैनिकों तथा पुलिस को नष्ट किया और लाल सेना के आने के समय विद्रोह करने के लिए शस्त्र इकट्ठे किये। किन्तु लाल सेना द्वारा नगर उद्धार से पहले ही जनवरी में जर्मनों को इस संगठन का पता लग गया और इस संगठन के १०३ व्यक्तियों में से कुल आठ बचे। १९ मार्च १९४३ में अनेकों के शव का पता लगा जिन पर क्रूर अत्याचार के चिह्न थे।

लेखक ने इस युवक प्रहरी संगठन के सारे कार्यकर्ताओं को, बिना एक को भी छोड़े, चित्रित करने का तथा युवक प्रहरियों के चरित्रों को

सत्यता के साथ उद्घाटित करने का लक्ष्य अपने सामने रखा। इस उद्देश्य से लेखक ने घटनास्थल पर जाकर खुफिया संगठन के जीवन की बहुमूल्य सामग्री एकत्रित की। संबंधित कागजों से परिचित हुआ और नायकों के संबंधियों तथा निकटस्थों से पूछताछ की। 'युवक प्रहरी' उपन्यास इसी का परिणाम है। यथातथ्य वर्णन के प्रयत्न के साथ साथ इसमें कल्पना का भी योग है। स्तखोविच सफानोव तथा मन-वीली अरसोवक के चित्र कल्पना प्रसूत हैं। फिर भी उपन्यास मूल रूप में यथातथ्य घटनाओं पर आश्रित है।

उपन्यास का महत्त्व

इस उपन्यास का महत्त्व केवल इस बात में नहीं है कि इसमें युद्ध की एक महत्त्वपूर्ण घटना की स्मृति आगे की पीढ़ी के लिए यत्न से सुरक्षित है वरन् इस ऐतिहासिक घटना के माध्यम से नये सोवियत युग के नवयुवकों की सामान्य विशिष्टताएँ प्रदर्शित की गयी हैं जो सोवियत समाज में और नवयुवकों में पुष्ट हुईं जिनका पोषण सोवियत साहित्य कर रहा है। फदेयेव का योगदान इस बात में है कि युवक वर्ग इन पात्रों के रूपों में स्वदेश सेवा का आदर्श देखता है और इनके उदाहरणों पर अपने को ढालना चाहता है और इस बात में कि उसने उपन्यास की मूल-भूत घटनाओं को युग के राजनीतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक प्रश्नों से समन्वित कर दिया। उपन्यास की यह घटना द्वितीय युद्ध की केवल विशिष्ट घटना के रूप में नहीं चित्रित है वरन् उसका सम्बन्ध व्यापक 'जातीय या राष्ट्रीय विचार से जोड़ दिया गया है और क्रास्नोदोन के नवयुवकों की विशिष्टताएँ नयी सोवियत पीढ़ी की विशिष्टताओं के रूप में प्रदर्शित की गई हैं।

उपन्यास में सोवियत जनता की पिता-पुत्र की दो पीढ़ियाँ चित्रित हैं—वे लोग जिन्होंने गृहयुद्ध में लड़कर देश के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त की और वे जिनको आज विदेशी आक्रमण के विरुद्ध में अपनी परीक्षा देनी है और यह प्रमाणित करना है कि वे देशभक्त पिता की देशभक्त संतान हैं।

पुरानी पीढ़ी

पुरानी पीढ़ी कम्यूनिस्टों के रूप में चित्रित की गयी है। फ़िलिप पेत्रोविच ल्यूतिकोव, इवान फ़्योदोरोविच प्रोत्सेंको, निकोलाइ प्योत्रोविच बाराकोव, पोलीना गिओर्गियेव्ना सोकोलोवा तथा अन्य यह लोग बड़े अनुभवी हैं और शत्रु के विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं। ल्यूतिकोव तथा बाराकोव उसका भेद लेने के लिए जर्मनों के साथ काम करते हैं और अपने मित्रों के संदेह तथा घृणा के पात्र बनते हैं। ल्यूतिकोव के संचालन में क्रास्नोदान के नवयुवक शत्रु के विरुद्ध खुफ़िया काम करते हैं।

फ़देयेव ने ल्यूतिकोव का चित्रण बड़े विस्तार से किया है और उसकी दृढ़ता तथा उसके संकोचशील स्वभाव को प्रदर्शित किया है। उसके रूप में पार्टी के संचालक का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो खुफ़िया रूप में शत्रु के पीछे काम करने के लिए वहाँ रुक जाता है और जनता को शत्रु के विरुद्ध युद्ध करने के लिए संगठित कर लेता है।

यह उपन्यास बतलाता है कि सब कुछ बहादुरी या आत्मविश्वास में ही नहीं है बल्कि उन आदर्शों के चेतन ज्ञान में है जिनके लिए वह शत्रु से लड़ रहा है और जो उसे इतना ऊँचा उठा देते हैं और उसमें इतना साहस भर देते हैं। साथ ही यह साहस किसी व्यक्ति विशिष्ट का नहीं है वरन् सामूहिक साहस है जनता का साहस है। सोवियत व्यक्ति की आत्मिक उच्चता इस भावना पर आधारित है कि उसका जनता के साथ अविच्छिन्न संबंध है। वह इस बात का अनुभव करता है कि जनता उसके साथ है और यही चेतना उसे अप्रतिम शक्ति देती है। इसी शक्ति से पुष्ट कोम्सोमोलों का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है और वे जनता के साथ उसी ऐक्य को लिया नयी पीढ़ी को दे रहे हैं।

नयी पीढ़ी

सोवियत लोक दृष्टि की यह आधारभूत विशेषता जो सोवियत शासन में जनमी और पार्टी ने जिसकी शिक्षा दी नयी पीढ़ी में पूरी-पूरी विद्यमान है। इस नयी पीढ़ी के लिए अपने व्यक्तिगत भाग्य को जनता तथा देश

के भाग्य से अलग करना असंभव है। वह अपने को देश का अविभाज्य अंग समझती है। इसी से यह पीढ़ी शत्रु के विरुद्ध अपने काम आप शुरू कर देती है। युवक प्रहरी' का एक नायक अनातोली पत्त्य कहता है कि पितृ भूमि संकट में है—ऐसे संकट में है जिसे न देखना जिसके बारे में न सोचना असम्भव है—फौरन काम करना चाहिए। दूसरी नायिका उल्या ग्रोमोवा कहती है मैं समझ गयी मेरे लिए दूसरा रास्ता नहीं। या मैं इस प्रकार जी सकती हूँ या मैं बिल्कुल नहीं जी सकती हूँ। मैं माँ के सामने प्रतिज्ञा करती हूँ कि आखिरी साँस तक मैं इस रास्ते से न हटूँगी। और वह जर्मनों से युद्ध करता है।

उपन्यास में क्रास्नोदान के नवयुवकों के प्रतिनिधियों का जो चित्रण हुआ है उसमें उनकी अपनी विशेषता है और उनका अपना व्यक्तित्व है फिर भी उद्देश्य और अनुभूति की एकता उनको एक बना देती है। नयी तथा पुरानी दोनों पीढ़ियाँ अपने को जनता का प्रतिनिधि समझती हैं और अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करती हैं। उनके विचार और कार्य इसी से निर्धारित होते हैं। उपन्यास में इन दोनों पीढ़ियों का बड़ा रोचक चित्रण हुआ है।

उपन्यास में मित्रता वफादारी और निर्मल प्रेम का भी चित्रण हुआ है। अपने मित्र ज्योरा की सहायता करने के लिए वान्या ज़ेमनुखोव अपनी प्रियतमा के साथ शहर छोड़कर चले जाने का प्रस्ताव नहीं स्वीकार करता और वान्या बरसोव ज्योरा के साथ रहता है जिससे कि जर्मनों के आने के समय बीमार ज्योरा अकेला न रह जाय। वफादारी की असली मित्रता बलवान हृदय में ही निवास करती और यह 'युवक प्रहरी' जघन्य यंत्रणा के बीच अपनी इसी आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। जब उन्हें फाँसी के लिए ले जाया जाता है तो वे गीत गाते हैं।

मित्रता के साथ-साथ युवक-युवतियों के बीच विद्यमान निर्मल प्रेम का भी चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। अनक और नीना मिरोना और वान्या वान्या और ज्योरा तथा अन्य सब प्रेम की उच्च भावना से संबंधित

है जो कि उनको सामाजिक कर्तव्य से विमुख नहीं करती वरन् उसके पालन करने के लिए और भी दृढ़ता तथा बलिदान की शक्ति देती है। जब वान्या क्लावा से कहता है कि इस खुफिया संगठन में काम करने से मौत का खतरा है तो वह उत्तर देती है कि मैं तुम्हारे साथ मरने को तैयार हूँ। और सचमुच म अंतिम क्षण में क्लावा जान में वान्या का साथ देती है।

परिवार का जो चित्र इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है उसमें बड़े और बच्चों के बीच भावना की एकता है। इसी से संकट के समय सारा परिवार एक मन से काम कर पाता है। कई महीने जो 'युवक प्रहरियों' का संगठन बिना कोई नुकसान उठाए काम कर सका और शत्रुओं को हानि पहुँचा सका उसका मुख्य कारण यह है कि युवकों ने बड़ों के अनुशासन में काम किया और संकट के क्षण में माता-पिता ने चुपचाप अपनी संतान देश को सौंप दी।

बच्चों के जीवन में स्कूल का जो योगदान है उसे भी इस उपन्यास में प्रदर्शित किया गया है। 'युवक प्रहरी' उपन्यास स्तालिन-पुरस्कार से पुरस्कृत हुआ। सोवियत साहित्य के युद्ध से संबंधित उपन्यासों में इसका बड़ा ऊँचा स्थान है।

११ युद्धोत्तर निर्माण के समय का साहित्य

[१९४५–]

२ सितम्बर १९४५ को जापान के आत्म-समर्पण पर स्तालिन ने कहा था कि हमारी सोवियत जनता ने विजय के लिए कोई भी मेहनत उठा नहीं रखी। हमने बड़े कठिन वर्ष देखे। अब हममें से प्रत्येक कह सकता है कि हम विजयी हुए।

और सचमुच में सोवियत जनता ने विजय के लिए सब कुछ होम कर दिया। किन बलिदानों के बाद उसे यह विजय मिली इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि युद्ध में सत्तर लाख व्यक्ति नष्ट हो गये। उद्योग-धंधे, कल-कारखाने, स्कूल, पुस्तकालय आदि जो नष्ट हुए उनकी चर्चा ही क्या! जर्मन अधिकार में जो क्षेत्र थे उनकी असीम हानि हुई। उसे ६७९ करोड़ रूबल में आँका जाता है जो कि उस क्षेत्र की जायदाद की दो तिहाई कीमत थी।

ऐसी हानि संसार के और किसी भी देश को नहीं उठानी पड़ी। फिर भी यह सोवियत जनता के निर्माणकारी परिश्रम की शक्ति का उदाहरण है कि १९४८ में देश का अपना उत्पादन युद्ध के पहले के स्तर पर पहुँच गया। सन् १९५२ में औद्योगिक उत्पादन युद्ध के पूर्व के वर्षों की तुलना में दुगुना हो गया। कम्यूनिज्म के निर्माण का जोश देश की नयी सफलताएँ और उपलब्धियाँ दिखा रहा है। पाँच वर्षों (१९४६–५०) में १५०० से अधिक व्यक्तियों को विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए स्तालिन-पुरस्कार मिला।

कम्यूनिज्म की ओर क्रमिक संक्रमण तथा देश के निर्माण के कार्य ने सोवियत साहित्य के सामने नये लक्ष्य प्रस्तुत किए। देश के जीवन के इस महत्त्वपूर्ण क्षण में—जब कि जीवन की नयी समस्याएँ साहित्य के सामने नये प्रश्न प्रस्तुत कर रही थीं—पार्टी सदा के समान फिर सामने आई और

उसने बताया कि सोवियत लेखकों को किन नये रास्तों पर चलना चाहिए।
जनता की चेतना के विकास में साहित्य के योगदान के महत्त्व को पार्टी बहुत अच्छी तरह समझती है। इसी से वह साहित्य की गतिविधि का आकलन तथा निर्देशन बड़े ध्यान से करती है। इस संबंध में १९४६ में पार्टी के तीन ऐतिहासिक महत्त्व के मसविदे और निश्चय प्रकाशित हुए। पार्टी के यह निश्चय साहित्य के संबंध में, नाटक के संबंध में और सिनेमा के संबंध में हैं। १९४८ में ऑपेरा के संबंध में भी पार्टी का निश्चय प्रकाशित हुआ। भाषा विज्ञान के प्रश्नों के संबंध में स्तालिन का जो काम है (मार्क्सवाद और भाषा विज्ञान के प्रश्न) उसने कला तथा विज्ञान के विकास के नये रास्ते खोले। इसने मूलभूत विचारों में सोवियत लेखकों को कलात्मक कौशल तथा भाषागत स्पष्टता तथा समृद्धि के लिए उत्साहित किया और 'रूपवाद तथा प्रकृतिवाद के विरुद्ध लड़ने में मदद दी। साहित्य तथा कला के संबंध में पार्टी का जो निश्चय था उसने इस बात पर जोर दिया कि लेखकों का निर्देशन[1] उस मूल वस्तु में होना चाहिए जो सोवियत समाज का मूल आधार है—सोवियत समाज यह नहीं सह सकता कि उसके नवयुवकों की शिक्षा सोवियत राजनीति से उदासीन रह कर हो और वे इसके मतवाद या विचारों की चिन्ता न करें। 'इसी से मतवाद हीनता या राजनीतिविहीनता या 'कला कला के लिए' की शिक्षा सोवियत साहित्य के लिए अग्राह्य है और सोवियत जनता तथा शासन के हितों के लिए हानिकारक है। दूसरे शब्दों में कम्युनिस्ट पार्टी की नीति युद्धोत्तरकाल में कलात्मक क्षेत्र में पार्टीबद्धता तथा कम्युनिस्ट विचारात्मकता के लिए युद्ध करना और फार्मलिज्म तथा कास्मोपालिटनिज्म का विरोध करना था। नाटकों और रंगमंच के बारे में पार्टी का जो निश्चय हुआ उसमें इसकी और भी व्याख्या हुई। उसमें कहा गया कि[2] 'हमारे नाटककारों और रंगमंच के कार्यकर्ताओं का यह काम है कि वे सोवियत समाज और सोवियत व्यक्ति के विषय में स्पष्ट मूल्यवान तथा कलात्मक

---

१ रूस्क्या सोवेत्स्क्या लितेरातूरा तिमोफेयेव पृष्ठ ११०
२ रूस्क्या सोवेत्स्क्या लितेरातूरा तिमोफेयेव पृष्ठ १११।

कृतियों के
तथा उनके
प्रतिबिम्बा
में हर प्रक
प्रकट हुआ
उनमें उन
लिए साह
में विरवा
पर विषम
रंगमंच के
व्यक्तिया
व्यक्ति य

नाट
था। युद्ध
में रंगमंच
सिनरिया
की धर्मी उ
को) दि
किया था।

पार्टी
में सोविय
इस प्रकार
रूप रंगका
की विचार
समझाने में

१ आधुनिक नाटकीय मनोरंजकीय लिवरामूरी दूसरा भाग पृष्ठ २।

स्तर को ऊपर उठाया।[1] सोवियत रूस कम्युनिस्ट पार्टी के निरन्तर द्वारा इन प्रवृत्तियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए समृद्ध और सुसज्जित की गयी। ज़्दानोव ने कहा कि हमारी जनता की रुचि और माँग का स्तर बहुत ऊँचा उठ गया है—सोवियत जनता सोवियत लेखकों से अपनी विचारात्मक शक्ति की मानसिक भोजन की आशा कर रही है जो महान् निर्माण की योजनाओं को पूर्ण करने में मदद दे।

सोवियत साहित्य वस्तुतः यही कर भी रहा है। स्वाभाविक रूप से उसका प्रधान लक्ष्य कम्युनिज्म के निर्माण में हर प्रकार से साथ देना है। युद्धोत्तर पाँच वर्षों ने देश के समाजवाद से कम्युनिज्म की ओर क्रमिक संक्रमण के लक्ष्य को और भी बढ़ावा दिया। शहर और गाँव के बीच के भेद का निराकरण, शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम के बीच के भेद का निराकरण तथा व्यक्तिगत और सामाजिक या सामूहिक के बीच के भेद का निराकरण जो कि अब देश के जीवन में घटित हो रहा है, अब युद्धोत्तर काल का साहित्य साहित्य में भी प्रतिबिम्बित हो रहा है। यही उसकी प्रधान और मूलभूत कम्युनिज्म के निर्माण का साहित्य है। विषय-वस्तु है।

इन निर्माणकारी कार्य के परिश्रम और उत्साह की अभिव्यक्ति अझा-एव के 'मास्को से दूर', निकोलाएवा के 'फ़सल', बबाएव्स्की के 'सुनहले तारे का नाइट', पावलेंको के 'खुशी', केतलीन्स्काया के 'हमारे जीवन के दिन', मालिन के 'भाग्य' जैसे उपन्यासों में और त्वार्दोव्स्की के 'सड़क पर' मशाल निशागोनाव के 'गाँव सोवियत पर झंडा' जैसी कविताओं में और गालिना, सफ्रोनोव आदि की कथा में हुई है। समकालीन समस्याएँ सिमोनोव के 'रूसी प्रश्न' जैसी कृतियों में प्रस्तुत हुईं। यद्यपि इन उपन्यास की घटनाओं में युद्धोत्तरकाल का समावेश हुआ है।

कम्युनिज्म के निर्माण की विषय-वस्तु के साथ-साथ द्वितीय महायुद्ध की विषय-वस्तु भी मुख्य है। 'जनता द्वारा प्राप्त युद्ध के विनाश अनुभव

1 समस्या सोवेत्स्काया लितरातूरी तिमोफ़ेयेव पृ० ११२

की व्याख्या। यह विषय-वस्तु स्वतन्त्र नहीं वरन् अन्य वस्तु-विषयों के साथ गुम्फित है। ज्दानोव ने कहा[1] "हम सोवियत नारी की विषय-वस्तु को लेंगे लेनिनग्राद की लड़की तथा वीर नारी नायिकाओं की विषय-वस्तु को लेंगे जिन्होंने युद्धकालीन महान कठिनाइयों को अपने कंधों पर झेला और (अब) आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण की कठिन समस्या के सुलझाने के लिए बड़े आत्मत्याग से काम कर रही हैं।

युद्ध से संबंधित कृतियों में पलेवोय की 'असली आदमी की कहानी' बुबेन्नोव का 'सफ़ेद बिरोज़ा का पेड़' इल्या एरेनबुर्ग का 'तूफ़ान' कताएव का 'सोवियतों के शासन के लिए' कज़ाकेविच का 'तारा' और 'ओदेर में वसंत' मुख्य हैं। इनमें न केवल युद्ध की अलग-अलग घटनाओं का वर्णन हुआ है वरन फासिस्टों के विरुद्ध युद्ध का संचालन करनेवाली और प्रेरणा देने वाली पार्टी के योगदान का तथा सोवियत सेना के यूरोप के उद्धारकारी रूप का भी वर्णन हुआ है और यह प्रदर्शित किया गया है कि सोवियत संघ स्वतन्त्रता और मित्रता के प्रगतिशील आदर्शों का संवाहक है।

तीसरा मुख्य वस्तु-विषय पाश्चात्य बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना है। ज्दानोव ने बुर्जुआ संस्कृति पर कठोराघात तथा आक्रमण करने के लिए सोवियत लेखकों का आह्वान किया क्योंकि इसका विकृत प्रभाव समाजवादी संस्कृति के विकास में बाधा डालता है।

सारे संसार में शांति की स्थापना का विषय भी युद्धोत्तर सोवियत साहित्य में विकास पा रहा है। सोवियत लेखक इसका समर्थन कर रहे हैं। तीखनोव सीमनोव एरेनबुर्ग कर्नेचुक वसिलेव्स्काया अखिल विश्व शांति समिति के सदस्य हैं। शांति के लिए संघर्ष का विषय कई लेखकों की रचना में अभिव्यक्ति पा रहा है। गुरबातोव की 'संसार के लिए शांति' सीमनोव का 'शत्रु और मित्र' तथा 'रूसी प्रश्न' त्वारदोव्स्की की 'शांति की रक्षा में', तीखनोव की 'धाराएँ' मकीवस्की की 'नीचे समुद्र में परे' तथा अन्य।

---

१ रूस्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा ल० ई० तिमोफ़ेयेव पृष्ठ १६१।

सोवियत साहित्यकारों की कई कृतियाँ ऐतिहासिक वस्तु-विषय से संबंधित हैं। इन कृतियों की विषय-वस्तु रूसी मजदूर आन्दोलन के इतिहास से संबंधित है। इनमें प्रोलितारियत क्रान्ति की तैयारी और प्रौढ़ता प्रथम रूसी क्रान्ति प्रतिक्रिया के युग और नवीन क्रान्तिकारी वेग अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति और गृहयुद्ध का चित्रण हुआ है। फेदिन के उपन्यासों 'आरम्भिक आनन्द' और 'असाधारण ग्रीष्म' में क्रान्ति के युग का समय और गृहयुद्ध के वर्ष अंकित हुए हैं। ग्लादकोव की आत्मकथात्मक कृतियाँ 'बचपन की कथा' 'अल्पनास' कृपमय में यह दिखाया गया है कि रूसी किसान लड़का किस प्रकार विकसित हुआ और किस प्रकार उसका चरित्र दृढ़ हुआ तथा रूसी गाँवों के अतीत और मेहनतकश रूसी जनता के (उन्नीसवीं सदी के अंत में उसके भाग्य के) बारे में कहा गया है। मकारोवकी रचना 'चिनगारियाँ' विश्नेव्स्की का 'अविस्मरणीय १९१९' आदि कृतियाँ इतिहास के विभिन्न युगों से संबंधित कृतियाँ हैं। देश के क्रान्तिकारी इतिहास का उद्घाटन सोवियत लेखकों के लिए बड़ा रुचिकर विषय रहा है।

युद्धोत्तरकाल में सोवियत साहित्य के विकास की वस्तु विषय-गत यही मुख्य दिशाएँ हैं और यही मुख्य समस्याएँ हैं जिन्हें कि पार्टी ने साहित्य के सामने प्रस्तुत किया।

इन विषयवस्तुओं के उद्घाटन ने सोवियत साहित्य के मुख्य लक्ष्य-युग के मुख्य नायक के रूप में सोवियत व्यक्ति का चित्रण—को दृष्टि से ओझल न किया वरन उसे और भी व्यापकता के साथ पूर्ण किया। सोवियत व्यक्ति के अंकन का ऐसा लक्ष्य भी पार्टी के निश्चय द्वारा ही प्रस्तुत किया गया था।

गद्य के क्षेत्र में उपन्यासों और कहानियों के साथ-साथ निबंधों का भी बड़ा विकास हुआ। कजाकोव की प्रगीतात्मक कहानियाँ ओवेच्किन के ग्राम्य जीवन की समस्याओं से संबंधित लेख वोल्गा-डान के निर्माण संबंधी परिचयों के क्रम तथा तेन्द्र्याकोव, ग्लीनिन आदि के लेख बड़े लोकप्रिय हुए।

युद्धोत्तरकालीन काव्य के क्षेत्र में त्वारदोव्स्की, मिखाल्कोव, शिपाचेव, सुरकोव, इसाकोव्स्की, वयोनिन आदि के गीत प्रस्तुत किये गये।

नाटकों के क्षेत्र में ऐतिहासिक नाटक (तिम्येव का 'विजयी' विश्नेव्स्की का 'अविस्मरणीय १९१९' से लेकर व्यंग्य प्रधान कृतियाँ और समकालीन कमियों तथा प्रतीकात्मक कृतियाँ लिखी गई।

निर्माण की विषय-वस्तु

युद्ध के बाद स्वाभाविक ही था कि निर्माण की विषय-वस्तु युद्धोत्तर कालीन साहित्य में प्रमुख स्थान ग्रहण करे। सोवियत लेखकों ने निर्माणकारी कार्य व परिश्रम को प्रत्येक व्यक्ति के देशभक्ति के कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया। रूसी जनता के साहसपूर्ण तथा अथक परिश्रम करने की शक्ति की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया जिसके द्वारा वह अपने देश के युद्ध में नष्ट राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक जीवन का पुनर्निर्माण करती थी। इस प्रकार जनता के जीवन तथा कम्यूनिज्म के निर्माण में व्यक्ति का सामाजिक योगदान साहित्यिक कृतियों की मुख्य वस्तु बन गया। इस विषय-वस्तु के उद्घाटन में मुख्य चित्र सोवियत सैनिक का है जो अब मार्चे से घर लौटा है और अपने को शांतिमय निर्माणकारी कार्य में लगा रहा है तथा युद्ध के उस अनुभव का प्रयोग कर रहा है जिसके बीच उसका चरित्र दृढ़ हुआ। कलखोजों के युद्धोत्तर कालीन निर्माण का तथा जीवन चित्रण तथा गाँवों के जीवन में जो समाजवादी रूप प्रकट हो रहा तथा कलखोजों की प्रगति का रोचकता है उन सबको अभिव्यक्ति करने वाली कृतियों में बबाएव्स्की के उपन्यास 'सुनहरा तारे का नाइट' तथा पृथ्वी पर प्रकाश' पान्फेरोव का 'मुक्ति' मात्स्येव का 'पूरे हृदय से' निकोलायेवा का फसल' महत्त्व हैं। कलखोजों निर्माण की कठिनाइयाँ और उन पर विजय का प्रदर्शन साल्तोव की कृति 'सवेरा' में हुआ है। १९४६ के सूखे और खराब फसल के बाद कलखोजी व्यवस्था में पुनर्गठन का चित्र प्राचीन के विरुद्ध नवीन तथा प्रगतिशील साधनों तथा विचारों के युद्ध के बीच प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार कुराल्योव

की कृति 'कम्बाइन (मशीन) चालक' और निकोलाएवा के 'एम० टी० सी० डाइरेक्टर की कहानी' में मशीन ट्रैक्टर स्टेशन के मजदूरों का चित्रण हुआ है और प्राचीनता के विरुद्ध इन प्रगतिशील लोगों का महत्त्व प्रदर्शित किया गया है जो कि काम के नये साधनों के प्रयोग के पक्ष में हैं।

बबायेवस्की के उपन्यास का केन्द्र कलखोज में काम करनेवाला नवयुवक है जो अभी युद्ध से लौटा है जो सोवियत संघ का वीर है और जो उसी साहस के साथ अब कलखोज में काम करता है जिससे कि वह युद्ध में लड़ता था। युद्ध का सैनिक शांतिमय निर्माणकारी कार्यकर्ता बन गया। पावलेंको के उपन्यास 'खुशी' में यह दिखाया गया है कि लड़ाई के कठिन वर्षों के बीच ही जब कि अभी पश्चिम में युद्ध चल रहा था पार्टी और जनता कम्यूनिज्म के निर्माणकारी कार्य में प्रवृत्त हो गई।

पावलेंको के उपन्यास के नायक कर्नल वरपायेव का मार्ग कठिन है। युद्ध में अपनी टांग खोकर और तपेदिक का मरीज बनकर वह फौज छोड़ कर क्रीमिया में अपने लिए ठिकाना ढूंढने आता है। थकान और कमजोरी महसूस करता हुआ वह अब अपने को सामाजिक कार्य के अयोग्य समझता है और अब चुपचाप विश्राम करना चाहता है किन्तु उसके चारों ओर जीवन के निर्माण का जो नया कार्य चल रहा है उसका उसके ऊपर अलक्षित रूप से प्रभाव पड़ता है और वह धीरे धीरे स्वयम् इस कार्य में पड़ जाता है। अब उसकी समझ में आता है कि वह बिल्कुल निरर्थक नहीं है और उसके युद्धकालीन अनुभव का शांतिमय परिस्थिति में भी उपयोग हो सकता है और वह साशा का संचालन करता है। इस प्रकार देश तथा जनता के हित के लिए आवश्यक कल्याणकारी कठिन परिश्रम करने में उसे खुशी मिलती है। वह जनहित के कार्यों में अपने को समर्पित कर देता है। इसी से उसके चरित्र का विकास होता है। उपन्यास का मुख्य भाव यह है कि व्यक्ति का सच्चा आनन्द जनसेवा में है और वही उसकी 'खुशी' का स्रोत है।

गरबातोव के उपन्यास 'दनबास' में नये व्यक्ति के निर्माण की समस्या प्रस्तुत की गयी है और यह दिखाया गया है कि सोवियत जनता के सर्जनात्मक निर्माणकारी कार्य के बीच नये व्यक्ति का चरित्र किस प्रकार बन रहा है और निखर रहा है।

सोवियत श्रमिक वर्ग (विशेषतया औद्योगिक क्षेत्र के मजदूरों) के जीवन से संबंधित कृतियों में कोचेतोव की कृति 'जरबीन' और केतलिन्स्क्या की कृति 'हमारे जीवन के दिन' अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। कोचेतोव के उपन्यास में रूसी श्रमिक वर्ग की वह क्रान्तिकारी परंपराएं प्रदर्शित की गई हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बराबर व्याप्त होती जाती हैं। उपन्यास का मुख्य भाव है श्रमिक वर्ग का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान। हमारे जीवन के दिन का मुख्य विषय-वस्तु व्यक्ति या समूह के परिश्रम तथा योजना को पूरा करने के गंभीर प्रयत्न से संबंधित है जिसके बीच लोगों का चरित्र निखरता और प्रौढ़ होता है। लेखिका ने यह प्रदर्शित किया है कि सोवियत व्यक्ति परिश्रम के बीच ही अपना आनंद प्राप्त करता है।

अजायेव का उपन्यास 'मास्को से दूर' परिश्रम के विषय-वस्तु का उद्घाटन अन्य उपन्यासों की अपेक्षा बड़ी पूर्णता से करता है। इसमें युद्ध के बीच शांतिमय महत्वपूर्ण निर्माण का कार्य प्रदर्शित किया गया है। मास्को से दूर पूरब में तेल की पाइप लाइन बिछाने के पहले तीन साल की योजना थी। युद्ध शुरू हो जाने पर अब बराबर सरकार ने इसी काम को दो वर्ष में पूरा करने को कहा। बहुतों का यह काम असंभव प्रतीत हुआ और बहुतों को युद्ध के बीच ऐसा निर्माण निरर्थक और महत्वहीन लगा। उनकी दृष्टि में इसे छोड़कर मास्को की रक्षा के लिए जाना अधिक महत्वपूर्ण था किन्तु निर्माण का संचालन करनेवाले बोल्शेविक युद्ध-मोर्चे के पीछे होने वाले शांतिमय कार्य दोनों का महत्व समझते हैं। वे इस कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाते हैं। उन्हें कोई बाधा अपने लक्ष्य से नहीं हटा पाती और वे अपने कार्य में सफल होते हैं। अजायेव का यह उपन्यास समाजवादी परिश्रम के प्रेम से पूर्ण है।

युद्ध का वस्तु-विषय

शांति के समय में भी युद्ध के अनुभवों का वर्णन सोवियत लेखक इस लिए करते हैं कि युद्ध की घटनाओं का कलात्मक वर्णन देकर वीर सोवियत जनता के साहसपूर्ण कार्यों का चित्रण कर वे नई पीढ़ी के चरित्र को दृढ़ कर सकें और उसमें साहस देश प्रेम आदि का भाव भर सकें।

लेखकों ने युद्ध की कल्पनाओं द्वारा उन राजनीतिक नैतिक गुणों की ओर ध्यान केन्द्रित किया है जिन्होंने सोवियत जनता को फासिस्टों पर विजय दिलाई। बहुत सी कृतियों में सोवियत सेना को फासिज्म के अभिशाप से यूरोप को मुक्त करने वाले उद्धारक के रूप में और रूस को शांति के समर्थक और शांति के योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है। इनकी कृतियों का मुख्य विषय है विजय दिलाने वाले सोवियत सैनिक और देश की रक्षा में समग्र सोवियत जनता के अनेक रूपात्मक जीवन का चित्रण। बहुत सी कृतियाँ उन लोगों की लिखी हुई हैं जिन्होंने स्वयम् इस युद्ध में हिस्सा लिया। पार्टिजन और खुफिया युद्ध में भाग लेनेवालों के इन युद्धों के कई संस्मरण प्रकाशित हुए कज्रोव का 'क्रीम में छिपे तौर से' अन्द्रेयेव का 'जन युद्ध' फ्योरोरोव का 'खुफिया' जिनमें क्षेत्रीय कम्यूनिस्ट पार्टी काम कर रही है।

इन वर्षों की कृतियों में युद्ध की मंजिलें चित्रित की गयी हैं। अब्देयेव के उपन्यास 'शत्रुओं पर वार' में युद्ध का आरम्भ चित्रित है। उसमें यह बताया गया है कि पसुकोया द्वीरा को उस स्थान से किस प्रकार हटाया गया है जहाँ कि शत्रुओं का आक्रमण का खतरा था। सोवियत जनता की संगठनशक्ति और सहन शक्ति का इसमें प्रदर्शन हुआ है।

काजकेविच के उपन्यास 'तारा' में सोवियत जासूसों के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन हुआ है जो शत्रु के मोर्चे के पीछे अपना उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करते हुए नष्ट हो जाते हैं। फिर भी यह कार्य बंद नहीं होता है क्योंकि उन मृत व्यक्तियों की जगह दूसरे सोवियत व्यक्ति आ जाते हैं और यह कार्य चलता रहता है। इसमें इस प्रकार यह दिखाया गया है कि सोवियत जनता की शक्ति असीम है और प्रत्येक व्यक्ति का जीवन देश के लिए है।

शुकोव्स्की का उपन्यास 'बाल्टिक आकाश' में समुद्री वायुयान-चालकों की कथा है जो बाल्टिक आकाश की रक्षा कर रहे हैं। इस कार्य में एक के बाद दूसरा चालक मर जाता है। सिर्फ एक वायु-चालक बचता है और उस पर वायुचालकों की दूसरी पीढ़ी तैयार करने का भार पड़ता है। इसमें सोवियत व्यक्ति का विकास उसका युद्ध कौशल तथा उसकी देश-भक्ति की भावना का उद्घाटन हुआ है।

'सफेद बिरोजा का पेड़' इसी दृढ़ता का प्रतीक है जिस प्रकार बिरोजा का पेड़ मृत्यु तक खड़ा रहता है उसी प्रकार सोवियत सिपाही मृत्युपर्यन्त देश की रक्षा के लिए दृढ़ खड़ा है।

सफेद बिरोजा का पेड़' में युद्ध के आरम्भिक युग का वर्णन और रूसी जातीय चरित्र का उद्घाटन है। इसके केन्द्र में सैनिक अन्द्रेय का चित्र है जो धीरे-धीरे अनुभव करता है और अनुभवी सैनिक बन कर मठ के कर्तव्यों का पूरा करता है। स्तालिनग्राद के युद्ध के कठिन समय का वर्णन नेक्रासोव की कहानी स्तालिनग्राद की खाइयों में' हुआ है। घिरे हुए लेनिनग्राद के साहसपूर्ण क्षणों का वर्णन 'केतलीन्स्काया के उपन्यास घेरे में' हुआ है। बहुत सी कृतियाँ पार्टिजनों 'छापामार' के युद्ध से संबंधित हैं। इनमें उन युद्धों का वर्णन है जिनका संचालन शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में इन पार्टिजनों द्वारा हुआ। कताएव का उपन्यास 'सोवियत के शासन के पक्ष में इसी प्रकार का उपन्यास है इसमें जर्मनों के विरुद्ध ओदेसा के देशभक्तों के साहसपूर्ण प्रतिरोध का वर्णन है। पार्टी ने इसकी आलोचना की और फिर लेखक ने १९५१ में इसका दूसरा रूपान्तर प्रस्तुत किया।

बरसावस्की की कहानी 'अगस्त की रात' में युद्ध का अन्तिम चरण प्रदर्शित किया गया है जब कि सोवियत सेना विजयिनी के रूप में आगे बढ़ती है और शत्रु को नष्ट करती है। युद्ध के अन्तिम युग का विराट चित्र फासिज्म का नाश सोवियत सेना की अपराजेय शक्ति और उनका उद्धार कार्यों का कजाकेविच के उपन्यास 'ओडेर में बसन्त' में मिलता है। इसमें यह दिखाया गया है कि सोवियत सेना जनता की फासिज्म से किस प्रकार रक्षा करती है और उसे समाजवादी विचारधारा प्रदान करती है।

बुर्ज़ुआ संस्कृति की आलोचना

अपनी संस्कृति की बड़ाई करने के साथ-साथ सोवियत लेखक बुर्ज़ुआ संस्कृति की आलोचना में भी लगे हुए हैं। इसे वे अपना परम कर्तव्य समझते हैं। स्वयं ज़्दानोव इसे अत्यन्त आवश्यक समझता है। उसके मतानुसार 'हमारे साहित्य का लक्ष्य केवल यही नहीं है कि हम समाजवाद पर, अपनी सोवियत संस्कृति के प्रति किये गये दुष्प्रचारात्मक प्रहारों और आक्षेपों का उत्तर प्रहारों में दें, वरन् हम साहस के साथ बर्बर ह्रासोन्मुख भ्रष्ट बुर्ज़ुआ संस्कृति पर प्रत्याघात और आक्रमण करना चाहिए।

इल्या एहरनबुर्ग के उपन्यास 'तूफ़ान' में यह विशेष रूप से दृष्टव्य है जहाँ फ़ासिस्ट जर्मनी और उसके साथियों के विरुद्ध सोवियत जनता के युद्ध का व्यापक चित्रण हुआ है।

हिटलर पर सोवियत विजय का जो ऐतिहासिक महत्त्व है उसका उद्घाटन एहरेनबुर्ग के उपन्यास 'तूफ़ान' में हुआ है। इसमें बहुत से पात्र हैं इसमें पूरे द्वितीय महायुद्ध का वर्णन है और यह दिखाया गया है कि युद्ध की घटनाओं से समकालीनों की चेतना किस प्रकार प्रतिबिम्बित हो रही है।

सीमोनोव के नाटक 'रूसी प्रश्न' और कविताओं 'मित्र और शत्रु' का मूलभूत वस्तु-विषय भी यही आलोचना है। नाटक में अमेरिकन प्रेस के सिद्धान्तविहीन कार्यकर्ताओं का चित्रण किया गया है जो सोवियत संघ को हर तरह से बदनाम करना चाहते हैं और उसके विरुद्ध झूठी बातें छापना चाहते हैं। इनसे स्मिथ की टक्कर होती है जो सच्चा संवाददाता है और जो उनकी इच्छानुसार अमेरिकन प्रेस के प्रचार के लिए सोवियत संघ के संबंध में झूठी बातें लिखने से इन्कार कर देता है।

विदेशों की बुर्ज़ुआ संस्कृति की आलोचना करने के साथ-साथ सोवियत लेखक इन देशों में के प्रगतिशील आन्दोलनों की शक्ति का भी चित्रण करते हैं।

युद्धादि वर्णन के साथ-साथ लेखकों ने शांतिमय निर्माणकारी कार्य की

अभिव्यक्ति साहित्य में बड़े उत्साह के साथ की। रूसी लेखकों ने उन सभी का हार्दिक स्वागत किया जो- निर्माण विज्ञान संस्कृति आदि के क्षेत्र में उन्नति तथा प्रगतिशीलता के संवाहक थे और उन सब की आलोचना की है जो प्रतिगामी पिछड़े हुए और समय के अनुकूल न थे। प्राचीन और नवीन के संघर्ष का इस समय के साहित्य में बड़ा ही सजीव वर्णन हुआ है। फदेयेव के उपन्यास 'भुखी किताब' में सोवियत सर्जना और विज्ञान की प्रगति रोकने वाले व्यक्तियों का चित्रण किया गया है।

लियोनोव के उपन्यास 'रूसी जंगल' में समकालीन महत्त्वपूर्ण समस्याओं का चित्रण हुआ है। यह सोवियत साहित्य की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है। लेखक को इस पर लेनिन पुरस्कार मिल चुका है। उपन्यास के सारे कथासूत्र रूसी जंगल के चारों ओर एकत्रित होते हैं। रूसी जंगल की पृष्ठभूमि में रूसी विज्ञान इवान वीखरोव का अलंकारात्मक चित्र उभरता है जो रूसी जंगलों की रक्षा के लिए बराबर लड़ता है। यह कृति केवल एक व्यक्ति का चित्र नहीं है वरन् इसमें उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी के आरम्भ के रूसी समाज का व्यापक चित्र प्रस्तुत किया गया है। अनेक प्रकार की समस्याओं के समावेश से यह कृति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन गयी है।

ग्रानिन के उपन्यास 'खोजी' में भी इसी प्रकार सैद्धान्तिक महत्त्व के प्रश्न प्रस्तुत किये गये हैं। इसकी सारी घटनाएं एक प्रयोगशाला में केंद्रित हैं। मानवीय विचार की अनंतता और उसकी सतत प्रगति इस उपन्यास का मुख्य भाव है। इसमें यह बताया गया है कि कोई उपलब्धि वैज्ञानिक अनुसंधान का अन्त नहीं है वरन् वह दूसरे अनुसंधान का पुनरारम्भ है। इस तरह खोज और उपलब्धि प्रयत्न और प्राप्ति का क्रम चलता रहता है। साथ ही इस बात पर भी जोर दिया गया है कि कोई उपलब्धि केवल किसी एक व्यक्ति की सूझ बूझ का परिणाम नहीं है वरन् समूह के सम्मिलित प्रयत्न का फल है। 'खोजी' उपन्यास में अनेक प्रकार के चरित्रों युग संघर्ष तथा नकारात्मक का संघर्ष बड़ा सजीव एवं प्रधान है।

सोवियत व्यक्ति का चित्र

युद्धोत्तर वर्षों में सोवियत व्यक्ति का जो चित्रण हुआ है उसमें विवरण की भिन्नता होते हुए भी मूलभूत समानता है। इस मूलभूत समानता का कारण सोवियत लेखकों का आदर्श है जो कि इनमें पार्टी तथा पार्टीकारिता द्वारा पुष्ट हुआ है और जो उनकी कम्यूनिस्ट समाज की रचना की प्रेरणा तथा प्रयत्न में प्रकट होता है। सोवियत व्यक्ति इसी का निर्माता है। इसी से सोवियत लेखकों ने सोवियत व्यक्ति को देशभक्त मानवता के उद्धारक कम्यूनिस्ट समाज के निर्माता सच्चे समाजसेवी तथा आत्मबलिदानी के रूप में चित्रित किया है। उस उच्च मानवता का प्रतिनिधि प्रदर्शित किया गया है जो कि मानवता के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है। मामचार के उपन्यास 'सुनहला ग्राम' में सोवियत सैनिक मायएल्की का चित्रण हुआ है जो जर्मनों द्वारा नष्ट विभिन्न देशों के व्यक्तियों का उद्धार करता है। पावलेंको के उपन्यास 'सुखी' में वोरोपायेव का चित्र भी इसी प्रकार बड़ा महत्त्वपूर्ण है। पानोवा ने अपनी कहानी 'स्पुतनिकी' में यह प्रदर्शित किया है कि किस प्रकार कार्य को सोवियत व्यक्ति कितनी जिम्मेदारी के साथ पूरा करता है और इस कार्य में व्यक्तिगत और सामाजिक ऐक्य का अनुभव करता है। बूढ़े डाक्टर बलोव और कम्यूनिस्ट दानीलोव का ऐसा ही बड़ा सुखकारी रूप प्रस्तुत किया गया है। युद्ध के बीच सामान्य सोवियत व्यक्ति का विकास उसके साहस और उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति का चित्र पूर्ण रूप में विशेषतया पोलेवोय की कृति 'असली आदमी की कहानी' में प्रकट हुआ है। पुस्तक युद्ध के बीच सोवियत व्यक्ति के चिर प्रतिदिन के साहस का प्रदर्शन करती है। सोवियत लेखकों की अधिकांश कृतियों के समान इसका कथानक भी यथार्थ घटनाओं पर आधारित है। इसमें वायुयान चालक मरेस्येव की कथा है जिसके अपंग हो जाने पर दोनों पैर काट डाले जाते हैं किन्तु वह इस पर फिर से वायुयान चालक बन जाता है। लेखक ने कम्यूनिस्ट मरेस्येव के चरित्र में उस अपूर्व दृढ़ता तथा सहनशीलता का बड़ा गहरा तथा स्पष्ट चित्रण किया है जो कि व्यक्ति में उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयत्न में ही प्रकट होती

त्वारदोव्स्की की प्रगीतात्मक प्रतिभा का उदाहरण है उसका काव्य 'घाटी से दूर'। इसमें सोवियत देश के अनन्त विस्तार का वर्णन है। इसमें कवि ने अपने देश की यात्रा की। देश के दूर क्षितिज पर दूर कार कवि को नवीन दृश्य दिखाई देते हैं। कवि इस अनन्त विस्तार का देश के लम्बे इतिहास के बीच देखता है और उसके अतीत पर दृष्टि डालता हुआ अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत करता है।

देश के पुनर्निर्माण व वस्तु-विषय की अभिव्यक्ति मिट्रोफानोव के काव्य 'गाँव सोवियत पर संज्ञा में हुई है। काव्य जनता के साहस देशप्रेम और मानवतावादिता से परिपूर्ण है। कवि यह प्रदर्शित करता है कि कार कलखोज के मित्रतापूर्ण परिश्रम के वातावरण के बीच किस प्रकार एक दूसरे के निकट आते हैं। युद्धोत्तर काल के कलखोजों के गाँवों में जो परि- वर्तन आया उसका इस काव्य में सच्चा अभिव्यंजन हुआ है।

इसी प्रकार के निर्माण कार्य के अनेक चित्र सुकोनिन नेजीरोव ग्रूदोंस्की स्मिर्नोव आदि की कविताओं में मिलते हैं। उनकी तथा अन्य कवियों की रचनाएं शांति के निर्माणकारी कार्य के प्रेम से परिपूर्ण हैं। इन रचनाओं में प्रगतिशील देशप्रेमी कम्यूनिस्ट का चित्र सामने आता है जो जनता की शक्ति का देशहित के लिए नेतृत्व तथा संचालन कर रहा है।

प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति का चित्र सामनोव की युद्धोत्तरकालीन रचनाओं ('मित्र और शत्रु १९५४ की कविताएं') में प्रस्फुटित हुआ है। गीतात्मक नायक के माध्यम से जिसके लिए परिश्रम तथा कम्यूनिज्म का निर्माण अपना निजी काम है युद्धोत्तरकालीन यथार्थता के अनेक पक्षों का उद्घाटन हुआ है। कवि कम्यूनिस्ट नैतिकता की समस्याओं—मानवीय संबंध—मित्रता वफादारी सौहार्दमयी तथा जिम्मेदारी से मानव का विरोध भी प्रस्तुत कर रहा है।

'पबेदा' (विजय) में अगस्त काव्य में विचारशील व प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति के युद्ध में निर्मित उसके चरित्र पूर्ण इच्छाशक्ति उच्च समाजवादी चेतना कम्यूनिज्म के लिए आत्म-बलिदान की तत्परता का चित्र अंकित किया है। अगस्त में लेखों में कमसोमोली कार्यकर्ताओं और

है। इस कहानी में एक अन्य कम्यूनिस्ट कमिसार वरव्योव का चित्र भी है जो प्रचारक है जो अन्तिम सांस तक अपना कार्य करता है और अपनी मृत्यु द्वारा भी कार्यों में प्रेरणा और उत्साह भरता है।

फेदिन के उपन्यासों की मुख्य विषय-वस्तु है इतिहास, मनुष्य और क्रान्ति के बीच उसका स्थान। उनमें अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व के तथा गृह युद्ध के वर्षों के कम्यूनिस्ट का चित्र अंकित किया गया है। फेदिन द्वारा प्रस्तुत कम्यूनिस्ट इजवेकोव का चित्र सोवियत साहित्य में अंकित कम्यूनिस्टों के उज्ज्वल चित्रों में से एक है। यद्यपि फेदिन ने अतीत की सामग्री का उपयोग किया है फिर भी पात्रों के चरित्र की मूलभूत विशेषताएं आज के नायकों से संबंधित हैं। फेदिन के उपन्यासों में इतिहास की प्रगति रूसी जनता तथा पार्टी की क्रान्ति के पूर्व और अक्तूबर क्रान्ति के वर्षों की घटनाओं के बीच विशाल पट पर अंकित की गयी है।

काव्य

युद्धोत्तर सोवियत काव्य की अच्छी कृतियों का मुख्य भाव है सम-कालीनता की भावना निर्माणकारी सहयोग परिश्रम का वेग शांति के लिए आंदोलन और देश का भाग्य की ओर कम्यूनिज्म की ओर बढ़ने का प्रयत्न। युद्ध के बाद जब देश शांति के निर्माणकारी कार्य में लगा और जनता देश की नष्ट भ्रष्ट राष्ट्रीय व्यवस्था के पुनर्निर्माण में प्रवृत्त हुई तो सोवियत काव्य में जनता के परिश्रम कठिनाइयों और विजय प्राप्त करने में उनके दृढ़ विश्वास और उनके जन-कल्याणकारी आत्मबलिदान की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति की।

युद्धोत्तरकाल की प्रथम महत्त्वपूर्ण कृति त्वारदोव्स्की का काव्य 'सड़क पर का मकान' है। इसमें उस मकान का चित्रण है जो कि फौजी रास्ते पर पड़ता है और उसमें रहनेवालों का चित्रण है जिनको अनेक कठिनाइयाँ सेलनी पड़ती हैं। इसके दो संस्करणों में बहुत अन्तर है। दूसरे संस्करण के अनुसार इस मकान में रहनेवाली अन्ना सिवात्सोवा शत्रु के हाथ पड़ जाती है और जर्मनी भेज दी जाती है। इसके पति आन्द्रेये के माध्यम से कवि ने सोवियत जनता की अपूर्व शक्ति और सहनशीलता का वर्णन किया है।

त्वारदोव्स्की की प्रगीतात्मक प्रतिभा का उदाहरण है उसका काव्य 'पाटी से दूर'। इसमें सोवियत देश के अनन्त विस्तार का वर्णन है। इसमें कवि ने अपने देश की यात्रा की। देश के दूर क्षितिज पर दूर बार कवि को नवीन दृश्य दिखाई देते हैं। कवि इस अनन्त विस्तार को देश के लम्बे इतिहास के बीच देखता है और उसके अतीत पर दृष्टि डालता हुआ अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत करता है।

देश के पुनर्निर्माण के वस्तु-विषय की अभिव्यक्ति निकोलायेव के काव्य 'गाँव सोवियत पर झंडा' में हुई है। काव्य जनता के साहस देशप्रेम और आशावादिता से परिपूर्ण है। कवि यह प्रदर्शित करता है कि आज कलखोज के मित्रतापूर्ण परिश्रम के वातावरण के बीच किस प्रकार एक दूसरे के निकट आते हैं। युद्धोत्तर काल के कलखोजों के गांवों में जो परिवर्तन आया उसका इस काव्य में सच्चा अभिव्यंजन हुआ है।

इसी प्रकार के निर्माण कार्य के अनेक चित्र लुकोनिन मेजीरोव, दूदोंको स्मिर्नोव आदि की कविताओं में मिलते हैं। उनकी तथा अन्य कवियों की रचनाएं शांति के निर्माणकारी काम के रस से परिपूर्ण हैं। इन रचनाओं में प्रगतिशील देशप्रेमी कम्युनिस्ट का चित्र सामने आता है जो जनता की शक्ति का देशहित के लिए नेतृत्व तथा संचालन कर रहा है।

प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति का चित्र शीमनोव की युद्धोत्तरकालीन रचनाओं ('मित्र और शत्रु १९५४ की कविताएँ') में प्रस्फुटित हुआ है। प्रगीतात्मक नायक के माध्यम से जिसके लिए परिश्रम तथा कम्युनिज्म का निर्माण अपना निजी काम है युद्धोत्तरकालीन यथार्थता के अनेक पक्षों का उद्घाटन हुआ है। कवि कम्युनिस्ट नैतिकता की समस्याओं—मानवीय संबंध—मित्रता वफादारी सेवाधर्मी तथा जिम्मेवारी से सामने का विरोध भी प्रस्तुत कर रहा है।

'पर्वेद (विजय) व बसन्त' काव्य में निकोलायेव ने प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति के युद्ध में निर्मित उसके चरित्र, पूर्व इच्छाशक्ति उच्च समाजवादी चेतना, कम्युनिज्म के लिए आत्म-बलिदान की तत्परता का चित्र अंकित किया है। बसन्त में खेतों में कलखोजी कार्यकर्ताओं और

ट्रैक्टरों का दृश्य मानो विजय के लिए सेना का अभियान है।

लुकोनिन के काव्य 'काम का दिन' में मजदूरों की नयी पीढ़ी तथा युद्धोत्तरकालीन नयी यथार्थता का चित्रण स्तालिनग्राद की फैक्टरी के जीवन के बीच हुआ है।

मल्कमास्की की कविता 'मरकोव के पीछे की गली में' समकालीन सोवियत व्यक्ति का चित्र है। इसमें कवि पाठकों को अपने नायक इवान वेनादोव के जीवन की गतिविधि और चरित्र विकास से परिचित कराता है। कथा के आरम्भ में नायक छोटी उम्र में अक्तूबर क्रान्ति के आरम्भिक दिनों में गाँव से मास्को आता है। कथा का अन्त होते होते वह द्वितीय युद्ध के अन्त में राजधानी में निर्माण के कार्य में लगे हुए शिल्पी इंजीनियर के रूप में दिखाया जाता है। इस लम्बी अवधि के बीच उसका चरित्र विकसित होता है। इस काव्य में समकालीनता, समाजवादी निर्माण और व्यक्ति का बड़ा ही सजीव चित्रण हुआ है।

इसाकोव्स्की की कविता

सोवियत व्यक्ति के चित्रण में प्रगीत मुक्तकों का भी विशेष स्थान है। इन प्रगीत मुक्तकों में सोवियत व्यक्ति के आन्तरिक संसार और अनुभूतियों का चित्रण हुआ है जिनमें उसके व्यक्तित्व तथा भावनाओं की अनेकरूपता तथा समृद्धि की अभिव्यक्ति हुई है। समाजवादी देश में व्यक्तित्व का पूर्ण विकास तभी होता है जब विशिष्ट समष्टि में लय हो जाता है और व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग बन जाता है। व्यक्ति और समाज के उद्देश्यों में कोई विरोध नहीं रह जाता और व्यक्ति समाजहित में लग जाता है। उच्च उदार तथा सर्वसामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयत्न या युद्ध में उसका व्यक्तित्व पुष्ट और प्रकट होता है। सोवियत व्यक्ति के व्यक्तित्व की यह समृद्धि उसकी समाजपरक भावना समाजवादी प्रगीत मुक्तकों में प्रकट हुई है।

इन प्रगीत मुक्तककारों का सबसे बड़ा प्रतिनिधि मिखाइल वसील्येविच ईसाकोव्स्की है। 'ईसाकोव्स्की मूल रूप में गीतकार है। उनके गीत जनता में बहुत अधिक लोकप्रिय हैं। स्तालिन के विषय में

त 'कौन उनका जनता है' 'हाथ में हारमोनियम लो' 'मु मन अपनी म्मा कर,' 'उन फूल म बढ़कर कुछ नहीं' 'मजूरी चिड़िया' तथा अन्य हैं।

ईसाकोव्स्की का जन्म १९०० म हुआ। वह अक्सर इसको याद किया करता है कि अक्सर हम खाना रोटी का टुकड़ा भी नसीब न था। उसके शिक्षक ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और उनकी सहायता से ही वह इरिटजा के पास वाले गाँव के स्कूल तथा स्मोलेन्स्क म १९१७ तक पढ़ सका। १९१७ म उसने क्रान्ति का स्वागत किया। इस समय म उसका सामाजिक जीवन शुरू हुआ। १९१८ म वह पार्टी का मेम्बर बन गया। अखबारों में विभिन्न काम करने के साथ-साथ वह कविताएँ भी लिखता जाता था किन्तु य कविताएँ उसे पसन्द नहीं आईं और उसने पुरानी पाण्डुलिपियों को जला डाला। स्वयम् ईसाकोव्स्की क अनुसार उसका वास्तविक कवि-जीवन १९२१ म शुरू हुआ और १९२७ म मास्को में उसकी कविताओं का संग्रह निकला। उसका मूल-वस्तु गाँवों का समाजवादी पुनर्निर्माण है। गोर्की ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और इस कृति की प्रशंसा की। उसकी कविताएँ सादा अच्छा और अपनी ईमानदारी म उद्वेलित करनेवाली हैं। यह गोर्की का कथन था।

इस समय म सोवियत साहित्य के बीच गीतकार के रूप म ईसाकोव्स्की का अपना विशिष्ट स्थान बन गया। उसने अपना ध्यान गाँवों की ओर केन्द्रित किया और गाँवों मे उस महत्त्व बनाया।

अपनी कविताओं म ईसाकोव्स्की ने सोवियत जनता की भावनाओं का उसके गहरे देशप्रेम का तथा स्तालिन के प्रति जनता के प्रेम का अभिव्यंजन किया। उसकी कविताओं म सोवियत देश के जीवन का विशेषतया नये सोवियत गाँवों के जीवन का तथा सोवियत जनता के चरित्र की विशिष्टताओं का अनेक रूपात्मक चित्रण हुआ है। देश म रहनेवाली अनेक जातियों के पारस्परिक मित्रतापूर्ण संबंध तथा देशप्रेम का परिश्रम द्वारा उपलब्ध सफलताओं तथा उपलब्धियों पर उल्लास तथा गर्व की और युद्ध क्षेत्र में प्रदर्शित वीरता की गीतों तथा कविताओं म बड़ी काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है। देश प्रेम तथा अपनी दशा की तुलना में

अपने देश के उत्कर्ष तथा महत्ता की भावना ईसाकोव्स्की के कलात्मक काव्य को बड़ी शक्ति तथा प्रभाव प्रदान करते हैं। 'सफ़री चिड़ियाँ बीते हुए ग्रीष्म की खोज में उड़ी जा रही हैं। वे गर्म देशों की ओर उड़ रही हैं किन्तु मैं उड़कर कहीं नहीं जाना चाहता हूँ।

हे मातृभूमि मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मुझे पराया सूर्य और परायी धरती नहीं चाहिए।

ईसाकोव्स्की की कविताओं में हृदयस्पर्शी काव्यात्मकता और उच्च संस्कृति के दर्शन होते हैं। इसके साथ ही उसकी काव्याभिव्यक्ति में ऐसी सादगी है जो केवल बड़े कवियों में ही देखने को मिलती है। संक्षिप्तता हार्दिकता स्वाभाविकता कोमल व्यंग्य रूसी प्रकृति से गृहीत तुलनाएँ और उपमाएँ अनेक रूपात्मक शब्द चयन—यह सब कवि ने क्लासिकल रूसी साहित्य और रूसी लोकरचना से सीखा है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रकट होनेवाले सोवियत जनता के अनेक रूपात्मक विचार और भाव ईसाकोव्स्की के प्रगीति-मुक्तकों की मुख्य विषय-वस्तु हैं। १९५० में ईसाकोव्स्की लेनिन के आर्डर से पुरस्कृत हुआ।

ईसाकोव्स्की के प्रगीत-मुक्तकों के नायक के रूप में सोवियत व्यक्ति के चरित्र का बड़ी पूर्णता के साथ उद्घाटन हुआ है।[1] स्पष्ट प्रगीतात्मक लय की प्रेरणात्मकता गीतों तथा चतुष्पदियों का औचित्य हार्दिक सूक्ष्म हास्य उसके गीतों का वस्तु भाव तथा उसकी सूक्ष्म मनोवैज्ञानिकता उसकी लोकगीतात्मक लय यथातथ्य अभिव्यंजक भाषा—इन सब विशेषताओं ने रूप और वस्तु दोनों दृष्टियों से ईसाकोव्स्की की कविता को पूरा-पूरा कलात्मक बना दिया।[2] ईसाकोव्स्की के सादे और सचाई से भरे गीतों में खिलती हुई जवानी और हार्दिक चरकाई तथा आन्तरिक सुख की कथा है जिसमें सोवियत देशभक्ति का सम्मिश्रण है।

---

१ मास्को इस्तोरीइ रूस्कोय सोवेत्स्कोय लितरातूरी भाग २ पृ० १५१।

२ मास्को इस्तोरीइ रूस्कोय सोवेत्स्कोय लितरातूरी भाग २ पृ० २८९।

युद्धोत्तरकाल में हास्य और व्यंग्य प्रधान काव्य का समुचित विकास न हुआ। यों तो हास्य और व्यंग्य प्रधान काव्य के क्षेत्र में सीमनोव मिखाइलोव मर्शाक बसीलियेव आदि का तथा 'घड़ियाल' पत्र का नाम लिया जा सकता है फिर भी काव्य का यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ माना जाता है।

नाटक

नाटकों के संबंध में इस बात की चर्चा की जा चुकी है कि आलोचना के इस क्षेत्र में अस्वस्थ प्रवृत्तियां दिखाई पड़ीं और कम्यूनिस्ट पार्टी ने नाटकों के विकास के सबंध में अपना निश्चय और कतिपय सिद्धान्त प्रस्तुत किये। युद्धोत्तर नाट्य साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों में पार्टी के इन्हीं सिद्धान्तों को—जिनमें जीवन से संबंध साम्यवादी विचारधारा का समर्थन और बुर्जुआ विचारधारा का विरोध मुख्य है—कलात्मक रूप दिया गया है।

युद्ध का चित्रण सोवियत व्यक्ति का साहस उसकी नैतिकता, जिसने कि उसे फ़ासिज्म पर विजय दिलाई—इन सबका अभिव्यंजन कर्नेचेव के नाटक 'इसके लिए जो समुद्र में हैं' और चिर्स्कोव के नाटक 'विजयी' में हुआ है।

कर्नेचेव के नाटक में सोवियत नौसेना के अफसरों और सैनिकों का जीवन तथा युद्ध दिखाया गया है। साथ ही व्यक्तिगत उन्नति और सम्मान तथा सामूहिक हित की भावना के बीच संघर्ष भी दिखाया गया है। बरोम्स्की के लिए व्यक्तिगत सम्मान ही सब कुछ है और वह इसके लिए सब कुछ करने को तैयार है। मक्सीमोव सामूहिक कार्य की सफलता को ही सब कुछ मानता है।

इन व्यक्तियों के संघर्ष में दो भावनाओं की टक्कर है। गुरुपर्यो व कारण बरोम्स्की मक्सीमोव के साथ ठीक-ठीक युद्ध संचालन नहीं करता और शत्रु की पनडुब्बी को निकल जाने देता है और मक्सीमोव को इसमें दोषी ठहराता है। बाद में सच्ची बात का पता लग जाता है। बरोम्स्की की भर्त्सना होती है और वह अपने अपराध को स्वीकार करता है।

'विजयी' नाटक में स्तालिनग्राद के युद्ध के आधार पर चिरकोव ने यह प्रदर्शित किया है कि सोवियत विजय का कारण जर्मन संगठन की अपेक्षा सोवियत संगठन की उच्चता है। सोवियत विजय का मूल कारण है जन शक्ति जनता की इच्छा। एक ओर तो सारी जनता है जो युद्ध का संचालन कर रही है और देश की रक्षा के लिए सब कुछ न्योछावर कर रही है और दूसरी ओर जर्मन सैनिक हैं जो एक व्यक्ति हिटलर की इच्छा के गुलाम मात्र हैं। नाटक का मुख्य विषय इसी नवीन सोवियत जनता के चरित्र और साहस का उद्घाटन है। वस्तुतः विजय इसी जनता की हुई है। वही 'विजयी' है।

युद्धोत्तर काल में बहुत से ऐतिहासिक नाटक लिखे गये। इनमें विश्नेव्स्की का 'अविस्मरणीय १९१९' महत्वपूर्ण है। इसका वस्तु विषय पार्टी द्वारा पेत्रोग्राद की श्वेत गार्डों और विदेशियों से रक्षा है।

इसी प्रकार और बहुत से ऐतिहासिक व्यक्तिप्रधान नाटक लिखे गये जो देश के महान् व्यक्तियों—जैसे लमनासोव पुश्किन सरमेन्तोव मोमस बलिन्स्की आदि—से सम्बन्धित थे। ई० पपोव का नाटक 'परिवार' लेनिन की जवानी के वर्षों से सम्बन्धित है अलेक्सान्द्र श्तेइन का नाटक 'एडमिरल का झंडा' जहाजी बेड़े के स्कूल के संस्थापक उशाकोव के जीवन से सम्बन्धित है।

इसी प्रकार कई नाटक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन और शांति के लिए युद्ध को अभिव्यक्त कर रहे हैं। सीमनोव का 'रूसी प्रश्न' तथा श्तेइन का 'अमरिका की आवाज' इसी प्रकार के नाटक हैं।

युद्धोत्तर वर्षों में बहुत से नाटक लिखे गये जिनमें श्रेष्ठ के जीवन का अभिव्यंजन हुआ। गद्य और काव्य के समान नाटक भी समकालीन वस्तु विषयों तथा अपने देश के पुनर्निर्माण में लगी हुई सोवियत जनता के कार्यकलाप की ओर उन्मुख हुए। सीमनोव के साथ-साथ नये नाटककार (अ० सफ्रोनोव अ० सुरोव तथा अन्य) भी सामने आ रहे हैं। सफ्रोनोव के नाटक 'मास्कोवी चरित्र' में सोवियत व्यक्ति के चरित्र का विकास और उत्कर्ष दिखाया गया है जो अपने अन्तर के स्वार्थ और व्यक्तिवादिता

विजय प्राप्त करता है। नाटक के केन्द्र में फैक्टरी का डाइरेक्टर
पापाव है। वह बहुत अच्छी तरह काम करता है। उसकी फैक्टरी
योजना से अधिक काम करती है। सब उसे सच्चा वती समझते हैं किन्तु
बाद में पता चलता है कि सच्चे कर्मियों के लिए अनजान व्यक्तिवादिता
का बीज उसमें वर्तमान है। जब पड़ोस की फैक्टरी उससे मदद मांगती
है तो वह इन्कार कर देता है क्योंकि वह समझता है कि ऐसा करने से
उसकी अपनी फैक्टरी का काम पीछे पड़ जायगा। पतापोव का अपने
चारों ओर के लोगों से विशेषतया पत्नी से संघर्ष होता है और लोग उसे
समझाते हैं कि केवल अपनी फैक्टरी का हित देखने में वह राष्ट्र के हितों
को नुकसान पहुँचा रहा है। पार्टीनेतृत्व पतापोव को अपनी गलती
समझने और सही रास्ता पाने में मदद देता है। कलेक्टिव या समूह के
प्रभाव से इस प्रकार व्यक्ति का सुधार होता है और वह सम्यक दृष्टि प्राप्त
कर क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठ जाता है।

सीमनोव के नाटक 'पराई छाँह' में दूसरा ही वस्तु-विषय प्रस्तुत
किया गया है। उसमें एक सोवियत विद्वान् का चित्रण हुआ है जिसमें
(क्रान्ति के पूर्व की) पश्चिम के प्रति मानसिक गुलामी के संस्कार अभी
वर्तमान हैं। पश्चिम में सम्मान पाने के लिए वह अपना महत्वपूर्ण
आविष्कार अमेरिका भेजता है और वह यह नहीं समझता कि इस प्रकार
वह अपने राष्ट्र का अहित कर रहा है। इंस्टिट्यूट के कार्यकर्ताओं और
उस विद्वान् के बीच गंभीर संघर्ष होता है। आविष्कार देश के बाहर नहीं
जाने पाता। अन्त में उस विद्वान की समझ में आता है कि वह कानूनी
रूप से संचालक पद से मुक्त किए जाने की प्रार्थना करता है किन्तु शासन उसे
काम करने का आदेश देता है। इस प्रकार अपने प्रति देश का विश्वास
प्राप्त कर वह विद्वान् सर्वथा परिवर्तित होकर प्रयोगशाला में आता है
और अपने काम में लग जाता है।

इन नाटकों में गंभीर और तीक्ष्ण संघर्ष का अन्त उन सब के ऊपर
या उन सब पर विजय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जो कि सोवियत व्यक्ति
के विकास और उत्कर्ष को रोकते हैं। साथ ही यह भी दिखाया जाता है

कि सोवियत समाज प्रत्येक व्यक्ति को समाजवादी सर्जनात्मक परिश्रम के बीच पूर्ण विकास प्राप्त करने में और व्यक्तित्व के सद्गुणों की अभिव्यक्ति में सहायता देता है। बहुत से नाटक संघर्ष या द्वन्द्वविहीनता के सिद्धान्त को लेकर लिखे गये। रूसी आलोचकों के मतानुसार यह अनुसरण ठीक न था और यह बुर्जुआ भावना की गुलामी थी।[1] उनकी दृष्टि में नाट्य साहित्य के लिए सबसे बुरी चीज थी द्वन्द्वविहीनता की प्रवृत्ति। इस गलत रास्ते पर पड़े हुए नाटककारों की कलम से ऐसे नाटक लिखे गये जो यथार्थता पर मुलम्मा चढ़ाते थे और बुर्जुआ सिद्धान्तों के प्रभाव तथा परोपजीविता के विरुद्ध उचित युद्ध से लोगों को विमुख करते थे। उन्होंने ऐसे नाटकों की कड़ी कटु आलोचना की। यद्यपि युद्धोत्तर काल में कई अच्छे नाटक प्रस्तुत किये गये फिर भी सामान्य रूप में इस युग के नाट्य-साहित्य का कलात्मक स्तर बहुत ऊपर उठा हुआ नहीं माना जाता।

युद्धोत्तर साहित्य में शांति की विषय-वस्तु भी बड़े जोरों के साथ प्रस्तुत की गयी है। कविता उपन्यास नाटक प्रचारात्मक लेख आदि के द्वारा सोवियत लेखक संसार में शांति और जाति-जाति के बीच मैत्री के भाव को दृढ़ कर रहे हैं। इन कृतियों में साम्राज्यवादी विचारों की तीव्र आलोचना भी की गयी है और उन देशों और जातियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की गयी है जो स्वाधीन होने की कोशिश कर रहे हैं।

संसार में शांति आंदोलन को दृढ़ करने के लिए कई अन्तर्राष्ट्रीय (पैरिस प्राग वारसा) कान्फ्रेंसें बुलायी गयीं और सोवियत लेखकों ने उनमें भाग लिया इनमें आणविक शस्त्रों के निर्माण का विरोध और अमेरिकन साम्राज्यवादिता की निंदा की गई। इस प्रकार सोवियत लेखक साहित्यिक रचना के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक-राजनीतिक कार्यकलाप में भी रत हैं। कई प्रसिद्ध सोवियत लेखक विश्व-शांति समिति के सदस्य हैं और इस रूप में वे योरोप अमेरिका और एशिया के कई देशों में जाकर वहाँ की जनता और विचारधारा से परिचित हो चुके हैं और वहाँ के लोगों को अपनी बातें बता चुके हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय

१ ओचेर्क इस्तोरिई रूस्कोय सवेत्स्कोय लितरातूरी भाग २ पृष्ठ १०४।

मनुष्यों के द्वारा शांति का आन्दोलन सारे विश्व में व्याप्त हो रहा है। सोवियत लेखकों की कृतियों में इसी शांति-आन्दोलन की विशद अभिव्यक्ति हुई है।

एरेनबुर्ग के उपन्यास 'अंतिम लहर' (या संकट) में विश्वव्यापी शांति आंदोलन का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसके केन्द्र में शांति के समर्थकों का वह संघर्ष या युद्ध है जो कि प्रतिक्रियावादियों और युद्ध चाहनेवालों के विरुद्ध चलाया जा रहा है।

सोमनोव की कविताओं 'शत्रु और मित्र' में सामान्य जनता के प्रति प्रेम उसकी प्रगतिशील जातीय परंपराओं के प्रति सम्मान और सारे संसार के श्रमिक वर्ग के साथ ऐक्य का भाव प्रदर्शित किया गया है।

अखिल भारतीय शांति कांग्रेस में सोवियत सदस्य के रूप में आने पर तीखनाव को हिंदुस्तान पाकिस्तान और अफगानिस्तान को निकट से देखने का अवसर मिला। उसके काव्यसंग्रह 'दो धाराएँ' (और पाकिस्तानी कहानियाँ) में इन देशों की गरीबी और शोषण का चित्र प्रस्तुत किया गया है किन्तु इसके साथ विरोध और संघर्ष की जो नयी शक्ति जन्म ले रही है उसका अंकन भी इसमें हुआ है।

सीमनोव के नाटक 'रूसी प्रश्न' में नये युद्ध छेड़नेवालों के प्रयत्नों की आलोचना की गयी है। इसका मुख्य भाव यह है कि राजनीति से तटस्थ नहीं रहा जा सकता है और प्रत्येक देश के सच्चे देशभक्त को शांति का समर्थक अवश्यमेव होना चाहिए।

इस प्रकार शांति आन्दोलन युद्धोत्तर सोवियत साहित्य का प्रमुख प्रवृत्ति बन रहा है।